सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

ब्रूनो यासेन्स्की

कायाकल्प

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक – नरेश वेदी
डिज़ाइनर–ल० लाम्म

मायी वोमारेंको का सदेह १८३
नहर-तल में हलचलभरी रात १९०
मझधार म पडा हुआ आदमी २१०
वाना २१६
मत्यान्वेन को सुराग मिला २२१
मुजरिम चोगा नापता है २२४
फूटी आखवाला आदमी २३०
र्रे में सामूहिक फाम २३५
मिस्टर वनाव न रसी सीखी २४५
दो मुलाकात २५०
हन्र रजवार का अपराध २६०
मिस्टर वनाव का दुभापिया चाहिए २६५
इजीनियर उाबायव का नया प्रयोग २७६
वन्विस्मत सामूहिक फाम २८१
भू-स्खलन २८५
जिदगी में एक बार तो मरना ही है २९३
ग्राक ए-ववर २९८
मिस्टर वनाव की प्रगति ३०८
तूफान व आगार ३१७
युनाव की पहली ३२५
आखिरी बाजी ३३३
अन्याजान ३३९
विनुनाया महमान ३४७
रावटा व गाय उन्घाटा ३५०
ामिराव्ना का उत्तराधिकारी ३५४
ुघटना ३५८
अशात रात ३६६
हमता ३७०
तामारवा पहली गुरुमाता ३७८
गच्चा वार ३८३
गुना गा ३८६

भूमिका

"तीस के दशक मे हमारे साहित्यकारो ने बहुत पहले से – मगर अधूरे – खोजे मध्य एशिया को पुन खोजा। पुन खोजने की आवश्यकता इसलिए पडी कि किशलाको, नखलिस्ताना और रेगिस्तानो मे सोवियत सत्ता का आगमन एक चित्ताकर्षक बात थी," प्रसिद्ध सोवियत लेखक कोंस्तातीन पाउस्तोव्स्की ने लिखा है।

मध्य एशिया की "पुन खोज करनेवालो" मे प्रतिभाशाली पोलिश कवि, उपन्यासकार और नाट्यकार ब्रूनो यासेन्स्की (१९०१–१९३७) भी थे। १९३० के वसत में पहली बार ताजिकिस्तान की यात्रा करने पर यासेन्स्की ने हर्षोल्लसित होकर कहा था, "कितना मनोहारी, कितना अनुपम है यह देश!" उन्ही दिनो हमारा परिचय हुआ था। कुल सत्रह साल की कच्ची उम्र के बावजूद उन दिनो मैं जिला कोम्सोमोल (युवा कम्युनिस्ट सघ) समिति का सचिव था। मने और ब्रूनो यासेन्स्की ने घोडा पर साथ-साथ दुगम पहाडी रास्तो पर होकर तत्कालीन गम जिले का दौरा किया, उफनती तूफानी नदिया को पार किया, नीची घाटियो मे उतरे, सीमात चौकियो म राते गुज़ारी। पामीर की गम की वादी की उस यात्रा के दौरान हम नजदीक आये और दोस्त बन गये।

ब्रूनो यासेन्स्की ताजिकिस्तान के रहन सहन, रीति रिवाजा, मान्यताओ और प्राकृतिक सौदय की भव्यता से अभिभूत हो गये थे।

१९३१ के वसत म लेखका के एक दल के साथ ब्रूनो यासेन्स्की फिर हमारे ताजिकिस्तान आये। हम मिले और मैंने यासेन्स्की को और करीब से जाना। वह न केवल प्रतिभाशाली साहित्यकार, बल्कि एक विलक्षण, सरल, निश्छल और विनम्र व्यक्ति भी थे।

तभी मैंने उनकी असाधारण जीवनगाथा जानी।

ब्रूना यासेन्स्की १९२९ में मास्को आये थे। जन्म से वह पोलिश थे। पेरिस में उन्होंने "सेन देनी" नामक मज़दूर थियेटर की स्थापना की थी। «L Humanite» में छपे "मैं पेरिस जलाता हूं" नामक विख्यात पैम्फलेट का यह लेखक बीसवीं सदी के हमउम्र उन युवा लेखकों की पीढ़ी का था, जिन्होंने किशोरावस्था में प्रथम विश्वयुद्ध की विभीषिका झेली थी और उसके बाद पूरे जोशोखरोश के साथ नये विश्व की स्थापना के संघर्ष में कूद पड़े थे।

अपनी सार्वजनिक सरगरमियों के कारण फ्रांस से निकाले जाने पर ब्रूना यासेन्स्की ने सोवियत संघ को ही अपना दूसरा वतन बना लिया। शीघ्र ही मास्को के साहित्य जगत में उनका स्थान बन गया। कुछ ही समय बाद उन्हें अंतर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी लेखक संगठन का सचिव और "अंतर्राष्ट्रीय साहित्य" पत्रिका का संपादक नियुक्त किया गया। ब्रूनो यासेन्स्की ने विभिन्न देशों के प्रगतिशील लेखकों को एक दूसरे के निकट लाने में बहुत फलप्रद काम किया।

भाषाएं सीखने की ब्रूनो यासेन्स्की में अद्भुत योग्यता थी। उन्होंने अपनी मातृभाषा पोलिश में कई युवा विद्रोही कविताएं और 'याकूब शेले के बारे में' शीर्षक कविता, फ्रांसीसी में "मैं पेरिस जलाता हूं" शीर्षक औपन्यासिक पैम्फलेट, रूसी में 'कायाकल्प' तथा "अकर्मण्यता का षडयंत्र" नामक उपन्यास लिखे।

सोवियत संघ में रहते हुए यासेन्स्की ने हमारे देश के तीस के दशक के महान समाजवादी निर्माण में सक्रिय भाग लिया। अपनी 'आत्मकथा' (१९३१) में ब्रूनो यासेन्स्की ने लिखा था, "इस महान निर्माण-कार्य में मैं प्रत्यक्षतम भाग लेना चाहता हूं।"

सारे ही देश की भांति तीस के दशक में ताजिकिस्तान में भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं के तूफानी विकास का काल था। जनतंत्र की राजधानी—दूशंबे—को देश की रेल प्रणाली से जोड़ा गया। अब ताजिकिस्तान में सामान ऊंटों के काफिले लेकर नहीं जाते थे,—जनतंत्र में हजारों जगह मोटर गाड़ियों की कतारें, कृषि मशीनों, ट्रैक्टरों आदि [illegible] कृषि व्यवस्था के सामूहीकरण के महान [illegible] की चेतना में गहरी जड़ें जमा लीं। एक नये ही जीवन का सौन्दर्य–उल्लास, निर्धनता और जमाने के 'रिवाज' टूटने से [illegible]

जीवन का सौन्दर्य–प्राचीन ताजिक घाटियो मे सब यही प्रतिलक्षित होने लगा। उनकी सदिया पुरानी झुरिया मिट गइ, दहकाना के खेता की पतली पतली पट्टिया गायब हो गइ, जमीन ने जैसे अपने आद्य यौवन और विस्तार को फिर प्राप्त कर लिया, हरी भरी हो गई, आलिगन मे न समा सकनेवाला हरित सागर सर्वत्र आलोडित होने लगा।

लेकिन इस बात को हम सब समझते थे कि प्रश्न अलग अलग निजी काश्ता को सामूहिक काश्त मे शामिल करने का ही नही, बल्कि ताजिका के पुराने खेता मे नवप्राण फूकने का भी है।

वख्श की घाटी मे वही जमीन अब बजर रगिस्तान बनी धूप मे झुलस रही थी जिस पर सुदूर अतीत मे सीचे जाने और उपजाऊ होने के निशान देखे जा सकते थे। प्रचड वख्श बाढ के दौरान खेता को जलमग्न कर देती थी, मिट्टी को वहा ले जाती थी और सिचाई की नहरा को रेत से पाट देती थी। नदी पर काबू पाने की सभी कोशिशें नाकाम रही जमीन बहरी और उजाड बनी रही, इनसान की मेहनत के निशान मिटाती रही

तीस के दशक के प्रारभ मे वख्श की घाटी का कायाकल्प करने का साहसपूर्ण विचार पैदा हुआ।

प्रथम पचवर्षीय योजना की दस्तावेजा मे साफ कहा गया था कि सिचाई परियोजनाओं का–और सबसे पहले वख्श घाटी मे–निर्माण "न केवल मध्य एशिया और कजाखस्तान, बल्कि समूचे सावियत सघ के लिए प्राथमिक आर्थिक महत्व' का कार्यभार है।

यह सवाल था–

दस हजार बेजमीन किसानो को जमीन देने का,

जनतत्र की अर्थव्यवस्था को उन्नत करने का,

वख्श की घाटी को पतले रेशे की कपास की खेती का केंद्र बनाने का, जो हमारे देश मे पहले नही उगाई जाती थी,

सोवियत सघ को कपास की इस सबसे मूल्यवान किस्म के उत्पादन की दृष्टि से विश्व मे एक प्रमुख स्थान दिलवाने और अतत कपास के मामले मे आत्मनिर्भर बनाने का।

निर्माण-कार्य मे भाग लेने के लिए आमत्रित विदेशी विशेषज्ञा ने हैरानी से कधे उचका दिये।

उदाहरण के लिए, १९३१ में ताजिक जनतंत्र की जन-कमिसार परिषद की बैठक में अमरीकी इंजीनियर र्युडवेल हाटन ने तो कह दिया था, "आप लोग स्वप्नद्रष्टा हैं। आप प्रतिभाशाली कल्पनाविहारी हैं। मैंने कठिनतम सिंचाई प्रणालियों पर काम किया है। अमरीकी फर्में मुझे समझदार, व्यावहारिक आदमी मानती हैं। मैंने कलिफोर्निया के स्वर्ण खाड़ियों को देखा है। मैं प्राइमस स्टोव के आविष्कर्ता से परिचित हूं। मैं एच० जी० वेल्स से बातचीत कर चुका हूं। मैं साहसपूर्ण विचारों और साहसपूर्ण योजनाओं की कदर करना जानता हूं। मगर वख्श के बारे में आपकी जो योजनाएं हैं, उन पर तो गंभीरता से बात भी नहीं की जा सकती। मैं दृढ़ विश्वास से कहता हूं कि मानवजाति की जानकारी में कोई ऐसा काम ऐसी परिस्थितियों में और इतने कम समय में कभी नहीं हुआ है।"

सचमुच, ऐसी परिस्थितियों में, जब लगभग सभी कुछ हाथों से ही करना पड़ता था, काम करना आसान नहीं था। १३५ लाख घन मीटर मिट्टी हटानी थी, २६६ हजार घन मीटर कंक्रीट बिछाना था, १७१ हजार घन मीटर लकड़ी के ढांचे खड़े करने थे, १,७०० किलोमीटर लंबी नहरें और उन पर २६०० इंजीनियरी संरचनाएं बनानी थीं।

लेकिन ताजिक लोग अकेले नहीं थे। सोवियत संघ की ३४ से अधिक जातियों के लोग निर्माण-कार्य में हाथ बटाने के लिए आ गये। "वख्श-परियोजना पूरी करनी है!" – यह हर किसी का नारा बन गया। 'वख्शस्त्रोई' (वख्श परियोजना) शब्द उन दिनों 'द्नेप्रोगेस' (द्नेपर पनबिजलीघर), 'मग्नीतका' (मग्नीतोगोर्स्क इस्पात कारखाना), 'कुजबास' (कुजनेत्स्क कोयला क्षेत्र) आदि परियोजनाओं के नामों के साथ-साथ गुंजित होता था। वह सारे जनतंत्र, सारे देश की हर मांग में बस गया था।

वख्श सिंचाई प्रणाली की नींव डालने के पहले विस्फोट ने सारे संसार को मध्य एशिया में विशालतम सिंचाई परियोजना के निर्माण के समारंभ की सूचना दी, जो हमारे देश की भावी विराट निर्माण-परियोजनाओं का पूर्वरूप था।

१९३२ में कुर्गन में सुनाया गया:

"हम तुम्हें एक बहुत उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंप रहे हैं – आज से तुम वख्श-परियोजना के [illegible] के सदस्य होगे।

"लेकिन मैं तो अभी युवा ही हू," मैने याद दिलाई।

मुझे जवाब मिला

"हमारा जनतंत्र भी युवा है, सभी कार्यकर्ता युवा ह, साथ साथ बढो "

हम सभी नौजवानो के लिए वक्श परियोजना एक वास्तविक विश्वविद्यालय बन गई, जहा हमने नये जीवन के निर्माण म प्रचुर अनुभव प्राप्त किया और सबसे खास बात यह रही कि जीवन को बदलने के साथ-साथ खुद भी बदल गये।

निर्माणस्थली पर काम करनेवालो म अधिकाश लोग युवा थे। वक्श परियोजना के इतिहास के अविस्मरणीय पृष्ठ उनके श्रम के वीरतापूर्ण कारनामो से भरे पडे ह। आज भी जब हम—वक्श परियोजना का निर्माण करनेवाले पुराने कोम्सोमोली—कही इकट्ठा होते ह, तो उन दिनो की यादो म खो जाते हैं।

याद करता हू और आखो के आगे रेगिस्तान म रात के धुधलके म जगमगाते अलावो की कतार उभर आती है, नौजवानो की खुशी और उल्लास से छलकती आवाजें सुनाई देने लगती ह—ये कोम्सोमोली १२० किलोमीटर लबी छोटी लाइन की पटरी बिछा रहे हैं।

निर्माण मे प्रयुक्त विदेशी एक्स्केवेटरो को निम्न पज तक बजरो द्वारा असयोजित अवस्था म लाया जाता था और फिर ट्रको, ठेलो और ऊटो से नहर मुख पहुचाया जाता था। पुरजे अक्सर रास्ते मे खो जाया करते थे। तब कोम्सोमोली एक्स्केवेटर चालको ने मशीनो को निम्न पज के घाट पर ही सयोजित करके निर्माणस्थली तक सौ किलोमीटर से अधिक खुद ही चलाकर ले जाने का सुझाव रखा। फर्म के प्रतिनिधि ने इसका जोरदार विरोध किया और कहा कि एक्स्केवेटर इतना लबा फासला नही तय कर सकते। तब हमारे कोम्सोमोली मिस्त्रियो ने विदेशी प्रतिनिधि से छिपकर मशीनो को सयोजित किया और खुद ही चलाकर निर्माणस्थली पर पहुचाया।

जब फर्म के प्रतिनिधि को इसका पता चला, तो वह बेहद गुस्सा हुआ और धमकी दी कि उसकी फर्म भविष्य म हमे अपने एक्स्केवेटर नही बेचेगी।

इस पर इजीनियर कालिजयूक ने उसे जवाब दिया

"हमारी आगामी निर्माणस्थलियो पर आपके एक्स्केवेटर नही इस्तेमाल किये जायेंगे—वे इस काबिल हैं भी नही। हमारे पास अपनी मशीनें होगी।"

उदाहरण के लिए १६३१ म ताजिक जनतत्र की जल-व्यवस्था परिषद की बैठक म अमरीकी इजीनियर "यूज्वन हाटन " ना यह किया था, "आप लोग स्वप्नद्रष्टा ह। आप प्रतिभाशाली कल्पनाविहारी हैं। मैंने कठिनतम सिचाई प्रणालियो पर काम किया है। अमरीकी फर्में मुझे समझदार, व्यावहारिक आदमी मानती ह। मैंने कैलिफोर्निया क स्वप्न-योजनाओ को देखा है। मैं आइमस स्टार के आविष्कर्ता से परिचित हू। म एच० जी० वेल्स से बातचीत कर चुका हू। म साहसपूर्ण विचारो और साहसपूर्ण योजनाओ की कद्र करना जानता हू। मगर वख्श के बारे म आपकी जो योजनाए हैं, उस पर तो गभीरता स ध्यान भी नहीं दी जा सकती। म दढ विश्वास स कहता हू कि मानवजाति की जानकारी म कहा किया काम ऐसी परिस्थितियो म और इतने कम समय म कभी नहीं हुआ है।'

सचमुच ऐसी परिस्थितियो म, जब लगभग सभी कुछ हाथो स ही करना पडता था काम करना आसान नहीं था। १३४ लाख घन मीटर मिट्टी हटानी थी, २६ ६ हजार घन मीटर कक्रीट बिछाना था, १७ १ हजार घन मीटर लकडी के ढाचे खडे करने थे, १,७०० किलोमीटर लबी नहर और उन पर २ ६०० इजीनियरी सरचनाए बनानी थी।

लेकिन ताजिक लोग अकेले नहीं थे। सोवियत सघ की ३४ से अधिक जातियो के लोग निमाण काय मे हाथ बटाने के लिए आ गये। "वख्श-परियोजना पूरी करनी है!"—यह हर किसी का नारा बन गया। "वख्शस्त्रोई ' (वख्श परियोजना) शब्द उन दिनो ' द्नेपरोगेस" (द्नेपर पनबिजलीघर) "मग्नीत्का" (मग्नीतागोर्स्क इस्पात कारखाना), कुज्नेत्स्क ' (कुज्नेत्स्क कोयला क्षेत्र) आदि परियोजनाओ के नामो के साथ साथ गुजित होता था। वह सारे जनतत्र, सारे देश की हर साम मे बस गया था।

वख्श सिचाई प्रणाली की नीव डालने के पहले विस्फोट ने सारे ससार को मध्य एशिया मे विशालतम सिचाई परियोजना के निर्माण के समारभ की सूचना दी, जो हमारे देश की भावी विराट निमाण परियोजनाओ का पूवरूप था।

१६३२ के शुरू मे मुझसे कहा गया

"हम तुम्हे एक बहुत उत्तरदायित्वपूण काय सौप रहे ह—आज से तुम वख्श परियोजना के अखबार के सपादक होगे।"

"लेकिन मै तो अभी युवा ही हू," मैने याद दिलाई।

मुझे जवाब मिला

"हमारा जनतत्र भी युवा है, सभी कार्यकर्ता युवा हैं, साथ साथ बढो"

हम सभी नौजवानो के लिए वख्श-परियोजना एक वास्तविक विश्वविद्यालय बन गई, जहा हमने नये जीवन के निर्माण मे प्रचुर अनुभव प्राप्त किया और सबसे खास बात यह रही कि जीवन को बदलने के साथ-साथ खुद भी बदल गये।

निर्माणस्थली पर काम करनेवालो मे अधिकाश लोग युवा थे। वख्श परियोजना के इतिहास के अविस्मरणीय पृष्ठ उनके श्रम के वीरतापूर्ण कारनामो से भरे पडे हैं। आज भी जब हम–वख्श-परियोजना का निर्माण करनेवाले पुराने कोम्सोमोली–कही इकट्ठा होते हैं, तो उन दिनो की यादो मे खो जाते हैं।

याद करता हू और आखो के आगे रेगिस्तान मे रात के धुधलके मे जगमगाते अलावो की कतार उभर आती है, नौजवानो की खुशी और उल्लास से छलकती आवाजे सुनाई देने लगती हैं–ये कोम्सोमोली १२० किलोमीटर लबी छोटी लाइन की पटरी बिछा रहे हैं।

निर्माण मे प्रयुक्त विदेशी एक्स्केवेटरो को निम्न पज तक बजरो द्वारा असयोजित अवस्था मे लाया जाता था और फिर ट्रको, ठेलो और ऊटो से नहर-मुख पहुचाया जाता था। पुरजे अक्सर रास्ते मे खो जाया करते थे। तब कोम्सोमोली एक्स्केवेटर चालको ने मशीनो को निम्न पज के घाट पर ही सयोजित करके निर्माणस्थली तक सौ किलोमीटर से अधिक खुद ही चलाकर ले जाने का सुझाव रखा। फर्म के प्रतिनिधि ने इसका जोरदार विरोध किया और कहा कि एक्स्केवेटर इतना लबा फासला नही तय कर सकते। तब हमारे कोम्सोमोली मिस्त्रियो ने विदेशी प्रतिनिधि से छिपकर मशीनो को सयोजित किया और खुद ही चलाकर निर्माणस्थली पर पहुचाया।

जब फर्म के प्रतिनिधि को इसका पता चला, तो वह बेहद गुस्सा हुआ और धमकी दी कि उसकी फर्म भविष्य मे हमे अपने एक्स्केवेटर नही बेचेगी।

इस पर इजीनियर कालिजयूक ने उसे जवाब दिया

"हमारी आगामी निर्माणस्थलियो पर आपके एक्स्केवेटर नही इस्तेमाल किये जायेंगे–वे इस काबिल हैं भी नही। हमारे पास अपनी मशीनें होगी।"

पिछले कुछ वरसो म मये अपने जानत म कई निमाणस्थलिया पर जाने का मौरा मिला। वहा शक्तिशाली स्वदेशी मशीना को देखकर मुझे कानिजयूव के शब्द याद हो आये।

यह वख्श परियोजना के शौयपूण इतिहास की अनेक म स केवल एक घटना है। अखबार के सपादक और कोम्सोमोल समिति के सचिव के नाते मैं उनका साक्षी ही नहीं था, मन उनम सक्रिय भाग भी लिया था।

निर्माण काय जब पराकाष्ठा पर था तब अग्रेज साम्राज्यवादिया के भाड़े के टट्टू बासमचिया के सरदार इब्राहीम बेग न ताजिकिस्तान के जीवन के शान्त प्रवाह मे बाधा डालना चाहा। उस आशा थी कि जनता उसका साथ देगी उसक झास म आ जायगी। लेकिन उपनिवेशवादिया की आशाओ और इच्छाओ के विपरीत, इस बार युवा जनतत्र की पहली सफलताए ही बासमचियो के छिन भिन्न हो जाने का कारण बन गई। जिन लोगो को कभी बहकाकर बासमची दलो म इकट्ठा किया गया था और जो हारने के बाद कई साल से प्रवास म रह रहे थे व सब हथियार हाथ म लेकर वापस आये लेकिन जब उन्होने यहा हुए परिवतन देखे, तो बिना किसी लडाई के ही हथियार डाल दिये और सोवियत सत्ता के पक्ष म आने लगे।

१५ सितबर १९३३ के दिन वख्श नहर का उदघाटन हुआ। सारी ही जनता के लिए यह त्योहार का दिन था और खुशी मनानेवाले लोगो मे एक ब्रूनो यासन्स्की भी थे।

अपनी ताजिकिस्तान यात्रा के अनुभवो के आधार पर ब्रूनो यासेन्स्की द्वारा १९३२–१९३३ मे लिखित उपन्यास "कायाकल्प" वख्श सिचाई परियोजना के निर्माण का सर्वोत्तम स्मारक है।

इस उपन्यास मे लेखक ने बडी सूझबूझ, तथ्यनिष्ठता और भावप्रवणता के साथ तीस के दशक के एक विशालतम निर्माण काय – ताजिकिस्तान म वख्श पर निर्मित बाध के निर्माण का वणन किया है।

सिचाई प्रणाली का निर्माण, ताजिक देहात का नवजीवन, मौलिक परिवतनो के हामियो और सदियो पुरानी परपराओ के रक्षको के बीच निमम सग्राम विदेशी जासूसो की कारवाइया – ये हैं इस रोचक उपन्यास के कथानक के कुछ पहलू।

उपन्यास का मुख्य भाव यह है कि समाजवादी निर्माण की प्रक्रिया मे न केवल देश की प्रकृति और अथव्यवस्था ही, बल्कि इस महान सृजन-

काय म भाग लेनवाले लोगो की दृष्टि और मनोवृत्ति भी बदल जाती है।

उपन्यास के मूल रूसी नाम—"इनसान चमडी बदलता है'—के पीछे छिपे अर्थ को समझाते हुए ब्रूनो यासेन्स्की न लिखा था

"हमारी ऐसी पीढी है, जिसने पूजीवादी समाज का विध्वस किया है, ताकि समाजवादी समाज मे प्रवेश किया जा सके। अभी हम अपनी चमडी ही बदल रहे हैं।

" पूजीवादी सामाजिक सबधो की पुरानी चमडी फट गई थी।

" नई सभावनाए व्यक्ति मे आमूल चूल अनुकूलन का तकाजा करती है यह एक लबी और कठिन प्रक्रिया है। पुरानी चमडी इतनी जम गई है कि कभी-कभी तो उसे मास सहित ही उखाड लेना पडता है "

लेखक ने दिखाया है कि निर्माणस्थली पर लोग किस तरह बढते और मद बनते है, किस तरह उनकी चेतना म परिवत्तन आता है।

वख्श के बाध से ताजिका को न केवल पानी, बल्कि नवजीवन, अर्थात प्रकाश, शिक्षा और सस्कृति की भी प्राप्ति हुई। ब्रूनो यासेन्स्की अपने उपन्यास मे मध्य एशिया म हो रहे परिवत्तना का सार दिखाने और ताजिक देहात के नये लोगो को चित्रित करने म सफल रहे है।

निर्माण परियोजना के सचालको—सिनीत्सिन, मोरोजोव और ताजिक इजीनियर ऊर्तावायव का चरित्र चित्रण रोचक और विशद है। चरित्रा के वैशिष्ट्य और पथक पथक व्यक्तित्व के बावजूद साझे ध्येय म निष्ठा विजय मे दढ विश्वास और कठिनाइयो को जीत पाना उनके सामान्य गुण हैं।

क्लाक के चरित्र के माध्यम से उपन्यास मे व्यक्ति के पुनर्शिक्षण के विषय को बडे दिलचस्प ढग से उठाया गया है। जीविका कमाने के लिए सोवियत सघ आया हुआ अमरीकी इजीनियर क्लाक समाजवाद मे आस्था नही रखता। वह पैसे को ही मानव की उद्योगशीलता और कर्मठता का एकमात्र प्रेरक मानता है।

किंतु धीरे धीरे जीवन और समाजवादी निर्माण का दैनदिन व्यवहार क्लाक के आगे उसके पूजीवादी व्यक्तिवादी दष्टिकोण की निराधारता को सिद्ध कर देता है। वह समाजवादी वास्तविकता को पूर्णत अगीकार कर लेता है, नये जीवन का सचेत निर्माता बन जाता है।

* * *

बीते वर्षों में जनतंत्र का मानचित्र अद्भुत रूप में बदल गया है — सूखे, निर्जन, बीहड़ रेगिस्तानों की जगह नई-नई निर्माणस्थलियाँ पैदा हो रही हैं, हरे-भरे खेत लहलहा रहे हैं, बाग सनसना रहे हैं। हमारे जीवन का रूप भी बदल रहा है। उसी के साथ-साथ नये जीवन का निर्माण करनेवाले लोग भी बदल रहे हैं।

उदाहरण के लिए, साठ के दशक के अंत में ताजिकिस्तान की यात्रा करनेवाले एक फ्रांसीसी पत्रकार ने «Liberation» पत्रिका में लिखा था :

"यह देश, जो कुछ ही समय पहले तक भौगोलिक मानचित्र पर मात्र एक सफेद धब्बा था, जिसके भाग्य में बाहरी दुनिया से कटा रहना और नैराश्य ही सदा प्रतीत होता था, आज अपने अतिथियों के आगे अकल्पनीय रूप से समृद्ध, जीवंत और विकासमान चित्र प्रस्तुत करता है।"

मीरसैयद मीरशकर,
ताजिकिस्तान के जनकवि,
राजकीय पुरस्कार विजेता

मिस्टर क्लार्क का मास्को मे पहला परिचय

गाडी धीरे से प्लेटफार्म पर आई और खडी हो गई। उसके रंध्र रंध्र मे लोगो की बाढ फूट पडी–सभी एक दूसरे को पीछे छोड अंधाधुंध बाहर जाने के रास्ते की तरफ लपक पडे। पहली लहर के खत्म हो जाने तक क्लार्क खडा रहा, फिर दोनों हाथो मे एक एक सूटकेस उठाकर वह आहिस्ता से प्लेटफार्म पर उतर गया।

बडी घडी मे सुबह के दस बज रहे थे।

स्टेशन के बाहर की सीढियो पर पहुचकर उसने सूटकेसो को नीचे धरा, सूटकेसो के चमडे के चौधियानेवाले पीलेपन से सम्मोहित पास ही मडलाते फटे-पुराने कपडे पहने एक छोकरे पर नाराजी भरी निगाह डाली (उसे गाडी पर ही आगाह किया गया था कि स्टेशनो पर आने वाले विदेशियो को बेरहमी के साथ लूटा जाता है) और ओवरकोट के बटन खोलकर एक बटुआ निकाला। कागज की एक पर्ची पर रूसी अक्षरो मे एक होटल का पता लिखा हुआ था। अपने सूटकेसो के पास से बालिश्त भर भी खिसके बिना क्लार्क ने इशारे से एक कुली को पास बुलाया, कागज की पर्ची उसके हाथ मे दी और वहा खडी अकेली टैक्सी की तरफ इशारा किया।

लेकिन इसके पहले कि कुली उसके आदेश की पूर्ति कर पाता, ज्यादा खुशकिस्मत लोगो ने टैक्सी पर कब्जा कर लिया था और मिनट भर बाद ही कुली जब लौटकर आया, तो वह एक टमटम के पायदान पर खडा हुआ था, जिसमे बिलकुल वायलिन जैसा दुबला पतला भूरा घोडा जुता हुआ था। कोचवान ने सूटकेसो को ऊपर चढाया और घोडे को एक चाबुक लगाया। घोडे ने एक अजीब सा स्वर पैदा किया, अपनी पतली गरदन को हिलाया और दुगामी चाल से चौक के साथ-साथ चलने लगा।

इस बहुत ही सक्री सवारी म बैठे बलाक ने अपनी टोपी का उतार दिया, जिससे कुनकुनी हवा उसके अच्छी तरह से सवर हुए लाल बालो को थपकने लगी। अभी कुछ देर पहले तक वह जिस चिढ का अनुभव कर रहा था, वह अब बिलकुल गायब हो गई थी और प्रमादपूर्ण कुतूहल के साथ वह अपने आसपास की चीजो पर निगाह डालने लगा—अपनी अदभुत सवारी पर, चौक पर, दूर नजर आते पुल पर और प्रस्तर निर्मित विजय-तोरण की छाया पर, जो तजी के साथ दूरी मे विलीन होती सडक के तीर स कटे एक विराट धनुष जैसा लग रही थी। लगता था जसे तोरण के ऊपर अपनी पिछली टागो पर खडे रथ मे जुते छ घोडे शहर स नाबडतोड भागने को बेताब है और किसी भी क्षण सडक की चिकनी सतह पर छलागें लगाते हुए भागने लगगे।

सडक के दोनो तरफ मकानो की कतार थी। स्वभाव स ही कुबडे और बोने ये मकान अपने को पाड की खुरदरी टागो पर हठधर्मी से ऊपर उठाये हुए थे। यह ससार की सभी सडको की तरह मकानो की अनन्त घाटी नही थी। इसके विपरीत यह खिलाडियो की उल्लासमय परेड स दिखाई मिलती थी क्योकि सारे के सारे मकान गतिमान थे—उनके सपाट कधो पर नई मजिले नटो की तरह सवार हो रही थी। पैदल चलने की पटरिया निर्माण सामग्रियो से अटी पडी थी और पटरियो पर और पाडो पर मानो चूने की तरह धूप छिडकी मानव आकृतिया तेजी के साथ इधर उधर भाग दौड कर रही थी।

सडक के साथ-साथ जाती लाइनो पर घटियो की टनटन के साथ ट्राम आ जा रही थी और ट्रामो के प्लेटफार्मो स मुसाफिरो के भारी भारी पुज इस तरह लटके हुए थे मानो किसी फटी टोकरी से लटक रह हो।

चौराहे पर एक बूथ के आगे लोगो की एक लबी कतार लगी हुई थी—आदमी सफेद कमीजें और स्त्रिया वासतिक चितकबरी सूती पोशाके पहने। स्त्रियो की सूती पोशाके हवा म लहरा रही थी, लगता था, जसे सारी कतार ही फडफडा और कुलबुला रही हो और दूरी स देखने पर अपनी फडफडाती दुमनुमा कतार के साथ चौकोर बध हवा के पहले झोके क साथ उड जाने को तैयार एक विराट कागजी साप जसा लग रहा था।

बलाक न सिर घुमाया। एक मोटी सी चमकती हुई बस बराबर से

गरजती हुई निकल गई और एक बड़े चौक के किनारे से सौ एक कदम के फासले पर जाकर रुक गई।

चौक के बीचोबीच एक काले और एक लाल दो बड़े-बड़े बोर्डों के आसपास, जो एकदम दुर्बोध इबारतों और आकड़ो से भरे पड़े थे, लोगों की भीड़ लगी हुई थी। काले बोर्ड को देखकर शेयर बाजारों के आगे लगे बड़े-बड़े बोर्डों की याद आ जाती थी, जिन पर चॉक से शेयरों के ताजा भाव लिख दिये जाते हैं। लेकिन उनके इर्दगिर्द मजदूरों के कपड़े पहने जो लोग भीड़ लगाये खड़े थे, उनकी गोलमटोल और उत्तेजित दलालों के साथ जरा भी समानता नहीं थी।

न्यूयार्क से रवाना होने के भी पहले क्लार्क समाजवादी प्रतियोगिता के बारे में, लाल और काले बोर्डों के बारे में और उन कल-कारखानों के बारे में, जिन पर मजदूरों का स्वामित्व है, काफी कुछ सुन और पढ़ चुका था। लेकिन इस क्षण तक – जब वह टमटम में बैठा इन विशाल बोर्डों के सामने से गुजर रहा था और उनके आसपास भीड़ लगाये लोगों को देख रहा था,– कभी यह खयाल उसके दिमाग में नहीं आया था कि यह सारा वैराट देश, जिसमें वह कल शाम से सफर कर रहा है, असल में इसमें रहनेवाले लोगों की एक विशाल संयुक्त पूंजी कंपनी ही है। और अगर ये काले बोर्ड पूरी तरह से भर गये, तो इसका मतलब होगा देश की मौत, इसके विपरीत, अगर लाल बोर्ड भर जाते हैं, तो इसका मतलब होगा जीत। इस महान प्रतियोगिता में सन्निहित जोखिमों के खयाल से ही क्लार्क को अपने दिल की धड़कन तेज होती लगी। उसका मन किया कि वह टमटम को रुकवा ले, मगर कोचवान ने चाबुक सटकारकर घोड़े को तेज कर दिया था और वे लोग चौक से गुजर गये।

अब टमटम फिर मुख्य सड़क पर चल रही थी। सिरों के ऊपर सड़क के आरपार एक चौड़ी लाल बंदनवार लगी हुई थी, जिसने सड़क को एक विजय-तोरण में परिवर्तित कर दिया था। सामने की तरफ से चटक हरी टोपियां पहने लाल सैनिकों का एक दस्ता कदम मिलाये मार्च करता आ रहा था। सैनिकों के पास रायफलें नहीं थीं। लाल सैनिक एक जोशीला गाना गा रहे थे। अभी तक अपनी जगह बिलकुल निर्विकार बैठे कोचवान ने अचानक सिर घुमाया, चाबुक से लाल सैनिकों की तरफ इशारा किया और क्लार्क की तरफ आंख मिचकाता हुआ अंतर्राष्ट्रीय भाषा में बोला

"चेका।"*

क्लाक ने कुतूहल के साथ रस्ते की तरफ देखा, जो अब उनके बराबर ही पहुंच गया था।

उससे कदम भर के फासले पर ही सिर पर हरी टोपियां पहने नीली आंखोंवाले नौजवानों की कतार मार्च करती हुई जा रही थी। वे एक स्वर में और जोश के साथ गा रहे थे। गाते हुए "आ" की आवाज निकालते समय उनके मुंह पूरे खुल जाते थे और फिर अचरज भरे गोल शून्यों की शृंखला में बदल जाते थे। उन्हें देखकर मन में मैच से जीतकर लौटती खिलाड़ियों की मैत्रीपूर्ण टीम का खयाल आता था।

पटरियों पर नागरिकों की भीड़ थी—हाथों में रंग-से पोटफोलियो लिये बटन खुले कोट पहने आदमी, जिनकी मूछों का रंग भी पोर्टफोलियो जैसा ही था और ऊंचे स्कर्ट और एक जैसे सफेद ब्लाउज पहने लड़कियां। अनजाने ही उन्होंने अपने कन्धों को सीधा कर लिया, मीलें निकाल लिये और अपने पोर्टफोलियो को उत्साह के साथ हिलाते हुए वे लाल सैनिकों के जोशीले गीत की तान पर कदम धरने लगे।

क्लाक ने सिर घुमाकर लाल तोरण के नीचे से गुजरते दस्ते पर फिर नजर डाली।

वे एक बुर्जवार से बड़े चौक में पहुंच गये। बुर्जवार से मद वासंतिक समीर बहकर आ रही थी मानो खुली खिड़की से आ रही हो। कास के मंच पर पुराने फैशन का कोट पहने एक घुंघराले बालोंवाला कास का आदमी खड़ा हुआ था और चौक के दूसरे सिरे पर बने एक ऊंचे स्ट्राबेरी युक्त क्रीम के रंग के गिरजे की तरफ हैरानी के साथ देख रहा था। गिरजे की कगनी पर, जमीन से दो मंजिल की ऊंचाई पर, एक छोटी सी कार चल रही थी। जाहिरा तौर पर यह किसी सोवियत मोटर कारखाने का विज्ञापन था। गिरजे के अगले भाग पर लटकी कार के पहिये लगातार घूमते जा रहे थे।

सड़कों के नुक्कड़ पर एक और गिरजा था—पहले गिरजे से छोटा, नीचे मोहरे का। वह कारों के मतलब का नहीं था। लगता था, जरा वाला को सिर पर जड़े में समेटे कोई बुढ़िया खड़ी हो।

---

*अखिल रूसी असाधारण आयोग—प्रतिक्रांति और भीतरी तोड़फोड़ की कारवाइयों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए स्थापित आयोग।

टमटम अब फिर मुख्य सडक पर जा रही थी, जिसमे बीच-बीच मे चौडी लाल बदनवार लटकी हुई थी। सामने की तरफ से धीमे सुर मे एक शोकपूर्ण धुन बजाते बैंड की आवाज आ रही थी। उसका न तो इस धूपभरे दिन की आसक्तिपूर्ण गति मे कोई मेल था, न राहगीरो की कामकाजी हलचल मे। सामने से दो घोडे जुता एक शवयान आ रहा था। उस पर एक ताबूत था, मगर उसका रग एकदम सुर्ख था।

ताबूत के पीछे पद्रह वादको का बैंड था, जो सूरत से ही मजदूर लगते थे। वादको के मुह बडे बडे सुनहरे बाजो पर थे और बाजो से गभीर सुर मे एक प्रयाण गीत की धुन निकल रही थी। वादको की आख अपने से आगेवाले वादको की पीठो पर पिन से नत्थी की स्वरलिपि के कागजो पर टिकी हुई थी। लगता था कि अगर हवा का अचानक एक जोरदार झोका आ जाये और इन चलते फिरते स्वरलिपि स्टैडो पर लगी इन नन्ही नन्ही पर्चियो को उडा ले जाये, तो वादक इस धुन से भटक जायेंगे और तुरत कोई मजीव और खुशीभरी धुन बजाने लगेंगे।

बैंड के पीछे कधे से कधा भिडाये मजदूर चल रहे थे, मानो प्रदर्शन कर रहे हो। काफी थे वे—जलूस खासा लबा हो गया था। अगली कतार मे चल रहे एक मजदूर के हाथो मे बिजली के बल्ब का एक बडा-सा मॉडल था। दूसरे के हाथ मे एक छोटा सा लाल बोर्ड था, जिस पर कुछ आकडे लिखे हुए थे। इन प्रतीको को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता था कि यह जनाजा प्रकटत बिजली का सामान बनाने के किसी कारखाने के मजदूर का है—ऐसा कोई, जिन्हे तूफानी टोलीवाले कहते है।

मजदूरो का लबा जलूस गुजर गया। अचरज की बात थी कि एक मामूली मजदूर को इतने सम्मान के साथ दफनाया जाये—किसी मशहूर जनरल की तरह, जिसकी अरथी के पीछे पीछे उसके सहायक और सहयोगी गद्दी पर उसकी तलवार और युद्धभूमि मे जीते उसके पदको को लेकर चलते है। लेकिन क्लाक ने तुरत अपने मन मे कहा यह देश, जहा "न जीतना" शब्द "मर जाना" के ही समानार्थक है, एक असीम युद्धभूमि के अलावा और कुछ नही है। विजय के लाल बोर्ड पर जिस किसी का लेशमात्र भी योगदान है, उस देश का वीर मानना उचित ही है।

समाजवाद मे क्लाक का विश्वास नही था। वह मानता था कि पैसा ही मनुष्य की सारी उद्योगशीलता और कर्मठता का एकमात्र प्रेरक है।

फिर भी उसम खिलाडीसुलभ निष्पक्षता थी। वह इस देश को पसन्द करता था जो एक अभूतपूर्व प्रयोग को कर रहा था और उसके लिए जिसने सारी दुनिया से टक्कर ली थी। इसी लिए वह यहा आया था—एक ऐसे प्रयोग की क्रियान्विति म भाग लेने के लिए जिसम उसे विश्वास नहा था। उस सब के साथ एक को इस अभूतपूर्व प्रतियोगिता की महिमा ने आकर्षित किया था और इसमे वह सब के पक्ष म नहीं रह जाना चाहता था।

(क्लाक यही सोचता था। अपने को स्वतन्त्र पूर्वाग्रह मुक्त समझना उसे अच्छा लगता था। उसे लग रहा था कि वह कोई बहुत ही श्रेष्ठ और साहसपूर्ण काम कर रहा है और इससे उसके अहम की तुष्टि हो रही थी। अपनी जीवनगाथा के कुछ विवरण उसने अनदेखे कर दिये थे और जितना जितना वह अमरीका से दूर होता गया, वे उसे उतने-उतने ही गौण लगने लगे। इन विवरणो मे से एक यह था कि उसे बेरोजगार हुए अब चार महीने हो चुके थे। तब से वह कितनी ही फर्मों मे नौकरी पाने की निष्फल कोशिशें कर चुका था क्योकि अमरीका म मदी छाई हुई थी। मदी—आर्थिक सकट—के बारे में अखबारो म लिखा जाता था। उसके बारे म वैज्ञानिक और दार्शनिक लिखा करते थे। वे जिम क्लार्क के बारे म नही लिखते थे जो काम नही पा सकता था—वे बात को वैज्ञानिक भाषा मे लिखते थे और विज्ञान की भाषा म इसे प्राविधिक बुद्धिजीवियो का अति उत्पादन कहा जाता था। वे इस बारे म पूरे पोथे के पोथे लिख रहे थे कि इस तथा अन्य प्रकारो के अति उत्पादन से किस प्रकार बचा जाये क्योकि अति उत्पादन के अन्य रूप भी थे—मजदूरो का अति उत्पादन, माल का अति उत्पादन। माल को जला या समुद्र मे फेंक दिया जाता था—यह बेशक एक बहुत ही सरल हल था। लेकिन मजदूरो को जलाया या समुद्र म फेंका नही जा सकता था—वे तादाद म बहुत थे। उन्हे तो निर्यात तक नही किया जा सकता था। कोई रास्ता वैज्ञानिको को नजर नही आ पा रहा था—न जिम क्लार्क को ही। वह जानता था कि अपने को डुबाया जा सकता है। यह बेशक बहुत ही सरल समाधान रहता। लेकिन जिम क्लाक अपने को माल की बराबरी पर नही रखना चाहता था। इस विचार से ही उसके आत्मसम्मान के बोध को जुगुप्सा होती थी। और इसलिए पहला मौका मिलते ही उसने अपने को एक दूसरे गोलार्ध को, एक ऐसे देश

ग्रौर, पता नही–यह यात्रा वी थवान थी या वाइ दृष्टिभ्रम नि स्कूल
म ग्रजित भूगोल व समस्त नान वे वावजूद क्लाव को ग्रचानक लगा वि
जस यूयाक स लेकर यहा तव की उसवी सारी यात्रा उस एव लगातार
चढते हुए वत्र पर ही चलाती हुई ग्रतत इस चरम विदु पर ल ग्राई है।
वहा इस ग्रतहीन चौक व पार ही उतार शुरू हा जाता है। क्लाव को
लगा, जैसे वह दुनिया की छत पर पहुच गया है। निमिप मात्र को उसक
लिए सास लेना भी दूभर हो गया ग्रौर उसे लगा वि जैसे हवा भी विरल
हो गई है।

एक कोन पर टमटम तजी के साथ मुडा ग्रौर खडी हा गई। वे होटल
पहुच गये थे।

क्लाक मास्को म ज्यादा दिन नही ठहर पाया। होटल म उसकी वाकर
तथा एक ग्रौर इजीनियर स भट हुई। दोनो उसकी प्रतीक्षा म थे–उहे
ग्रगली सुबह ही हवाई जहाज स साथ-साथ जाना था।

बाकर को क्लाक ग्रमरीका से ही जानता था। व कलिफानिया मे साथ-
साथ काम कर चुके थे, जहा वाकर डामर की सडका के निमाण-काय की
देखभाल करता था। बाकर ग्रपनी काहिली के लिए वदनाम था। ग्रपनी
इस काहिली के पक्ष मे वह उसूली दलीले तक दिया करता था। उसका
मत था कि लोग घर पर ग्राराम से बठन के वजाय दुनिया भर म फालतू
ही भटकते रहते ह–उनके लिए सडक बनाना तो उनकी मटरगश्ती को
बढावा दने के ही बराबर है। उसे एक जगह से दूसरी जगह जाना पसद
नही था, ग्रौर जिन सडका को बनान का काम उसके सुपुद किया जाता
था, उनक ग्रागे हमशा कुछ विशेष वस्तुगत ग्रडचन ग्रा जाया करती थी–
मिट्टी का विशप ग्रनुपयुक्त होना या ऐसी ही कोई ग्रौर बात।

क्लाक वाकर को बिलकुल पसद नही करता था। कैलिफोनिया म काम
करते समय उनम ग्रापस म बडा सख्त झगडा हो गया था। तब स वाकर
ग्रपने ग्रलाभकर पेशे को वदल चुका था ग्रौर ग्रब वह एक्स्केवेटरा का
विशपज्ञ बन गया था। वह ब्यूसाइरस फम का प्रतिनिधि बनकर सोवियत सघ
ग्राया था जो मध्य एशिया की एक निर्माण परियोजना के लिए एक्स्केवेटरो
का प्रन्याय कर रही थी। उस यहा देखकर क्लाक को ग्रचरज हुग्रा। मगर
फिर उसे मदी का खयाल ग्रा गया ग्रौर उसका ग्रचरज खत्म हो गया।

दूसरे इजीनियर का नाम था मर्री। उसके बाल धूसर थे, माना

कमरा बेग्रारामदेह ग्रौर घुटनभरा था – उसमे एक ग्रजीब सी होटलजन्य महक थी ग्रौर दुनिया भर के होटलो की तरह फर्नीचर पर ग्रस्वाभाविक चमक थी।

क्लाक बालकनी पर ग्रा गया। होटल के सामने लाल इटो की एक भारी भरकम तिमजिली इमारत थी। उसमे ग्रधवृत्ताकार खिडकिया थी। इमारत के मोहरे पर लगी सर्चलाइटे सामने के चौक को ग्रालोकित कर रही थी। प्रवेशद्वार के ऊपर लिखा हुग्रा था 'शाति ऐसा बवडर है, जो ग्रपने रास्ते मे ग्रानेवाले हर विरोधी को उडा ले जाता है'। मर्री ने क्लाक को इसके बारे मे दिन मे बताया था जब वे शहर मे घूमने के लिए गये हुए थे। उसके ग्रागे, हरे पेडो के ऊपर क्रेमलिन के कगूरे नजर ग्रा रहे थे।

नीचे रेस्तरा मे बैड पर टगो की ग्रवसादपूर्ण धुनें हवा मे तैरती ग्रा रही थी। क्लाक ने बालकनी का दरवाजा बद किया ग्रौर जल्दी से कपडे उतारकर कलफ लगी चादरो मे घुस गया।

ग्रलौकिक दरजीखाना

जब उसे जगाया गया तो बाहर पहले जैसा ही ग्रधेरा छाया हुग्रा था। बाकर ग्रौर मर्री सफर के लिए तैयार हो चुके थे ग्रौर ग्रपने सूटकेसो की पैकिंग खत्म कर रहे थे। क्लाक का सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था, उसने उसपर जग भर ठडा पानी डाला, जल्दी जल्दी कपडे पहने ग्रौर नीचे चला गया।

हवाई ग्रड्डे से ग्राई बस दरवाजे पर उनका इतजार कर रही थी। वह उन्हे उसी रास्ते से ले जा रही थी, जिस पर होकर कल क्लाक ग्राया था। निर्जन सडको के चौराहो पर हरे टोप पहने खडे मिलीशियावाले ऐसे लगते थे, मानो ऊपर मडराते तारामडलो को रास्ता दिखाने के लिए रात मे वहा तैनात कर दिये गये हो।

बस विजय तोरण के सामने से गुजरी जिसकी क्लाक को ग्रच्छी तरह याद थी ग्रौर ग्रागे के लबे रास्ते को तेजी के साथ तय करके उसने उन्हे हवाई ग्रड्डे की इमारत के सामने जाकर उतार दिया।

वार्यालय मे सामान के तोले जाते समय उन्हे पता चला कि हवाई जहाज द्वारा चार लोग ताशकद जा रहे हैं—चौथा मुसाफिर रूसी था, भूरी मूछोवाला और बातूनी।

यह मालूम होने पर कि उसके सहयात्री विदेशी और इजीनियर है, रूसी ने अपनी शक्ति भर हर साधन द्वारा उनके प्रति सदभावना प्रदर्शित करने की कोशिश की। वह उन्हे तुरत हवाई अड्डे के छोर पर ले गया, जहा एक अधूरी विशाल इमारत की दीवारे जमीन मे उठ रही थी और निर्माण सामग्री के ढेर चारो तरफ बिखरे पडे थे। फिर वह उन्हे उस असीम मैदान के छोर पर कतार मे खडे कुछ बडे बडे तीन इजनवाले हवाई जहाजो तक ले गया। वह उन्हे रूसी मे कुछ समझा रहा था और हर वाक्य मे एक जर्मन शब्द का इस्तेमाल कर रहा था, जिसे वह बार-बार बडे आग्रह के साथ दुहरा रहा था।

वाकर इस नतीजे पर पहुचा कि वह किसी हवाई फर्म का एजेंट है, जिसने उन्हे विदेशी उद्योगपति समझ लिया है और उन्हे एक जहाज खरीदने के लिए राजी करने की कोशिश कर रहा है।

अपने मुह मे पाइप दाबे मर्री हलके से हस रहा था और सिर हिलाते हुए धीरज के साथ रूसी के कथन से सहमति प्रकट करता जा रहा था।

क्लाक को यह साफ हो गया था कि वाकर बकवास कर रहा है, मगर बातचीत मे शामिल होने को उसका मन नही कर रहा था। नेगोरेलोय से मास्को की अपनी यात्रा के दौरान इस बात को वह अपने अनुभव से जान चुका था कि किसी भी विदेशी को देखकर कोई भी रूसी—चाहे वह उसकी भाषा न बोल पाये, तब भी—अनिवार्यत अपने देश की उपलब्धिया से उसे अवगत कराना चाहता है—उसे ऐसी चीजें दिखाना चाहता है, जो उसकी समझ मे विदेशी को सबसे ज्यादा चकित करेगी। निस्सदेह यह आदमी उन्हे यही समझाने की कोशिश कर रहा है कि उसका देश कैसे बढिया हवाई जहाज बनाने लगा है।

हाथ मे झडी लिये हुए एक आदमी आया और मुसाफिरो को उडने के लिए तैयार खडे एक इजनवाले हवाई जहाज के पास ले गया। यह हवाई जहाज भी सोवियत निर्मित ही था।

वाकर ने बडबडाते हुए सोवियत वायुयानो मे अपना अविश्वास प्रकट किया और इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि वे लोग ट्रेन से क्यो नही

गये। जहाज़ के प्रोपेलर ने एक चक्कर काटा और एक गुजते हुए धूसर चक्के मे परिणत हो गया। हवा के आकस्मिक प्रवाह स यात्रिया की बरसातिया फडफडान लगी।

जब सभी लोग केबिन म जा बठे तो नीचे खडे आदमी न अपनी झडी हिलाई और जहाज जमीन पर हिचकोले खाता हुआ धीरे धीरे प्रस्थान स्थल की तरफ चल पडा। क्लाक बुदबुदाया कि ईश्वर म विश्वास न करने पर भी अपने पर सलीब का निशान बनाने म क्या हरज है—आखिर इन रूसी जहाजो का क्या भरोसा

हवाई जहाज़ ने तेजी से मोड लिया कणभेदी गुजार करन लगा और मदान के गड्ढो पर उछलता हुआ पूरी रफ्तार से दौडने लगा। अचानक जमीन उसके पहियो से इस तरह से फिसलकर अलग हो गई, मानो नीचे धस गई हो और क्लाक को निचाई पर एक इमारत की टीन की छत नजर आई।

जहाज दक्षिण पूव की तरफ उडने लगा। रूसी यात्री ने अपनी उगली से खिडकी की तरफ इशारा करते हुए क्लाक के कान म चिल्लाकर कुछ कहा, मगर इजन की गरज म उसके शब्द दबकर रह गये।

शहर धीरे धीरे फिसलकर पीछे छूटने लगा। उसके निर्माणाधीन मकानो की पाडा का काटानुमा जगल साही के काटा की तरह दीख रहा था।

नीचे धरती के दिगतव्यापी विस्तार पर मानव के हाथा द्वारा सहेजकर फलाई खेता की जोड के काम की दुलाई ऐसी लग रही थी मानो दुकान मे बिक्री की चीजा के नमूने सजाकर रखे हुए हो।

जसे जसे वे मास्को से दूर होते गये ये धारिया बस वैसे बडी होती गइ। रूसी यात्री अपनी उगली से खिडकी की तरफ इशारा करते हुए कुछ चिल्लाता रहा। क्लाक को "कोलखोज' (सामूहिक फाम) शब्द सुन पडा। उसने खिडकी से नीचे की तरफ बहुत ध्यानपूवक देखा, मगर दीखा कुछ नही। और इसलिए उसने सोच लिया कि ये बडी बडी धारिया सामूहिक फाम ही हागी।

नीच का दश्य बिलकुल एकरस हो गया था। मर्री ने अखबार खोला और उसके पढने म तल्लीन हो गया।

बहुत नीचे वाल्गा बहती जा रही थी—बेपरवाही स इधर उधर पटके कपडे के थाना के बीच पडे मुडे-तुडे नापने के फीते की तरह। गढा म भरे

पानी के बेशुमार घेरे ऊपर से सीप के बड़े-बड़े बटना जैसे दीख रहे थे। समारा तक यही अलौकिक दरजीखाना फैला चला गया था।

समारा पहुचने पर उन्ह पता चला कि उनका जहाज शक्तिशाली सम्मुख हवा के कारण देर से पहुचा है, इसलिए वे ओरेनबुग रात के पहले नही पहुच पायेंगे, जो उनके जहाज के उतरने का अगला ठिकाना था। ओरेनबुग मे छ बजे तक अधेरा घिर आयेगा। इसलिए उन्ह रात समारा मे ही बितानी पड़ेगी, क्योकि वायुमाग को रात की उडान के साधना से अभी तक लैस नही किया जा सका है। यह सब जानकारी उन्ह औसत कद के भूरी आखावाले एक पायलट से मिली थी, जो उन्हे अगले दिन दूसरे हवाई जहाज म आगे ले जानेवाला था। वह अग्रेजी जानता था।

उन्हाने स्नान किया, कमीजो के कालर बदले और खाना खाने बैठ गये। वे खाना खत्म ही कर रहे थे कि पायलट वहा फिर आ गया।

क्लाक और मर्री ने उस पर प्रश्नो की बौछार कर दी।

पायलट ने उन्ह बताया कि अपनी यात्रा का तिहाई से ज्यादा हिस्सा तो वे तय भी कर चुके ह—मास्को से ताशकद कुल साढे तीन हजार किलोमीटर है। इस वायुमाग को स्थापित करने का काम छ महीने मे पूरा किया गया था। कुछ रुककर उसने मित्रतापूण मुसकराहट के साथ यह और कहा कि अमरीका मे इतना ही लबा वायुमाग स्थापित करने मे तीन वप लगते हैं।

क्लाक और मर्री मुसकरा दिये।

उनके मुसकराने को पायलट ने अविश्वास का लक्षण समझकर तुरत पूरा विवरण देना शुरू कर दिया—सबद्ध अमरीकी वायुमाग का नाम, किलोमीटरा मे उसकी सही लबाई, हवाई कपनी का नाम, उस इजीनियर का नाम, जिसने वायुमाग को सज्जित किया था और काम के शुरू और खत्म होने की सही तारीखें वह सारी बात बडी मधुर और जसे कुछ सकोचभरी मुसकराहट के साथ कह रहा था, मानो अपनी सफाई दे रहा हो "मैं जानता हू कि उसी काम को छ गुना तेजी से पूरा करके सोवियत इजीनियरो और मजदूरो ने बडी नादानी का काम किया है, मगर किया क्या जाये, क्योंकि बात तो सचमुच यही है!"

उसी सकोचभरी मुसकान के साथ उसने उन्हे बताया कि अगले वसत से वायुमाग रात की उडाना के लिए भी सज्जित हो जायेगा। फिर रात के

पडाव के बिना उडान पूरी करना सभव हो जायेगा—मास्को से ताशकद अठारह घटे मे पहुचा जा सकेगा। उनका रास्ता बडा दिलचस्प है, क्योकि उन्हे वोल्गा नदी के प्रवाह को बदलने के लिए किये जानेवाले महाप्रयास पर विहगम दृष्टिपात करने का अवसर मिल जायेगा। और जिस रेगिस्तान के ऊपर होकर वे जायगे उसकी सिचाई की योजनाए भी वन चुकी ह, यद्यपि अभी उन्हे आखिरी तौर पर मजूर नही किया गया है। इन विराट परियोजनाओ के रचयिता के सबध मे भी अमरीकी भद्रजन कुछ जानते है या नही?

नही इस बारे म उन्होने कुछ भी नही सुना है।

द्वितीय पचवार्षिकी का मानव

तो बात यह है कि इन परियोजनाओ का रचयिता एक इजीनियर था और वेशक बडा ही प्रतिभावान इजीनियर था वह। उसने अपनी कुछ परियोजनाओ की रूपरेखा क्राति के भी पहले ही बना ली थी और १९१५ मे उसने उन्हे जारशाही सरकार के सामने पेश किया। उन्ह एक पागल की सनक मान लिया गया और जब इजीनियर ने इस बात पर जोर देने की कोशिश की कि उन्हे कार्यान्वित किया जाये तो उसे पागलखाने मे डाल दिया गया। मगर खुशकिस्मती से वह वहा ज्यादा दिन नही रहा, क्योकि उसे हानिरहित सनकी मानकर रिहा कर दिया गया।

इसके बाद क्राति आई और क्राति के बाद गृहयुद्ध अकाल और विध्वस। इजीनियर अपनी परियोजनाओ को परिष्कृत करता चला गया रेगिस्तानो की सिचाई नदियो का रुख परिवतन, समुद्र शोषण और जलवायु परिवतन। सोवियत सरकार तव नाकेबदी की जकड मे ग्रस्त थी, परिवहन ठप पडा था, फिर भी वह मुक्त हुए प्रदेश के अश मात्र भाग को भी काश्त करने के लिए दुधष प्रयत्न कर रही थी। और इजीनियर कहता था कि लाखो हैक्टर निजल मरुभूमि को सीचा जाये। अपनी परियोजनाओ के मुख्य लक्षणो को समझाने के लिए वह ज्ञापिकाए लिखता रहा। इन ज्ञापिकाओ से यह बात अदभुत स्पष्टता के साथ प्रकट होती थी कि अमुक नदी के रुख को पलटना और उसके पानी को उलटा प्रवाहित करना केवल सभव ही नही, वल्कि

नितात अपरिहाय भी है। और यह समझना बहुत मुश्किल था कि यह पहले ही क्या नही किया गया था। इजीनियर ने अपनी ज्ञापिकाओ की प्रतिलिपिया तैयार की और उन्ह सभी सोवियत सस्थाओ मे प्रसारित कर दिया।

अस्तु, पुनरुद्धार-काल खत्म हुआ और सोवियता के देश ने पुनर्निर्माण के काल मे प्रवेश किया। कम्युनिस्ट पार्टी की पद्रहवी काग्रेस ने विराट परियोजनाओ का, समाजवाद का अविलब निर्माण करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। इजीनियर की खुशकिस्मती थी कि वह पूजीवाद से समाजवाद मे युगातक अभिगमन के समय मे रह रहा था।

इजीनियर को स्तालिन से मिलने के लिए बुलाया गया। उसने बडी उत्तेजना के साथ अपनी अत्यत सरल, एकदम स्वयसिद्ध परियोजनाओ की व्याख्या की। उसकी इन परियोजनाओ को दूसरी पचवर्षीय योजना मे समाविष्ट किया गया।

इजीनियर क्रेमलिन से लौटा, तो उसके कान रेडियो रिसीवर की तरह गुजित हो रहे थे। पहली बार यह बात उसकी समझ मे आई कि उसकी अत्यत सरल, एकदम स्वयसिद्ध परियोजनाओ की क्रियान्विति को सभव बनाने के लिए उसकी राता की मेहनत मे खलल डालनेवाली मशीनगनो की उस कष्टकर तडतडाहट का, कुरसियो से गरमाये एक छोटे-से कमरे मे अधभूखे रहकर काटे उन लबे वर्षों का, सारे देश द्वारा दुधप और प्रखर श्रम के उन पद्रह वर्षों का—वह श्रम, जिसमे उसने जरा भी भाग नही लिया था,—होना जरूरी था।

इजीनियर को काम करन के लिए एक विशाल भवन दिया गया। उसे सहायक, प्रविधिज्ञ, नक्शानवीस और सिचाई विशेषज्ञ प्रदान किये गये। भवन के खाली कमरो मे नक्शानवीसो की मेजो के मोर्चे लग गये और वे टाइपिस्टो की एक तूफानी टोली की मशीनगनो की तडतडाहट से गूजने लगे। भवन से तार ऊपर योजना निकायो तक और नीचे उन नदिया तक तान दिये गये, जो युगो युगो से अपने पाटो के भीतर शातिपूवक सोती चली आई थी।

बडे हाल मे दीवार पर टगे बडे काले बोड और खाको से लदी मेज के बीच आता जाता भूरी कामकाजी पोशाक पहने इजीनियर बोड पर चॉक घुमाकर नदियो के रुख को बदल देता, निजल मरुभूमियो के बीच से नहरा को निकालकर ले जाता, हाथ के इशारे से तूफानी बादलो को तितर बितर कर देता, विपुल वायु पुजो को सरका देता।

भूरी आखावाले पायलट ने इसी तरह या करीब करीब इसी ढग से अपनी बात बताई। इसके बाद वह उस आदमी की तरह सकोच से फिर मुसकरा दिया, जो बातचीत करते करते अचानक यह अनुभव करता है कि दूसरे आदमी से उसके स्वास्थ्य और परिवार के बारे म पूछ-ताछ किये बिना वह लगातार अपने स्वास्थ्य और परिवार के बारे म ही बात करता रहा है। और जाहिरा तौर पर अपनी इस भूल को सुधारने की इच्छा से उसने पूछा

अच्छा अपनी सुनाइये अमरीका म क्या हालत है? मदी कैसी है?"

यह बात ऐसे लहजे म कही गई थी कि लगता था, मानो पूछ रहा हो कहिये अमरीका मे आपके चाचा कसे ह?'

मिनट भर सब चुप रहे। फिर वाकर ने जवाब दिया

'यहा आप सभी लोगो का अमरीका की मदी के बारे मे जो विचार है वह बहुत ही अतिशयोक्तिपूर्ण है। ठीक है, हमारा देश इस समय कु कठिनाइयो का अनुभव कर रहा है—कोई भी इससे इनकार नही करता लेकिन सयुक्त राज्य अमरीका एक खासी ठोस और धनी सस्था है, और इस भय का कोई आधार नही है कि वह शीघ्र ही इन कठिनाइयो स नही निकल आयेगा। कुछ भी हो, इस बात मे कोई तुक नही कि आप लोग इस मदी' पर खुशिया मनाय। जब आपका देश मुश्किलो म था और आबादी भूखो मर रही थी तो सयुक्त राज्य अमरीका ने द्वेषपूर्ण भाव से खुशिया मनाने के बजाय आपके अकाल से मरते लोगो का मदद भेजी। और आज जब हमारी मदद की बदौलत आप अपनी मुश्किलो से निकल आये ह तो आपने इन सब बातो को तो भुला दिया है और हमारे दुर्भाग्य पर खुशिया मना रहे ह।

पायलट अब भी मुसकरा रहा था।

मुझे लगता है कि इस वक्त तो आप जरा अतिशयोक्ति कर रहे हैं आखिर उसने कहा। हम सब लोग मिस्टर हूवर और अमरीका के नागरिका के इसलिए आभारी ह कि उन्होने हमारी क्षुधापीडित जनता की सहायता की थी, मगर इस सहायता की मात्रा बहुत ही मामूली थी और शायद आप तक इस बात पर गभीरता के साथ विश्वास नही करते कि यह सिफ अमरीका की सहायता की बदौलत था कि हमने अकाल स मुक्ति पाई। जैसा कि आप भी जानते हैं, हमारे देश के नागरिको न ब्रिटेन के

भूखे खनिकों की उनकी हडताल के समय सहायता की थी। इसमे कोई शक नही कि अगर आपके देश के मजदूर और किसान कभी किसी मुश्किल मे पडे, तो हमारे देश के मजदूर उनकी बहुत सहायता करगे। यह बताइये, अगर आपके विभिन्न राज्यो के कल-कारखाने लगभग पूरी तरह से हमारे आडरो की बिनाह पर ही न चलते होते, तो क्या अमरीका मे बेरोजगारी कही ज्यादा नही होती? आप जानते ही है कि इस समय हमारा देश ही आपके भारी उद्योग का एकमात्र बडा ग्राहक है और वह कीमत साल मे नकद अदा करता है और इस तरह लाखो अमरीकी मजदूरो को बेरोजगारी से बचा रहा है। बोलिये, है या नही?"

क्लाक को लगा कि पायलट यह और कहना चाह रहा था 'और उन बेरोजगार इजीनियरो के बारे मे क्या कहा जाये, जो रोजगार के लिए हमारे यहा आते है?" मगर उसने और कुछ नही कहा।

"मै यहा अपनी विशेषज्ञता का काम करने आया हू, राजनीति के बारे मे बहस करने के लिए नही—उससे मेरा कोई सरोकार नही, बाकर ने चिढकर कहा। कुछ भी हो, मेरे खयाल से अब सो जाना चाहिए। अच्छा, सज्जनो, शुभरात्रि।"

मर्री, जो पायलट की बातो को बडी दिलचस्पी के साथ सुन रहा था, दृढ विश्वास के साथ बोला

"आपको इस काम पर लगाये रखकर पार्टी अपना बहुत नुकसान कर रही है। आप बहुत बढिया किस्सागो और पैदाइशी प्रचारक है। यह बात युक्तिसगत नही कि आपको अपनी सारी जिदगी आसमान मे ही गुजारनी पडे, जहा आप चुप रहने के लिए मजबूर है।"

पायलट अचानक गभीर हो गया।

"आप गलती पर है। पहली बात तो यह है कि मै पार्टी सदस्य नही हू "

मर्री और क्लाक ने अविश्वास के साथ एक दूसरे की तरफ देखा।

"आप इस पर विश्वास नही करते? लेकिन अगर मै पार्टी सदस्य होता, तो मुझे इस बात को छिपाने की क्या जरूरत थी? मै समझ सकता हू कि आपके देश की बात दूसरी है लेकिन जैसा कि आप जानते है, यहा पार्टी वैध है। मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मै गैरपार्टी व्यक्ति हू। और शायद इस बात पर मैं अक्सर अफसोस करता हू। मैं गहयुद्ध के समय

पार्टी म शामिल नही हुआ—मैं खुद नही जानता कि क्या। मरा ख्याल था कि आदमी पार्टी म शामिल हुए बिना भी सोवियत सत्ता के लिए लड सकता है। मन कोइ खास राजनीतिक शिक्षा नही पाई है मैं अभी दो तीन साल और उडन का काम करूगा बाकी फिर देखेंगे। काफी खाली समय होने पर मैं अध्ययन शुरू कर दूगा।'

यूरोप से विदाई

क्लाक को जब जगाया गया, तब करीब करीब अधेरा ही था। जमीन से घनी वाष्प उठ रही थी। हवाई जहाज उडन की तयारी मे गडगडा और घुनघुना रहा था। लगता था कि जसे धरती खुद रोज की दौड लगा लेने के बाद मुह से झाग निकालते थके घोडे की तरह हिनहिना रही है।

मर्री वाकर और रूसी यात्री पहले से ही जहाज के बराबर अपनी बरसातिया के कालर उठाये अस्तव्यस्त और कापते हुए खडे थे। हवा की दिशा दर्शाने के लिए एक खभे पर लगा धारीदार "सासेज" एक हाथवाले आदमी की खाली आस्तीन की तरह ढीला सा लटका हुआ था। अपनी वरदी म पायलट गाताखोर जैसा लग रहा था और जहाज के इजन के साथ उलझा हुआ था। सभी ने एक तनावपूण खामोशी साध रखी थी।

मिनट भर बाद ही हवाइ जहाज सोते हुए शहर के ऊपर रात की अदृष्ट धरती को ट्रक्टर की तरह चीरता हुआ उडन लगा था। क्षितिज पर उषा क आगमन की श्वेत रेखा स्पष्टत अकित हो गई थी। इजन की एकरस गुजार न सभी को नीद की गोद मे पहुचा दिया। क्लाक को भी पता नही चला कि केबिन की दीवार पर अपना सिर टिकाये टिकाये कब उसे झपकी आ गई।

जब उसकी आख खुली, तो दिन निकल चुका था। नीचे, कोई दस मीटर की दूरी पर, टीलो और गत्तों से परिपूर्ण अतहीन हिमक्षेत्र फला हुआ था। जहा-तहा बफ की नुकीली चाटिया इतनी ऊपर उठ जाती थी कि लगता था कि व किसी भी क्षण जहाज के पखो को छूने लग जायगी। क्लाक को लगा कि जहाज उत्तरी ध्रुव पर उड रहा है।

क्लाक ने अपनी आखें मली, अपन को यह विश्वास दिलान की कोशिश

की कि वह अभी सो ही रहा है, मगर वह अद्भुत हिमाच्छादित छटा फिर भी लुप्त नही हुई – इसके विपरीत, जहाज कई मीटर और नीचे की तरफ आ गया, मानो इस बर्फीले मैदान पर ही उतरने की तैयारी कर रहा हो।

क्लाक ने अपने सहयात्रियो पर निगाह डाली। एक कोने मे धुसकर बैठा हुआ मर्री बर्फ के अतहीन विस्तार का निरपेक्ष भाव से देख रहा था। रूसी अपने सिर को छाती की तरफ झुकाये शात मन से सो रहा था।

क्लाक ने तुगतामापी पर नजर डाली और हैरानी के साथ पाया कि जहाज १८०० मीटर की ऊचाई पर उड रहा है। उसने खिडकी के बाहर एक निगाह और डाली और दो टीलो के बीच की खुली जगह मे से – मानो हिमनद मे किसी गहरी दरार म से – उसे अचानक सीधे, बहुत-बहुत नीचे, धरती का एक हरा टुकडा नजर आया। वे लोग एक लहराते मेघपुज के ऊपर उड रहे थे।

टीलो के बीच खाली जगह अधिकाधिक जल्दी के साथ आने लगी। इन सफेद कुओ के पेंदे मे नजर आनेवाली हरियाली अपनी लगभग अप्राकृत चटक के कारण आखो मे चुभ रही थी। बहुत निचाई पर क्लाक झाड-झखाड के बीच अधछिपी एक पतली, सर्पवत टेढी मेढी नदी को देख सकता था।

कुछ मिनट बाद यह सघन मेघमाला अचानक फट गई और उनके पीछे एक अपार हिमक्षेत्र की तरह से तैरने लगी। कुछ देर तक जहाज एकरस हरे मैदान के ऊपर उडता रहा। फिर वह धीरे धीरे नीचे उतरने लगा। क्लाक को लगा कि जैसे उसका कलेजा गले मे आ रहा है। उसे मिचली आने लगी।

नीचे उसे एक शहर नजर आया, माना घूमती मेज पर पेशेस के ताश करीने से लगे हुए हो। क्लाक का सिर घूमने लगा। उसने तय कर लिया कि अब और खिडकी से नही झाकेगा और उसने अपनी आखें फिर तभी खोली, जब जहाज जमीन पर उतर गया। पहियो के स्पर्श के साथ जमीन इस तरह तडप उठी, जसे घोडे को घुडमक्खी ने डक मार दिया हो और फिर परवस उदासीनता से शात हो गई।

केबिन का दरवाजा खुला और ताजा हवा का झोका भीतर घुस आया। क्लाक भारीपन से घास पर कूद आया। पैरो के नीचे जमीन उसे जहाज के डेक की तरह झूमती प्रतीत हुई। वह टागो को फैलाये फैलाये कुछ कदम चला

और फिर भदराकर जमीन पर ढह गया। घास के पौधा म हवा सनसना रही थी। क्लाक ने धरती से कसकर चिपटकर अपन को ढीला छोड दिया और उसका सारा शरीर स्थायित्व की सुखानुभूति का पान करन लगा। पायलट आया और उसन उन्हे पराफिन म भीगे रुई के कुछ फाहे दिये जिससे इजन की गरज का काना पर असर न पडे। उसने यात्रिया से विनोदपूर्वक कहा कि वे यूरोप से विदा ले ल, क्योकि ओरेनबुग यूरोप मे उनका आखिरी पडाव है।

ओरेनबुग के बाद एशिया शुरू हो गया। लेकिन कितनी ही सावधानी से देखने के बावजूद क्लाक दोनो महाद्वीपा को एक दूसरे से पथक करनेवाली सीमारेखा या सीमात स्तभ को नही देख पाया। ओरेनबुग के पहले ही जो अतहीन मैदान शुरू हो गया था वह अधिकाधिक पीला अधिकाधिक एकरस होता चला गया। अब वह भूरे से मोमजामे स ढकी एक असीम मेज जैसा लग रहा था। उस पर जहा-तहा काली रोटियो की तरह छितरे हुए युर्तों* के इक्के दुक्के समूहो और देखने मे रूसी चायदानियो जसे लगनेवाले पहले ऊटो को अपनी पतली पतली टागो पर मेज पर चहलकदमी करते और कोहानो को शान से झूमते देखने के बाद ही क्लाक आखिर यह विश्वास कर सका कि यूरोप पीछे छूट गया है।

प्राकृतिक दृश्य और यात्रा की पिछली मजिल का मिला-जुला असर निद्राजनक था। अपने रूसी सहयात्री के उदाहरण का अनुकरण करते हुए जो ओरेनबुग से ही खर्राटे लेता आ रहा था, इस बार क्लाक भी लबी तान गया। अब की वार वह काफी देर सोया होगा क्योकि आख खुलने पर वह बडी ताजगी और प्रफुल्लता का अनुभव कर रहा था।

पीला मैदान अब पहले से भी ज्यादा निजन लग रहा था। उनके नीचे एक अतहीन घुमावदार तार की तरह रेलवे लाइन थी। रेगिस्तान पर रगती एक ट्रेन नजर आई। लगता था जस कई टुकडो म कटा हुआ केचुआ अपने क्षत विक्षत शरीर को बडी मुश्किल के साथ घसीटकर मरहम पट्टी के किसी केद्र मे ले जा रहा है। आखिर वह वहा पहुच जायेगा और वे उसकी मरहम-पट्टी करने से इनकार कर देंगे और वह रगता हुआ आगे

---

* खेमा।

अगले केंद्र की तरफ चल देगा और इसी तरह स्टेशन स्टेशन करके सारे रेगिस्तान को पार करता चला जायेगा।

रेगिस्तान की खुरदरी खाल कटारा जसी फुसिया से भरी हुई थी, जिन्हें देखकर उबलती लपसी की सतह पर फटते बुलबुलों की याद आती थी। कही कही उसम पिघले लावा की तरह दीप्त रगो की धारिया थी। लगता था, जसे हवाई जहाज चाद के ऊपर उड रहा है। खगोल की पाठ्य-पुस्तको मे उसकी सतह ऐसी ही दिखाई जाती है।

और वह रहा दीयासलाई की डिबिया का परिचित ढेर—शहर, और शहर के आगे था हवाई जहाजा को निदेशित करनेवाला विशाल सफेद घेरा—हवाई अड्डा।

अक्त्यूबिस्क मे रूसी यात्री उतर गया। हवाई अड्डे पर एक कार उसका इतजार कर रही थी। सभी को अलविदा कहने के बाद उसन पायलट के प्रति विशेष आभार प्रकट किया, प्रतीक्षा मे खडी फोड कार म जा बैठा और अपनी टोपी हिलाते हुए चल दिया।

"उसका कहना है कि तीन महीना म पहली बार उसे सचमुच अच्छी तरह से सोने को मिल पाया है," पायलट ने क्लाक को बताया। "वह, वहा, स्तेपी मे बन रहे विशाल कारखाने का निदेशक है।"

क्लाक नही समझ पाया कि इस रेगिस्तान मे कोई कारखाना बनाने का क्या फायदा है और कारखाना यहा बनायेगा भी क्या। पायलट ने, जिससे उसने यह प्रश्न किया था, कहा कि रेगिस्तान तो अभी आगे है। अक्त्यूबिस्क कजाखस्तान के एक अनोत्पादक जिले का केंद्र है। धरती यहा सदियो तक अछूती पडी रही थी, और अब जो उन्होंने उसे खोदना शुरू किया, तो मिले फास्फोराइट, एस्बेस्टास, अबरक, ताबे के जखीरे—जो चाहे

हवाई अड्डे की छोटी सी इमारत म प्रवेश करने पर यात्रिया न पाया कि उनके लिए खाने की मेज लगी हुई है। पाच आदमी मेज पर खाना खाने बैठ गय। पाचवा आदमी मध्यवय था और उसकी कमीज का कालर खुला हुआ था। उसका चेहरा और गरदन धूप से सवलाये हुए थे और लगता था कि उसके बाल तक धूप खाये हुए है—उनमे चमकते रुपहले बाल अपनी सफेदी का खयाल नही पैदा करते थे, बल्कि लगता था कि उन्हें धूप ने राख जैसा कर दिया है।

सुख्यात अपरिचि

कबिन म अपनी सीटो पर फिर बैठने के बाद अमरीकियो ने देखा
कि अक्त्यूबिस्क म उतरनेवाले रूसी की जगह खुले कालर की कमीज पहने
आदमी ने ले ली है।

पायलट ने उनस पूछा कि क्या वे ' हवाई कार ' मे सैर करना चाहगे,
तो सभी न हा कह दिया यद्यपि उनम से कोई भी "हवाई कार
का मतलब नही जानता था।

हवाई जहाज ऊपर उठा और कुछ देर सामान्य ऊचाई पर उडता रहा।
इसके बाद वह तेजी से नीचे उतरने लगा। क्लाक ने सोचा कि उसका
इजन खराब हो गया है और वे स्तेपी पर फोर्स्ड लैंडिग करनेवाले ह। जहाज
जमीन को लगभग छू ही रहा था मगर वह उस पर उतरा नही। नीचे
जहाज के पहियो की सीध मे तार के खभो की कतार चली गई थी, जा
लकडकोट के लट्टो की तरह तेजी से निकलते चले जा रहे थे। अचानक
रेलवे लाइन न बाइ तरफ मोड लिया और आखो से ओझल हो गई।

जहाज स्तेपी के ऊपर प्रबल वेग स उडता चला गया। बीच-बीच मे
उन्ह ऊटो के जो झुड दिखाई पडते व इजन की कणभेदी गरज को सुनकर
आतकित हो अधाधुध इधर उधर बिखर जाते। पोस्तीन की नुकीली टोपी
पहने एक चरवाहा, जिसने जहाज को जमीन की सतह को छूते हुए उडते
देखा मारे डर के उसके आगे आगे भागने लगा। आगे आगे वह, और
उसक पीछे पीछे जहाज की विशाल छाया और अचानक उसकी मौजूदगी
को अपने ऊपर ही अनुभव करके वह वही मुह के बल जमीन पर पड गया।

उनक पीछे भागता स्तेपी भाटे के बाद समुद्र जैसा प्रतीत हो रहा
था। क्लाक को लगा कि जस वह दो सौ किलोमीटर प्रति घटे की चाल
से रेसिग कार म चला जा रहा है। अब जाकर ही उसकी समझ म आया कि
पायलट ने इस जमीन छू उडान को ' हवाई कार की सर क्या कहा था।

अभी भी पूरी रफ्तार से उडत हुए ही व स्तेपा के बीचाबीच बसे एक
कसबे के ऊपर से गुजरे जिसके नाटे नाटे मकान करीन स सूखने के लिए
रखी मिट्टी की इटा जस दाख रहे थे। वहा काई सभा हो रही था। कसबे
का चौक ऊटगाडिया और नुकीली टोपिया पहन लोगा की हिलती हुई भीड
स भरा पडा था। पास आते हवाई जहाज को देखते ही अपनी गाडिया

को अपने पीछे लिये लिय ही ऊट डर के मारे चौपाये शुतुरमुर्गों की तरह गिरा को अपनी टेढी गरदना पर पीछे फेंके स्तपी की तरफ भाग खडे हुए। भीड भी मारे डर क एक सास म ही कहा से गायब हो गई।

एक बार फिर स्तेपी आखो के सामने आ गयी और उसके ज्वार म कसवा हरियाली की लहरा द्वारा धुलते एक अचानक प्रकट होनेवाले लघु द्वीप की तरह अदृश्य हो गया। फिर हरी लहर भी लुप्त हो गई और जमीन एक अंतहीन बालुका राशि म परिणत हो गई।

ढाई घटे की इस सिरफिरी उडान के बाद वे एक हवाई अड्डे के सफद घेरे पर जा उतरे।

उन्ह रात यही बितानी थी। पायलट आया और क्लाक तथा मर्री की उल्लासपूर्ण वाहवाही को सुनकर कहने लगा कि कायदे स तो उस पर उडान क सारे नियम भग करने के लिए मुकदमा चलाया जाना चाहिए। मगर उसके मुसाफिर उसके पक्ष म गवाही दे देंगे, क्योकि इस जमीन छू उडान की वजह स वे चक्करो और धक्को से बच गये, जो यात्रा के इस हिस्से पर खासकर अप्रिय होते ह।

चेहलकर मे क्लाक अपने मन मे प्लेट म रखी जेली की तरह सफेद किनारोवाली एक अटपटी और धुधली-सी झील की छवि लेकर रवाना हुआ।

चेहलकर के आगे लहराती रेत का असीम रेगिस्तान था, जिसमे बालू के टीलो की भरमार थी। य वही बरखान* थी, जो पूरे पूरे काफिलो और सारी की सारी बस्तियो को निगल जाती हैं। आधी आने पर रेत की य घुघराली लहरें अचानक चलने लगती हैं और स्तेपी पर पागल भेडो के रेवड की तरह सब कहीं घूमने लगती है। क्लाक न कल्पना की भयग्रस्त ऊट भाग रहे हैं, उनकी गरदनो म बधी घटिया घबराहट मे टनटना रही हैं, रेत के लाल लाल बादल जगल की आग की सी तेजी से बढे आ रहे हैं, भागते काफिले की शुष्क, भयावह सरसराहट सुन पड रही है, जल्दी जल्दी मे लपेटकर युर्तो को ऊटो पर लाद दिया गया है और वे अपनी पतली पतली टागो पर उन्हे लिये बदहवासी मे रेगिस्तान म भागे चले जा रहे हैं

घटे भर बाद जहाज मानो नीली मायालिका के चमचमाते सुचित्रित

---

* खिसकती बालू राशिया।

निष्प्राण फश क ऊपर उड रहा था। यह अराल सागर था। आसपास का रेगिस्तान पानी म अपनी लबी लबी रेतीली जीभा को घुसाकर उसकी नीली नमी को सुढक रहा था। सागर की अचलता न उसे एक अवास्तविकता सी प्रदान कर दी थी। उसे देखकर क्लाक को धातु की उन चमकती हुई प्लेटो की याद आ गई, जिन्हे देखकर लगता है कि जैस स्याही बिखरी हुई हो।

दोपहर को दो और पडावा के बाद जहाज अपनी मजिल पर पहुच रहा था। रेत के पीले समुद्र मे एक हरे टापू की तरह ताशकद का नखलिस्तान क्षितिज पर दिखाई देने लगा था। पीलिमा क एकरस विस्तार से थकी हुई आख अरीको* की पतली पतली झालरो से घिरे बागा के हरे-हरे चौखटो पर जाकर टिक गइ, मानो बढिया कामदार चोगे के बार-बार दुहराये जानवाल नमून हा। क्लाक ने अपनी किताब को अलग रख दिया और राहत के साथ खिडकी के बाहर देखने लगा। बागा की हरी चादर की पष्ठभूमि पर शहर ऐसा लग रहा था मानो डोमिनो की अधखेली बाजी बिछी हुई हो।

हवाई अड्डे के कार्यालय म एक ताजिक अधिकारी अमरीकियो से मिला, जो कुछ अग्रेजी बोल सकता था। एक खुली हुई कार म बैठकर वे हलकी धूल बिछी और दोनो तरफ सरू जसे पतले और ऊचे पोपलरा की कतारा से घिरी चौडी सडको पर से गुजरे। पोपलरो के नीचे अरीक प्रसन्नतापूवक कलकला रही थी। हर सडक क साथ जाती हरियाली की अतहीन जाली और दोना तरफ कुत्तो की तरह हठपूवक दौडती अरीके उन्हे इस बात की याद दिला रही थी कि यह सारा शहर चप्पा चप्पा करके कई पीढ़िया के हाथा द्वारा रेगिस्तान से जीती रेत पर बसा हुआ है। तपती सडक क आवरण को भेदकर जिद्दी धूल के बादलो की शक्ल म रेगिस्तान के धावे आ रहे थ।

एक चौराहे पर आग का रास्ता रुका हुआ था। सामान स लदे उटो का एक काफिला टनटनाती घटियो की विषादपूर्ण गूज के साथ धीरे धीरे रेगिस्तान की तरफ जा रहा था। हर घटी की अपनी विशेष आवाज थी और सभी मिलकर एक विषादमय और विचित्र सगीत मे एकीभूत हो गई सी लगता

---

* — ।

थी। कनाक की टागे अभी भी काप रही थी और उसे लग रहा था, मानो सारा ही शहर रेगिस्तान पर ऊट की पीठ पर एक विशाल बोझ की तरह डोल और झूल रहा है।

फिर, पापलरो की दीवार के पीछे, वे काच और कक्रीट से बने पौधाघरो जैसे मकानो की कतारो के सामने से गुजरे। काच के पीछे उन्हे पौधो की जगह छत मे लटके शेडदार बल्बो की हरी चमक और मेजो पर बैठे लोगो की अनवृत टोपियो की बहुरगी छटा दीख पडी।

कनाक ने मन मे सोचा कि यहा, सक्ताक्षरो जैसे अबाधगम्य रूसी नामो—ओ० स० प० स०, क० प० (बो०) उज०, चेका—वाले, उटो के काफिलो, अरीको और रेवडो के प्रवाह को नियंत्रित करते इन पौधाघरो जैसे दफ्तरो मे, नक्शो से अटी पडी इन मेजो पर रेगिस्तान पर आम हमला करने की रणनीतिक योजनाए तैयार की जा रही है। और यह सारा नखलिस्तानी शहर लाखो सिपाहियो की एक जबरदस्त फौज के सदर मुकाम के अलावा और कुछ नही है जो इस असीम खिसकनी बालू-राशि को घेरे हुए है और उसे कदम-ब-कदम पीछे धकेलती जा रही है उस नीली मायालिका की निश्चल ताल जैसी सतह की तरफ, ताकि आखिर उसे सागर मे धकेल दे।

मकानो की कतार टूट जाती और फिर शुरू हो जाती। कई मकानो पर तो अभी भी पाडबदी का आवरण चढा हुआ था। यह घेरा बहुत लबा चलनेवाला था और फौज के स्टाफ की घेराबदी की लडाई के सभी नियमो के अनुसार जीती हुई जगहो पर तनात और पुख्ता किया जा रहा था।

शाम को, होटल मे कुछ आराम कर लेने के बाद, अनुग्राही ताजिक अधिकारी अमरीकियो को पुराना शहर दिखाने के लिए ले गया। कार सकरी-सकरी सडको और मिट्टी के बिना खिडकियोवाले खोखे जैसे मकानो (खिडकिया भीतरी आगन की तरफ ही खुलती थी) के बीच चक्कर खा रही थी।

यह असल मे कोई शहर था ही नही, यह तो बालुकणो के परिश्रमी पितामहो द्वारा मिट्टी से बनाया शहर का माडल था।

सवेरे ही उन्हे लेने के लिए हवाई अड्डे से एक कार आ गई। छोटे-से दफ्तर मे अमरीकियो की उसी रूसी से मुलाकात हुई, जो अक्त्यूबिस्क से उन्ही के साथ आया था।

एक नया पायलट आया, लॉग बुक पर उसने एक नजर डाली और हवाई अड्डे के प्रमुख से किसी बात पर बहस करने लगा। फिर वह मुसाफिरों की तरफ पलटा रूसी यात्री, मर्री और क्लाक की तरफ इशारा किया और उन्हें अपने पीछे आने का संकेत किया। चारों उठ खड़े हुए। पायलट ने बाकर को इशारा करके एक कुरसी दिखाई और तीन उंगलियां उठाकर यह जताया कि एक मुसाफिर को रुकना पड़ेगा। क्लाक समझ गया कि सिर्फ तीन लोग ही हवाई जहाज से जा सकते हैं।

ताजिक अधिकारी साथ आया नहीं था और वहां मौजूद रूसियों में से कोई अंग्रेजी नहीं बोलता था।

पायलट के आदेश को बाकर भी समझ गया और गुस्से से तमतमाते हुए उसने इशारा करके यह बताया कि वह वहां रुक जाने के लिए कतई तैयार नहीं है।

मूक अभिनय के सारे भंडार को खत्म कर देने के बाद वह तेजी से क्लाक और मर्री पर लपका और हठपूर्वक बोला कि वह वहां नहीं रुकेगा। अगर वे साथ साथ नहीं जा सकते तो उन तीनों को विरोधस्वरूप जाने से इनकार कर देना चाहिए और इस भीड़ को अपने जंगली तौर तरीकों का, जो बस इस जंगली मुल्क में ही संभव हैं, सबक सिखाना चाहिए। असमंजस में पड़े हवाई अड्डे के प्रमुख की नाक के नीचे जो विवश होकर मुसकरा और बेबसी से हाथ हिला रहा था अपने यात्री टिकट को नचाते हुए और रूसी मुसाफिर की तरफ इशारा करते हुए बाकर अंग्रेजी में चिल्लाकर बोला कि अगर उनमें से किसी का रुकना जरूरी ही है, तो यह मूर्ख रुक जाये, मगर किसी को भी उनकी—अमरीकी विशेषज्ञों की—टोली को तोड़ने का हक नहीं है।

पायलट प्रकट दिलचस्पी के साथ सीधे बाकर के मुंह के भीतर देख रहा था जहां से पटाखों की तरह जोरदार शब्द तड़ातड़ निकलते चले आ रहे थे जबकि पसीने में तर प्रमुख शिष्टता के साथ खेद प्रकट करते हुए अपने हाथ चलाये जा रहा था।

तभी वह रूसी जो अभी तक खामोश खड़ा था, अचानक सब को अचरज में डालता हुआ खासी अच्छी अंग्रेजी में कहने लगा

कृपया उत्तेजित न होइए। मैं बड़ी खुशी के साथ अपनी जगह आपको दे देता और मैं वहां जाने का जरा भी इच्छुक नहीं हूं। मगर

आदेश हुआ है कि मेरा वहा जाना आवश्यक है और सो भी सबसे पहले ही हवाई जहाज से। इस मामले मे न आपकी और न मेरी इच्छा से कुछ तबदीली हो सकती है। यह हवाई जहाज तीन यात्रियो को ही ले जा सकता है। आप सज्जनो मे से एक को रुकना होगा और परसो दूसरे हवाई जहाज से आना होगा।"

कुछ क्षणो के लिए अचरज के मारे बाकर की बोलने की ताकत जाती रही, मगर जब वह सभला, तो उसने पहले जैसी ही सख्ती के साथ फिर कहा कि वह अकेला ठहरने के लिए तैयार नही है।

झगडा चलता रहा। पायलट ने, जो शाति के साथ परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था, घडी की तरफ देखा और हाथ हिलाया, हवाई अड्डे के प्रमुख से कुछ कहा और उन सब को अपने पीछे आने का इशारा किया।

"अगर अब अचानक मुमकिन हो गया है, तो पहले चार लोगो का जाना सभव क्यो नही था?" बाकर ने विजयोल्लास के साथ रूसी यात्री से पूछा।

"उसका कहना है कि वह पेट्रोल कम लेगा और हमे किसी तरह पहुचा ही देगा। आम तौर पर वह तीन से ज्यादा को नही ले जाता है। यह पहाडो के ऊपर से काफी मुश्किल उडान है," रूसी ने जवाब दिया।

बाकर चलते चलते दुविधा मे ठहर गया।

"शायद यही अच्छा रहे कि हम आज जाने का इरादा छोड दें?" क्षण भर की खामोशी के बाद उसने मर्री से कहा, "पेट्रोल कम पड गया, तो?"

"यही तो वे शुरू से कहते आ रहे थे।"

बाकर चुप हो गया, मगर वह औरो के पीछे पीछे चुपचाप प्रतीक्षा मे खडे हवाई जहाज की तरफ जाने लगा।

"यह रूसी कोई बडी हस्ती जान पडता है," क्लाक ने दबी हुई आवाज मे मर्री से कहा, "शायद कोई सरकारी आदमी ही हो।"

"कही चेका का तो नही?" मर्री ने आख मिचकाते हुए कहा।

"नही तो। यह कोई लोकप्रिय व्यक्ति होना चाहिए। नही देखा आपने कि अक्त्यूबिस्क से ही सभी पडावो पर सभी लोग किस तरह इसका अभिवादन कर रहे थे?"

मर्री ने सिर के इशारे से सहमति जता दी।

जब अमरीकी यात्री तेरमीज़ मे जहाज से उतरे, तो उन्हें लगा जैसे वे धातु की जलती हुई चादर पर कूद पड़े हैं। हवाई जहाज के पंख पर लगा थर्मामीटर ७० डिगरी सेंटीग्रेड गरमी दिखला रहा था। गरम हवा मुह से इस तरह चिपक रही थी जैसे उबलते पानी मे भीगा तौलिया।

सभी जगहो की तरह यहा भी रूसी यात्री का सभी पुराने परिचित की तरह अभिवादन कर रहे थे। क्लाक और मर्री ने अर्थपूर्ण दृष्टि विनिमय किया।

जब वे लोग जहाज पर फिर सवार हुए तो रूसी ने उन्हें बताया कि उसके कारण उन लोगो को थोडा घूमकर जाना होगा, जिससे उनकी यात्रा आधे घंटे ज्यादा की हो जायेगी। हवाई जहाज को पहले उसे सराय कमर उतारना होगा जिसके बाद वह उन्हें लेकर स्तालिनाबाद* चला जायेगा।

क्लार्क और मर्री ने शिष्टता के साथ कहा कि कोई बात नही हम इसके लिए खुशी के साथ तैयार हैं।

तेरमीज से हवाई जहाज बिना इधर उधर मुडे आमू दरिया की धारा के साथ-साथ उड रहा था। उनके नीचे जैसे बाल कथाओ की भूमि फैली हुई थी। मिट्टी कत्थई और फूली हुई थी—केक की तरह। नदी मे जैसे दूध मिली फेनिल काफी बह रही थी। द्वीपिकाओ और पुलिनो की अंतहीन शृंखलाओ को देखकर लगता था कि काफी भाप बनकर उडने भी लगी है।

यह सोवियत सघ का दक्षिणी सीमात था। बायें किनारे पर अफगानिस्तान था। क्लार्क ने मन ही मन नेगोरेलोये के खेतो की अनपिघली बर्फ से लेकर आमू दरिया की रेतीली द्वीपिकाओ तक गत कुछ दिनो मे तय की दूरी पर दृष्टिपात किया। रूढ भूगोल के दावे के विपरीत जो भूगोलक के पाच महाद्वीपो को ही मान्यता देता है, यह सचमुच छठा महाद्वीप था

अधबीच फंसे

सराय कमर हवाई अड्डे पर कई लोगो ने उनकी अगवानी की जिनमे से कई हरी फौजी टोपिया पहने सनिक—सीमात टुकडियो के कमाडर—भी थे। रूसी यात्री को देखते ही वे जोर से चिल्लाये— हुर्रा! और उसे घेरकर

---

*अब दुशबे।

उससे हाथ मिलाने लगे। अमरीकियो की तरफ उन्होने जरा भी ध्यान नही दिया। हवाई अड्डे के अलग अलग कोनो से कई और लोग भागते हुए वही आ पहुचे।

आखिर रूसी सफेद कमीज और ताजिक टोपी पहने सावले रग के एक ताजिक और हरी टोपी पहने एक फौजी भीड से अलग हो गये। मिनट भर वे किसी चीज के बारे मे पायलट से बाते करते रहे और फिर अमरीकियो के पास आये। फौजी आदमी ने उन्ह सलाम किया और फिर कुछ उच्चारण भ्रष्ट, मगर बहुत ही सही अग्रेजी मे उनसे कहने लगा कि उसे बडा खेद है कि अमरीकी सज्जन आज अपनी यात्रा पूरी नही कर पायेंगे – जिले म एक दुघटना हो गई है। मुख्य अरीक का पानी अपने किनारो को तोडकर बह निकला है और उसने कपास के खेता को जलमग्न कर दिया है। कुछ लोग बुरी तरह घायल हो गये है और हवाई जहाज को उन लोगो को स्तालिनाबाद पहुचाने के लिए इस्तेमाल करना पड रहा है, जिन्ह तुरत शल्यचिकित्सीय उपचार की जरूरत है। अमरीकी यात्री अपनी यात्रा एक-दो दिन बाद पूरी कर सकते है और, अगर वे इतजार न करना चाह, तो उन्ह कार द्वारा स्तालिनाबाद पहुचाया जा सकता है।

इसका न क्लाक, न मर्री और न बाकर ने ही कोई जवाब दिया। वे अपने सिरो पर गजब की तेजी से प्रहार करती असहनीय धूप मे आखे मिचकाते अनिश्चय मे खडे हुए थे। फौजी और टोपी पहने ताजिक ने उनसे अपने पीछे आने का अनुरोध किया। वे हवाई अड्डे की जलती चादर पर चल पडे। लगता था, जैसे उनके पैरा के नीचे जमीन से ललछौह धूल के बादलो की शक्ल मे धूआ निकल रहा है।

सफेद चूना पुता छोटा सा मकान मक्खियो की भिनभिनाहट से गूज रहा था। बाहर के मैदान के मुकाबले यहा ठडक थी। फौजी और ताजिक अमरीकियो को वहा अकेले छोडकर बाहर चले गये। कुछ मिनट बाद एक लाल सैनिक कमरे मे आया, तीन गिलास और कत्थई-से तरल से भरा एक जग मेज पर रखा और वहा से चला गया। उन्होने व्यग्रता से एक एक गिलास खट्टा मीठा ठडा तरल पिया और बैठकर खिडकी से बाहर ताकने लगे। मर्री मेज को थपकते हुए एक अनिश्चित सी धुन निकालन लगा।

हवाई अड्डे पर लोग इधर-उधर दौड भाग रहे थे। मैदान के छोर पर दो लाल सैनिक एक स्ट्रेचर को लेकर आते दीखे। एक पट्टिया बधी आकृति

को आहिस्ता से स्ट्रेचर पर से उठाकर हवाई जहाज़ के केबिन मे पहुचाया गया। फिर एक और स्ट्रेचर लाया गया।

उस मकान की तरफ, जिसमे तीनो अमरीकी बैठे हुए थे, लोगो का एक दल आया अक्त्यूबिस्क से आनेवाला रूसी अग्रेजी बोलनेवाला फौजी, सावले रग के तीन ताजिक और दो और रूसी। वे मकान से कुछ दूर ही रुक गये और अपने हाथो को हिलाते हुए गरमागरम बहस करने लगे। झुलसानेवाली धूप प्रकटत उन पर कोई असर नही डाल रही थी।

परिचित फौजी ने आकर अमरीकियो से कहा कि वे अगर हाथ मुह धोना या नहाना चाहे तो एक सैनिक उन्हे गुसलखाने तक पहुचा देगा – वह पास ही है।

मर्री ने कहा कि हम जल्दी से जल्दी काम की जगह पर पहुचना चाहते है। क्या हमे कोई कार मिल सकती है, जिससे तुरत रवाना हो सके?

फौजी ने बहुत अफसोस जाहिर करते हुए बताया कि बडे खेद की बात है कि सभी उपलब्ध कारो को सकट का सामना करने के काम मे लगा दिया गया है।

क्लाक को यह अप्रत्याशित परिस्थिति मजेदार लगने लगी। उसने फौजी को दिलासा दिया कोई बात नही – हम आसपास की जगहा से परिचित होकर भी खुशी ही होगी।

फौजी ने उन्हे विश्वास दिलाया कि इस सिलसिले म वह बडी प्रसन्नता के साथ उनकी सहायता करेगा। हा यह सही है न कि आप तीनो सिचाई इजीनियर है? यह बडी खुशकिस्मती की बात है क्योकि कुशल प्रविधिज्ञो की बहुत कमी है और जो दुघटना हुई है उसे कुछ ही दिनो के भीतर दुरुस्त कर दिया जाना चाहिए नही तो फसल के बरबाद होने का खतरा पैदा हो जायेगा। निस्सदेह अमरीकी सज्जन क्षतिग्रस्त सिचाई प्रणाली की मरम्मत के लिए किये जानेवाले काम से अवगत होना चाहेगे और अपने बहुमूल्य अनुभव से सहायता प्रदान करेग।

क्लाक और मर्री ने अस्पष्टतापूर्वक बुदबुदाते हुए कुछ कहा जो कुछ कुछ 'बेशक, बेशक' जसा ही सुनाई दिया।

बाहर स अक्त्यूबिस्क से आनेवाले रूसी की आवाज सुनाई दी, जो सफेद कोटवाले रूसी स कुछ कह रहा था।

एक सनिक आया और उसने उनके परिचित फौजी को कोई सूचना दी।

आप लोगा के लिए एक कमरा ठीक कर दिया गया है। आप हाथ मुह धो और कपडे बदल सकते ह। आइये, चलिये, म आपको पहुचा देता हू।'

रास्ते म रूसी इजीनियर भी उनस आ मिला।

'क्यो, क्या यह सही है कि आप घर स आधी ही दूर रह गये थे और छुट्टी के कागज आपकी जेब मे थे? बाकर ने जो सबसे पीछे चल रहा था उसस तजभरी आवाज मे पूछा। ' आप बडी आसानी से तार को जेब मे खासकर रख सकते थे और कोई यह नही कह सकता था कि वह आपको मिला या नही। अगर म आपकी जगह होता तो

रूसी ने बाकर की तरफ देखा मगर जवाब कुछ नही दिया।

हवाई अड्डे के बीचाबीच दौडने स बेदम हुए दो आदमी उनके पास पहुचे। दोनो एक दूसरे की बात को काटते हुए बडे जोश क साथ कुछ कह रहे थे और बीच बीच म अपनी धूल भरी हथेलिया से अपन माथो पर धार बाधकर बहते पसीने को पोछते जाते थे। अपने चेहरो पर पुती धूल और पसीन क कारण वे आसुओ से पुते चेहरेवाल बच्चा जसे लग रहे थे।

मैं कार आपको अभी दे दूगा फौजी ने रूसी इजीनियर की तरफ रुख करते हुए अग्रेजी म कहा, अमरीकी सज्जन भी सक्ट का सामना करने म हाथ बटाना चाहते ह। है न?

म बहुत आभारी हू मगर फिलहाल म मदद के बिना ही काम चला लूगा रूसी न बात काटते हुए कहा। मुझे दसक सनिक दे दे तो बहुत अच्छा रहेगा।

वह मुडा और तेजी से मदान को पार कर गया। फौजी और दोना हाफते हुए ताजिक उसी के पाछे लपकने लग।

क्नार मर्री और बाकर अपने सूटकसा क साथ खाली मदान के बीच म अकल रह गय। प्रकटत उनको भुला दिया गया था। वे वहा अपनी टोपिया को आखा पर खीच और धूप की असहनीय चमक म आखा को मिचमिचात हुए खोय स और असमजस म खड हुए थ। हवाई जहाज गुर्राता और आगे की तरफ उछलता हुआ खाली स्ट्रेचरा को पाछे छोडकर

मैदान को पार कर गया। मिनट भर बाद ही वह हवा मे जा चढा था और उसके इजन की तेज घनघनाहट कर्णभेदी लहरो के रूप मे नीचे आ रही थी।

वह तेजी के साथ छोटा होने लगा और आखिर एक मडराता हुआ धूसर जर्रा बन गया और अमरीकियो को लगा कि सुदूर बाहरी दुनिया—न्यूयाक, नेगोरेलोये, मास्को—के साथ जोडनेवाला अतिम धागा अचानक तनकर टूट गया है। मैदान मे हारे हुए गोल्फ चैंपियनो की तरह वे भदराकर अपने सूटकेसो के ऊपर बैठ गये। उनके चेहरा पर पसीने की मोटी मोटी धारे बह रही थी।

कही दूर से एकत्र होने की पुकार करते बिगुल की तेज आवाज सुन पडी। भूरे मैदान पर अपने कधा पर कुदाल लटकाये लाल सैनिका की एक टुकडी लपकती हुई आ रही थी।

नदियो का रुख बदला

घरघराती और धडधडाती हुई मैली फोर्ड कार सूखी और धूप से चटचटाती सडक पर दूरी को लगातार लीलती चली जा रही थी। टेलीग्राफ के तारो पर चटक हरे पक्षी समरूपता के ,साथ बैठे हुए थे। सामने समान पहाडी श्रेणिया से घिरा एक असीम वृक्षहीन मैदान था।

गरम सूरज सिर पर तपे हुए टोप की तरह बोझिल लग रहा था। कार म बठे लोगा के झुलसे हुए चेहरा पर धूल धूसर पाउडर की तरह बढती जा रही थी।

अपने भभूतिया चेहरा क कारण बाकर और मर्री अभी अभी खोदकर निकाली मामियो जैसे लग रहे थे, जो लापरवाही से हाथ लगते ही चूर-चूर होकर मिट्टी म बदल जाती हैं।

हजामत बने चेहरे की तरह सपाट वृक्षहीन मैदान पर पतली टागोवाले सुकुमार जैराना के छोटे छोटे झुड कार के साथ दौड लगा रहे थे। जैराना और कार क बीच म दौडें तभी तक चलती कि कार से आगे निकल जाने क बाद जैरान यात्रिया को अपन पुच्छहीन पृष्ठभागो की झलक दिखाते कार की बिलकुल नाक को ही छूते हुए छलागें लगाते सडक को पार

कर जाते। इसके बाद अपने पष्ठभागो को तिरस्कारपूर्वक उठाये हुए व भागते हुए चल जाते।

नगर के प्रवेश द्वार पर उनका रास्ता अरीक म फसे एक ट्रक ने रोक रखा था। जोर के मारे मुहो से हू हू की आवाज निकालते छ लाग उस सडक पर धकेलकर निकाल लान की निष्फल कोशिशे कर रहे थे। ट्रक कणभेदी घरघराहट के साथ झटका मारकर आगे झपटता, पीछे हटता, पर उसके पहिये अरीक के घने कीचड को असहायतापूर्वक मथकर रह जाते।

दो घटे बाद मिट्टी की दीवारा की भूलभुलैया म होकर भटकने के बाद ही कही जाकर लगन की पक्की फोड ने अपने हान को विजयोल्लास के साथ बजाते हुए शहर म प्रवेश किया और सरसराते हुए पेडो ने छाया के घने छीटा से थक हुए यात्रियो को तर कर दिया।

सडक के दोनो तरफ मूक भिखारियो की तरह मिट्टी के नेत्रहीन थापडे कतार मे खडे हुए थे।

हरियाली म बिखरे हुए यूरोपीय नमूने के सफेद एक मजिले मकान एक नये नगर के उदित होने के प्रमाण थे, जो अब किशलाक* के मिट्टी के आवरण को भेदकर निकल रहा था।

यूरोपीय ढग के मकानो के कमरो म जहा क्लाक, बाकर और मर्री को ठहराया गया था, फर्नीचर के नाम को बस, एक-एक फोल्डिंग पलग, एक एक मेज और दो दो स्टूल ही थे।

अपने सादे फर्शवाले कमरे मे आने पर क्लाक को ऐसा लगा मानो जगल के शीतल वातावरण मे आ गया हो। यह सुदूर उत्तर से यहा लाई सदाबहार वक्षो की मजूषा जैसा प्रतीत होता था।

दरवाजे पर दस्तक हुई। एक सलोने ताजिक ने कमरे म प्रवेश किया, उसका चमकता हुआ चेहरा शात और सयत था। उसके पीछे पीछे सफेद पोशाक पहने एक रूसी लडकी आई। लडकी नुकीली ताजिक टोपी पहने हुए थी। लाल सनिको की टोपियो के कनपल्लो की तरह उसके चेहरे को घेरे सुनहरे बालो न उस एक अजीब सी सख्ती और सतकता प्रदान कर दी थी।

लडकी न अग्रेजी म बातचीत शुरू की

---

* गाव।

"यह साथी उर्तानायेव हैं, हमारी निर्माण परियोजना के उप मुख्य इजीनियर और पहले ताजिक सोवियत इजीनियर। मेरा नाम पोलोजोवा है—मैं एक टेकनिकल कालेज की छात्रा हू और साल भर के व्यावहारिक प्रशिक्षण-काय के लिए यहा आई हुई हू। फिलहाल मुझे आप लोगो के साथ अनुवादिका का काम करना है। अगर अपनी यात्रा के बाद आप बहुत थकान का अनुभव न कर रहे हो, तो साथी उर्तावायेव आपको हमारी निर्माणस्थली की स्थिति और उसकी मुख्य रूपरेखा से अवगत करा सकते है।'

'बेशक, बेशक,' क्लाक ने अपने अतिथियो के लिए स्टूलो को खीचकर और खुद पलग पर बैठते हुए शिष्टतापूवक कहा 'यहा के काम के बारे म कुछ भी जानकर मुझे बडी खुशी होगी। अभाग्यवश, यहा आने के पहले मुझे उसके बारे म बहुत मामूली रिपोर्टें ही मिल पाई थी।'

"असल बात यह है कि साथी उर्तावायेव आपको, मिस्टर "

"क्लाक।'

" मिस्टर क्लाक, इजीनियरो के कामकाजी सम्मेलन मे भाग लेने के लिए आमत्रित करन आये हैं। सम्मेलन दो घटे म शुरू होनेवाला है। निर्माण-काय की सबसे आवश्यक समस्याओ पर उसम विस्तार के साथ विचार किया जायेगा। साथी उर्तावायेव आपको यह आगाही देना चाहते हैं कि आप यह जानकर घबरा न जाइयेगा कि इस वक्त यहा क्या हालत है। अपने देश मे आपको शायद इतनी मुश्किल हालतो म कभी काम नही करना पडा होगा। निकटतम रेलवे स्टेशन से यह जगह एक सौ बीस किलोमीटर है और निकटतम घाट से सवा सौ किलोमीटर। और सडको की हालत बहुत ही खराब है। अब कही इस साल जाकर हम घाट तक छोटी लाइन बिछाना शुरू करनेवाले ह। फिलहाल परिवहन के एकमा साधन ह घाडे, ऊट और ट्रक, जो यहा की सडको पर बहुत जल्दी ह खराब हो जाते हैं।'

वह बडी जल्दी जल्दी और सुमधुर रूसी उच्चारण के साथ बात कर रही थी। उसकी बिलकुल कामकाजी लहजे मे कही बात को सुनते हुए क्लाक एक बिलकुल ही असगत बात मन म सोचने लगा कि उसकी छोटी सी उठी हुई नाक पर झाइया सुनहरी रेत के कणा की तरह लग रही है—अगर कही रूमाल को गीला करके उसे इस नन्ही सी नाक पर फिरा दिया जाये, तो शायद रूमाल पर सुनहरा पराग जम जायेगा।

"अगर आप इस बात पर गौर करे कि हम इन परिस्थितियो मे छब्बीस एक्स्केवेटर यहा पहुचाते ह—पनामा नहर पर आप जितने इस्तेमाल कर रहे थे, उससे ज्यादा,—तो आप कल्पना कर सकते हैं कि मुश्किल किस तरह की है।

"आपके दूसरे निर्माण कार्यों की जानकारी से मैं जान गया हू कि रूसी लोग असभव को भी कर सकते ह,' क्लाक ने शिष्टतापूर्वक कहा।

'यह रूस नही, ताजिकिस्तान है और यहा निर्माता रूसी नही, ताजिक ह। रूसी ताजिको की बस सहायता ही कर रहे है।"

क्लाक ने मन मे सोचा कि झाइयो से असल म उसके चेहरे की शोभा बढ नही रही है और साफ जिल्दवाली लडकिया ही हमेशा ज्यादा अच्छी रहती ह।

अमरीका म सभी सोवियत नागरिको को रूसी ही कहा जाता है, इसलिए मेरी गलती को कृपया माफ कीजिये,' उसने दिखावटी शिष्टता के साथ कहा, 'सोवियत सघ म कुछ समय रह लेने के बाद मैं निस्सदेह आपकी समस्याओ को ज्यादा अच्छी तरह समझना सीख लूगा। कृपया ताजिक इजीनियर से कहिये कि अमरीका मे रवाना होते समय मुझे यह मालूम था कि आपके लिए यहा अकेले—विदेशी पूजी की सहायता के बिना निर्माण कार्य करना शायद मुश्किल है और म आपके काम मे पूरी सहायता देने का यत्न करूगा।"

लडकी ने क्षण भर को क्लाक की तरफ गौर से देखा और मुडकर उसकी बात का ऊर्तावायेव को अनुवाद कर दिया। ऊर्तावायेव ने उठकर अमरीकी के साथ बडी गरमजोशी के साथ हाथ मिलाया। फिर दोनो खिलखिलाकर हस पडे। लडकी भी हसने लगी।

चलिये यह अच्छी बात है। हम लोग साथ-साथ काम करेगे। मुझे आशा है कि मुझे आपसे कुछ सीखने को मिलेगा।'

"उसे विश्वास है कि उसे सभी बातो की मुझसे बेहतर जानकारी है," क्लाक ने खीजते हुए सोचा। 'और जिस अनुग्रह भरे लहजे म वह मुझपर लेक्चर झाड रही है, वह तो बिलकुल बेजा है।"

वह इस निश्चय पर पहुचा कि झाइयो से तो उसका चेहरा निश्चित रूप से बिगड गया है।

ऊर्तावायेव से बात कहने के लिए एकदम उसी की तरफ घूमकर क्लाक

ने उसस निर्माण काय क बारे म ज्यादा विस्तार से बतलाने के लिए कहा– यह सूचना उसके अमरीकी सहकर्मिया के लिए समान दिलचस्पी की साबित होगी–और, जवाब क लिए ठहरे बिना वह बाकर और मर्री को बुलाने के लिए चला गया।

मिनट भर बाद वह मर्री के साथ लौट आया। बाकर न शेव किये बिना आने स इनकार कर दिया था।

ऊर्तावायव ने इस अदाज के साथ एक नील नकशे को खोलकर मेज पर रख दिया, मानो मेहमाना के आगे दस्तरखान बिछा रहा हो।

'कार द्वारा यहा आते समय आपको हमारी घाटी का अदाजा लग गया होगा,' पालोजावा अनुवाद कर रही थी 'जैसा कि आपन देखा होगा, यह दो पवत श्रेणिया क बीच फैला कोई दो लाख हक्टर क्षेत्रफल का एक विशाल रेगिस्तानी मदान है। आपका ध्यान इस बात की तरफ गया होगा कि मदान म प्राचीन सिचाई प्रणाली क निशान विद्यमान ह। जनश्रुति क अनुसार, सिकदर महान के समय यह सारी घाटी सिचित थी और खूब घनी बसी हुई थी। वख्श नदी यहा से कोई चार किलामीटर की दूरी पर पहाडा स घाटी म उतरती है और पचीस किलामीटर तक बिलकुल सीधी बहती चली जाती है। इसके बाद वह दक्षिण की ओर घूम जाती है और पज के साथ मिलकर आमू दरिया का निर्माण करती है

'हिमानी पहाडी नदी की पूरी प्रखरता के साथ बहता वख्श वष प्रतिवष अपने बाय किनारे की कुछ जमीन को बहा ले जाती थी और यहा क रहनेवालो की अरीक प्रणाली क मुख्य भाग का काट देती थी। आबादी को मजबूरन धीरे धीरे नीचे की तरफ हटते जाना पडा और मूल सिचाई प्रणाली के मुख्य भाग क लिए लगातार नई जगह चुननी पडी। इस समय घाटी की कुल दो लाख हैक्टर जमीन म स स्थानीय सिचाई-प्रणाली के अतगत सोलह प्रतिशत से ज्यादा जमीन नही आती है। सदिया के दौरान बाकी सारी घाटी धूप से जलती निर्जल मरुभूमि म परिणत हो गई है।

'पहाडा स घिरी यह घाटी जलवायु और ताप (७० से ८० डिग्री सटीग्रेट तक) के लिहाज स उत्तरी अफ्रीका और मसोपोटामिया से मिलती-जुलती है। सस्यविज्ञानी अर्तेमोव द्वारा किये प्रयोगो ने साबित कर दिया है कि मिस्री कपास की खेती के लिए यह इलाका बहुत अच्छा है। एक

4—336

चौथाई हैक्टर से शुरू करके दक्षिणी ताजिकिस्तान में मिस्री कपास की खेती का रकबा अब सोलह हजार हैक्टर से ज्यादा हो गया है। पूरी घाटी की दो लाख हैक्टर जमीन में से एक लाख दस हजार हैक्टर ज़मीन सींची जा रही है। इसमें से अस्सी प्रतिशत जमीन मिस्री कपास की खेती के उपयुक्त होगी, जो हम हर साल ५६० हजार टन से ज्यादा बढ़िया किस्म का रेशा देगी ,

क्लाक ने एकाग्रतापूर्वक अपनी आंख ऊर्तावायेव के जामुनी होठों पर टिका दी थी जिनसे मृदु अबोधगम्य शब्दों की एक धारा प्रवाहित हो रही थी। उसके चेहरे की बनावट का अध्ययन करने पर क्लाक को वे उभरी हुई एशियाई कपोलास्थियां नजर नहीं आईं, जिन्हें पाने की उस आशा थी। एक बार फिर उसने इस असामान्य चेहरे पर बारीकी से नजर डाली। यह तो कुछ गोलाई पाया हुआ और पारदर्शक सांवली वारनिश चढ़ा एक यूरोपीय चेहरा था।

इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इस समस्या का हल सोवियत संघ को विदेशों से कपास का आयात करने की आवश्यकता से पूर्णत मुक्त कर देगा, जिसके फलस्वरूप अब तक इस तरह खर्च होनेवाले सोने को पूरी तरह से हमारे भारी उद्योग में लगाया जा सकेगा। यही कारण है कि सोवियत संघ की सरकार ने हमारी समस्या को अपनी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों की योजना में शामिल किया है। इस विशाल प्रदेश को सींचने के लिए मैदान पर एक पैंतालीस किलोमीटर लंबी मुख्य नहर खोदना और सारे मैदान पर नहरों का एक जाल बिछा देना जरूरी है। इन नहरों की कुल लंबाई डेढ़ सौ किलोमीटर से ज्यादा होगी। मुख्य नहर का सिरा उस जगह से चार किलोमीटर की दूरी पर होगा जहां नदी पहाड़ों से उतरकर आती है। नहर चालीस मीटर चौड़ी होगी। उसके तल के अनुसार उसकी गहराई छः से अठारह मीटर तक होगी।

सड़क पर एक ट्रक धड़धड़ाता और अपने पीछे मोरपंख की तरह धूल उड़ाता हुआ निकल गया।

उड़ती हुई धूल चक्कर खाते हुए बरामदे भर में फैल गई और उसने खिड़की को धुएं जैसे बादल में आवेष्टित कर लिया

तो संक्षेप में यह कि संसार का सबसे बड़ा कपास उत्पादन केंद्र हमारे यहां स्थापित होगा। काम के परिमाण का अन्दाज़ा लगाने के लिए

एकाधिक मामला की जानकारी है, जिनमे विदेशी परामर्शी इजीनियरो न यह घोषित करत हुए गलती की है कि हमार निर्माण कार्या म फला फला काय निदिष्ट समय क भीतर पूरे नही किय जा सक्ते। इसलिए, जब मुझे यहा का मुख्य इजीनियर नियुक्त किया गया, तो म इजीनियर हाटन की राय स सहमत नही हुआ। मने कहा कि असाधारण कठिनाइयो क बावजूद दो हालतो म इस निर्माण काय का समय पर पूरा किया जा सकता है वशर्ते कि काम शत प्रतिशत यत्रीकृत हो और वशर्ते कि हमे आवश्यक परिवहन सुविधाए प्रदान की जाये ,

अधेरा घिरने लगा था। एक एकाकी बादल स्पज की तरह छायाओ को सोखता हुआ आसमान पर तेजी स सरक रहा था।

अभाग्यवश इस योजना का व्यवहार म कार्यान्वयन सुनिश्चित नही किया जा सका है। हमारे अखबारा न छब्बीस एक्स्कवेटरा के बारे मे रेगिस्तान को वशीभूत करन के मिशन को लेकर आनेवाली इस्पाती फौज के बारे मे लबे लबे और अथपूण लेख प्रकाशित किये मगर उन्होने इसके लिए बहुत कम ही किया कि ये एक्स्केवेटर रेलवे जक्शना पर पडे रहन क बजाय यथासभव कम से कम समय के भीतर हमारी निर्माणस्थली पर पहुच और हमारे लिए यह मुमकिन किया जाये कि हम उन्हे जरूरतमद जगहा पर पहुचा सके।

क्लाक न सब कुछ सावधानी क साथ अपनी नोटबुक म दज कर लिया।

खिसकते हुए कोहरे जसी कामल छायाए आगन पर सरकती हुई आ रही थी और लोगा क कडे चेहरा पर उनके गाला की दरारा जैसी रेखाओ पर चेत्वयाकोव के चश्म क काचा पर खाली प्याला क पदा पर बठन लगी थी।

चत्वेर्याकोव न खखारकर गले को साफ किया और अपन माथ को पोछा। उसक शब्दा के बीच क अवकाश म खामोशी आ गई—मच्छर के सगीत की तीखी थरथराहट जैसी गूजती खामोशी।

ट्रका और ट्रैक्टरा क अभाव की लदटू पशुओ स क्षतिपूर्ति की जा सकती है। इसक लिए ८७०० घाडे और ५००० ऊट होन चाहिए। बेशक हम इस स्थिति म नही हैं कि इतन सारे घाड और ऊट प्राप्त कर सक और किसी भी सूरत म हम यहा उन्हे खिला भी नही सकते। इस तरह हमारे यहा न कोई परिवहन सुविधाए हैं और न यत्रीकरण क्योकि

कल्पनातीत विलब के बाद हमे जो मशीनें प्राप्त हुई है, उह समय पर नियत जगहा पर नही पहुचाया जा सकता '

"लगता है कि हॉटन का कहना ठीक ही था।' बाकर ने जोर से अग्रेजी म कहा।

यह वाक्य पत्थर की तरह से आकर पडा। चेत्वेर्याकोव न अपन कान उठाये।

"अमरीकी इजीनियर क्या कह रहे थे? कृपया अनुवाद कीजिये।"

"इजीनियर-मुझे उनका नाम तो नही मालूम-शायद बाकर-कह रहे है कि आपके कहे से तो यही लगता है कि हॉटन का कहना ठीक था।

क्षण भर दुविधा की स्थिति रही।

मेरे सहकर्मी अमरीकी इजीनियर न मरे आशय को गलत समझा है," बाकर की दिशा में अपने चश्मे के काचा को घुमाते हुए चेत्वेर्याकोव ने कहा। 'यह भौतिक असभाव्यता का सवाल नही है, जैसा कि इजीनियर हॉटन ने कहा था-हमने इससे इनकार किया था और अब भी करते है। यह मात्र वस्तुगत कारणो के एक विशेष सयोग का प्रश्न है, जिसने इस तथ्य के बावजूद कि सिद्धातत कायभार पूरा किया जा सकता है, हमे उसे पूरा नही करने दिया है। कृपया अनुवाद कर दीजिए जी हा लेकिन शायद मशीनो के अभाव की पूत्ति शारीरिक श्रम से की जा सकती है? योजना के अनुसार, शत प्रतिशत यत्रीकरण की हालत मे हमे विभिन महीना मे चार से ग्यारह हज़ार मजदूरा की जरूरत है। यह न्यूनतम सख्या है। तुर्कसीब रलवे* के निर्माण मे इतने ही खुदाई काय के लिए चालीस हजार मजदूर थे। और हमारे पास इस समय कितने मजदूर ह? चार सौ अठारह! सबसे कम दवाव के महीनो म हमे जितनी श्रम शक्ति की ज़रूरत है, उसका केवल दस प्रतिशत! मै यहा इस श्रम शक्ति की किस्म के बारे मे कुछ नही कहूगा। मरे खयाल से यह एक अकेला आकडा इस बात को स्पष्टत दिखाने के लिए काफी है कि इस तरह की श्रम शक्ति से हमारे सामन जो समस्या है, उससे जूझना असभव है। और खामोश रहकर यह दिखावा करना भी असभव है कि हम इस समस्या को हल कर सकत ह।

---

*तुर्किस्तान साइबेरियाई रलव।

इसका मतलब होगा पार्टी को धोखा देना आर्थिक निकायो को धोखा दना सारी जनता को धोखा देना। हमे इस बात को साफ साफ कह देना चाहिए— बिना यत्रीकरण के बिना परिवहन साधना के बिना श्रम शक्ति के हम यहा सिचाई प्रणाली का निर्माण नही कर सकते।'

उसन गले को साफ किया और आवाज को उठाते हुए आगे कहा साथिया म इजीनियर हूं जादूगर नही। मै इस निर्माण-काय के लिए उत्तरदायी हूं और मैने यह बता दिया है कि इसे किन शर्तों पर पूरा किया जा सकता है। इन शर्तों म से एक भी पूरी नही हुई है। मौजूदा हालतो म हम जो अधिक से अधिक कर सकते ह, वह अगले वसत तक बीस हजार हैक्टर जमीन को सीचना है और सो भी केवल तब जब सबद्ध आर्थिक सगठन हमारे प्रति अपने उत्तरदायित्वो को पूरा कर।

विभिन्न विभागा के इजीनियरा ने आपस म एक दूसरे का बार-बार टोकते हुए सक्षप म अपनी अपनी बात कही। काफी गरमागरमी हुई दूसरा की नाका के नीच कागजो को नचाया गया। पोलोजोवा के लिए इस सब का अनुवाद करना मुश्किल हो गया।

क्लाव ध्यानपूवक सुन रहा था प्रश्न कर रहा था और आकडा को नोटबुक मे लिखता जा रहा था।

मिट्टी के तेल क दो लप लाकर मजा के किनारो पर रख दिय गये। उनक ऊपर मच्छरा की एक लबी कुडली मडराने लगी। लोग उन्ह यत्नवत अलग हटाते रहे चेहरा और गरदना पर बठ जाने पर धीरज क साथ मारत रहे। मच्छरा पर चोट करत उनके हाथा की लम्बी लम्बी छायाए मेजा पर चमगादडो की तरह उडती गायब होती फिर उडती और छलागें लगाती।

एक इजीनियर ने, जिसका नाम पोलोजोवा ने नमिरोव्स्की बताया, एक कागज को देखते हुए आकडा की एक लबी तालिका पढकर सुना दी। उसक बाद और लाग बोल। बात सभी ने एक ही कही मशीनें नही है फालतू पुरजे नही है मशीन अकल्पनीय धूल स खराब हो जाती ह और कुछ ही दिन काम करन क बाद मरम्मत क लिए भेजना पडता है मजदूरा क पास रहन को टग क क्वाटर तक नहा ह और व काम पर टिकत नही यहा का सफाई किसी काम की नहा कल एक पूरी का पूरा शिफ्ट न काम पर जाने स इनकार कर दिया था निर्माणस्थलिया पर पीन के पानी

का अभाव है, मलेरिया के मामले ज्यादा आम होते जा रहे हैं, निर्माण सामग्रिया नही हैं, पेट्रोल नही पहुचा है, आठ प्रतिशत योजना की पूर्ति कर दी गई है

"ठहरिये जरा मुझे बोलने दीजिये!" एक भारी भरकम आदमी ने उठते हुए कहा।

"यह हमारे निर्माण प्रमुख येरेमिन हैं," पोलोजोवा ने अमरीकियो को बताया।

"साथियो, आप जो कह रहे हैं, उसे सुनकर तो मुझे यही अचरज हो रहा है कि आप मे से किसी ने अभी तक यह प्रस्ताव क्यो नही पेश किया कि इस सारे निर्माण काय को ही बद कर दिया जाना चाहिए। किसी को धूल पसद नही है, किसी को गरमी पसद नही है, तो किसी को पीने को पानी नही मिल पाता। मेरी समझ मे नही आता कि मैनेजमट को पहले यहा एक्स्केवेटरो के बजाय वैक्युअम क्लीनर भेजने और निर्माणस्थली पर लेमोनेड बेचने की स्टाले लगाने का विचार क्यो नही सूझा! शरम आती है आप लोगो की बाता को सुनकर! चेत्वेर्याकोव ने कम से कम खुलकर तो कहा और जो वह सोचते हैं, वह तो बताया 'मुझे वे परिवहन सुविधाए नही दी गई हैं, जिनकी मने माग की थी और उनके बिना म काम नही करूगा।' खैर, आपकी शायद यह जानने मे दिलचस्पी हो कि हमे जो डेढ टनी पचास ट्रक दिये गये थे, उनमे से कितने सचमुच इस्तेमाल मे लाये जा रहे हैं? साथी चेत्वेर्याकोव ने उसके बारे मे कुछ भी नही कहा। उनमे से आधे वर्कशाप मे टूटे पडे हुए ह। हर तीसरे दिन एक ट्रक खराब हो जाता है। लगता है, जस ड्राइवरो ने आपस मे यह प्रतियोगिता शुरू कर रखी है कि कौन अपने ट्रक को सबसे पहले तोड सकता है। अगर हमारे पास यहा ढाई सौ ट्रक हो, तो हम काफी जल्दी टको का कब्रिस्तान खोल सकते '

"यह मैकेनिकल डिपाटमेट का सरदद है!'

'यह हम मे से हर किसी का सरदद है! चेत्वेर्याकोव कहते हैं कि हमारे पास काफी मजदूर नही ह—आवश्यक श्रम शक्ति का बस दस प्रतिशत है। और, भला, इस बीच कितने मजदूर हमे छोडकर चले गय हैं? आपने हिसाब नही रखा? अगर अपने मजदूरा की देखभाल करन का आपका यही तरीका है तो आप चार नही, चालीस हजार मजदूर

मगवा लीजिये मगर फिर भी हफ्ते भर के भीतर एक भी यहा नही रहेगा।'

उन्हे ढग का सामान दीजिये, फिर वे काम छोडकर नही जायेंगे।' क्या आपने उनके लिए ढग की रिहाइशी जगह बनाने की बात को कभी सोचा भी है? आप मे से हर किसी को यहा आने के पहले इस बात का तो पूरा ध्यान था कि तीन तीन बार यह कसम खिलवा ले कि उसे यहा क्वाटर मिलेगा।

'तिरपाल दीजिये हमे! तिरपाल नही है, खेमा को किस चीज से ढाका जाये।'

अगर तिरपाल नही है तो सरपत तो है। इसका क्या कारण है कि दूसरे सक्शन ने तो मिट्टी और सरपत से बारक बना डाली मगर पहले सक्शन के इजीनियर साथी अभी तिरपाल का ही इतजार कर रहे हैं?'

रूसी मजदूर मिट्टी के झोपडो मे नही रहना चाहते। वे खेमे मागते है।

जब तक हमे खेमे नही मिलते, उन्हे झोपडो मे ही रहना पडेगा। आदमी को आराम करने के लिए जरा सी छाया चाहिए पर आप उन्हे धूप मे भूनते है। और ताजिक मजदूर? बहुत से गैर रूसी मजदूर भी यहा भेजे गये है।

ऐसे मजदूरो से अरीक की खुदवाई की जा सकती है नहर नही। और वे भी यहा नही टिके।

नही टिके? अपनी जगह मे उर्तावायेव ने टोका 'मुझे मालूम है कि उन्हे क्या-क्या भुगतना पडा था। आपके पास ताजिक कोम्सामोली* भेजे गये थे और आपने उनसे गधे हकवाये और पानी खिचवाया।

तो क्या हुआ! वे और किसी काम के लायक थे ही नही और क्या। और पानी भी तो जरूरी है ही। हमने तो उन्हे आसान काम दिया था और वे इसे भी छोडकर भाग गये।

कोम्सामोलियो को यहा कुछ सीखने के लिए भेजा गया था। अगर वहा आपका यह ख्याल है कि आप ताजिको के बिना नई सिचाई प्रणाली

---

* युवा कम्युनिस्ट सघ (कोम्सोमोल) के सदस्य।

का निर्माण कर सकते है, तो आप जहा अब है, उससे ज्यादा प्रगति नही कर सकते।"

"सुनो, ऊर्तावायेव, अपना यह जातिवाद यहा मत घुमाओ," येरेमिन ने टोका, "यह निमाणस्थली है, स्कूल नही।"

'हम म से कौन जातिवादी है, यह अलग सवाल ह। आप ताजिकिस्तान मे निर्माण काय कर रहे ह और इसमे कुल अठहत्तर ताजिक मजदूर काम कर रहे है। यह बात मास्को मे बताइयेगा, तो कोई इस पर यकीन तक नही करेगा।"

"अच्छा, क्या मैंने सभी जिला से मजदूर नही मगवाये थे? मने एक लाख रूबल सभी जिला को भेजे थे और उसका नतीजा क्या निकला? पैसा सब खच कर दिया गया पर बदले मे मजदूर कोई नही भेजे गये।"

तो क्या तुम्हारे खयाल म मजदूरो का भेडो की तरह एक रूबल फी अदद के हिसाब से जमा किया जा सकता है? क्या जो लोग स्वय आये थे आपने उन्ह सब कुछ समझाने के लिए उनमे किसी भी तरह का कोई काम किया? क्या आपने उन्ह यह समझाया कि यह उन्ही का काम है, कि यहा की अठहत्तर फी सदी जमीन सामूहिक फार्मों के लिए होगी? किस दहकान को यह बात मालूम है? व सब यही समझते है कि जमीन को राजकीय फाम ले लेगे, कि यह सरकारी जमीन बन जायगी। और क्या आपने उनके लिए कोई सराफार दिखाया है? आपके फोरमना के पास बस चिल्लाने और गालिया देने को ही वक्त है—जहा तक समझान और सिखाने का सवाल है उसके लिए उनके पास बिलकुल भी फुरसत नही। है, तो बस एक ही नारा है—रफ्तार! तो देख लो अपनी रफ्तार को अब! अगर तुम दहकानो पर चीखो चिल्लाओगे, तो वे नही टिकेगे। य बाते उन्हे अमीर के जमाने मे सहन करनी पडती थी, लेकिन अब, जब सत्ता उन्ही की है, वे इन बातो ता नही पसद करते और उनका न पसद करना ठीक भी है।"

"तो तुम क्या चाहते हो कि हम उनसे फ्रेंच म बात कर? अरे, छोडो भी, उर्तावायेव! मजदूर को वह सब मिलना चाहिए जिसका वह हकदार है और हम उससे वह सब मागना चाहिए जिसके हम हकदार ह। अगर तुम अपना काम नही जानत, ता अपनी आखो से देखो और सीखो।'

'लेकिन क्या तुमने स्थानीय मजदूरो के लिए एक भी प्रशिक्षण श्रम शुरू किया है? अगर तुमने किया होता, तो आज तुम्हारे पास प्रशिक्षित कर्मी होते। यह तुम अपने नही उनके शब्दो को अपने मुह से निकाल रहे हो ऐसे मजदूरो से तो अरीक भी बनवाई नही जा सकती।' और प्राचीन सिचाई प्रणाली जिसका हम आजकल उपयोग कर रहे है, उस किसने बनाया था? मास्को के इजीनियरो ने? यह सब बकवास है। और य सम्मेलन भी किसी काम के नही है। शुरू से ही काम को ठीक से सगठित करो स्थानीय मजदूरो के कर्मीदल बनाओ, फिर तुम्हारी योजनाए अधूरी नही रहेगी। लेकिन अगर तुम ऐसा नही कर सकते तो चेत्वेर्याकोव क प्रस्ताव के हक म ही मत दे दो और रफ्तार को कम कर दो। कुछ भी हो तुम वसत तक बीस हजार हैक्टर जमीन को भी नही सीच पाओगे।

ऊर्नाबायेव उठा टोपी को आगे माथे पर खीच लिया और प्रकाश के घेरे के बाहर निकल गया।

बहुत हो ली तुम्हारी लक्चरबाजी। उसके पीछे येरेमिन न चिल्लाकर कहा औरो को सिखाना शुरू करने के पहले खुद कुछ और सीखो लेकिन निर्माणस्थली की हालत है शरमनाक – इससे इनकार करने म कोई तुक नही। और इसका दोष सबसे पहले इजीनियरी और टेक्निकल स्टाफ पर है।

वाह क्या बात कही है।

मशीन नही भेजी गई – यह क्या हमारा दोष है?

पटरिया नही है – यह क्या हमारा दोष है?

हम पैट्रोल नही मिल रहा है – यह भी क्या हमारा दोष है?

अगर आपको हमारे काम से सतोष नही तो हम निकाल दीजिये और बहतर इजीनियरो को रख लीजिये।

म आपको निकाल दूगा, साथियो बस, पहले मैं आप मे से कुछ पर मुकम्मा चलाना चाहता हू।

इस तरह हम डराओ मत।

तो जो बात भी गलत हो जाय उसका दोष इजीनियरो के ही मत्थे पडेगा। फिर मैनेजमट का क्या दायित्व है?

'मैनेजमट का दायित्व यह देखना है कि आप अपना काम ठीक

तरह से करे। क्या आपका यह खयाल है कि मैनेजमेंट यह नही देखता कि आप किस तरह काम करते है? वह सब कुछ देखता है। श्रम ब्रिगेडो को रोज क्या खाली बैठे रहना पडता है? क्योकि टेक्नीशियन लोग काम पर मजदूरो के बाद पहुचते हैं, जब कि उनका वहा शिफ्ट के शुरू होने के बीस मिनट पहले पहुचना अनिवार्य है। आप मे से कौन प्रतियोगिताम्रो के परिणामो की जाच करता है? आप लोगो मे क्या एक भी ऐसा है, जिसके पास काम के सही सूचक हो? और जिस अनुचित तरीके से पगार दी जाती है उसकी जिम्मेदारी किस पर है?"

'खैर, कुछ भी हो यह हमारा नही एकाउटसवालो का काम है!'

"इसकी क्या वजह है कि मजदूरो को दो महीने की पगार नही मिली है? कौन ऐसी हालतो मे काम करने को तैयार होगा? एकाउटसवालो का दोष है, न? और आप उन्हें अपने बिल कब बनाकर देना शुरू करते हैं? मजदूरो को अपनी पगार हर महीने के पहले पाच दिनो मे मिल जानी चाहिए, लेकिन आप तो आधा महीना बीत जाने तक रेट तय करना भी शुरू नही करते। यह तो अनुचित ढग से भी गई गुजरी बात है—यह तो सीधा विध्वस है! और साथी नेमिरोव्स्की, आपसे तो मैकेनिकल डिपार्टमेंट के बारे मे मुझे विशेष ज्ञात करनी है।'

येरेमिन ने अपना हाथ मेज पर जोर से पटका। प्याले खनखना उठे और चौंके हुए मच्छर लैंपो के ऊपर काजल के कणो के बादल की तरह चक्कर काटने लगे।

सौजन्यपूर्ण चेतावनी

इस तूफानी सभा के बाद घर लौटते समय क्लाक का पैर अचानक चिनार के एक बडे पेड के नीचे पडी किसी लबी सी चीज पर जा पडा और वह मुश्किल से ही गिरते गिरते बचा। बारीकी से देखने पर पता चला कि वह चीज असल मे पट के बल जमीन पर पडे एक आदमी का शरीर है। उसकी पीठ पर कमर के पास एक कटार की चमकती हुई मूठ निकली हुई थी।

क्लाक सिर से पैर तक काप गया। कही बासमची तो नही आ गये? शहर मे ही? या यह कबायली प्रतिशोध का कोई स्थानीय रूप है?

वह समझ नहीं पाया कि क्या करे। किसी को बुलाये? आसपास न आदमी था, न आदमजाद। आसमान की काली छत में मखमल की काली पोशाक में लगे सलमे की तरह दीर्घकेशी उष्णकटिबंधीय तारे झिलमिला रहे थे।

ज़मीन पर पड़ी आकृति के ऊपर झुककर उसने उसकी कमर को छुआ। चमकती हुई मूठ खड़खड़ाती हुई ज़मीन पर लुढ़क गई। आश्चर्यचकित क्लाक ने उसे हाथ लगाकर देखा और अचानक हँस पड़ा। जिस चीज़ को उसने कटार की मूठ समझा था, वह पतलून की जेब से बाहर निकली हुई वोदका की बोतल थी।

क्लाक आगे चल दिया। इस सारी घटना से उसे सचमुच मज़ा आ रहा था— किसी अद्भुत अनूठा रहस्यपूर्ण उत्तेजना की खोज में पहली भूल और तत्क्षण भ्रांति भंग। उसे फुर्तीले अफ़गान घोड़ों पर पहाड़ों को पार करते बासमचियों के बारे में सुने किस्सों की याद हो आई और वह मन ही मन मुसकरा उठा। सारी बात किसी सांगीतिक सुखांतिकी जैसी अतिरंजित प्रतीत होती थी।

वह बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ा, कुंजी लगाकर अपने कमरे का दरवाज़ा खोला और बिजली जलाई। अपने कमरे के भीतर आने के बाद ही उसने अपनी यात्रा की सारी संचित थकान को अनुभव किया। वह जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगा। उसने अपना कालर उतारा और उसे मेज़ पर फेंक दिया। मेज़ पर बिलकुल बीच में एक कागज़ रखा हुआ था, जिस पर कोई चित्र बना हुआ था। क्लाक ने झुककर उसे ध्यान से देखा।

कागज़ पर चित्र मामूली पेंसिल से बनाया गया था—[illegible], मगर एकदम साफ़। उसमें एक ट्रेन दिखाई गई थी। ट्रेन के बराबर एक जहाज़ था और दाईं तरफ़ कई ऊँचे ऊँचे मकान थे। मकानों के ऊपर लैटिन अक्षरों में एक शब्द लिखा हुआ था "अमरीका"। चित्र के ऊपर एक लंबा तीर बना हुआ था, जो ट्रेन और जहाज़ की दिशा दिखा रहा था और 'अमरीका' शब्द पर जाकर ख़त्म हो गया था। नीचे की तरफ़ एक [illegible] खोपड़ी और एक दूसरे को काटती दो हड्डियाँ बनी हुई थीं।

क्लाक ने चित्र का देर तक और ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। प्रत्यक्षतः जिस हाथ ने यह चित्र बनाया था, उसने अपनी उँगलियों में पेंसिल पकड़ना कम ही पकड़ा था। फिर भी चित्रलिपि का मतलब काफ़ी साफ़ था।

मतलब था 'फौरन वापस चले जाओ और अगर तुम नहीं गये तो हम तुम्हारा काम तमाम कर देंगे।

एक बार फिर क्लाक सिर से पैर तक काप गया। उसने कमरे म चारो तरफ नजर दौडाई। जब वह गया था, तब मेज पर कोई पत्र नही पडा हुआ था। दरवाजे का ताला बद कर दिया गया था। उसने खिडकी पर जाकर उसे हाथ से धकेला। उसमे भीतर से सिटकिनी लगी हुई थी। क्लाक ने कमरे पर एक नजर और दौडाई। फिर उसने झुककर पलग के नीचे निगाह डाली और उसके बाद मेज के नीचे।

उसने चित्र को फिर उठाया और किसी कारण उसे रोशनी के पास ले जाकर देखा। फिर उसने जेब से एक रिवाल्वर निकाला, उसके सेफ्टी कैच का जाचा और उस स्टूल पर रख लिया। इसके बाद उसने खिडकी की एक बार फिर बारीकी स जाच की। इस बात की तरफ से आश्वस्त हो जाने क बाद कि वह अच्छी तरह से बद है, वह पलग पर लेट गया और एक सिगरेट जलाकर पीने लगा। उसकी अनुपस्थिति मे कोई आदमी खिडकी या दरवाजे म होकर कमरे मे नहीं आ सकता था। एक ही सभावना और हो सकती थी कागज उनमे स किसी व्यक्ति ने मेज पर रखा हो, जो उसकी मौजूदगी मे कमरे म आये थे और उसका इसकी तरफ ध्यान न गया हो। कमरे म सिर्फ तीन लोग आये थ। मर्री? असभव। पालोज्रोवा? असभव। ऊर्नायेव?

क्लाक ने सिगरेट को खत्म किया, रिवाल्वर को तकिये के नीचे रखा, जल्दी-जल्दी कपडे उतारे, बत्ती बुझाई और सिर पर चादर खीचते हुए पलग पर पड गया। मगर उसे नीद खराब आई—मच्छर बहुत तग कर रहे थे।

अमरीकी ने भाषण दिया

नफीरिया के विषादमय सगीत और डफलिया की बधी हुई थापा से उसकी आख खुल गई। बाहर बाजा बज रहा था। क्लाक उछलकर पलग पर से उतर गया और खिडकी को धडाक से खोल दिया। चश्मे के पानी की तरह ताजा हवा उसके चेहरे पर से नीद के पतले जाला को बहाकर ले गई।

एक अजीब सा जलूस सडक पर चला आ रहा था। सबसे आग दो छोटे छोटे गधो पर धारीदार चागे पहन दो दहकान थे। दाना ने एक लाल पताका के एक एक डडे को थाम रखा था। उनके पीछे उन्ही की तरह गधो पर सवार रग बिरगे कपडे पहन दहकाना का एक लबा जलूस था। गधे अपनी चूहा जैसी दुमो को झटकते बडे नखरे के साथ चले जा रहे थे। उन पर बैठे लोगो के पैर जमीन को करीब-करीब छू ही रह थे। अपने फूले हुए बहुरगी चोगा विवण पगडियो और मली टोपिया म व बडे शानदार और बोझिल लगत हुए मानो ज़मीन पर तरते हुए चले जा रहे थे।

पताका थामे दोना सवारो के पीछे जलूस क आगे आगे चार बाजेवाले थे। वे लबी और पतली नफीरिया बजा रहे थे और नफीरियो से एक थरथराती हुई अनुनासिक-सी आवाज़ निकल रही थी। किनारेवाला आदमी हडिया जसी डफली पर तालबद्ध थापे लगा रहा था।

बाजेवालो क आगे आग जलूस की तरफ मुह किये और अपन पैरा स नाच की जटिल गतियो को गटता हुआ बेल-बूटेदार रूमाल स फटे पुरान चोगे को कमर पर बाधे एक नतक चल रहा था। चोग की ढीली आस्तीनो म नतक की आडी फली चचल बाहो की हथेलिया नीच की तरफ थी। एक हाथ कुहनी पर मुडा हुआ था और दूसरा हलके स हवा म थिरक रहा था और नफीरिया क स्वर के उतार चढाव क साथ-साथ मुड और झूम रहे थे। नतक का कसला चहरा हवा म शात और निश्चल तर रहा था मानो उसके सिर के ऊपर कोई मामूली सा टोपी नही बल्कि पानी भरा अदश्य पात्र टिका हुआ है।

क्नाव कुछ देर खिडकी क पास ही खडा दूरी क साथ साथ हलक होत जाते इस विचित्र सगीत को सुनता रहा।

जब सगीत का आवाज़ का सुन पडना बिलकुल बद हो गया तब ही जाकर उसन अपनी घडी पर निगाह डाली और यह दख कि साढे पाच बज चुके ह जल्दी-जल्दी कपडे पहनना शुरू किया। उसन मज पर स चित्रवाल कागज को उठाया, उस मोडकर अपन बटुए म रखा और नाश्ता करन के लिए खाने क कमरे म चला गया।

जब वह लौटकर आया तो बरामदे क बाहर एक कार खडी हुई थी। सान्यिा पर पानाजाना उसका इतज़ार कर रही था।

"मैं तो समझी थी कि आप अभी सो ही रहे होंगे, लेकिन लगता है कि आपने तो नाश्ता भी कर लिया है। चलिये, आपको लेने के लिए कार आ गई है।"

"एक मिनट के लिए माफ़ कीजिये,—मैं जरा लपककर अपने कमरे से एक नोटबुक और अपनी जरूरत की और चीजें ले आऊं।'

उसने अपना सूटकेस खोला, एक नोटबुक और एक सफेद टोप निकाला और सूटकेस को बद करके टोप को पहन लिया।

"सुनिये," उसे मोलोजोवा की आवाज सुनाई दी—वह खिडकी पर टिकी हुई खडी थी, "अगर आप एक साथी की सलाह मानें, तो इसे मत पहनिये। इसे यही रहने दीजिये और इसकी जगह मामूली टोपी पहन लीजिये।"

"लेकिन भला क्यो?" क्लार्क ने हैरानी से पूछा।

"बेशक, है तो यह मामूली सी बात, मगर ये टोप एक विशेष राजनीतिक अर्थ रखते हैं। सीमात के उस पार, भारत मे ये 'साहबो' को 'देसी आदमियो' से अलग करते है। हमारे देश म ये आख के काटे की तरह खटकते है। यहा हम सभी ताजिक टोपिया ही पहनते है। वे कही ज्यादा स्वाभाविक और हलकी होती ह और ज्यादा व्यावहारिक भी हैं। आप चाहे, तो कल ही म आपको एक मगवा दूगा।"

क्लार्क की उलझन को देखकर उसने जल्दी से जोडा

"कृपया बुरा मत मानिये। आप चाह, तो अपना टोप पहन सकते हैं। मैं तो एक मित्र के नाते आपको बस यह आगाह करना चाहती थी कि मजदूर इसकी तरफ सदेह से देखेंगे—उन्ह हमारे इजीनियरो और अधिकारियो को करीब करीब अपने जसे ही कपडो म देखने की आदत है।"

क्लार्क ने मामूली टोपी पहन ली, खिडकी को बद किया, कमरे के दरवाजे का ताला लगाया और कार म बैठने के लिए आ गया।

"खेद की बात है कि आपने आज सामूहिक कृषको को राजकीय फाम पर हशर* से नाच और गाने के साथ लौटते हुए नही देखा। सचमुच देखने लायक नजारा था वह।"

"जी, देखा था उन्हे मने। सचमुच, बहुत सुदर लगा था। सगीत

---

*सामूहिक श्रमदान।

बहुत निराला था—भारतीय सपेरा के गाना स काफी मिलता जुलता। नाच भी एकदम अपूव था।'

अरे, गोली मारिये सगीत को जी माफ कीजिये मरा मतलब यह नहा था मैं सिफ यह कहना चाह रही थी कि यह तो उसका बाहरी रूप ही था, तत्व नही। यह उसका मोहक अश है जो सभी यूरोपीया के ध्यान का आकर्षित करता है। क्या आप जानत ह कि हशर क्या होता है? दूर दूर क किशलाका क किसान राजकीय फाम पर काम मे हाथ बटाने आय थ। उन्हे अपनी महनत की उजरत दी जा रही थी, मगर उन्हाने इनकार कर दिया। उन्हान कहा कि बदले म जिला अधिकारी उनके यहा स्कूल बना दें। और उन्हाने गोडाई और फसल की कटाई—दोना म मन्द देन क लिए आन का वादा किया है। समझते है आप कि एक ऐस देश म जहा १९२६ तक दहकाना का अधिकाश अमीरा ग्रार मुल्लाग्रा के ही साथ था यह सचमुच एक क्राति है।

बेशक, यह बहुत दिलचस्प बात है

पालोजोवा चुप हो गई। कार मदान को तेजी स चीरती हुई उस पहाडी श्रेणी की तरफ जा रही थी, जो जैस उनकी अगवानी करन क लिए उठ रही थी। हलक नीले कुछ कुछ बेरग आसमान की पष्ठभूमि म जिस पर वादल का एक भी कतरा नहा था पहाड एस लग रह थे, मानो गत्ते की बनी सजावट हा। पहाडा की तलहटी म प्लाइवुड का बना छोटा सा शहर था—लकडी की कुछ बारक, टेढी मेढी खिडकिया वाल तिरपाल क कुछ टीलेनुमा खेम और टूटे हुए बाडी वाला एक टक।

केंद्रीय बारक की तरफ आत जाते और उसक चारा ग्रार घूमत लागा की एक खिसकती हुई भीड थी, जा बाहर म रपन म बडा अनूठी लग रही थी कमर पर सुनकी क कमरबदा स बध चिकट कमीजें पहन कुछ ता कुछ मिरजइया और लाल-स ऊच बूट पहन लवा चौडा दाढिया वाल रूसी किसान हलकी नीला, लाल और हरा बनियाइन पहन धूप स सवलाये आदमी जिनम स कुछ रूसी, ता कुछ ताजिक टापिया पहन हुए थे और कुछ न मक्सिकाई टापा जस बडे-बडे टाप लगाये हुए थ टापिया और चोग पहन रग बिरग ताजिक छोट छोट जाघिये पहन अनिश्चित जातिया क लाल खाल वाले आदमी जिनक शरीर एस लग रहे थ माना उनको पाना म भुनम गय हा। निरपाल क ऊच बूट और मुडा हुई

"तरेलनिन और कुस्तत्सोव की टोलियां काम पर नहीं गई।"
क्या ?

'वे कहते हैं कि तम्बाकू का राशन उन्हें तीन दिन से नहीं मिला है। तम्बाकू नहीं होगा, तो काम भी नहीं होगा।"

उनसे कहिये कि हमें तम्बाकू कल या परसों मिलेगा। उन्हें बताइये कि स्तालिनाबाद से सामान अभी पहुंचा नहीं है। अरे आपको खुद मालूम होना चाहिए कि क्या कहा जाये। मेरे पास इस तरह की छोटी छोटी बातों को लेकर क्यों आते हैं '

मैं उनसे बात कर चुका हूं, उन्हें समझा चुका हूं, पर यह सब ईंट की दीवार से बात करने के बराबर है। उन्होंने कल ही पैर पटकना शुरू कर दिये थे काम पर नहीं जाना चाहते थे मगर मैंने उन्हें समझाया, वादा किया कि आज तम्बाकू मिल जायेगा। और अब तो वे मेरी बात भी सुनने को तैयार नहीं हैं। कहते हैं हमें वादे नहीं चाहिए! हमें तम्बाकू दो, वादे नहीं! वे टस से मस नहीं होंगे। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं।

अच्छा आप मुझसे क्या चाहते हैं? मैं तम्बाकू कहां से ला सकता हूं? यरमिन से जाकर मांगिये।

तम्बाकू है ही नहीं—एक पैकेट भी नहीं। मैं पहले ही सब कहीं ढूंढ चुका हूं।

लेकिन इसमें मैं क्या कर सकता हूं?

जी उन्हें काम पर तो भेजना होगा ही! साथी इंजीनियर आप उनसे बात कीजिये। शायद वे आपकी बात मान लें।

ठीक है चलिये। मेरे साथ आइये, बेलमासोव ने पानोजोवा और कनाक की तरफ मुड़ते हुए कहा, 'अभी किसी को देखता हूं जो आपको आपके विभाग में पहुंचा देगा।"

चारों उस भीड़ भरे कमरे से किसी तरह निकल आये और रिहायशी बारकों की तरफ चल दिये।

तत्तीय उन्हें जिस बारक में ले गया, वह टागा पर टंगे कपड़ों की दुर्गंध से भरी हुई थी। कोई साठ मजदूर दोनों ओर के साथ लगे तख्तों की खाटों पर बैठे या लेटे हुए थे। बारक के बाहर से एक खुले पर से मशीनियन के इंजन की भारी आवाज आ रही थी।

है, जो यह कहती हो कि मैनजमेट तबाकू की सप्लाई करने के लिए बाध्य है।'

'तो वह ठीक से तैयार नही किया गया था और क्या। यह धारा होनी चाहिए थी" एक लाल दाढीवाला आदमी बोला।

दखा, हमारी सहत का इह कितना खयाल ह। पिछल हफ्ते हम चाय नही दी गई थी—वह भी नुक्सानदेह ही है। थाड ही दिनो क भीतर ये सयाने कहने लगगे कि मजदूर के लिए खाना खाना भी नुक्सानदह है।"

कोने म बठे अकाडियनवादक ने एक ललकार भरी धुन छेड दी।

'सूअर ह ये मजदूर नही।' तेप्लीख ने कुछ अपने को और कुछ चेत्वर्यानोव को सुनाते हुए कहा।

मैनजमेट आपको खान की सप्लाई के लिए बाध्य है और यह वह करता है। आज तक एसा एक बार भी नही हुआ कि जब आप विना खान क रहे हा। अगर मैनेजमट न आपकी सनका पर चलना शुरू कर दिया होता और आपके लिए खान की जगह तबाकू लाना शुरू कर दिया होना तो आपको आज खाने क लिए कुछ न मिला होता। मेरे खयाल म इस मामले पर बहस करना उचित नही है। आम सभाआ म आपको सप्लाई प्रणाली क सभी दापा के बारे म अपनी राय दन का मौका मिलेगा। यह काम का वक्त है और आप सब का फौरन काम पर चल जाना चाहिए।

हमस बात मत करो। नीली वनियाइन पहने आन्मी विषान्पूण स्वर म बुदबुनाया। दा हम तबाकू और हम जाते ह काम पर।

और जब तुम तवाकू पीते ही नन्ग तो यह कस कह सकत हा कि मजदूर का उसकी जरूरत है भी या नही?

सारी वाग्क ठहाका म गूज उठी।

अकाडियनवादक न विजयात्नास क साथ अपन बाज पर सगीत की एक पूरी धुन न्ग बजा न्गी।

क्या हा रहा है यहा,' न्रवाज स एक गरजना ह्ग आवाज आयी। यरमिन न्रवाजे म खडा हुआ था।

चत्वयारान माधा उसक पास चना गया।

'मजदूर बडबडा रह ह। न्न्ह तबाकू नहा मिला है इसलिए व काम पर नन्ग जा रह ह। मा उन्ह समयान की काशिश का मगर व

बात सुनते ही नही। शायद आप इनके दिमाग को ठिकाने ला सके निकोलाई वसील्येविच? आप इन लोगो से बात करना जानते है। और मेरी दफ्तर मे जरूरत है ,

जवाब का इतजार किये बिना चेत्वर्यांकोव बारक से चला गया।

तो, क्या हो रहा है यहा? येरेमिन ने गरजती आवाज मे फिर पूछा।

अर्कादियन खामोश हो गया।

यह तुमने क्या शरारत शुरू कर रखी है? काम पर नहा जाओगे? कामचारी करोगे? कुलको के पिछलग्गू उकसाना दे रहे है, है न? और तुम भेडो की रेवड की तरह निर्माण-कार्य के खिलाफ जा रहे हो, सोवियत सत्ता के खिलाफ जा रहे हो? अगर तुम्हे तबाकू नही मिलेगा तो तुम काम नही करोगे, क्या?

"हा नही करेगे। अगर तुम तबाकू नही दोगे तो हम काम नही करेगे।

तो, वहा न अभी तबाकू नही है। सभी तो फूक दिया है सबने। तुम्हे कहा से लाकर दू?

देखो आसपास—कही मिल ही जायेगा।

और मुझे कहा देखने का तुम हुक्म दे रहे हो?

अपने ही फ्लैट मे देखो—शायद एकाध बक्सा सिगरेट मिल जाये।

हम कोई ऐसे निगडल नही है सिगरेट से भी हमारा काम चल जायेगा।'

येरेमिन का चेहरा गुस्से के मारे लाल हो गया।

"आफ तुम तुम सब को तो धक्के देकर निकाल देना भी नाकाफी ही रहेगा।'

'ऐसी जल्दी मत करो हम अपने आप चल जायेंगे।

हम काफी काम कर चुके। अब औरो को भी कर लेने दो।"

"तुम एक पैकेट तबाकू के पीछे सोवियत सत्ता के साथ विश्वासघात कर सकते हो।' येरेमिन चिल्लाया, 'हम मोर्चे पर श्वेत गार्डियो से लडते समय तबाकू न होने पर शाह बलूत की पत्तिया पिया करते थे।

तो पहले शाह बलूत के कुछ पेड लगा दो यहा और हम काम चला लेगे। मगर अभी तो दिन मे चिराग लेकर ढूढने पर भी

पत्ती भी नही मिलेगी। तुम क्या चाहते हो कि हम ऊट की लीद की सिगरटे बनाकर पियें ? '

आया एक कृषि विशारद
ऊट की लीद ले जान
मिला न उसका ढेला पत्थर
फूक गये थे सब सिगरट दीवान

अकाडियनवाल्क न हर्षोल्लास के साथ नया गीत शुरू कर दिया।

पूरी वारक न जार जोर से ठहाका मारकर उस शावाशी दी। उत्साहित हाकर अकाडियनवाल्क न और भी ऊची आवाज म अगली कडी को शुरू कर दिया।

कनाक जा दरवाजे पर ही खडा था इस सारे काड का एक मूक साक्षी था।

आप शायद यह अचरज कर रहे हैं कि यहा क्या हो रहा है? पोलोजोवा न उसकी ओर मुडते हुए कहा। आपके सैक्शन के मजदूरो को तवाकू नही मिला है इसलिए वे काम पर नही जा रहे हैं।

क्या य उमी सक्शन क मजदूर हैं जिसम मुझे काम करना है?"

जी हा। पहली ही मुलाकात के समय ऐसा होना कितनी अप्रिय वात है।

कनाक ने अयमनस्कता स वालो म उगलिया घुमाइ। यहा आते समय ही उसन इस बार म काफी सोचा था कि अपने नीचे काम करनेवाले मजदूरो से आवश्यक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का सबसे विश्वस्त तरीका क्या हो सकता है उनके साथ साथियो जैसे व सबध कसे स्थापित किये जाय जो इस देश म व्याप्त प्रतीत होते हैं। इस अप्रत्याशित दुघटना न उसकी सारी सुविचारित योजनाओ को गडवडा दिया था और, इसके विपरीत कोई उपयुक्त प्रयास करके एकदम मजदूरो का समथन प्राप्त करने का एक अनपेक्षित अवसर पैदा कर दिया था। अगर वह इस समय निश्चय रूप कोई गरमागरमी वात नही करता है, तो ऐसा दूसरा अवसर जल्दी मुश्किल स ही मिल पायगा।

उसने मुडकर पोलोजोवा स पूछा

"सुनिये अगर म इनस वात करने की कोशिश करूं तो क्या रहेगा? य लोग इस लिए य मरे मातहत क ही मजदूर ?"

"आप ? हां, विचार तो यह बुरा नहीं है ... साथी येरेमिन, मिस्टर क्लार्क अपने सेक्शन के मजदूरों से खुद बात करना चाहते हैं। शायद इससे असर पैदा हो। आपका क्या खयाल है ?"

"कौन अमरीकी ? हां हां ठीक है। कोशिश करने दो उन्हें।"

"हां, मिस्टर क्लार्क बोलिये आप। यह बड़ा अच्छा विचार है।"

पोलोजोवा आगे आकर कहने लगी

"साथियो, इंजीनियर क्लार्क अमरीका से हमारी निर्माणस्थली पर आये हैं और वह यहां पहले सेक्शन में काम करेंगे। वह कुछ कहना चाहते हैं और आपसे अपनी बात सुनने का अनुरोध कर रहे हैं।"

अकार्डियन बजना बन्द हो गया।

मजदूर उठ उठकर खाटों पर बैठ गये जो लोग कमरे के दूसरे छोर पर थे वे पास आ गये और नीचे पहने इस आगन्तुक को ध्यान से देखने लगे। बारक में खामोशी छा गई।

"बोलिये..." पोलोजोवा ने क्लार्क को इशारा किया।

क्लार्क ने घबराहट में खखारकर गला साफ किया और आवाज को उठाये बिना अंग्रेजी में कहा

"मजदूरो, मैं जानता हूं कि धूम्रपान करनेवाले का जीवन तबाकू के बिना बड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन आपके काम न करने से भी मामला कोई सुलझेगा नहीं। इससे तबाकू मिलेगा नहीं और काम भी रुक जायगा। समझदारी की बात कीजिये और मैनेजमेंट के लिए परेशानियां मत पैदा कीजिये। कल मैंने एक सम्मेलन में भाग लिया था, जिसमें परिवहन के प्रश्नों पर विचार किया गया था, और मैं जानता हूं कि चीजें प्राप्त करने में जो अस्थायी कठिनाइयां हैं, वे किसी भूल के कारण नहीं हैं, बल्कि परिवहन साधनों की कमी के कारण हैं, जिसके कारण निर्माणस्थली के सभी सेक्शनों की जरूरतों की एकसाथ पूर्ति करना सचमुच असंभव है। और ज्यादा कठिनाइयां मत पैदा कीजिये बल्कि काम पर चले जाइये..."

उसने अपनी बात वहीं छोड़ दी। वह कुछ और कहना चाहता था, मगर भूल गया कि वह क्या बात थी। उसने असमंजस में अपना गला साफ किया और बोला कुछ नहीं।

"साथियो!" पोलोजोवा ने क्षण भर की झिझक के बाद अनुवाद शुरू किया। "इंजीनियर क्लार्क कह रहे हैं कि अपने देश, अमरीका में

उन्होंने रूसी मजदूरों के बारे में बहुत कुछ सुना था, जिन्हें अमरीकी सर्वहारा वर्ग अपना शिक्षक मानता है, जिन्होंने संसार भर के मजदूरों को सिखा दिया है कि क्रांति कैसे की जाती है और क्रांति में उपलब्ध जीतों की किस तरह रक्षा की जाती है। इसलिए, वह कह रहे हैं कि रूसी मजदूरों के साथ अपनी पहली मुलाकात से उन्हें बहुत निराशा हुई है। इंजीनियर क्लार्क कह रहे हैं कि अगर सारे रूसी मजदूर क्रांति के प्रति अपने कर्तव्य को इसी तरह से समझते हैं तो ऐसे मजदूरों से समाजवाद का निर्माण नहीं किया जा सकता। उन्होंने यहां जो देखा और सुना है, वह अमरीकी मजदूरों को बताते हुए उन्हें शर्म आयेगी।"

जब पोलोजोवा अनुवाद कर रही थी, तब क्लार्क दर्जनों आदमियों की आंखों की निगाहों को अपने ऊपर गिरते अनुभव करता एक तरफ सकुचाया हुआ खड़ा था। वह जानता था कि उसने कोई अच्छा भाषण नहीं दिया है और यह नहीं समझ पा रहा था कि उसके शब्दों का अनुवाद करते समय पोलोजोवा इतने जोश में क्यों आ रही है, जो अब उसे इतने मूर्खतापूर्ण और निरर्थक लग रहे थे। उसे लगा कि चाहे कुछ भी हो, इस बकवास भाषण से पैदा हुई छाप को खत्म करने के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए। जब पोलोजोवा ने अनुवाद पूरा किया, तो वह अचानक एक दो कदम आगे बढ़कर सीधे पहली खाट के पास तक चला गया, अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और उसे मजदूरों की तरफ बढ़ा दिया।

एक अजीब सी खामोशी छा गई थी।

एक-दो हाथ सिगरेट लेने के लिए पसर गये।

"इंजीनियर क्लार्क यह भी कह रहे हैं," पोलोजोवा ने जल्दी से जोड़ा, "कि वह यहां पान या तम्बाकू के लिए काम करने नहीं आये हैं और वह अपना डिब्बा खुशी के साथ उन लोगों को दे देने के लिए तैयार हैं, जो एक पैकेट तम्बाकू के बिना समाजवाद के निर्माण में भाग लेने के लिए तैयार नहीं हैं।"

क्लार्क अब भी अपने आगे बढ़े हाथ में सिगरेट का पैकेट लिये हुए खड़ा था। और किसी आदमी ने उसमें से सिगरेटें नहीं निकालीं। जो लोग सिगरेट ले भी चुके थे, उन्होंने उन्हें सुलगाया नहीं, बल्कि तने हुए चेहरों के साथ बैठे-बैठे अपनी उंगलियों में घुमाते रहे।

"मैं दावे के साथ कहता हूं कि अमरीका में मज़दूर सिगार पीते हैं तवाकू नहीं,' लंबी खामोशी के बाद लाल दाढ़ीवाला आदमी बोला। किसी ने उसका समर्थन नहीं किया।

"बेशक यह सच है कि तवाकू के बिना काम काम नहीं रहता," अपनी खाट पर से उठते हुए मूछोंवाले एक लंबे आदमी ने कहा। तवाकू पीनेवाले को अगर वह मिले नहीं, तो उसकी आफत आ जाती है। मगर यारो, एक अमरीकी के सामने तो हम काम में अपनी नाक कटवा नहीं सकते। हमने क्या वादा किया था? उन्हें पकड़ लेने और पीछे छोड़ देने का—और हो यह रहा है कि हम जरा भी पकड़ नहीं पा रहे और बस, बैठे हुए हैं। और अमरीकी ने हमारे मुंह पर जिस तरह से थूका है वह ठीक ही है। इसका सीधा सादा मतलब यह ही है कि अगर तुम काम नहीं कर सकते, तो बकवास भी मत करो। हमने शोर तो इतना मचाया कि सारी दुनिया को थर्रा दिया, और जब आज़माइश का वक्त आया तो हम में दम ही नहीं है। बस इसने एक ही बात गलत कही है—मानो मज़दूर कभी कभार शोर मचा ही नहीं सकता। यह मज़दूर को जानता ही नहीं। इसका खयाल है कि हम जरा से तवाकू के लिए ही काम कर रहे हैं। ये अमरीकी भी क्या खूब होते हैं। तो चलो यारो। चलो, चल—ठीक है न? हम अमरीका को दिखा देंगे कि रूसी मज़दूर काम की किस तरह से धुनाई करता है।

कोई तीसेक लोग धीरे धीरे अपनी खाटों पर से उठ खड़े हुए।

'हा हा, जाओ जाओ। तीन लोग तुम्हें नहीं बहका सके, इसलिए तुम चौथे के कहने में आ गये,' लाल दाढ़ीवाले ने विद्वेषपूर्वक फबती कसी। "उसने अपनी जबान चलाई और तुम अपने कान फटकारने लगे। कौन जाने कि यह सचमुच का अमरीकी हो ही नहीं।'

'ठीक है, तो तुम जरा कोशिश करके इसे जांच लो, न! अमरीकी जबान में उसे कुछ चुटकुले सुनाकर देखो कि यह समझता है कि नहीं। इससे पूछो कि अमरीका में क्या हाल है और वहां कुलाकों का सफाया कब किया जानेवाला है!' अकार्डियनवादक ने उसे चिढ़ाया।

'चलो, यारो चलो। बहुत ठट्ठा हो लिया,' मूछोंवाले आदमी ने उन्हें धकेलते हुए कहा। चलो अब चलें। हम अमरीका को चिढ़ाने के लिए ही काम करेंगे।"

सभी जाने को उठ खड़े हुए।

'अब करो मजदूर वर्ग की एकता की बात!" अपनी कमीज़ चढाते चटाते लाल दाढीवाला बुदबुदाया।

अच्छा, यारो एक बात बताओ—जरा सी बात के पीछे इतनी आफत मचाने की क्या जरूरत थी?" येरेमिन ने हसते हुए कहा। "अब जरा फुरती दिखाना—तुम्हे कमर पूरी करनी है।

हम तो फुरती दिखायेंगे ही निकोलाई वसील्यविच, मगर तबाकू के बारे मे फुरती दिखाना तुम भी मत भूल जाना। कसम से, तबाकू के बिना आदमी ऐसा ही है, जैसा जोरू के बिना—दिल मे दद और चारा कुछ नही।'

वे भीड बनाकर इमारत के बाहर निकल गये।

क्लाक पोलोजोवा और येरेमिन सब के बाद बाहर आये। बारक से कुछ ही दूर जाने पर सफेद कमीज पहने एक ठिगना-सा आदमी उनके दल मे आ मिला।

'लगता तो हमारा अमरीकी बढिया आदमी है" येरेमिन ने आख मिचकाते हुए उससे कहा, 'क्या शानदार भाषण दिया!"

'लेकिन क्या तुम अग्रेजी समझते हो? कमीज पहने आदमी बात येरेमिन से कर रहा था मगर उसकी आखें क्लाक पर टिकी हुई थी।

पालोजोवा अनुवाद करती जा रही थी।'

"उन्होने जो कहा था, मने उसका बिलकुल भी अनुवाद नही किया,' पोलोजोवा ने शरमाते हुए कहा। "मै जानती हू कि यह अच्छी बात नही है, लेकिन मैं सारे मामले को जल्दी से जल्दी खत्म करना चाहती थी। मने वही कहा, जो क्लाक की जगह 'हमारा अमरीकी कहता।"

क्लाक गौर से पोलोजोवा की तरफ देख रहा था। उसने अपने नाम का उल्लेख सुना और कमीज पहने आदमी के सामने पोलोजोवा के सकोच को भी देखा।

"यह तो अनुचित है। इजीनियर क्लाक को इसके बारे मे फौरन बताओ।

"बेकार। वैसे भी मै उन्हे बतानेवाली ही थी।'

कमीज पहने आदमी येरेमिन के साथ बीच की बारक की तरफ चला गया।

"मुझे आपसे माफी मागनी है," अपने और क्लाक के अकेले रह जाने पर पालोजोवा ने कहना शुरू किया। "मैंने आपके भाषण को बिलकुल तोड़ मरोड़ दिया था। बात यह है कि भाषण तो आपने बहुत बढ़िया दिया था, मगर इन तर्कों का उन पर कोई असर नहीं होता। चेत्वेर्याकोव या येरमिन की बात वे क्यों नहीं सुन रहे थे? दोनों ने उनके विवेक को जगाने की कोशिश की थी, और आदमी जब जिद पर चढ़ जाता है, तब उससे समझदारी की बात करना बेकार है—तब उसके दिल को छूने की, उसकी भावनाओं को जगाने की, उसे शरमिंदा करने की जरूरत होती है। आखिर उनमें से ज्यादातर दिल के अच्छे हैं। बस, कुछ भूतपूर्व कुलाक हैं और वे ही हमेशा मुश्किलें पैदा करते रहते हैं।"

"मेरा भाषण बहुत ही बुरा था। आपने बात को अपने तरीके से पेश करके बिलकुल ठीक किया। सच मानिये, मैंने पहले कभी भाषण नहीं दिया था, खासकर रूसी मजदूरों के एक एकदम अपरिचित समूह के सामने बोलना तो मेरे लिए बहुत ही मुश्किल काम है।'

'नहीं, नहीं। आपने बहुत अच्छी तरह से बात की थी। मिसाल के लिए, आपका सिगरेट पेश करना बहुत शानदार था। मुझे इसका कभी खयाल भी नहीं आता। बस, आगे कभी ऐसा मत कीजियेगा, नहीं तो आपकी सारी सिगरेटें बट जायेंगी और फिर, हो सकता है कि एक दिन खुद आपको ही हड़ताल करनी पड़े," उसने हसते हुए कहा।

वे उसी तरफ चल दिये, जिधर मजदूरों की भीड़ गई थी।

कगार पर खड़ा युर्त

येरमिन अपने युर्त में लौट आया, जो पहले सैक्शन के निर्माण प्रमुख का अस्थायी कार्यालय था। उसे यह जगह दफ्तर की बारक में बने छोटे छोटे घुटनभरे दरबे से ज्यादा पसद थी। उसने युर्त को बिलकुल नदी के किनारे पर ही, कगार से कुछ ही कदम की दूरी पर नदी की ओर खड़ा करवाया था। नदी से दिन रात ठडी हवा की बहुमूल्य धाराए उठकर आती रहती थी। युर्त के नमदे के मोटे मोटे परदे बस्ती से आनेवाले नागवार शोर शराबे को भीतर नहीं आने देते थे और इसी तरह बिच्छू

ग्रादि को भी बाहर ही रखते थे। यहा काम करते हुए येरेमिन को लगता कि जैसे वह मोटे नमद के टोप से बाहरी दुनिया से बिलकुल ग्रलग हो गया है। उसे लगता कि यही एक ऐसी जगह है, जहा वह सचमुच एकाग्रतापूर्वक काम कर सकता है।

लोग उससे मिलने के लिए युत मे नही ग्राते थे। व जानते थे कि वहा उससे गालियों की बौछार के ग्रलावा ग्रौर कुछ नही मिल सकता है। 'युत चला गया' का मतलब ही यही था कि वह गुस्से के मारे ग्राप मे नही है, हर चीज पर चीख चिल्ला रहा है इसका मतलब था इन्तजार करो – छेडो मत। यही एक ग्रकेली ऐसी जगह थी, जहा येरेमिन को बिलकुल ग्रकेला छोड दिया जाता था ग्रौर जहा कोई उससे काम के बारे मे बात करने के लिए नही ग्राता था। ग्रक्सर वह खाने के लिए बस्ती म ग्रपने घर भी नही वापस जाता था, बल्कि सारी सारी रात युत म ही रिपोर्टों तालिकाग्रो ग्रौर रेखाचित्रो का ग्रध्ययन करने मे ग्रौर उन्हे एक ही योजना म फिट करने की कोशिश मे गलतियो की तलाश म ग्रौर उन्ही कार्यभारो को उपलब्ध सुविधाग्रो स पूरा करने की योजनाए तयार करन म ही बिता देता था।

सुबह वह युत से बिना शेव किये हुए थकान स पीला पडा ग्रौर एकदम शान्त बाहर निकलता। वह निर्माणस्थली जाता ग्रौर चेलेर्यादिनोव को बुलवाता। वह फारमैनो को विस्तार स बताता कि ग्रधिकतम परिणामो की प्राप्ति क लिए श्रम शक्ति ग्रौर मशीनो का किस तरह पुनवितरण किया जाना चाहिए। चेलेयादिनोव मुह फुलाते हुए सहमत हो जाता। शाम को रिपोर्ट ग्राती। ग्रगर रिपोर्ट उत्पादकता म कुछ घन मीटर की भी वद्धि दर्शाती तो येरेमिन बच्चो की तरह खुशिया मनाता। वह इजीनियरो को बुलवाता ग्रपनी प्रणाली क लाभो को सिद्ध करता ग्रौर भविष्य क बारे म ग्रपनी योजना सामने रखता। योजना म पता चलता कि सामान्य समातर श्रेढी क ग्रनुसार बढते हुए सारे ग्रतर को एक महान क भीतर पूरी तरह स पाटा जा सकता है।

लेकिन ग्रगले दिन की रिपोर्ट फिर गिरावट दर्शाती – कई मशीनें खराब हो जाती, ग्रौर फालतू पुरजो क ग्रभाव म मरम्मत रिपोर्टमेंट उनकी मरम्मत की ग्रनुमानित तिथि तक निश्चित करने से इनकार कर देता। तब एक ग्रप्रत्याशित निराशा येरेमिन को ग्रस लेता।

उसने बडी पटुता के साथ यह सोचते हुए अपने युत में प्रवेश किया कि अब वह मजदूरों से पहले की तरह से बात नहीं कर पाता है जब उसके किसी भाषण को सुनने के बाद पूरा का पूरा कारखाना स्वेच्छा से रात की शिफ्ट में काम करने के लिए रह जाता था।

मेज पर जाकर उसने अपने हाथ में आनेवाली पहली रिपोर्ट को उठा लिया।

"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? मैं आपके काम में विघ्न तो नहीं डाल रहा?"

येरमिन चौंक गया, यहाँ कौन आ सकता है?

युत के दरवाजे में नेमिरोव्स्की खड़ा हुआ था।

"क्या मैं आ सकता हूँ?" नेमिरोव्स्की ने फिर पूछा।

येरमिन ने जवाब दिये बिना उसकी तरफ देखा।

'इसकी ईसा जैसी दाढ़ी है,' उसके मन में अप्रासंगिक खयाल उठा, 'और यह यहाँ इस तरह से आया है, जैसे पानी पर चल रहा हो—कदमों की आवाज़ तक नहीं सुनाई दी।'

अचानक उसे इस आदमी की नाक पर एक करारा घूसा मारने की अदमनीय इच्छा ने अभिभूत कर लिया। 'सिर के बल नदी में जाकर गिर जायगा और बस, किस्सा खत्म।'

"आ सकता हूँ क्या?" नेमिरोव्स्की ने फिर पूछा—इस बार कुछ अधीरता के साथ।

"मुझे मालूम था कि आज आप मुझसे मिलने के लिए आयेंगे," येरमिन ने कहा।

"प्रकट है। कल आपने सारी सभा के सामने ऐलान किया था कि आप मेरे साथ विशेष बात करेंगे। तो, कहिये मैं सुन रहा हूँ।"

"मैंने कल शाम कहा था कि मैं किसी पर मुकदमा चलाऊंगा। मेरा मतलब आपसे ही था।"

"बडी कृपा है आपकी।"

"कुछ समय से मैं मैकेनिकल डिपार्टमेंट के मामलों की छानबीन कर रहा हूँ, जो न जाने कब से हमारी सभी असफलताओं और आफतों की जड़ रहा है और मुझे विश्वास हो गया है कि मैकेनिकल डिपार्टमेंट का सारा काम हमारे निर्माण-कार्य की सहायता करने के इरादे से नहीं, बल्कि इसके

विपरीत, हमारे द्वारा उठाये जानेवाले हर कदम को ध्वस करने के इरादे से किया जा रहा है।

'विश्वास हो गया ह? तो क्या आपके खयाल म इस विश्वास को बदला नही जा सकता है?"

"नही, मेरे खयाल मे नही। पहले म सोचा करता था कि यह कुछ इक्की दुक्की त्रुटियो की ही बात है, लेकिन अब मुझे विश्वास हो गया है कि यह कोई त्रुटियो का मामला नही है, बल्कि एक नियमित व्यवस्था है, जिसकी शुरुआत पगार की व्यवस्था से ही होती ह। आपने औसत निपुण मजदूर की इतनी ऊची वतन दरे बाध रखी हैं कि किसी भी तरह काम के हिसाब स अदायगी मे उसकी दिलचस्पी हो ही नही सकती और प्रतियोगिता के विचार का तो सवाल भी नही उठ सकता। आपके यहा वेतन मान इस तरह निर्धारित किया गया है कि मजदूर की अपने श्रम की उत्पादकता म जरा भी दिलचस्पी नही होती। और यह बात व्यवहार द्वारा प्रमाणित होती है। आपके विभाग म उत्पादकता उपहासजनक है और श्रम अनुशासन तो बयान के बाहर हे। आपके मजदूर वेतरह पसा बटारते ह, जब कि निर्माण काय का योगदान नही के बराबर करते ह। इसके अलावा, अपने काम के सगठन क तरीके मे ही आपने मकेनिकल वकशाप को निर्माण काय की सारी व्यवस्था म अलग कर दिया ह, जिसस यह एक तरह से अपनी निराली दुनिया बन गई है। आपके डिपाटमट क मजदूरो का निमाण काय की आम रफ्तार स जरा सा भी नाता नहा है। हर चीज इस तरीके से सगठित की गई है कि जिसस सारे काम के लिए जिम्मदारी की सारी भावना हा खत्म हो जाय।'

"बस, यही सब कहना है आपको?

'नही, यह तो सब का जरा-सा अश भी नहा है।"

अगर यही सब होता तो म आपस कहता कि आपने जिन बडी बडी चीजो की चर्चा की है– जिम्मदारी की भावना समाजवादी प्रतियोगिता आदि आदि,–व सब कायभार इजीनियर तहा ट्रेड यूनियन क देखने की बात ह। मरा काम यह देखना है कि मशीनें जल्दी स जल्दी ठीक हो।

जहा तक मरम्मत की रफ्तार का सवाल ह, यदि आप अपनी जगह म होता, तो दूसरी बात हो नही सकता। आपक यहा मशीन लगातार हफ्तो और महीनो तक पडी रहती ह।

'अगर फालतू पुरजा की कमी है, तो म मरम्मत की जिम्मेदारी बिल्कुल नही ले सकता।'

'मुझे इसम कोई शक नही है कि अगर आपका बस चलता, ता आप तब भी मरम्मत करन से इनकार कर देते, जब फालतू पुरजे मौजूद भी होते। यह फालतू पुरजो की कमी की दलील तो आप न जाने कब से दते चले आये ह। अब तक तो आपने सैकडा बार फालतू पुरजे मगवा लिये होते। और इसका तो जिक्र ही क्या करना कि काफी फालतू पुरजे आप यही, वकशोप म ही बना सकते थे। क्या आपका काम निमाण-काय की आवश्यकताओ को तुष्ट करने की इच्छा पर आधारित किसी योजना के अनुसार किया जाता है? आप मशीना की मरम्मत बस तभी करते हैं, जब कोई फारमैन आपके किसी मकेनिक के साथ शराब पीने के दौरान उसकी व्यवस्था कर लेता है। अभी परसा ही पहल सैक्शन म एक ट्रैक्टर खराब हो गया था और दो बोतल वादका के बल्ले वह चौबीस घटे के भीतर ठीक कर दिया गया। दूसरे ट्रैक्टर हफ्तो से मरम्मत का इतजार कर रहे ह।'

"इस तरह की कमिया का सभी एशियाई निमाणस्थलिया पर हाना अनिवाय ह। अगर म इसके कारण मजदूरा का निकालना शुरु कर दू तो थोडे ही दिना मे हमारे पास कोई भी नही बच रहेगा। आपका जैसी श्रम शक्ति अपने पास ह, उसी पर सतोष करना होगा। यहा जसी हालता म एक भी अच्छा मजदूर काम करने को तैयार नही हागा।'

मुझे वे मामले भी मालूम ह, जब आपने मजदूरा को निकाला है, और उन्हें ही, जो सबसे ज्यादा सक्रिय थे। अपने मकेनिकल डिपाटमेन्ट के लिए लोगा को लेते समय आपने सोवियत सघ भर के सबसे निकम्मे—सब स्वाथपर और सबसे काहिल—लोगा का छाटकर रखन मे बडी कुशलता का प्रदशन किया है। आपकी सारी कोशिशा के बावजूद इन तत्वा म भी कुछ ईमानदार मजदूर निकल आये है, जा काम के प्रति चिंतित हैं। आपके डिपाटमेंट म स्वत तूफानी टोलिया पदा हो गइ, प्रतियोगिता अपने आप शुरु हो गई। आपने तरह-तरह के दिखावटी बहाना पर सरगनाओ को झट से बरखास्त कर दिया और पगार की दर बढा दी, जिससे मजदूरा म प्रतियोगिता को प्रोत्साहन न मिले। उपहास के रवये से, व्यग्य और छीटाकशी से आपने तूफानी टालीवाला के जोश का ठडा करने की कोशिश

की। आप श्रम शक्ति की काटि के बारे मे तो बात करने की जुरअत करते हैं, लेकिन दो महीने हुए, जब आपके पास दो सौ मैकेनिक भेजे गये, – पार्टी सदस्य, सेवामुक्त लाल सैनिक, – तो आपने उनमें से एक को भी इस आधार पर लेने से साफ इनकार कर दिया कि वे इतने कुशल नहीं हैं।'

'मेरा खयाल है कि मकेनिकल डिपार्टमेंट का प्रमुख होने के नाते मुझे अपने मजदूरों की योग्यता को आंकने का अधिकार और सामर्थ्य है। मशीनें हाथों से ठीक की जाती हैं, जबाना मे नही। मैकेनिकल डिपार्टमेंट को कुशल मजदूरों की जरूरत है, कुशल आदोलनकर्ताओं की नही।"

आपने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि मजदूर कम्युनिस्ट थोड़े ही समय के भीतर आपकी प्रणाली का पर्दाफाश कर देंगे और मजदूरों को सगठित कर लेंगे। इसलिए आपने यही बेहतर समझा कि वे आपके अधिक्षेत्र में प्रवेश न करने पायें। अपनी सफाई देने की आपकी कोशिशें फूटी कौडी के बराबर भी नहीं हैं

एक दूसरी ही किस्म का आदमी

पत्थरों से परिपूर्ण मैदान में पहाड़ों की तरफ तेजी से चढ़ाव आ गया था। मैदान के ऊपर उठते जाने के साथ-साथ उसमें घाटी गह नाली एक गहर दर्रे का रूप लेती जा रही थी।

मिट्टी की दीवार पर अपने थूथन को नीचे की तरफ घुसेड़ता हुआ एक अकेला एक्स्कवेटर खड़ा था। घडघड और घडघड करता हुआ वह धीरज के साथ मिट्टी में अपने दांत गड़ाये हुए था। अपना मुंह पत्थरों से भर लेने के बाद वह अपना जिराफनुमा गर्दन उठाता, आसपास निगाह डालते हुए अपने गले में अटके मलबे को मैदान में उगल देता और एक लंबी जम्हाई लेकर निर्विकार भाव से फिर काम में जुट जाता। लगता था कि एक्स्कवेटर ऐसे जीवन से बेहद ऊब गया है, वह अकेला आवारागर्दी करता थक गया है और वह भी उस कुमुक के आने का इंतजार कर रहा है, जिसके भेजने का वादा किया गया था और अपनी गर्दन उठाकर आसपास निगाह डालने समय उसे यह डर लगता है कि कहीं वे पहाड़ और

एक्स्केवेटर तो नही आ रहे, उनके पजा के नीचे कुचले ककर के कराहने की आवाज ता नही सुनाई दे रही कही हसा की तरह शान के साथ पत्थर के तख्न की तरफ जाते लबी गरदनवाले दैत्या की कतार क्षितिज पर नजर तो नही आन लगी।

नहर स चलकर क्लाक न अपन का एक गहर खड्ड क किनारे पर खडे पाया और यही पहाड के पैर का एक प्रचड प्रहार से विदीण करती हुई तलवार की तरह नदी पर उसकी पहला बार निगाह पडी। नदी तजा क साथ नीच लपकती जा रही थी। उसकी सतह स ठडी हवा क थाक उठकर आ रहे थ। इस ऊची जगह स वह स्थन नजर आ रहा था, जहा नदी पहाडा को फोडकर मैदान म आ उतरती थी।

कैलिफोनिया क पहाडा म क्लाक न एक बार मुसाफिरा स भरी और ब्रेक टूटी कार का एक गत क ऊपर टेढ मढे ढालू रास्त पर हवा की चाल स भागत देखा था। कार जैस जस आगे जाती जा रही थी, उसकी चाल और तज होती जा रही थी और फिर पूरी रफ्तार पर जाते हुए वह एक माड से निकलकर सीधे गत म जा गिरी थी। पहाडा को प्रबल वेग स भेदकर आती अपन का बस म रखन म असमथ नदी हवा की अपनी दहाड स गुजाती हुई नीच की विश्वासघाती चट्टानो स टकराकर चूर चूर हो जान या फुहार म परिणत हो जाने के लिए मैदान की तरफ भागी चली जा रही थी।

क्लाक जानता था कि इस नदी को समकोण मोडकर मदान के हृद प्रदेश की तरफ पलटा जाना है। नदी क कगार पर खडा वह मन ही मन उसके सघात की सभव शक्ति का अनुमान लगा रहा था।

तो आखिर हम पहुच ही गये चारा ओर देखत हुए पालाजावा ने कहा अभाग्यवश मै आपको सभी बात ठीक तरह स नही बता सकती और इजीनियरा म से कोई यहा है नही। इसलिय हमे ऊर्तावायेव को बुलवाना पडेगा।

वे पत्थरा के ढेर पर बैठ गय और इतजार करन लगे कि ऊर्तावायव को लान के लिए भेजा गया काला दाढीवाला उजबक उसे तलाश करक ले आय।

'कमीज पहन हुए घुटे सिरवाला वह आदमी कौन था, जा हमारे बारक स निकलते समय आया था?' क्लाक न अचानक पूछा।

थी। आप श्रम शक्ति की कटौती करने में तो काफी तेजी से जुगत करते हैं, लेकिन दो महीने हुए, जब आपके पास नये भी मकैनिक भेजे गये,—पार्टी-सदस्य सनामुदा नामी मैकेनिक,—तो आपने उनमें से एक को भी इस आधार पर लेने से साफ इनकार कर दिया कि वे इतने कुशल नहीं है।'

'मेरा खयाल है कि मकैनिकल डिपार्टमेंट का प्रमुख होने के नाते मुझे अपने मजदूरों की योग्यता को आंकने का अधिकार और सामर्थ्य है। मशीनें हाथों से ठीक की जाती हैं जबानों से नहीं। मकैनिकल डिपार्टमेंट को कुशल मजदूरों की जरूरत है कुशल आदान-प्रदान(?) की नहीं।

आपने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि मजदूर कम्युनिस्ट थोडे ही समय के भीतर आपकी प्रणाली का पर्दाफाश कर देंगे और मजदूरों को संगठित कर लेंगे। इसलिए आपने यही बेहतर समझा कि वे आपके अधिक्षेत्र में प्रवेश न करने पायें। अपनी सफाई में की आपकी कोशिशें फूटी कौडी के बराबर भी नहीं हैं

एक दूसरी ही किस्म का आदमी

पत्थरों से परिपूर्ण मैदान में पहाड़ी की तरफ तेजी से चढ़ाव आ गया था। मैदान के ऊपर उठते जाने के साथ-साथ उसमें खोदी गई नाली एक गहरे दर्रे का रूप लेती जा रही थी।

मिट्टी की दीवार पर अपने थूथन को नीचे की तरफ घुसेड़ता हुआ एक अकेला एक्स्केवेटर खडा था। घडघड और घडघड करता हुआ वह धीरज के साथ मिट्टी में अपने दांत गडाये हुए था। अपना मुह पत्थरों से भर लेने के बाद वह अपनी जिराफनुमा गरदन उठाता, आसपास निगाह डालते हुए अपने गले में अटके मलबे को मैदान में उगल देता और एक लंबी जमाई लेकर निर्विकार भाव से फिर काम में जुट जाता। लगता था कि एक्स्केवेटर ऐसे जीवन से बेहद ऊब गया है, वहां अकेला आवारागर्दी करता थक गया है और वह भी उस कुमुक के आने का इंतजार कर रहा है, जिसके भेजने का वादा किया गया था और अपनी गरदन उठाकर आसपास निगाह डालते समय वह यह देख लेता है कि कहीं वे पचीस और

एक्स्कवेटर तो नहीं आ रहे, उनके पंजों के नीचे कुचले कंकर के कराहने की आवाज तो नहीं सुनाई दे रही कहीं हंसों की तरह शान के साथ पत्थर के तश्त की तरफ जाते लंबी गरदनवाले दैत्यों की कतार क्षितिज पर नजर तो नहीं आने लगी।

नहर से चलकर क्लार्क ने अपने को एक गहरे खड्ड के किनारे पर खड़े पाया और यहीं पहाड़ के परे को एक प्रचंड प्रहार से विदीर्ण करती हुई तलवार की तरह नदी पर उसकी पहली बार निगाह पड़ी। नदी तेजी के साथ नीचे लपकती जा रही थी। उसकी सतह से ठंडी हवा के झोंके उठकर आ रहे थे। इस ऊंची जगह से वह स्थल नजर आ रहा था जहां नदी पहाड़ों को फोड़कर मैदान में आ उतरती थी।

कैलिफोर्निया के पहाड़ों में क्लार्क ने एक बार मुसाफिरों से भरी और ब्रेक टूटी कार को एक गर्त के ऊपर टेढ़े मेढ़े ढालू रास्ते पर हवा की चाल से भागते देखा था। कार जैसे जैसे आगे जाती जा रही थी, उसकी चाल और तेज होती जा रही थी और फिर पूरी रफ्तार पर जाते हुए वह एक मोड़ से निकलकर सीधे गर्त में जा गिरी थी। पहाड़ों को प्रबल वेग से भेदकर आती अपने को वश में रखने में असमर्थ नदी हवा को अपनी दहाड़ से गुंजाती हुई नीचे की विश्वासघाती चट्टानों से टकराकर चूर चूर हो जाने या फुहार में परिणत हो जाने के लिए मैदान की तरफ भागी चली जा रही थी।

क्लार्क जानता था कि इस नदी को समकोण मोड़कर मैदान के हृद-प्रदेश की तरफ पलटा जाना है। नदी के किनारे पर खड़ा वह मन ही मन उसके संघात की संभव शक्ति का अनुमान लगा रहा था।

'तो आखिर हम पहुंच ही गये' चारों ओर देखते हुए पोलाजोवा ने कहा अभाग्यवश में आपको सभी बातें ठीक तरह से नहीं बता सकती और इंजीनियरों में से कोई यहां है नहीं। इसलिये हमें ऊर्नायेव को बुलवाना पड़ेगा।

वे पत्थरों के ढेर पर बैठ गये और इंतजार करने लगे कि ऊर्नायेव को लाने के लिए भेजा गया काला दाढ़ीवाला उज्बेक उसे तलाश करके ले आये।

'कमीज पहने हुए घुटे सिरवाला वह आदमी कौन था जो हमारे बारक से निकलते समय आया था?' क्लार्क ने अचानक पूछा।

6—336

उसने यह सवाल जैसे अनिच्छापूर्वक किया था, मगर पानोजाना ने वरोनिया के नीचे से अपनी पर टिकी उसकी प्रखर नजर को दंग किया था।

वह हमारी निर्माणस्थली की पार्टी समिति के सचिव, साथी सिनीत्सिन थे।

'उनकी आखें बडी भली और बुद्धिमत्तापूर्ण ह।'

'वह बडे शानदार कार्यकर्ता है। काश, उन जैसे कुछ लोग और होते! स्थानीय परिस्थितियो को वह बिलकुल जन्मजात ताजिका की तरह से जानते हैं। उन्होने ताजिक भाषा बोलना तक सीख लिया है।

"वह मध्य एशिया म कितने समय स ह?

मेरे खयाल म चार सात से ज्यादा से। वह मास्को जाने और अध्ययन करने के लिए बेताब ह मगर उन्ह जाने नहीं दिया जा रहा है।'

"यही आपके देश म एक ऐसी चीज है, जिस पर मुझे अचभा होता है। कदम कदम पर यही देखने को मिलता है। उस म खास बडे-बडे, अच्छे परिपक्व आदमी, जिन्ह काफी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त ह, तीस-तीस, चालीस चालीस साल की उम्र म अपनी शिक्षा पूरी करने या अपने ज्ञान का नवीकरण करने क डेस्क पर बैठ जाते हैं। किसी भी अन्य देश म यह बात अकल्पनीय होगी। हमारे देश म, तीस का होते होते आदमी अपनी लीक से लग जाता है। अगर तब तक वह चिर सचित रास्ते पर नहीं लग पाता, तो वह उसी से सतोष कर लेता है और फिर अपनी चमडी स निकलने की कोशिश नही करता। आपके यहा शिक्षा की सारी प्रणाली का उद्देश्य ही इस आयु सीमा को तोडना है।

आपके खयाल म क्या यह अच्छी बात नही है?"

"सच कहू, तो नहा। बेशक, मैं साथी सिनीत्सिन की बात नही कर रहा हू, जो शायद अपने ज्ञान की वृद्धि करना चाहते ह ताकि कालातर म उन्ह आपके पार्टी सगठन मे नेतत्व का विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया जा सके। यह बिलकुल समझ म आनेवाली बात है। म एक पेशे स दूसरे पेशे म, शारीरिक श्रम से मानसिक काम की उन अचानक छलागो की बात कर रहा हू, जो आपके यहा लोग कदम कदम पर लगाते लगते ह। मान लीजिये, एक आदमी किसी लोहे के कारखाने मे अच्छा खरादिया ह और पतीस साल की उम्र म अचानक रसायन के रहस्य उसे आकर्षित करने लगते

प्राणी को देखना है, जिसके बारे में वह अभी तक सुनी सुनाई बातों से ही जानता था। उसके मुंह के कोनों पर एक हल्की सी मुसकान खिल रही थी। कनाल को यह मुसकान बड़ी अनुग्रहपूर्ण लगी और इसमें उसे इतनी खीज हुई जितना अत्यन्त चुभते हुए प्रत्युत्तर से भी न हुआ होता और उसने अपनी बात को अचानक इस सवाल से अधूरा ही छोड़ दिया

क्या, आप मुझसे सहमत नहीं हैं क्या?

'आप जो कह रहे हैं वह बिलकुल सही होता यदि हम एक उन्नत पूंजीवादी राज्य का निर्माण करते होते और हमें आपकी तरह ही आदि से अंत तक का रास्ता तय करना होता। मगर बात ऐसी किसी भी तरह से नहीं है। इसके अलावा लोगों के योजनाबद्ध नियन्त्रण का आपका विचार बड़ा ही यान्त्रिक पुराना और हेनरी फोर्ड की याद ताज़ा करनेवाला है – इतने सौ आदमी जीवन भर बस बोल्ट बना रहे हैं इतने सौ स्क्रू पेंच, आदि आदि – पूर्णतम विशिष्टीकरण। यह सब पुराना पड़ गया है – पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली तक के लिए। हम आपसे आपकी अत्यधिक विकसित प्रविधि को उसकी नूतनतम पद्धतियों के स्तर पर ग्रहण करते हैं। आपकी प्रविधि महंगा है और हम उसके बीते हुए कल के उत्पादनों को नहीं खरीदना चाहते, जो आनेवाले कल तक पुराने भी पड़ चुके होंगे। उत्पादन का अविराम प्रवाह जो आपकी राय में हमें आपके देश से सीखना चाहिए, अमरीका तक के लिए कल की चीज़ बन चुका है।

सचमुच! यह तो मेरे लिए भी एक अनजानी बात थी।

यह बताइये कि मजदूर एक यन्त्र भर क्यों बनकर रह जाय और दिन प्रति दिन उसी क्रिया को क्यों दुहराता रहे जबकि इन क्रियाओं के दुहराने में एक मशीन आसानी से उसकी जगह ले सकती है और मजदूर खुद एक यन्त्र से यन्त्रों के नियन्त्रक में परिणत हो सकता है? आपके देश में इस प्रकार के कदम का मतलब होगा लाखों और मजदूरों की बरखास्तगी जिससे बेकारों की पहले से ही इतनी बड़ी फौज में और बाढ़ आ जायगी। मौजूदा हालतों में आप यह करने की जुरअत नहीं कर सकते। अकेले हम ही इस कदम को उठाने की हिम्मत कर सकते हैं। माफ कीजियेगा – मेरे मुंह से यह बात एक विरोधाभास जैसी लग सकती है – मगर आप पुरानी प्राविधिक धारणाओं के अर्थों में सोच रहे हैं और आप बेकार हो यह समझते हैं कि हमारे प्राविधिक दृष्टि से पिछड़े हुए देश के लिए ये अभी भी नई

हैं और काम आ सकती हैं। विशिष्टीकरण की पेशा की आपकी जो धारणा है, उसके दिन बीत चुके हैं। हम जिन्न यत्रों का प्रशिक्षित कर्म की कोई ज़रूरत नही है, जो कल हमारे लिए बेकार हो चुके होंगे।

"अगर हम यह भी मान लें कि बात यही है तो भी आज आप उनकी सख्त आवश्यकता का अनुभव कर रहे हैं। अगर आपके पास सवीण विशिष्टताप्राप्त लोग नही होंगे तो आप अति विकसित उद्योग की नीव नही डाल पायेंगे, जिसके बिना समाजवाद हो ही नही सकता। पहले उसे स्थापित कीजिये फिर आप मानसिक काम और शारीरिक श्रम के बीच अंतर का खात्मा कर सकते हैं।"

हमारी भाषा में कहें तो आप जो कह रहे हैं, उसका मतलब यह निकलता है पहले श्रम के पूंजीवादी तरीके से समाजवाद का निर्माण करो और फिर उदघाटन समारोह कर डालो—आज से समाजवादी समाज को खुला घोषित किया जाता है—प्रवेश नि शुल्क है।

क्लार्क कुछ जवाब देने ही वाला था कि तभी उसकी निगाह एक लंबी छाया पर पड़ी, जो अचानक उसके पैरों पर आ गिरी थी। उसने आखें उठाई तो उसे मखमली ताजिक टोपी और कोम्सोमोली खाकी कमीज पहने और उस पर तरुण कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का बिल्ला लगाये एक छोटा सा जैतूनी रंग का लड़का दीख पड़ा, जो अपने चेहरे से कोई पंद्रह साल का लगता था। उसके दांत मोतियों की तरह चमकते हुए और एक बराबर थे वह मुसकराया तो लगा कि जैसे उसके श्यामल चेहरे की छायाओं में बिजली की बत्ती दमक रही है।

'आइये मुलाकात कीजिये,' पोलाजोवा ने उठते हुए कहा। 'यह मेरे प्रमुख हैं साथी नासिरुद्दीनोव, कोम्सोमोल समिति के सचिव।'

'अमरीका के इंजीनियर?' अपने दांतों की झलक देता हुआ लड़का मुसकराया। 'मैं अमरीका से परिचित हूं उसे देख चुका हूं।"

भला तुमने अमरीका कहां देख लिया करीम?" पोलाजोवा ने अचरज से पूछा 'किसी किताब में शायद?'

'नही, किसी किताब में नही। स्तालिनाबाद में। बाजार में।'

'बाजार में?'

'हां, बाजार में एक सैरबीन थी—बहुत ही बढ़िया सैरबीन। खिड़की में देखो और सामने आ गया अमरीका। बहुत बढ़िया जगह है, अमरीका।'

"बात यह है कि इन्हें आपका देश पसन्द है," पोलाजोवा ने अनुवाद किया, "इन्होंने स्तालिनाबाद में मैरवीन में उसे देखा है।"

'और इन्हें सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगा?'

'बढ़िया मकान हैं—ऊंचे, बिलकुल पहाड़ों की तरह! ऐसे मकानों में रहने का बहुत मजा है। एकदम ऊंचे! भरपूर हवा! नीचे कोई मजा नहीं—बस, धूल ही धूल! अमरीकी से कहो—वहां!' और उसने सुदूर, बर्फ ढंकी चोटियों की तरफ इशारा किया।

"यह खुद पामीर पहाड़ों के रहनेवाले हैं," पोलाजोवा ने क्लाक को बताया पहाड़ों से इन्हें बेहद प्यार है। सैरवीन में इन्होंने अमरीका के गगनचुंबी मकान देखे हैं। यह कह रहे हैं कि उनमें रहना बड़ा मजेदार होगा। बिलकुल पहाड़ों की तरह ऊंचे। आप न्यूयार्क में कौनसी मंजिल पर रहते थे?

'सतालीसवीं।

'देखा करीम, लगता है कि तुम दोनों ही पहाड़ी हो!' पोलाजोवा हंस पड़ी।

"अमरीकी से कहो, हम अपने देश में भी ऐसे ही मकान बनायेंगे। हम खूब कपास पैदा करेंगे—और फिर मकान बनायेंगे।

यह बात सही नहीं है करीम। हम ऐसे मकान नहीं बनायेंगे। ये पूंजीवादी शहरों की बात है। समाजवादी शहर बागों से भरे हुए होंगे।'

'नहीं, पहाड़ तो पूंजीवादी नहीं हैं। पहाड़ सर्वहारा हैं। मजदूरों को बढ़िया तरीके से रहना चाहिए—ऊंचे रहना चाहिए। नीचे रहना बुरा है," वह मुसकरा दिया और उसके सफेद दांत फिर चमक उठे। "अमरीकी से मेरी तरफ से माफी मांग लो—मुझे जाना है। अमरीकी से कहो—अमरीका बहुत दिलचस्प है। इनसे अनुरोध करो कि यह कभी कोम्सोमोलियों को अमरीका के बारे में बतायें। अब मैं चला। कोम्सोमोली प्रतियोगिता में भात खा रहे हैं—बहुत बुरी बात है!'

अपने दांतों को एक बार फिर दमकाकर और हाथ हिलाकर वह *एस्केवेटर के बराबर से होता हुआ तटबंध के पथरीले किनारे के साथ* साथ चला गया।

"कितना प्यारा लड़का है!' पत्थरों के बीच सफाई से निकलकर जाती उसकी सुघड़ आकृति पर अपनी आंखें टिकाये टिकाये क्लाक बोल उठा।

"सचमुच! और कैसा शानदार साथी है! चतुर, बुद्धिमान और गम्भीर। एक दिन उससे उसकी जीवन गाथा सुनिये। कैसे वह पामीर से पैदल चलकर स्तालिनाबाद अध्ययन करने के लिए आया, कैसे वह बासमचियो से बचकर भागा। बिलकुल उपन्यास जैसी है। मगर यह कोरी रोमाच कथा नही है—यह हमारे तरुण कोम्सोमोलियो के श्रेष्ठतम अश का इतिहास है।"

अनिच्छित जासूसी

अपने सैक्शन के दौरे से लौटते समय अधसयोजित एक्स्केवेटरो के पास से गुजरते हुए क्लाक की निगाह हाथो को पीठ के पीछे बाधे सिर पर सफेद टोप पहने उनके आसपास घूमते बाकर पर पडी।

एक एक्स्केवेटर का गरदनहीन ढाचा जमीन पर ढेर हुआ पडा था।

क्लाक को दूर से ही देखकर बाकर उसकी तरफ बढ गया।

'मेरे एक्स्केवेटर तो अभी तक पहुचे नही है और कोई निश्चय के साथ कह नही सकता है कि वे कब आयेंगे," उसने बडे हर्ष के साथ ऐलान किया।

'और यह?' क्लाक ने सामनेवाले एक्स्केवेटर की तरफ इशारा करते हुए पूछा।

"यह जर्मन मेक एक्स्केवेटर है—एकदम बेकार की मशीन, बाकर ने मुह बनाया। 'मुझे तो यही अचरज है कि मुझे बिना काम के पैसे देते-देते ये लोग कब अघा जायेंगे!"

पोलोजोवा की भृकुटि तन गई। क्लाक को बडा बुरा सा लगा।

"तो कहिये कि ऐश कर रहे है, है न?" उसने लगभग विद्वेषपूर्वक कहा, "फिर भी, आप इन एक्स्केवेटरो के सयोजन मे तो सहायता कर ही सकते है।'

"मेक एक्स्केवेटरो के सयोजन मे? नही। इनसे मेरा क्या सरोकार? करे जर्मन अपने खटराग को पूरा हा मै आपसे एक बात कहना चाह रहा था," उसने अचानक क्लाक से गम्भीरतापूर्वक कहा।

वह क्लाक को अलग ले गया और फुसफुसाकर बोला

"आपको अपनी मेज पर तो कल कोई चीज नहीं मिली, क्या?

मेज पर?' बनारसी ने प्रकट उदासीनता से कहा, 'नहीं तो, कुछ भी तो नहीं।

'जरा इसे देखिये।

बावर ने खामोशी के साथ अपना बटुआ निकाला, उसमें से कागज का एक पुर्जा खींचा और उस ओर की तरफ बढ़ा दिया।

बनारसी को उसपर अपना पूर्वपरिचित चित्र नजर आया।

यह क्या है? काम न होने की वजह से आपने चित्रकारी तो नहीं शुरू कर दी?' उसने शरारत से आंखें मिचकाते हुए कहा।

'मजाक छोड़िये। यह मुझे कल अपनी मेज पर मिला था।"

'तो क्या हुआ?

क्या आप यह कहना चाहते हैं कि बात आपकी समझ में नहीं आ रही है? मतलब एकदम साफ है। तीर अमरीका की तरफ इशारा कर रहा है और नीचे खोपड़ी बनी हुई है। दूसरे शब्दों में जहां से आये हो, वहीं वापस चले जाओ, नहीं तो हम तुम्हें खत्म कर डालेंगे! मैं सोच रहा हूं कि अधिकारियों को इसकी सूचना दे दूं।

"अरे, छोड़िये भी" बनारसी ने शांतिपूर्वक कहा। 'यह सब आपका वहम है। आपकी हिम्मत की आजमाइश करने के लिए कोई आपसे मजाक कर रहा है। अगर यह कोई रहस्यमय धमकी होती, तो क्या वजह है कि उन्होंने यह कागज आपकी मेज पर तो रखा, मगर मेरी या मर्री की मेज पर नहीं रखा?

'हां, बात तो है। मुझे भी इसका खयाल आया था और इसी कारण मैंने आपसे पूछा भी है। फिर भी कुछ भी कहिये, बात है अजीब। कमरे का ताला बंद था, चाबी मेरी जेब में थी और खिड़की भी भीतर से बंद थी। फिर यह कागज अन्दर पहुंचा कैसे होगा?

"और आपकी मौजूदगी में तो कोई कमरे में नहीं आया था?

नहीं, कोई भी तो नहीं। आप मुझे बुलाने के लिए आये थे और फिर जब आप सभा में जा रहे थे तब मर्री आये थे।

"कोई स्थानीय कर्मचारी तो नहीं आया था?

"बस, वही सांवले चेहरेवाला इंजीनियर—और तो कोई नहीं।"

"काई इसे तब तो नही रख गया, जब कमरे की सफाई हो रही थी ? खैर, कुछ भी हो, यह जाहिर तौर पर किसी बच्चे के हाथ का बना चित्र है। ग्रार ग्राप फौरन इस निष्कर्ष पर पहुच गय कि कुछ हत्यार ग्रापका कत्ल करने की साजिश कर रहे ह—बिलकुल जासूसी कहानियो की तरह। ग्रपनी हसी न उडवानी हो, तो किसी स भी इसका जिक्र तक न कीजियेगा।"

क्लाक ने मानो यो ही कागज को मोड लिया ग्रौर बातचीत का विषय बदलत हुए उसे चुपके से ग्रपनी जेब म रख लिया

खाने का कमरा लोगो ग्रौर मक्खियो से भरा हुग्रा था। क्लाक ने ऊतागायेव, पोलोजोवा, मर्री ग्रार कई ग्रय लोगो को दीवार के पास की एक लबी सी मेज पर बैठे देखा। वह खामोशी से पोलोजोवा के बराबर जाकर बैठ गया ग्रौर चुपचाप सूप पीने लगा।

जब उसन सिर उठाया, तो उसकी ग्राख सफेद रूसी कमीज पहन एक सिर घुटे ग्रादमी की ग्राखो से जा टकराइ।

'माफ कीजियेगा, रूसी नाम याद रखने म मुझे बडी मुश्किल होती है—सभी एक जैसे ही लगते है,' क्लाक न पोलोजोवा की तरफ रुख करते हुए कहा "क्या यह मिस्टर यरेमिन है?'

'नही, यह पार्टी समिति के सचिव, साथी सिनीत्सिन हैं। यरेमिन निर्माण प्रमुख हैं। देखिये, वह जा रहे ह।

क्लाक ने खाना खाना शुरू कर दिया।

'मै ग्रपनी बातचीत को जारी करना चाहूगी, पोलोजोवा ने उसे टोकते हुए कहा।

"म सिर्फ यह कहना चाहता हू कि यहा जो कुछ किया जा रहा है, उसम काफी ग्रतविरोध ह।'

हमारी ऐसी पीढी है, जिसन पूजीवादी समाज का विध्वस किया है, ताकि समाजवादी समाज म प्रवेश किया जा सके। ग्रभी हम ग्रपनी चमडी ही बदल रहे ह। यह एक लबी ग्रौर कष्टदायी प्रक्रिया है। लोगो के ग्रापसी सम्बध, लोगो ग्रौर वस्तुग्रो तथा लोगो ग्रौर राज्य के बीच सम्बध बदल गये ह। व्यक्तित्व के कण-कण का प्रसारण हो गया है—पूजीवादी सामाजिक सबधो की पुरानी चमडी फट गई थी।

हम इसकी जगह एक नई और अधिक विस्तृत चमडी धारण कर रहे ह, जिसम मास लेना सुगमतर हो। यह कम्युनिस्ट समाज की दिशा म मात्र पहला कदम है जिसम व्यक्ति पहली बार अपन मनप्राय व्यक्तित्व को फिर से पाकर परिस्थितिवशवर्त्तीता की सारी चमडी का आखिर धान की भूमी की तरह स तज देता है।

यह सब स्वप्नदशन है। इस कर पान क लिए मनुष्य क स्वभाव का ही बदलना होगा।

और क्या हम उस बदल नही रह ह? पोलोजावा न जाश म आत हए कहा जिससे उसके गालो पर सुर्खी आ गई। क्या हमारी क्राति का सर्वाधिक महत्त्व इसी म सन्निहित नहा ह? आपन यह सही ही कहा है कि नये कतव्य और नई सभावनाए व्यक्ति स आमूल चूल अनुकूलन का तकाजा करती ह—उम अपन को नई आवश्यकताओ और सभावनाओ क अनुरूप का अभ्यस्त बनाना होता है। यह एक लबी और कठिन प्रक्रिया है। पुरानी चमडी इतनी जम गई है कि कभी कभी तो उस मास सहित ही उखाड लेना पडता है। उनम स कई लाग जो मन सत्रह बीस और तईस म अपनी नई चमडी म आसानी स मटरगश्ती किया करते थ आज हमारा देश समाजवाद म जितना गहरा प्रवश करता जा रहा, उतना ही झुकते और पिछडते जा रहे ह। इसका कारण थकान नही है। यह पुरानी चमडी की उखडने से बच रही धज्जिया क क्षय का परिणाम है जिसस सारे शरीर को ही छूत लग जाती है। अगर आप इस दृष्टिकोण स यहा क लोगो का दखग—और ऐसा लगता है कि आप और मिस्टर मर्री जानना चाहते ह और दख भी सकते ह—तो वे कई चीज जो पहली नजर म अबोधगम्य होती ह, इस एक शत पर ज्यादा बोधगम्य हो जायगी कि हमारे देश म रहते समय आप बाहरी दशक बनकर ही न रह।

हाथ मे प्लट लिए हुए येरेमिन मेज के पास आया।

आप लोगो के साथ बठ सकता हू क्या?

'बैठो बैठो अपने बराबर की जगह की तरफ इशारा करते हुए सिनीत्सिन न कहा। सुनाओ क्या खबर है? सुना है कि आज तुमन कृषि जन कमिसारियत को इस आशय का तार भेजा है कि तुम वसत तक बीस हजार हैक्टर स ज्यादा सिंचित जमीन नही दे सकते?

पालोजावा और ऊर्नावायेव न हैरानी के साथ येरेमिन की तरफ दखा।

"बेशक, भेजा है मैंने, तो उसका जिम्मेदार कौन है—तुम या मैं?"

"तार के लिए तुम ही जिम्मेदार हो। इसके लिए तुम्हे केंद्र के और आज पार्टी समिति के ब्यूरो के सामने भी जवाबदेही करनी पडेगी। दस बजे हमारी असाधारण बैठक हो रही है। मेहरबानी करके यह बताओ कि मामला क्या है। आखिर पार्टी समिति का ब्यूरो भी इसकी जानकारी चाहता ही है, न।"

"जिसका जवाब चाहिए, मैं दे दूगा। लेकिन तुम मुझ पर रोब डालने की कोशिश मत करो, मैं आसानी से डर जानेवाले लोगो मे नही हू।"

"कल सभा मे इजीनियरो पर दहाड रहे थे और आज चेत्वेयाकोव का ही फैसला कर डाला," ऊर्ताबायेव ने अपनी बात जोडी, "फिर इतना तूफान खडा करने की क्या जरूरत थी! मने तुम्हे कल ही कह दिया था।"

"तुम, ऊर्ताबायेव, चुप रहो, सो ही ठीक है। निर्माण काय का कबाड करके रख दिया है, मजदूरो को भगा दिया है और सारी मशीनो को तोड डाला है! इन सब बातो का जवाब कौन देगा? मैं ही, न!"

"तार के लिए—मैं तुम्हे पहले ही कह चुका हू—तुम जवाब दोगे," सिनीत्सिन ने उसे टोकते हुए कहा। "लेकिन निर्माण काय के जवाबदार तुम अकेले ही नही हो। आखिर हमारे यहा मैनेजमेंट, पार्टी सगठन और ट्रेड यूनियन भी है।"

"खाक मदद करते हो तुम हमारी! मैं आज ही स्तालिनाबाद जा रहा हू। मैं वहा अपनी रिपोर्ट दूगा।"

"तुम स्तालिनाबाद कल जाओगे। ऐसी जल्दी मत करो। मुझे डर है कि अपने इस तार के बाद तुम वापस नही आ पाओगे। अगर तुम्हारा यह खयाल हो कि तुम वहा पार्टी समिति के ब्यूरो के फैसले से पहले पहुच जाओगे, तो तुम गलती पर हो। तुम अभी तारघर को टेलीफोन कर सकते हो—हो सकता है कि तार अभी तक न गया हो। ज्यादा से ज्यादा उसे स्तालिनाबाद की लाइन पर ही रोका जा सकता है।"

"तार पर मने दस्तखत किये है और सिर्फ मै ही उसे रद्द कर सकता हू।"

"और कौन कर सकता है? बेशक, तुम ही कर सकते हो। तुम ही तारघर को टेलीफोन करोगे।"

"मै बिना बात के तार नही भेजा करता हू। अगर मने तार भेजा

ह तो इसका मतलब है कि म जानता हू कि मैं क्या कर रहा हू। म स्तालिनाबाद म केद्रीय समिति क सामन अपनी बात कहूगा। म आज ही जा रहा हू—आध घटे क भीतर। अगर तुम चाहो, ता मुझे जबरदस्ती रोक सकते हो।

जहा तक तुम्हे जबरदस्ती रोकने की बात है—सो म मिलीशिया तो हू नही। लेकिन तुम्हारे पार्टी विरोधी आचरण पर हम अवश्य विचार करना होगा। हम देखेगे कि तुम्हारे साथ क्या किया जाना चाहिए

होश हवास दुरुस्त रखना चाहिए भाइ।

खासकर पीछे की तरफ मोड पर साथी यरेमिन! सारे निर्माण कार्य को तो पीछे पलटा नही जा सकता मगर कही तुम खुद छिटककर बाहर न जा गिरो।

और तुम्हारा इरादा क्या है? अंत तक काम को चुपचाप चलते चले जाने दो और फिर अचानक भडाफोड होगा—यह क्या असली की जगह सिर्फ बीस? क्या यही तरीका है? मेरा कर्तव्य है कि अगर योजना की समय पर पूर्ति नही की जा सकती तो समय रहते चेतावनी दे दू और भाग्य पर भरोसा करते हुए चुपचाप न बैठा रहू।

भाग्य पर निर्भर करके नहीं लेकिन काम के ठीक सगठन द्वारा उसे अब भी किया जा सकता है।

और म पूछ सकता हू कि काम को ठीक स सगठित करने के लिए खुद तुमने क्या किया है? मजदूरो म कितने पार्टी सदस्य ह? जरा यह तो बताओ।

अगर तुम पार्टी समिति की बैठको मे कुछ ज्यादा आया करो तो तुम्ह खान क कमरे म इन सवालो को पूछने की जरूरत नही पड़ेगी।

म ठोस काम से देखता हू बैठको और सभाओ से नही।

तो तुम ठीक स नही देखते। तुम्ह आगे की तरफ देखना चाहिए। तुम्हारे साथ दिक्कत यह है कि तुमने सर तक अपने को योजना की चिंता म डुबा रखा ह और नतीजे के तौर पर तुम आगे नही देख सकते क्षितिज को नही देख सकते।

म क्षितिज पर नही मडराता म कोई कवि नही एक निर्माण प्रमुख हू। म यह देखता हू कि मेरे हाथ म क्या कुछ ह और यह हिसाब लगाता हू कि उससे म क्या कर सकता हू।

तुम जो किया जा सकता है वह नही देखते। वैसे, तुम्हारी जानकारी के लिए कुछ बता दू—दो महीने से—यहा अपनी नियुक्ति के समय से ही—मै इस बात की कोशिश कर रहा हूँ कि पार्टी और कोम्सोमोल के सदस्यो को जुटाया जाये और इस निर्माणस्थली पर भेजा जाय। कल ही केंद्रीय समिति ने एक निर्णय लिया है। अगले एक सप्ताह या दस दिन के भीतर हम दो सौ पार्टी सदस्य और तीन सौ कोम्सोमोली मिलनेवाले है। सत्तर प्रतिशत पार्टी सदस्य और शत प्रतिशत कोम्सोमोल सदस्य ताजिक है। कोनो अब करते हो अपने तार को रद्द?

'हम मशीन चाहिए कोम्सोमोली नही। क्या खजाना मिल रहा है! तीन सौ ताजिक कोम्सोमोली। बहुत देखे है हमने तुम्हारे ये कोम्सोमोली। हफ्ते भर के भीतर वे सब भाग खडे होगे और अपने अपने घर चले जायेंगे।'

"ठीक है, तो उनके काम की परिस्थितियो का इस तरह सगठन करो कि वे भागें नही। तार कुछ कम भेजो और दक्षता जरा ज्यादा दिखाओ।'

'तो तुम्हारे कहने का मतलब क्या है—मै कुदाल से मिट्टी उठाऊ या ऐसा ही कुछ और करू? उसे अपने कधो पर ढोना फिरू? बस भी इस सारे धधे को मैं अपने कधो पर ही लिये ढो रहा हू। हमे परिवहन की कोई सुविधाए नही दी गई है—ढाई सौ की जगह सिर्फ पचास ट्रक दिये गये है। और इनमे से भी आधे टूटे पडे है। एक सौ पचास ट्रैक्टरो मे से एक भी नही पहुचा है। छब्बीस एक्स्केवेटरो के बजाय तीन मिले है। यह है क्या? मजाक? क्या इसे ही शत प्रतिशत यत्रीकरण कहा जाता है? क्या इससे ककरपत्थर मे चालीस किलोमीटर लबी नहर खोदी जा सकती है? मेरी जगह बैठो आकर और करो इसे करने की कोशिश।

'अगर मुझे बैठा दिया जाय, तो बैठ जाऊगा। जब तक तुम्हे गलत नहा किया जाता, यह तुम्हारा काम है।

'येरेमिन, तुमने चेल्वर्याकोव की दलीलो को ही रट लिया है' ऊर्नाबायेव बोला।

येरेमिन ने अपनी प्लेट को इतनी जोर से धकेला कि सूप मेज पर छलक गया।

'तुम सब भाड मे जाओ! तुमने मुझे समझ क्या रखा है—अदालत के कठघरे मे खडा मुजरिम?'

वह उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की तरफ चल दिया। दरवाज़े पर रुककर उसने अपनी बात म यह और जोड़ा

अच्छा हो कि अपने ट्रेड यूनियन समितिवाला से कह दो कि व एक असाधारण अदालत बैठा दे। आज नशे मे चूर एक ड्राइवर अपना ट्रक लेकर स्तालिनाबाद रवाना हुआ और उसका ट्रक वख्श नदी मे जा गिरा। उस हरामजादे को तो लोगो ने अधमरी हालत म निकाल लिया, मगर ट्रक जाता रहा। इस तरीके से तो मेरे वापस आने तक एक ट्रक भी नही बच रहेगा '

'मुझे मालूम था कि किस्सा इसी तरह खत्म होगा, जब येरेमिन की विशाल आकृति आखो से ओझल हो गई, तो मिनट भर की खामोशी के बाद ऊनानायेव ने कहा। 'यह दुर्बल-चरित्र व्यक्ति है। चिल्लाकर अपना गला बैठा लेगा, चिढ़ेगा, सब कही दौड़ेगा भागेगा, हर चीज़ को एकदम करने की कोशिश करेगा सुबह से शाम तक काम करेगा, मगर नतीजा उसका कोई खास नही है। चेत्वर्यािकोव तो चालाक लोमडी है। वह दिमाग को ठडा रखकर अपना काम निकाल लेता है। उसने येरेमिन की फौरन थाह ले ली। पहले वह इसे मन भर चीख लेने देता है और फिर करता सब कुछ अपने ही तरीके से है। मुझे यही अचरज ह कि पार्टी ने येरेमिन को इस जैसे काम पर कैसे नियुक्त कर दिया।

इस बात को रहने दो,' सिनीत्सिन ने भृकुटी तानकर कहा। "म पोलिश मोर्चे पर था एक बार इसके साथ, गहयुद्ध के समय। इसकी टुकडी मे मै राजनीतिक कमिसार था। पूरी फौज म इस जैसा और कोई कमाडर नही था। बडा धीरजवाला, बडा ही हिम्मतदार। घिर जाने पर एकदम निराशाजनक स्थिति से भी निकल आया और ऊपर से युद्धबदी बनाकर लाया, सो अलग। मेरी समझ म नही आता कि उस क्या हो गया है। कई लोग ऐसे हैं जो गहयुद्ध के बाद सतुलन खो बैठे—शातिकालीन काम क लिए अपने को ढाल ही नही सके। लेकिन आखिर इसको भी कितन बरस हो गये, और यह जिम्मेदार पदो पर काम करता रहा है और सो भी खूब अच्छी तरह से काम करता रहा है।"

'हो सकता है कि कम मुश्किल परिस्थितियो म सशक्त पार्टी सगठन और ट्रेड यूनियन समिति की सहायता से उसने अपना काम ठीक से चला लिया। ऐसे मामलो म मजदूर खुद आपको पार लगा सकते ह। लेकिन

हमारी परिस्थितिया मे और हमारी कठिनाइयो के दष्टिगत नेतत्व के लिए असाधारणत मजबूत आदमिया की जरूरत है।"

"मुझे उसे उसके पद से अलग करने और मामले को नियत्रण आयाग के सुपुर्द करने के सवाल को उठाना होगा," सिनीत्सिन ने शात होकर सोचा।

यद्यपि क्लाक की समझ म यह नही आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है, फिर भी वह मेज से उठा नही और धैर्यपूवक बातचीत के खत्म होने का इतजार करता रहा। उसे लगा कि स्थानीय पार्टी सचिव, सिनीत्सिन ही वह आदमी है, जिसकी उसे जरूरत है। और जब सिनीत्सिन और ऊताबायेव उठे, तो उसने पोलोजोवा से अनुवाद करके यह कहने का अनुरोध किया कि वह एक मामूली-सी बात की सिनीत्सिन से चर्चा करना चाहता है।

"कल रात मुझे अपनी मेज पर यह छोटा सा परचा रखा मिला था," उसने उस चित्रवाले कागज को मज पर फैला दिया। "और यह एक और रहा, बिलकुल इसी तरह का, जा इजीनियर बाकर को अपने कमरे म मिला था।"

"और यह रहा तीसरा," मेज पर एक और चित्र को फैलाते हुए मर्री न कहा।

"बेशक, मै इस तरह की धमकियो को कोई खास गभीर नही समझता," क्लाक ने जल्दी से कहा, "मगर मैने सोचा कि शायद आपकी यह जानने म दिलचस्पी हो कि यहा इस तरह के मजाक करने का किसे शौक है।"

निमिष मात्र को भी ऊतावायेव के चेहरे पर से अपनी आखा का हटाये बिना उसने एक चित्र सिनीत्सिन की तरफ बढा दिया और एक ऊर्तावायेव की तरफ।

ऊर्तावायेव ने बडे ध्यान से कागज पर निगाह डाली।

'बहुत दिलचस्प है,' उसने अपना हाथ बढाकर दूसरे चित्र को उठा लिया और उसकी पहले चित्र के साथ तुलना करने लगा, "तुम्हारा क्या खयाल है इसके बारे मे, सिनीत्सिन?

'बडा अथपूण है और सो भी बडे सरल साधनो से बनाया गया है,' सिनीत्सिन ने सराहना के साथ कहा। "जाहिर है कि जिसने भी इस

बनाया है वह गधा नहीं हं। और वह ताजिक भी नहा हो सकता। ताजिक कटा हुआ सिर बनाता पर खापडी नहीं। खापडा यूरोपीय प्रकार हं। इस जिसने बनाया है, वह रूसी हाना चाहिए।'

'यह तो सही है   ऊर्तावायव न उसकी पुष्टि की "कोई ताजिक खापडी नहीं बनाता।

और अगर इस बनानेवाला रूसी था तो यह प्रकट है कि वह बिना पढा लिखा नहीं था   सिनोत्सिन न अपनी बात जारी रखी।

यह कैसे ?

वह अंग्रेजी वर्णमाला जानता है। और यह स्कूलों म पहल दरजे म तो सिखाई नहीं जाती।

एकदम ठीक। तुम तो पक्के जासूस हो।

सिनोत्सिन न तीनों कागजों को समेट लिया।

म इस मामल को साफ करन की कोशिश करूगा। कृपया घबराइये मत और न इसे ज्यादा महत्त्व ही दीजिये। आप लोगों का बाल भी बांका नहीं होगा। अगर कहीं आपको इस तरह की और कलाकृतियां मिल कृपया उन्हें सीधे मुझे दे दीजिये।

उसने क्लाक और मर्री के साथ हाथ मिलाये और ऊर्तावायेव के साथ चला गया।

क्लाक मर्री और पोलोजोवा भी जाने के लिए उठ खडे हुए।

बाकर से न कहियेगा कि आपको ऐसा ही खत मिला था पोलोजोवा के वहां से चले जाने के बाद क्लाक ने मर्री से कहा   मैंने उसे विश्वास दिला दिया है कि कोई उससे मजाक कर रहा है। नहीं तो वह आतंक फैला देगा और हथियारबंद पहरेदारों और मशीनगनों की मांग करने लगेगा।

मर्री ने सिर हिलाकर सहमति जता दी।

हां कल ऊर्तावायेव तो आपके कमरे म नहीं आया था ?   क्लाक ने पूछा।

आया तो था।'

वे मर्री के दरवाजे के बाहर खडे थे।

'मुझे एक हलका सा शक है जो कल मेरे दिमाग म आया था।"

यह दिलचस्प बात है। आइये, अंदर आइये।'

'बात यह है कि हम सब के कमरे बद थे और चाबी के बिना कोई उनमे दाखिल नही हो सकता था "

क्लाक ने मर्री को अपने सदेह से अवगत कराया।

'हा, मगर ऊर्तावायेव क्या हम काम से भगाना चाहेगा?" मर्री ने कहा, "लेकिन फिर यह कोई ऐसी असभव बात भी नही है। उतावायेव, मुख्य इजीनियर और निर्माण-प्रमुख मे काफी तनातनी जान पडती है। हो सकता है कि ऊर्तावायेव बाकी दोनो को बदनाम करना चाहता हो और यह साबित करना चाहता हो कि व काम को समय पर नहीं खत्म कर पायेंगे। ऐसी सूरत मे हमारा आना उसकी मरजी के खिलाफ होगा।"

"हा, सभव तो है।"

"एक सभावना और भी है। ऊर्तावायेव ताजिक है। मुख्य इजीनियर और निमाण प्रमुख रूसी है। उनमे जातीय विद्वेष भी हो सकता ह।"

"हा, मगर ऊर्तावायेव कम्युनिस्ट है, है कि नही?"

"तो क्या हुआ?" मर्री मुसकराया, "जातिवाद कम्युनिज्म से ज्यादा पुराना है।"

मिस्टर बार्कर को न्यूयार्क मे मरना श्रेयस्कर लगता है

पार्टी समिति का कार्यालय एक विषण्ण भिनभिनाहट म गूज रहा था। भिनभिनाहट मक्खियो की थी, जो हवा मे बडे बडे घेरे बनाती उड रही थी। यह भिनभिनाहट चिपचिपे मक्खीमार कागज के उस लबे खर्रे से आ रही थी, जो छत के लैप के साथ लटका हुआ था और अपने पर चिपकी मक्खियो के शरीरो से काला हो रहा था। यह मज पर बिछे मक्खीमार कागजो से आ रही थी, जो सैकडो नन्हे नन्हे पखो की पारदर्शी थरथराहट से अजीब तरह से अपनी तोदें फुला रहे थे। मक्खीमार कागज लोगो का चिपक जाना, वे कोसते हुए इस चिपचिपी गदगी को छुडाते, जाली की बनियाइनो से ढके अपने कधो और घुटनो पर जोरो से हथेलिया मार-मारकर इन भिनकते काले नुक्तो को कुचलते, जिससे सूजी हुई खाल पर लाल दाग रह जाते।

खुली हुई खिड़की से, जिसपर एक गीली चादर लटकी हुई थी, ससलसी गरमी कमरे मे रिस रिसकर आ रही थी। चादर से भाप उठ रही थी, मानो उस पर बाहर की तरफ स गरम लोहा फेरा जा रहा हा।

सडक से एक गधे के रेंकने की लबी कातर आवाज आ रही थी। पसीने मे नहाय लाग आ जा रह थ, जिनक वदन ऐस लग रह थे, मानो प्रखर गरमी न उन पर लेप कर दिया हो। कर्कश टेलीफोन अपनी कणकटु विह्वल चीत्कार से बातचीत को लगातार भग करता जाता था।

सिनीत्सिन जिस मेज के पीछे बैठा था, उस पर गाफे मे लिपटी एक तादल चायदानी रखी थी। रिपोर्टों के बीच बीच सिनीत्सिन उससे प्याले मे हलके पीले रग के तरल का ढालता जाता और घूट-घूट करके पीता जाता था।

एक बार फिर टेलीफोन की कणकटु घनघनाहट गूज पडी।

हा, हा, सिनीत्सिन। पत्र? कसा पत्र? कौन? पोतोजोवा? आह, नमस्त! क्या? उह एक पत्र और मिला है? तीना को? पहली मई तक? हू, मगर यह तो कोई बहुत सख्त माग नही है। उह आज शाम को पार्टी समिति के कार्यालय म मरे पास ले आओ। हा तीना को। ठीक है।"

सिनीत्सिन ने रिसीवर को रख दिया।

एक नौजवान ताजिक एक तार को हिलाता हुआ कमरे म दौडता हुआ आया। तार को सिनीत्सिन के सामन रखकर उसने प्याले को खगाला उसमे ढालकर घूट भर चाय पी और मेज के पास खडा होकर इतजार करने लगा।

"तो, क्या लिखा है उन्होन? क्या खबर है?"

सिनीत्सिन न तार को सावधानी से पढा।

हमारा प्रस्ताव मजूर कर लिया गया है—येरेमिन और चेत्वर्यानोव को उनके पदो से अलग कर दिया गया है। एक सप्ताह के भीतर हमारे पास एक नये निर्माण प्रमुख और नये मुख्य इजीनियर को भेजा जा रहा है। तो, पढ लो!"

ताजिक न बडी उत्सुकता के साथ तार को पढा।

"और तुम इस मोरोज़ोव को जानते हो?" उसे पढ लेने के बाद उसन पूछा।

'नही, गफूर, मै नही जानता। मोरोज़ोव नाम के लागो की तादाद

काफी बडी है—तुम्हारे देश म जितन इवाजायेव नाम के लोग ह, उससे ज्यादा। अगर उसे हमे मुश्किल से निकालने के लिए भेजा जा रहा है, तो इसका यही मतलब है कि वह योग्य आदमी होना चाहिए। मुख्य बात यह है कि काम का इस तरह सगठित किया जाय, जिससे नौजवान मुश्किलो के आगे रुक न जायें। समझते हो, न? तुम्हारे यहा प्रतियोगिता का क्या हाल है? ढीली है अभी, है न?"

"हाल इतना बुरा तो नही है! कल पहले सैक्शन पर श्रम उत्पादकता पद्रह प्रतिशत बढी।"

"यह तो कुछ भी नही है! पद्रह प्रतिशत का क्या फायदा? पचास प्रतिशत होती, तो कोई बात होती! और एक्स्केवेटरा की क्या खबर है? दोना ब्यूसाइरस पहुच गये? उनका सयोजन शुरू हो गया?'

"हा, सयोजन का काम शुरू हो गया है। मेल्योलकिन की टोली ने अमरीकी को प्रतियोगिता की चुनौती दी। अमरीकी ने सयोजन के लिए पद्रह दिन का समय रखा—हमारे छोकरे इस काम को नौ दिन मे खत्म करना चाहते है। अमरीकी बहुत बुरा मान रहा है—वह प्रतियोगिता नही करना चाहता। वह कहता है 'मै यहा काम करने के लिए आया हू, सिर के बल खडा होने के लिए नही'।"

"क्या उसका पारा बहुत ऊपर चढा हुआ ह?"

"हा!"

"कोई बात नही, वह फिर ठडा हो जायेगा। अच्छा, सुनो, जरा नासिरुद्दीनोव को मेरे पास भेज दो। कोम्सोमोली आ गये ह। उन्ह फौरन काम मे लगा देना चाहिए, कई आदश टोलिया बना देनी चाहिए। अगर कोम्सोमोली प्रतियोगिता आदोलन म सबसे आगे नही रहते, तो उनका सारा काम फूटी कौडी बराबर भी नही होगा।"

तार मे दी तारीख कभी की बीत चुकी थी, मगर निर्माणस्थली अपने नये नेताओ के आगमन की प्रतीक्षा ही कर रही थी। रोज उनके पहुचने की आशा की जाती, नौघाट पर नजर रखने के लिए रोज विशेष हरकारे भेजे जाते, मगर वे खाली हाथ ही लौटकर आते। स्तालिनाबाद तावडतोड तार भेजे जाते। दूसरे हफ्ते के अत मे बजरा ही वह गया और स्तालिनाबाद के साथ सचार टूट गया।

सिनोत्सिन प्रबंध कार्यालय को कसबे से निर्माणस्थली की बारकों में, जो अभी बन ही रही थीं, मगर लकड़ी की कमी के कारण जिन पर छत नहीं डाली जा सकी थी, स्थानान्तरित करने की जल्दी में था। एक काम अलबत्ता उसने करवा लिया – पार्टी समिति का दफ्तर निर्माणस्थली पर ही निरपाल की एक नई बारक में, "जनसाधारण के निकट" ले आया गया और कसबे के मकान को छोड़कर वह भी निर्माणस्थली पर ही इंजीनियरों और टेकनिशियनों के लिए बने एक नये मकान में आकर रहने लगा।

जिस कुमुक को भेजने का आश्वासन दिया गया था, वह धीरे धीरे, छोटे छोटे दलों में आई। पहले सवशन की बस्ती सभी का समान में नाकाफी रहने के कारण फैलने लगी। नहर की तरफ उसका प्रसार अपने ही ढंग का था। नवागन्तुक आये, तो उनके रहने के लिए बारकें नहीं थीं। इसलिए शुरू शुरू में वे खुले में ही सोते थे, फिर उनके सोने की जगहों के आसपास धीरे धीरे दीवारें उठने लगतीं और अंत में उनके सिरों पर छत भी पड़ जाती।

इस आधिकारिक बस्ती के ही साथ साथ इसके बाहरी अंचल में अनाधिकारिक 'उपबस्तियां' भी आप ही आप पैदा हो रही थीं। परिवारवाले मजदूर सामूहिक बारकों को 'सामूहिक फार्म निवास" कहते थे और उसे बहुत पसंद नहीं करते थे इसलिए उन्होंने चारों के तख्तों, प्लाइवुड और डामर लगे कागज से रात के समय, अपने अपने अलग चापड़े बना लिये थे, यद्यपि यह नियमविरुद्ध था। कीलों और तारों से टुकड़े टुकड़े को जोड़कर बनाये ये खोखे, जो देखने में ऐसे लगते थे कि हवा के पहले झोंके में उड़ जायेंगे, चायदानियों, मिट्टी के तेल के स्टोवों, खटमलों मानव आवास की महक और चूल्हों के घने धुए से भरे हुए थे। शामों को उनकी टेढ़ी मेढ़ी छतों के नीचे से निकली कोहनीनुमा चिमनियों से धुए के लच्छे उठते और दांतों में पाइप को दबाये बुढ़ियों और खोखों की यह सारी बस्ती शाम के खाने के बाद गांव के सिरे पर तंबाकू पीने और गपशप करने के लिए जमा हुए बूढ़ों की भीड़ जैसी दिखने लगती थी।

निर्माणस्थली पर इस स्वतःस्फूर्त महल्ले का नाम रख दिया गया था – 'स्वनिर्माण'।

लोग आते रहे, बस्ती फैलती रही – बस निर्माण-कार्य ही नहीं बढ़ा।

एक दोपहर को क्लाक नदी के तट पर खडा उसकी सतह से उठती कोमल शीतलता को अपनी सासा मे भर रहा था। नीचे एक चौडे खडी दीवारोवाले खड्ड मे नदी अपनी तूफानी चाल से भागती जा रही थी।

खड्ड के खडे ढाल पर एक दहकान किसी तरह अपने पैर जमाये खडा हुआ था। गैंती के बधे हुए प्रहारो से वह चट्टान पर उगे एक गाठदार पौधे को जड सहित उखाड रहा था। कारागाच का वह नाटा, पर चुने पक्षी की तरह कडे रोयेंवाला और हडीला पेड चट्टानी दीवार से चिपटा हुआ सा था। जब यह खबर फैली कि किनारे को इस जगह पर उडाया जानेवाला है, तो एक दहकान क्लाक के पास आया और उसने उस पेड को अपने किशलाक ले जाने की आज्ञा मागी। दो दिन खाने की छुट्टी मे, जब गरमी विशेषकर असहनीय हो जाती थी, वह ढाल पर उतर जाता था और धीरज के साथ अपनी गैंती से पत्थर को इस तरह काटता जाता था कि कही पेड की जडो को नुक्सान न पहुचने पाये।

क्लाक उसे आज दूसरे दिन कुतूहल भरी नजर से देख रहा था। लगता था कि अभी अभी अचानक पत्थरो के गिरने का शोर सुन पडेगा और पेड के साथ-साथ वह दहकान भी नीचे के उस गदले प्रवाह मे गिरता नजर आयेगा।

क्लाक ने सोचा कि इन धूप से झुलसे मैदानो मे, बादामी खाल के लोगा मे, जो एक कुरूप से पेड के लिए भी अपनी जिदगियो को खतरे मे डाल सकते हैं, हरियाली का कितना सख्त अभाव है और अचानक उसके दिमाग मे यह बात आई कि इसम अचरज की क्या बात है कि दहकानो के धारीदार चोगा पर चटकीले हरे रग की इतनी सारी धारिया रहती हैं।

उसने अपने चारो तरफ पीले मैदान पर, पथरीले नाले मे सुस्ती से पत्थर चरते दोना एकाकी एक्स्केवेटरो पर, खेमा की नाटी नाटी सफेद छता पर नजर डाली। अब से कोई डेढ साल बाद एक पवतमाला से लेकर दूसरी पवतमाला तक कपास के सफेद लच्छो, अरीको की पीली धारियो और बागा की मरकती चकतियो की कसीदाकारी स अलकृत हरे खेता की एक साजनी बिछ जायेगी, जिस पर, नमूने के ऊपर बने नमूने की तरह— भावी राजकीय फार्मो के मकान सफेद पखडियो जैसे लगते होगे।

इसके लिए बस इतना ही आवश्यक है कि नये चरागाहो की तरफ आकर्षित हुई एक प्रचड और हठीली नदी अपने लिए तैयार किये जानेवाले

चौड़े जलमार्ग पर बहने लगें, ढाल से उत्प्लव भाग पर आ फिसले, टरबाइना के विराट चक्का को घुमाने लगे और मानो इस्पाती घरहरा द्वारा अपने अयान से निकाली चिनगारियो की चटचट से टरकर हडबडी मे नहरा मे जा घुसे और मैदान को एक उथली सरकती बाढ से आप्लावित कर दे।

इसके लिए जरूरी है कि यह नया चौडा जलमार्ग बढ़े, कि वह मैदान के कठोर आवरण को तोडता हुआ दिन प्रति दिन मीटर-मीटर करके आगे बढता जाये।

लेकिन जलमार्ग आगे नही बढ रहा था—कम से कम क्लार्क को तो ऐसा ही लगता था। दोनो अनाथ एक्स्कवेटर बेकार ही अलस सवेर स लेकर देर गये रात तक कडे पत्थर को हठधर्मी के साथ कुतरते रहते थे, यहा तक कि लगता था कि उनके जबडे ही टूटनेवाले है। उनके दात अगर दस दस हाथ लबे भी होते, तो भी वे धरती पर पचीस किलोमीटर लबी नाली नही खोद सकते थे। इस काम का कर पाने के लिए कम से कम सत्रह एक्स्केवेटरा की दरकार थी।

काम के सातवे दिन क्लार्क न मन मे सोचा कि हो सकता है कि चेत्वेर्याकोव का यह कहना आखिर ठीक ही रहा हो कि योजना मे जितनी मशीनो की व्यवस्था की गई है, उनके बिना काम को समय पर पूरा नही किया जा सकता।

चेत्वेर्याकोव और येरेमिन की बरखास्तगी की खबर को सुनकर क्लार्क को बहुत आश्चर्य हुआ था। वह इस बात को समझ ही नही पाया कि चेत्वेर्याकोव का अपराध क्या है। पालाजोवा ने उसे 'दक्षिणपथी अवसरवाद" बताया था और क्लार्क को यह पूछना ठीक नही लगा कि इसका मतलब क्या है। उसे यह इसलिए ठीक नही लगा था कि मन म उसे यहा लगता था कि वह चेत्वेर्याकोव के पक्ष म है। उसे लगता था कि पोलोजोवा तथा अन्य लोगो को इसका शक हो गया है और इसलिए चेत्वयाकोव की बरखास्तगी के बारे मे उससे बात करते समय वे उसकी तरफ बहुत एकाग्रता से, एक खास तरह की सख्ती के साथ देखते ह, मानो कहना चाह रहे हो "ध्यान रह, ऐस कर्मी हमारे किसी काम के नही!"

उसने अपने मन मे प्रश्न किया कि इस अबोधगम्य देश म एक इजीनियर स क्या अपेक्षा की जाती है। चेत्वयाकोव न इस बाजीगरी कहा था,

लेकिन इस बाजीगरी का मतलब है क्या? क्लार्क बढ़िया काम करना चाहता था। हर कोई उससे कुछ असाधारण बात की अपेक्षा करता था और यह खयाल बड़ा नाखुशगवार लगता था कि वह शायद उन सब की आशाओं को पूरा न कर पाये। वह देखता था कि यहा के लोगों की आखो मे "अमरीकी इजीनियर" शब्द उस पर एक विशेष दायित्व डाल देते है। और एक और बात भी वह समझता था—अगर वह चेत्वेर्याकोव की जगह होता, तो बहुत करके वह भी वही करता, जो चेत्वेर्याकोव ने किया था और अब तक उसे भी अपने पद से अलग कर दिया गया होता। इस तथ्य की अनुभूति विशेषकर अप्रिय थी।

यह प्रत्यक्ष था कि इस देश म एक विशेष ढग से काम करना जरूरी है, फिर चाहे मशीनें हो या न हो, वास्तविक सभावनाए चाहे कुछ ही क्यो न हो। लेकिन कैसे? शामो को उन्हे कामकाजी सभाओ मे भाग लेने के लिए बुलाया जाता। सभाओ मे योजना की अपूर्ति पर चर्चा की जाती। अगले दिन श्रम उत्पादकता पाच, दस या हद से हद पद्रह प्रतिशत बढ जाती। लेकिन अछूती धरती के महासागर मे यह बूद बराबर ही था।

सबसे ज्यादा लगनवाले मजदूर वे थे, जो एक्स्केवेटरो को चलाते थे। उनकी दो टोलिया थी। एक्स्केवेटरो के बेकार न पडे रहने के लिए वे बारी-बारी से काम करती थी—आठ घटे के काम के बाद वे आठ घटे सोने के लिए चली जाती और उसके बाद फिर काम पर लौट आती। उन्ही की बदौलत यह बडा खाचा लगातार बढता चला जा रहा था—बहुत धीरे-धीरे ही सही, मगर फिर भी बढ अवश्य रहा था। यह समाचार बडे हर्ष के साथ ग्रहण किया गया कि तीन एक्स्केवेटर और आ गये है।

यह उस शाम के तीन दिन बाद की बात है, जब क्लार्क को अपनी मेज पर एक और रुक्का मिला था। दूसरा रुक्का पहले से भी ज्यादा अर्थपूर्ण था। स्थानीय समाचारपत्र मे छपे चित्र से काटा हुआ क्लार्क का सिर उस कागज पर चिपका हुआ था। यह चित्र तबाकू काड के सिलसिले मे क्लार्क के भाषण का वर्णन करनेवाले एक लेख के साथ छपा था। सिर को कैंची से बडी सफाई के साथ काटा गया था, उसके कान काट दिये गये थे और आखो को पिन से छेद दिया गया था। लाल पेंसिल से दिखाई गई खून की बूदें बराबरी से कटी गरदन से टपक रही थी। नीचे उसी लाल पेंसिल से लैटिन अक्षरो मे लिखी «1 Mai» तारीख थी।

अत्यंत उद्विग्न क्लार्क ने रुक्का पोलोजोवा को दे दिया और उससे पूछा कि चित्रकार का अभी तक पता चला या नही। पोलोजोवा ने कहा कि उसे नही मालूम। क्लार्क ने उससे और सवाल नही पूछे—वह नही चाहता था कि उसे डरपोक समझ लिया जाये।

अब नदी के किनारे खडे होकर चारो ओर पीले मैदान पर दृष्टि डालते समय उसे अकस्मात उसका खयाल आ गया—दस ही दिन तो बाकी रहे है पहली मई के आने मे। जोखिम उठाने का क्या फायदा? उसने अपने तिरपाल के नये बूटो पर से धूल झाडी और हाल ही मे पहुचे एक्स्केवेटरो के संयोजन की जगह चला गया।

पसीने से चिकने नगे बदन मजदूर हथौडो की टनटन और रेतियो की किरकिराहट के शोर मे अर्धसयोजित एक्स्केवेटरो के ढाचो पर जुटे हुए थे। अपने रेशमी कोट और सफेद टोप मे क्लार्क ऐसा लग रहा था, मानो ब्रिटिश म्यूजियम का डायरेक्टर अभी अभी खोदकर निकाले गये इक्थियो सौरस की सफाई के काम की देखरेख कर रहा हो। वह अपने हाथ हिलाता और गालिया बरसाता हुआ इधर उधर झपट रहा था—मानो डायरेक्टर इस खयाल से ही दहशत मे आया हुआ है कि यह भगुर और मूल्यवान पशु कही टूट न जाये।

"यह तो बरदाश्त के बाहर बात है!" वह पोलोजोवा पर बरस पडा। "उनसे कह दीजिये कि ऐसे मजदूरो के साथ मै अब और काम नही कर सकता। कुछ भी हो मै कोई जिम्मेदारी नही ले सकता।'

"लेकिन इन मजदूरो की क्या बात आपको नापसद है? ये लोग तो खाने की छुट्टी मे भी इस तरह काम करते है मानो इनके सिर पर भूत सवार हो"

"काम करते है? ये काम नही करते दीवाने हो जाते है। इन्होंने किसी और टोली के साथ एक्स्केवेटर को नौ दिन मे सयोजित कर लेने की बाजी बद रखी है और अब ये ऐसी आपाधापी मचा रहे है कि शैतान की पनाह। ये सब उलटा पलटा कर रहे है और एक दूसरे के हाथ से छीना झपटी कर रहे है। रात इन्होने मुझे तीन बजे जगा दिया और यहा घसीट लाये। मै इन्हे काम रोककर आराम करने का आदेश देता हू, तो ये मेरी बात नही सुनते। ये मुझे यहा गरमी मे रुकने के लिए मजबूर करते है। मैने यहा कोई बीस घटे रोज काम करने का ठेका थोडे ही ले रखा है!'

"तो आप जाइये और जाकर गेम में आराम कीजिये, न।"

"ये मशीनों को तोड़ देंगे, ठीक से संयोजन नहीं करेंगे और मुझे फर्म को जवाबदेही करनी होगी। पर कोई समाचार नहीं है—यह एक नाजुक और जटिल मशीन है।"

"इन्होंने कोई चीज बिगाड़ी तो नहीं?

"मैं यह कैसे कह सकता हूं?"

"दखिये बहुत करके इन्होंने कुछ भी नहीं बिगाड़ा है और जल्दी इसलिए करनी पड़ रही है कि वैसे ही काम बुरी तरह से रुका पड़ा है।"

"तो रोक कौन रहा है? आखिरी वक्त पर इस तरह से जल्दी मचाने के बजाय पुरजों को समय पर पहुंचाना चाहिए था। दो हफ्ते में यहां बिना काम के बैठा रहा ,

"तब आपने आराम कर लिया था। अब आपको सख्त काम करके इन दो हफ्तों की कसर को पूरा करना होगा।"

वाकर ने पानोजोवा पर एक भयपूर्ण दृष्टि डाली।

"आपको अच्छा लगता हो, तो आप अड़तालीस घंटे रोज काम कीजिये, मगर मेरी तरफ से ये सब भाड़ में जायें। मेरा बंधा हुआ कार्यक्रम है। फर्म समझती है कि एक एक्स्केवेटर के संयोजन के लिए पंद्रह दिन चाहिए और मैं बस, इस एक ही कार्यक्रम का पालन करने को बाध्य हूं।"

क्लार्क को यह झगड़ा और वाकर का अभद्र व्यवहार बहुत बुरा लगा। उसने वाकर को अलग हटाते हुए कहा

"देखते नहीं, यह क्या बाजार जैसा हल्ला मचा रखा है आपने। देखकर शरम आती है!"

'कोई परवाह नहीं—अब ज्यादा शरम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं तो वैसे भी इस काम पर हफ्ता भर और ठहरने को भी तैयार नहीं हूं। मुझे अपनी जिंदगी प्यारी है। यह एक्स्केवेटर पूरा हो जाये, तो कर दें के मेरा हिसाब साफ।'

'मगर, मेरे दोस्त मंदी के बारे में मत भूल जाइये। फर्म इस बात को पसंद नहीं करेगी कि आप काम छोड़कर आ गये और इसकी ज्यादा संभावना नहीं है कि वह आपको कोई और काम दे दे।'

"आपके कहे के मुताबिक, अगर मेरे हाथ म दूसरा काम न हो, तो क्या मैं अपने को भेड की तरह से कटवा दू, क्यो? जी, बहुत शुक्रिया। मुझे न्यूयाक मे ही मरना श्रेयस्कर लगता है।"

"आप उन मजाकिया चित्रो की बात तो नही कर रहे, जो आपको अपने कमरे मे मिले हैं?"

"आप चाह, तो तब तक यही जमे रहिये, जब तक वे इन मजाको को अमल मे लाना शुरू नही करते। मैं विनोदप्रिय आदमी नही हू। मुझे नही मालूम कि आप मुझे क्यो मूख बनाना चाहते ह। आपने मुझे यह क्यो नही बताया था कि आपको और मर्री को भी वैसे ही रुक्के मिले थे?"

"तो फिर आपको किसने बताया?"

"मर्री ने।"

"हो सकता है कि वह आपसे मजाक कर रहे थे।"

"यह आपकी ही विशेषता है।'

"तो आप कब जाने की सोच रहे ह?'

"ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ते मे। और मेरी राय है कि आप भी इस पर एक बार विचार कर ले। इस तरह से अपनी जान का जोखिम म डालने का क्या फायदा?

"सलाह के लिए शुक्रिया। अगर आप मेरी सलाह सुने, तो आपको ईमानदारी से यही रुकने की राय दता हू। मैनेजमेट हमारा पूण सुरक्षा की गारटी दे रहा है।"

"अफगानिस्तान की सीमा पर एक उजाड रेगिस्तान मे इस तरह की गारटिया कोई सुरक्षा प्रदान नही करती। जहा तक मेरी बात है, मैं उन पर विश्वास नही करता। यहा के लोगो से पूछिये, पिछले साल बासमचियो ने कितने लोगो को मारा था,—तब आप भी मान जायेंगे कि इस तरह के मजाक हमेशा ही मजेदार नही होते।

"तो सक्षेप मे, आपने जान का पक्का निश्चय कर लिया है? ठीक है तो न्यूयाक को मेरा सलाम!"

"क्या यह सभव है कि कुछ गुमनाम परचा स एक अमरीकी इजीनियर की हिम्मत जाती रहे और वह निमाणस्थली से भाग खडा हो?" अचानक पास से ही पोलोजोवा की तजभरी आवाज सुन पडी।

क्लाक का चहरा बिगड गया।

"म आपसे अनुरोध करूंगा कि आप अपने शब्दो का ज्यादा सावधानी के साथ चयन कर," उसने तेजी से कहा, "और कृपया मुझे यह कहने की आज्ञा दीजिये कि आगे स आप यह याद रखें कि अपने सहयोगी से बात करते समय मुझे अनुवादिका की आवश्यकता नही होती है।"

पोलोज़ोवा ने होंठ भीच लिये।

"मिस्टर बाकर अपनी बात इतनी ज़ोर से कह रहे थे कि चाहू या न चाहू, आप लोगो की बातचीत कान मे पड़े बिना नही रह सकती थी। बस मुझे इस बात का ज़रा भी अनुमान न था कि यह गोपनीय है।"

"खेद की बात है।"

"आपके आदेश का पालन करने मे म कभी चूक नही करूगी, यद्यपि यह बात अधिक शिष्टता के साथ भी कही जा सकती थी।'

'बात यह है कि मेरा लालन पालन बहुत बुरी तरह से हुआ है।"

"मने यह कभी भी नही कहा।'

"आपका आशय यही था। आप चाहे मुझे बिलकुल नादान समझें, मगर मैं बात को काफी जल्दी समझ जाता हू।' क्लाक और भी खीज हो गया। "बेशक, मैं बहुत सी बातो को नही जानता, जिन्हे आपके देश म बिलकुल सामान्य माना जाता है। मिसाल के लिए, मुझे अभी तक यह नहा मालूम था कि अनुवादक के काम मे विदेशियो को हिदायत देना भी शामिल है। दुर्भाग्यवश, मेरी उम्र म आकर किसी चीज को एकदम नये सिरे स सीखना बहुत मुश्किल है '

'नये सिरे से सीखा कभी भी जा सकता है।"

'कृपया मुझे कम स कम अपने शिक्षको का चुनाव अपन आप करने दीजिये। जबरदस्ती लादी विद्या कदाचित ही फलवती होती है।'

पोलोज़ोवा के गाल लाल हो गये, उसकी आखो मे आसू छलछला आये।

'आशा है कि आप अपने लिए अनुवादक का इतज़ाम भी खुद ही कर लगे। आप पर अपनी सेवाए ज़बरदस्ती लादने का मेरा कोई इरादा नही है," वह एकदम पलटकर चल दी।

क्लाक को पहले अपने तीखे शब्दो पर खेद हुआ, मगर अब पीछे हटना मुश्किल था। कुछ भी हो, क्या इस ढीठ और अक्खड लडकी को एक नसीहत देना ठीक नही है?

पीछे देखे बिना वह नहर-तल की तरफ़ चल दिया।

अनुचित अपमान की गहरी चोट को लेकर पोलोओोवा वस्ती की तरफ रवाना हो गई। *"क्या मै इस स्वार्थी और अशिष्ट आदमी के साथ काम करूगी? कभी नही!"* उसकी बरौनियो पर लटके बडे आसुआ के कारण देखना भी असभव हो गया था। बच्चा की तरह जोर से नाक को साफ करते हुए वह आसुओ को हाथ से पोछती जा रही थी। उसे फरन सिनीत्सिन के पास जाना चाहिए और उससे अनुरोध करना चाहिए कि उसे इस मूखतापूण काम से छुट्टी दे। आखिर वह यहा टेक्निशियन का काम करने, व्यावहारिक काम के लिए निर्माण-काय मे भाग लेने के लिए आई है, न कि इटूरिस्ट की लडकिया के काम को करने के लिए

खेल प्रकाश मे आया

अगले दिन एक ट्रक पज नदी की तरफ से पैट्रोल लेकर आया। ट्रक का तुमुल हषध्वनि के साथ स्वागत किया गया और उसमे से लोहे के पीप उतारने के लिए सभी बडे उत्साह के साथ दौड आय। दाना एक्स्केवेटर रात को ही पैट्रोल की आखिरी बूद भी हजम कर चुके थे और सुबह से ही बेकार खडे हुए थे।

इस हल्ले गुल्ले मे किसी का भी ध्यान ड्राइवरा जैसा चमडे का कोट पहने एक मामूली से आदमी की तरफ नही गया, जो ड्राइवर के बाद ट्रक की अगली सीट से उतरा था। उमने पार्टी समिति के कार्यालय का रास्ता पूछा और जिधर बताया गया था, उसी तरफ चला गया।

सफेद किरमिच के परदे से दा भागा मे बटे पार्टी समिति के तिरपाल के खेमे मे उसे बताया गया कि सचिव व्यस्त ह और उसे इतजार करना होगा। वह एक स्टूल पर बैठ गया, मेज पर से स्थानीय अखबार उठा लिया और पढने मे तल्लीन हो गया।

आखिर सिनीत्सिन किरमिच के परदे के पीछे म नासिरद्दीनाव के साथ साथ आता दिखाई दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहते थे? अपरिचित के सामने रुकते हुए उसन पूछा।

"क्या आप ही साथी सिनीत्सिन है? जी हा, म आपसे मिलना चाहता ह। मेरा नाम मोरोजोव है।'

"आप माथी मोरोज़ोव है?" सिनीत्सिन हर्ष से पुलक उठा। "आप यहा पहुच कैसे गये? वक्षा पर तो आजकल बजर के बह जाने के कारण पार करने की सुविधा नही है। हमने यही सोच लिया था कि आपको इसी कारण स्तालिनाबाद म ही रुक जाना पडा होगा।"

"म तेरमीज से आ रहा हू। मै यह देखने के लिए तेरमीज गया था कि हमारा सप्लाई केद्र किस तरह काम कर रहा है और देखा कि वह बहुत ही बुरी तरह काम कर रहा है। इसलिए वहा मुझे कुछ दिन रुकना पडा। मै यहा बजरे से आया हू। साथ मे मै दो एक्स्केवेटर और रेलवे पटरियो की पहली किस्त भी ले आया हू।"

"बहुत अच्छे! हमारे यहा तो आजकल मध्यातर आया हुआ है। आपने अभी कही ठहरने का तो इतजाम नही किया? आपका सामान कहा है?"

"म सीधा आपके ही पास आ रहा हू। सामान मैने घाट पर ही छोड दिया है—बाद म मगवाया जा सकता है। उसके लिए ट्रक मे गुजाइश नही थी। ड्राइवर ने बताया था कि आपके पास बूद भर भी पैट्रोल नही बचा है।"

"हम आपको बस्ती पहुचाने के लिए कार का इतज़ाम करते है। आपके लिए मकान ठीक कर दिया गया है। क्या आप अकेले है? आपकी पत्नी आपके साथ है?"

"म अकेला हू। बस्ती मैं शाम को जा सकता हू। अभी मैं कही हाथ-मुह धोना और आपसे कुछ बातचीत करना चाहूगा।"

"तो चलिय। यहा लोग हमे चैन स बाते नही करने देगे। हम येरेमिन के युत मे चलते है—मै आपको रास्ता दिखा दूगा। आप वहा हाथ-मुह भी धो सकते है और हम आज़ादी से बात भी कर सकते है। कोई खलल नही डालेगा और अगर आप चाहे, तो मुख्य सैक्शन भी देख सकते है, वह बहुत ही पास है।"

'चलिये, चले।'

मारोज़ोव उस शाम को बस्ती गया ही नही, बल्कि येरेमिन के युत मे ही रहा और वही उसने अपना पडाव डाल दिया।

निर्माणस्थली पर उसका आगमन लगभग अलक्षित ही रहा। अपने नये प्रमुख की नजरो मे आने के लिए जो इजीनियर लपके-लपके आते,

उन्हें उसका दफ्तर खाली ही मिलता। मोरोज़ोव दिन दिन भर निर्माणस्थली पर मशीनों की तरफ ऐसे कि जैसे कोई अपरिचित आदमियों को देखता है और आदमियों को ऐसे कि जैसे वह मशीनों का अध्ययन कर रहा हो—देखता हुआ घूमता रहता। वह कहीं भी कुछ नहीं कहता—उन मामलों तक में, जहां काम प्रकटत गलत ढंग से किया जा रहा था और न ही उसने कोई नये आदेश या निर्देश जारी किये। कुछ फोरमैन वालों ने कि नये प्रमुख को निर्माण कार्य का ककहरा भी नहीं आता और इसी लिए वह कोई भी चीज शुरू करने के झमेले में पड़ने से डरता है। दूसरों ने आगाह किया कि नवागतुक अभी सूघासूघी कर रहा है और हालत का जायजा ले रहा है, वह हर चीज को बारीकी से देख रहा है और सभी बातों की जड़ में पैठ रहा है—इस तरह के लोग जब तक मामला को पूरी तरह से समझ नहीं लेते, जान बूझकर मूर्ख होने का दिखावा करते हैं—और इसके बाद असली तमाशा शुरू होता है। निर्माणस्थली पर काम पहले की तरह ही चलता रहा और नये प्रमुख के आगमन की सूचक कोई बात नहीं हुई।

उसके आगमन के अलक्षित रहने का एक और कारण यह था कि दो दिन बाद निर्माणस्थली पर हवा के अचानक आये तेज झोंके की तरह एक नई सनसनी फैल गई जिसके कारण सारे इजीनियरों और टेक्निशियनों में फुसफुसाहट शुरू हो गई। यह सनसनी थी नये मुख्य इजीनियर कीश का आगमन। कई इजीनियरों को याद आया कि उन्होंने पाच साल पहले अखबारों में पढ़ा था कि उसे उस समय मध्य एशिया में एक प्रमुख निर्माणस्थली पर, जहां वह उपमुख्य इजीनियर था, हुए एक बड़े धाधले के सिलसिले में जालसाजी करने के जुर्म में सजा दी गई थी। लग रहा था कि जैसे निर्माण-कार्य एक तरह का 'सफेद हाथी' है जिसके असफल होना पूर्वनिर्धारित है और वह अपने पर किये गये विशाल खर्च के औचित्य को कभी सिद्ध नहीं कर पायेगा। कीश को आठ साल की सजा दी गई थी जाहिर था कि उसने अपनी घटाई हुई सजा को कुछ ही पहले पूरा किया होगा। यही बात कि अभी हाल ही में रिहा हुए एक भूतपूर्व विध्वसकर्त्ता को देश के सबसे बड़े निर्माण कार्यों में से एक का मुख्य इजीनियर नियुक्त कर दिया गया है इतनी सनसनीखेज थी कि कोई भी और कोई बात करता ही नहीं था।

जब कीश पहली बार निर्माणस्थली पर आया तो हर बारक, खेम

और युत से दजना दूरबीना जैसी कुतूहलभरी आखें उसकी तरफ देखने लगी। वह बिलकुल सीधा और सयत चलता चला गया। उसका सिर नगा था और उसके पके बालो को देखकर लगता था, जैसे उन्हे जमाकर रखने के लिए सुबह सिर पर एक धूसर जाली डाल दी गई थी। उसका चेहरा निर्विकार और धुधला था और न कालर, न टाई लगे ऐसे चेहरे हमेशा बिन हजामत बन हुए ही लगते हैं।

दिन भर कीश मारोज़ोव और सिनीत्सिन के साथ निर्माणस्थली पर घूमता रहा और शाम को तीना मोरोज़ोव के युत मे जाकर बैठ गये। ट्रेड-यूनियन समिति के सचिव, गालत्सेव को भी वहीं बुलवा लिया गया। देर गये रात तक घोडागाडियो के चालको को, जो स्तालिनाबाद से लकडी लेकर आ रहे थे और नदी पार करने की जगह पर रात साथ-साथ बिता रहे थ, नदी के उस पार से इस एकाकी युत मे रोशनी नजर आती रही। दूसर तट से वह ऐसी लगती थी, मानो बाबी पर फेका सिगरेट का टोटा दमक रहा हो।

अगले दिन निर्माणस्थली पर यह खबर फैल गई कि मकेनिकल डिपार्टमेट के काम की जाच करने के लिए कीश की अध्यक्षता मे एक विशेष आयोग की नियुक्ति की गई है।

सुबह से मैकेनिकल डिपार्टमट के कार्यालय मे आयाग की बैठक चल रही थी और दिन भर पसीने मे तर दफ्तरी कमचारी लिखित दस्तावेजो के पुलिदे क पुलिदे वहा ले-लेकर आते जाते रह। नेमिरोव्स्की के दरवाजे के सामने से गुजरते समय वे किसी न किसी कारण पैर दबाकर निकलते थे, जैसा लोग तब करते है कि जब वे किसी सख्त बीमार रिश्तेदार के कमरे के पास से गुजरते ह।

आयाग तीन दिन काम करता रहा और जिस अप्रत्याशित तरीके से उसने मकेनिकल डिपार्टमेंट म प्रवेश किया था, उसी तरह से वह मेज पर अव्यवस्थित कागजो के अबार और खिडकी की सिल पर सिगरेट के बुझे हुए टोटो का चट्टा छोडकर चला गया। आयोग अपने साथ जो कुछ भी ले गया, वह कीश के भारी भरकम पोटफोलियो मे समा गया था। जाच का नतीजा क्या रहा, यह कोई निश्चित रूप से नही कह सकता था।

उस शाम को बस्ती मे कीश अपने बरामदे मे बैठा मास्को से लाये अपने रेडियो को सुनता हुआ चाय पी रहा था। अपनी आरामकुरसी पर

कमर टिकाये-टिकाये उसने अपनी आखें आसमानी चदोवे पर जमा रखी थी, जो तारा से इस तरह लदा हुआ था, जैसे सेव का पेड़ फलो से लदा होता है। जब तब एक सेब टूट जाता और अतरिक्ष का चीरता हुआ दूर जाकर गिर जाता। अचानक बरामदे मे नेमिरोव्स्की नजर आया।

'क्या मैं आ सकता हू? म आपसे कुछ बाते करना चाहता हू "

"आइये, तशरीफ लाइये,' कोश ने रेडियो बद कर दिया, "कहा बैठियेगा, यहा, या कमर म'"

"अगर आपका असुविधा न हो, तो मैं कमरे मे ही बैठना पसद करूगा। यहा खलल पड सकता है।'

"आइये, पधारिये।"

वह उठ खडा हुआ और उसन कमरे मे पहले नेमिराव्स्की का प्रवश करने दिया।

"मैं किसी प्रस्तावना के बिना सीधे मुद्दे की बात पर आ जाता हू। यद्यपि हम लोगो को ज्यादा अच्छी तरह स परिचित होने का अवसर नही मिल पाया ह, मगर मैं आपका एक प्रतिष्ठित विज्ञानकर्मी और हमारे सबसे प्रमुख विशेषज्ञो मे से एक के नाते जानता हू और इसलिए कोई कारण नही कि म आप पर पूरी तरह से विश्वास न करू।'

कोश न कुछ अनिश्चित सा इशारा किया।

"इसी लिए मैंन आपको मिनट भर कष्ट देने का निश्चय किया। म आपसे बिलकुल खुलकर बाते करना चाहूगा।"

"बोलिय। मैं सुन रहा हू।"

"आपको अभी यह देखने का मौका नही मिल पाया है कि हमारी निर्माणस्थली पर कैसा वातावरण छाया हुआ है। म आपको यह बताना चाहता हू कि यह नारा यहा अभी तक नही प्रवेश कर पाया ह कि पुरान विशेषज्ञो का अच्छी तरह स खयाल रखा जाना चाहिए। यहा पुरान इजीनियरा को अभी गुप्त शत्रु और प्रच्छन्न विध्वसकर्ता ही माना जाता है। मजदूरा की निगाहा मे हमारी प्रतिष्ठा को गिरान के लिए पार्टी सगठन सभी कुछ करता है। लगभग यहा पहुचने के समय से ही मैं जिस व्यवस्थित सतापन का शिकार रहा हू, उसन कुछ समय से ऐसा रूप ल लिया है कि मेरे लिए यहा काम तक करना असभव हो गया है। मैकेनिकल डिपाटमट की 'जाच' के लिए स्थापित किया गया आयोग—जिसकी अध्यक्षता के

लिए आपको मजबूर किया गया है और जिसे किसी भी कीमत पर मकैनिकल डिपार्टमेंट के काम में दोष और त्रुटियां निकालने के लिए ही नियुक्त किया गया है—अनवरत संतापन की इस शृंखला की बेहद पद कड़ी है। आपको खुद मानना पड़ेगा कि इन हालतों में काम करना असंभव है और मैं जो सबसे अच्छी बात कर सकता हूं—और अगर आप मेरी जगह होते, तो निस्संदेह आप स्वयं भी करते—वह यही है कि मैं अपनी ज़िम्मेदारियों से मुक्त किये जाने का अनुरोध करूं। मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ अपना पद अपने किसी भी ऐसे सहयोगी को सौंपने के लिए तैयार हूं, जिसके साथ पार्टी समिति अधिक विश्वास और अधिक सहानुभूति से पेश आये। मेरा खयाल है कि मैं मध्य रूस में ज्यादा उपयोगी साबित हो सकता हूं, जहां विशेषज्ञों के प्रति नया दृष्टिकोण मजबूती के साथ जड़ पकड़ चुका है।"

"जी" कीश ने आहिस्ता से जवाब दिया, "दर असल बात यह है कि आपकी इच्छा पूरी भी की जा चुकी है। साथी मारोज़ोव ने आपकी बरखास्तगी के आदेश पर आज ही हस्ताक्षर किये हैं। बस, जहां तक आपकी रूस जाने की इच्छा का सवाल है, मुझे भय है कि आपको अपने रवाना होने की तारीख को स्थगित करना होगा। आपका मामला अब अभियोक्ता के हाथों में है।"

"दूसरे शब्दों में, अगर मैंने आपकी बात को ठीक समझा है, तो आपकी अध्यक्षता में काम करनेवाले आयोग ने साथी सिनीत्सिन की राय का अनुमोदन किया है?"

"आयोग ने किसी की भी राय का अनुमोदन नहीं किया है। उसने परीक्षित सामग्री के आधार पर अपना मत प्रकट किया है।"

"और व्यक्तिगत रूप से आपको भी इस बात पर विश्वास है कि मेरे काम ने निर्माण कार्य का विध्वंस किया है?"

"जी हां। मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि आपने जो कदम उठाये थे, उनका लक्ष्य मैकेनिकल डिपार्टमेंट के काम को ठीक से संगठित करना नहीं था।"

"मैं समझता हूं," नमिरोव्स्की ने कटु मुसकान के साथ कहा, "आपकी स्थिति की कठिनाई को मैं समझता हूं। उन्होंने एक और

इजीनियर के खिलाफ लगाये गये विध्वस के ग्राराप की जाच के लिए नियुक्त किये गये आयोग का अध्यक्ष आपका जान बूझकर आपकी निष्ठा की जाच करने के लिए बनाया है।"

"आप मेरे मुक्दमे का तो हवाला ही दे रहे?" कीश न शाति के साथ पूछा। "आप गलती पर है। अगर मुझे क्षण भर को भी यह विश्वास होता कि आप सही हैं, तो मैं यह कहते हिचकता नही। अगर मैने आपके विरुद्ध आरोप का समथन करना सही समझा, तो महज इसलिए कि मुझे इस क्षेत्र का कुछ अनुभव प्राप्त हो चुका है और मैं ठास तथ्या के आधार पर अपने को इस बात का आश्वस्त कर सका कि यह आरोप निस्सदिग्ध रूप से सही है।"

"सीधे सीधे कहिय—स्वय सदेह के भागी हाने के बजाय आप एक और इजीनियर का जेल भेजना श्रेयस्कर समझते हैं। अगर आप यह साचते हो कि व आपके उत्साह को सराहगे, तो आप गलती पर हैं। प्रत्यक्ष हे कि आपने अपने कटु अनुभव से कुछ भी नही सीखा है। जिस कारण उन्होने आपका रिहा किया है और इस पद पर नियुक्त किया है, वह यह है कि उन्हे औरो स, जो आपकी ही तरह पुरान बुद्धिजीवी वग का प्रतिनिधित्व करते हैं, बदला लेने के लिए फिलहाल आपकी जरूरत है। जब आपकी उपयोगिता खत्म हो जायेगी, तो व आपको वापस वही भेज देंगे, जहा से आप अभी अभी आये हैं। व कभी आप पर विश्वास नहीं करगे, न आपका अपना समझेगे। चारेक साल के भीतर उनके पास अपन काफी इजीनियर पैदा हो चुके हागे और तब आपका, मेरा और शेष सार पुराने बुद्धिजीवी वग का काम खत्म हो जायेगा। मजिल विशेष म व हमारे बिना काम नही चला सकते और यही वजह है कि हम पर क्षण भर के लिए भी विश्वास न करते हुए भी वे हमारा उपयोग करते हैं और जितना हा हम उनके लिए आवश्यक है, उतना ही वे हमसे ज्यादा घणा करते हैं। जब हम आवश्यक नही रहगे, तो कोई यह याद तक नही करेगा कि अमुक अमुक परियाजना का निर्माण आपके हाथा न, या यह कहिये कि आपके दिमाग और अनुभव न किया था। आपको और मुझे—दाना को सीधे सीधे अलग फेंक दिया जायेगा—उनकी भाषा म कहे, ता 'एक वग के रूप म निर्मूल' कर दिया जायेगा। ज्यादा स ज्यादा यह हागा कि आप किसी सीदोरोव या पेत्रोव के चपरासी बन जायेंगे, जा आज आपके नीचे एक

मामूली मिस्तरी है, मगर कल जिसकी जेब मे सोवियत इजीनियर की उपाधि होगी। मुझे ऐसा लगता है कि एक ऐसे देश मे, जहा एकता का इतना राग अलापा जाता है, हम—पुराने टेकनिकल बुद्धिजीवी वग को भी जरा सी एकता दिखान से कोई नुकसान तो नही ही होगा। कुछ भी हो, तब वे हमे खटमलो की तरह एक एक करके नही कुचल पायेंगे, जैसे किसी वक्त उहान आपको कुचला था और फिर जरा सा दम लेन भर की मुहलत देने का निश्चय कर लिया,—और जैसे अब वे आपकी सहायता से मुझे कुचलना चाह रहे हैं।"

'आपका इरादा—अगर आप इस तरह कहने की छूट दे, तो—शायद मेरी 'बिरादराना भावना' से अपील करने का है? यह कोरा पूवजानुराग है, और कुछ नही। जी नही, मेरा आपसे न कोई ऐसा अनुराग है और न हो सकता है। अगर कुछ है, तो बस दया '

"और इसलिए आप मुझे जेल मे डालने की भरसक कोशिश करना चाहते है?"

"आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मेरा आशय मानविक दया की उस भावना से नही है, जिसके वशीभूत होकर उदार हृदय न्यायाधीश सजा को घटा देता है, या जो इस मामले मे मुझे आपकी तरफ से अनुनय करने के लिए प्रेरित कर सकती है। उसका तो सवाल ही नही उठता। मुझे आप पर इसलिए दया आती है कि मैं देख रहा हू कि आपको सुधारना कितना मुश्किल है। मैं जानता हू कि इस वक्त आपके साथ जो कुछ किया जा रहा है और जो आपके सुधार का एकमात्र रास्ता साबित हो सकता है, उसे आप कोई अधा प्रतिशोध, कोई भयानक वैयक्तिक दुभाग्य मानगे, बिलकुल उसी रोगी की तरह, जो अपनी बीमारी को नही जानता और अस्थायी पृथक्करण को अपनी वैयक्तिक स्वतत्रता का अतिक्रमण समझता है।

"पुरानी—हमारी नही—धारणा के अनुसार कैद एक ऐसा कलक है, जिसे कभी नही मिटाया जा सकता या जिससे केवल धन से ही मुक्ति पाई जा सकती है। क़ैद का मतलब है रोज़गार का जाना और भविष्य मे कोई भी नाम पाने की सभावना का पूरी तरह स खत्म हो जाना। कैद का मतलब है समाज से बहिष्कृत होकर रहना। हमारे समाज मे कारावास का इनमे से कोई भी अथ नही है। बस, नाम बदल दीजिये, 'कैद शब्द

को पथक्करण' कहिये और आप जिस धारणा से डर गये थे, वह खत्म हो जायेगी।"

"क्या आपने मेरा मजाक उडाने की ठान रखी है?'

"जरा भी नही। आप जानते हैं कि खुद मुझे भी रिहा हुए ज्यादा समय नही बीता है। जो रास्ता आपके सामने है, म उसे पहले ही पार कर चुका हू। मुझे इस तुलना के लिए क्षमा कीजिये, मगर आपको देखकर मुझे एक व्यापारी की याद आती है, जो पूर्व की यात्रा पर गया हुआ था। एक रात को उसकी आख खुली, तो उसने पाया कि जहाज डूब रहा है। सौभाग्यवश, एक और जहाज पास से ही गुजर रहा था और उसने इस जहाज के यात्रियो को ले लिया। जब व्यापारी की बारी आई तो उसने पहले पूछा, 'आपका जहाज किस तरफ जा रहा है?'– 'पश्चिम की तरफ!' उन्होने बेसब्री के साथ चिल्लाकर कहा, 'डूबना न चाहो, तो फौरन सवार हो जाओ!'– जी, शुक्रिया, मगर मेरा यह रास्ता नही है। म दूसरी तरफ जा रहा हू, व्यापारी ने कहा और वह डूबते हुए जहाज पर से नही उतरा।

"आप भी हमारे रास्ते नही जा रहे ह, साथी नमिरोव्स्की, और जाहिर है कि अपना यात्रा माग बदलने के बजाय आप डूबना पसद करेंगे। आपकी कही हर बात एकदम गलत है। पाच साल हुए, मैं लगभग आपकी तरह ही सोचता था, और तब ऐसा करना क्षम्य था। म चारो तरफ नारे और भाषण सुना करता था पर ऐसे कोई तथ्य नजर नहा आते थे, जो मुझे कायल कर पाते। क्राति के असयमित अपव्यय को देखकर मैं चकित था मैं देख रहा था कि किस तरह आज उन चीजो को निरर्थक नष्ट किया जा रहा है, कल जिनको फिर बनाना होगा। म देखता था कि किस तरह अच्छे और सही विचारो को व्यवहार म विकृत कर दिया जाता है, क्योकि जो हाथ इन विचारो को कायरूप म परिणत करने का यत्न कर रहे है, वे अकुशल हैं। एशियाई रूप का यह समाजवाद मुझे खलता था। मैं मन म कहा करता था कि इस देश का पश्तर इसके कि कोई इसके साथ समाजवाद की बात करना शुरू करे, किसी सामान्य पश्चिमी देश की सस्कृति प्रदान करना आवश्यक है।

'इस बात को मैंने बहुत बाद म जाकर अनुभव किया कि मैं गलती पर हू। मैं उस सब को उलट देना चाहता था, जिसको उन्होने पलटकर

ठीक से रख दिया था। जिस चीज़ को मैं सास्कृतिक स्तर कहता था और जिसे मैं भावी, उच्चतर सामाजिक व्यवस्था की आवश्यक पूर्वापेक्षा समझता था, वह, इसके विपरीत, अपनी आवश्यक पूर्वापेक्षा के रूप मे इस उच्चतर सामाजिक व्यवस्था का तकाजा करती थी और स्वय इसका तात्कालिक परिणाम थी। और, अपनी बारी म इस सामाजिक व्यवस्था का निर्माण उन अकुशल हाथो से ही हो सकता था, जिनके फूहडपन के कारण मैं उनके सभी कामो को तिरस्कार की दृष्टि से देखा करता था। अब मुझे इस बात पर विश्वास हो गया है कि उस समय जिस चीज़ को मैं क्राति का अपव्यय और निष्फल बरबादी कहा करता था, वह असल मे उसके बधे हुए खच के अलावा और कुछ नही था, जो ऐसे विराट उपक्रम मे अनिवाय था। क्राति की आलोचना मैं उस छोटे कारखानेदार के नज़रिये से किया करता था, जो किसी बडे उद्योगपति के उद्यम के अपव्ययी पैमाने को अपने टुटपुजिया कारबार की दृष्टि से मापने की कोशिश करता है।

'इस सब को समझने के लिए मेरे लिए कई साल के लिए नये जीवन के प्रचड प्रवाह के आगे से हट जाना और कृत्रिम शाति और एकात के वातावरण म उसस अलग रहते हुए इस नये जीवन को समझना आवश्यक था। निस्सदेह, पथक्करण स्वय व्यक्ति के विश्वासो को नही बदल सकता। इसके लिए मनुष्य की सहायता भी आवश्यक है। मुझे यह सहायता वहा मिली —और आपको भी वही मिलेगी—जहा आप इसकी सबसे कम अपेक्षा करते हैं—उन लोगो मे, जिनका नाम ही इस समय आपको इतना घृणित और भयानक लगता है। मेरा आशय चेका से है। वहा मुझे ऐसे लोग मिले, जो मेरे साथ ऐसे पश नही आये, जैसे दुश्मन दुश्मन के साथ पेश आता है, बल्कि ऐसे, जैसे डाक्टर किसी मानसिक रोगी के साथ पेश आता है—बडे धीरज और बडे ध्यान के साथ। वे मुझ पर इतना समय नष्ट करने से इनकार कर सकते थे और मुझे एक लाइलाज मरीज़ मानकर मेरी सुबह की कॉफी के प्याले मे बस ज़हर मिलाकर मुझसे निजात पा सकते थे। इसकी जगह उन्होने मेरे साथ बहस करने म घटो लगाये और मेरे लडखडाते हुए तर्कों को एक एक करके बाकायदा ध्वस्त किया। इस तरह की बहसो के बाद म एकदम परास्त होकर लौटता अपने तर्कों की विछिन्न सेना को एकत्र करता, हताहत सख्या का अनुमान लगाता, अब भी अक्षत और रण-सक्षम प्रतीत होनेवाले तर्कों की नई वाहिनिया खडी करता, सारे

मोर्चे की फिर से व्यूह-रचना करता और अगली बहस के लिए उसी तरह जाता, मानो रणक्षेत्र की तरफ कूच कर रहा होऊं और फिर एक करारी मात खाता। 'उन्हे' कोई चालाकी भरी बाजीगरी करने की जरूरत नही थी—पूरा विशाल देश ही 'उनके' पक्ष मे काम करता हुआ प्रचुर सख्या म तक प्रदान कर रहा था। काम शुरू करनेवाली हर नई धमन भट्टी, हर नई परियोजना मेरी पस्तहिम्मत फौज पर लबी मार करनेवाली अचूक तोपो की तरह गोलाबारी शुरू कर देती।

"'उन्होने' एक सुसज्जित डाफ्ट्समैन कक्ष म मेरे लिए अपना अनुसधान काय को जारी रखना सभव बनाया, जहा मैंने भावी निमाण कार्यो की रूपरेखाओं को परिष्कृत किया। मैं जीवन से निर्वासित नही था। म अनुभव करता था कि मैं सारे देश के साथ जुडा हुआ हू उसके प्रचड श्रम म भाग लेता हू। जब एक सुबह मुझसे कहा गया कि म उन लाल बिदुओ मे से किसी एक पर जा सकता हू जो मेरी अनुपस्थिति मे हमारे देश के नक्शे पर बिजली के प्रकाश द्वारा दमक उठे थे, तो मुझे इन पाच वर्षों के बाद अपने को जबरदस्ती किसी नई लीक पर नही ढालना पडा—मैं मात्र प्रयोगशाला स सीधे निमाणस्थली की पाडबदी पर चला गया। मैं नही मानता कि अपने इस पथक्करण से मुझे कोई हानि हुई। मैंने कोई दो वष *अपनी गवाई हुई स्थितियो की निरथक रक्षा करने म खो दिये, मगर एक* पूरा का पूरा युग प्राप्त कर लिया "

"और मुख्य इजीनियर का पद भी,' नमिरोव्स्की ने विषाक्त फब्ती कसी।

"जी हा, और हमारे सबसे महत्त्वपूर्ण और दायित्वपूर्ण निर्माण-कार्यों मे से एक मे भाग लेने का अवसर भी।

'मैंने आपको टोके बिना धीरज के साथ आपकी बात को सुना है। अगर आपने यह भावोच्छ्वास प्रदशन मात्र मरे आगे मुझे जेल भेजने का नैतिक औचित्य सिद्ध करने के लक्ष्य से किया है, तो आपने अपनी मेहनत और वक्तृत्व शक्ति को बेकार ही नष्ट किया। म बात को पूरी तरह से समझता हू—आपके लिए मेरा मामला आपकी भावी उन्नति का प्रश्न है। मगर, ऐसा लगता है कि एक बात को आप अनुभव नही कर रहे—वह यह कि हमारी यह निमाण परियोजना एक अधकूप है और उन्होने आपको यहा जानबूझकर इसी लिए रखा है कि आप अपनी गरदन अपने आप

तोड ले। तीन चार महीने के भीतर यह बात हर किसी के आगे साफ हो जायेगी कि योजना की पचास प्रतिशत भी पूर्ति नही होगी—आपको अपने पूवगामियो से जो विरासत मिली है, उसके दष्टिगत यह व्यावहारिक दृष्टि से असभव है। तब वे आपको निकाल बाहर करेंगे—जैसा उन्होंने चेत्वेर्याकोव के साथ किया, या—जो और भी ज्यादा सभव है—वे आप पर कुछ नये इलज़ाम लगा देंगे। याद रखिये—निर्माण-काय के सभी विभागो मे हर चीज की इतनी उपेक्षा की गई है, हिसाब किताब इतना गडबड है, खच इतना ज्यादा है कि अगर वे स्थिति को साफ करने की सोच ही ले, तो कितना भी भावोच्छवास प्रदशन आपको इस झझट से निकाल नही पायेगा। और मेरा खयाल है कि इस बात का आप खुद भी अच्छी तरह समझते होगे कि आपके अतीत के दष्टिगत, अब, आपके पहले ही काम म मुसीबत मे पडने का, किसी फौजदारी मामले मे पडने का मतलब, बात को नरमी से भी कहे, तो भी—होगा आपके सारे भविष्य का अत। तो आपके आगे यहा से बेदाग निकल पाने का बस एक ही रास्ता है—पतझड तक—सच तो यह है कि जितनी जल्दी, उतना अच्छा—किसी भी कीमत पर अपना किसी और जगह तबादला करवा ले। फिर सारा झझट आपके उत्तरवर्ती को भुगतना होगा। म जानता हू कि आपकी स्थिति मे पडे आदमी के लिए अपना यहा से तबादला करवा पाना लगभग असभव है। इस काम मे मैं आपकी सहायता कर सकता हू। कृषि की जन कमिसारियत मे मेरे अच्छे सबध है। यहा से निकल पान के बाद मैं मास्को म आसानी से काम पा सकता हू और आप इस बारे मे निश्चित हो सकते है कि म आपका भी वहा तबादला करवा लूगा। मास्को मे अकेली परेशानी रहन की जगह पाने की ही है। मेरे पास शहर के बिलकुल केंद्र मे चार कमरे का सुसज्जित फ्लैट है। यह रहा उसका परमिट," उसने मेज़ पर एक कागज़ रखा, "यह फ्लैट आपकी सेवा मे प्रस्तुत है। मेरी राय मे आप इस पर गौर कर ले—मास्को मे निर्विघ्न काम या यहा फौजदारी मुकदमा। मेरे खयाल मे चुनाव कोई बहुत मुश्किल तो नही होना चाहिए। क्या सोच रह है कि मैं शायद अतिशयोक्ति कर रहा हू? मेरे मामले म आयोग का फैसला कुछ दिनो के लिए स्थगित कर दीजिये और इस बीच यहा के हिसाब किताब की हालत को जरा अच्छी तरह से देखिये। अगर आपको यह लगे कि मेरा कहना गलत था, तो आप मुझे 'पृथक्करण' के लिए

भेज सकते हैं – उसके लिए काफी वक्त है। लेकिन, यहा की हालतो से अधिक परिचित होने पर अगर आपको अपने रोंगटे खड़े होते लगें, तो याद कर लीजिये – मास्को मे काम और सुसज्जित फ्लैट खैर, मैं चला। क्षमा कीजिये कि मैंने आपको कष्ट दिया। आवश्यकता पड़ते ही मुझे बुला भेजियेगा – मैं आपके पडोस मे ही रहता हू।"

"देखता हू कि आपसे बात करते हुए सचमुच मै अपना समय नष्ट करता रहा हू। मने आपको रास्ते से भटका हुआ आदमी समझा था, लेकिन देखता हू कि आप तो एकदम कमीने हैं। निकल जाइये एकदम यहा से और अपने इस कागज को भी साथ ले जाइये, नही तो मैं आपको फौरन गिरफ्तार करवा दूगा।'

मई दिवस का चमत्कार

उस रात पडोसी के दरवाजे पर खटखटाहट और बरामदे म दबी हुई आवाजो से क्लाक की नीद खुल गई। नेमिरोव्स्की दपति न दरवाजा खोलने म काफी देर लगाई। खटखटाहट और भी जोरदार हो गई। आखिर ताले की झनझनाहट सुन पडी।

क्लाक करवट बदलकर सोने की कोशिश करने लगा। नेमिरोव्स्की के फ्लैट स कदमो की, बातचीत की अस्पष्ट आवाजें आ रही थी फिर चीजो के सरकाये जान का शोर आने लगा। लगता था, जसे नशे मे चूर लोग कमरे म लडखडाते घूम रहे हैं और फर्नीचर से टकरा रहे हैं।

क्लाक ने सोन के निष्फल प्रयास मे अपने सिर को तकिये मे गाड दिया, लेकिन नीद एक बार जो टूटी, तो ऐसी कि लौटने का नाम ही न ले। उजाला होन लगा था, मगर पडोस के फ्लैट मे हगामा जारी रहा। आखिर दरवाजा धडाम से बद हो गया और रात्रिचर अतिथि चले गये। क्लाक ने करवट बदलकर दीवार की तरफ मुह कर लिया। नीद के धागे की तरह थकान उसके सिर मे व्याप्त होने लगी, जिसस सामान्यत स्थिर वस्तुए हिलती डुलती हुई अपन रूप गवान लगी। सिर के ऊपर मक्खियो की एकरस भिनभिन सिने कैमरा के लगातार घूमत हडल की तरह थी और नींद न अपन आपको सख्डा टुकडा सा जुडकर बनी एक टिमटिमाती असबद्ध फिल्म म गूथ लिया। उसने दिमाग को थका दिया था, जैस आखें मिचमान

से निगाह थक जाती है। आखिर जब निरथकता के आच्छादक जाल से एक धुधला सा प्लॉट झाकने लगा, तभी दरवाजे पर खटखट हुई।

क्लाक विस्तर मे उठकर बैठ गया।

"अभी सो ही रहे है?" बाहर से मर्गी की आवाज आई, "नौ बज चुके है।"

क्लाक ने दरवाजा खोला।

"क्या सचमुच इतनी देर हो गई?"

"चलिये, कोई बात नही, आज तो छुट्टी ही है। मै तो आपको मई दिवस की बधाई देने के लिए आया था।"

"क्या कह रहे है आप—क्या आज पहली मई है?"

"कोई सुने आपकी बात! देखता हू कि आप अनात चित्रकार की धमकियो की तरफ ज्यादा ध्यान नही दे रहे। कुछ भी हो, आपकी नीद पर तो उनका कोई असर नही ही पडा।"

"मै रात बहुत देर से सो पाया। मेरे पडोसी के यहा मेहमान आये हुए थे और रात भर शोर मचाकर उन्होने तूफान खडा कर रखा था।"

"इस बात मे मुझे शक है कि रातवाले मेहमान निमत्रित मेहमान थे। आपके पडोसियो को कल रात गिरफ्तार कर लिया गया।"

"क्या मतलब—गिरफ्तार कर लिया गया? मगर किसलिए?"

"कहा जाता है कि तोड फोड की कारवाइया के लिए, मगर मै आपको ठीक नही बता सकता।"

"लेकिन आपको कैसे मालूम?"

"अरे, क्लाक साहब, आप निर्माणस्थलो पर रहते है और यह नही देखते कि आपके आसपास क्या हो रहा है। क्या आप अपने काम मे सचमुच इतने तल्लीन है?"

"मेरी गपशप मे बिलकुल भी दिलचस्पी नही, बस, यही बात है," क्लाक ने रूखे स्वर में कहा।

"और कैसी बढिया गपशप! आपकी नाक के नीचे से ही उस इजीनियर को गिरफ्तार किया जाता है, जो यहा के पूरे मैकेनिकल डिपाटमेट का अधिकारी था और इस बात से आपमे जरा भी दिलचस्पी नही पैदा होती?'

मर्गी न माचिस निकाली और अपने पाइप को सुलगा लिया।

"खैर, यह बताइये कि पहली मई आप किस तरह बिताने की सोच रहे हैं? मैं आपको यह राय नही देता कि आप इन धमकियो की बिलकुल ही उपेक्षा कर दें।"

"क्या आप सचमुच यह समझते हैं कि हम पर हमला किया जा सकता है?"

"भला, यह मैं आपको कैसे बता सकता हू कि वे क्या करेंगे? चाहे कुछ भी बात हो, मैं आपसे यह कहने के लिए आया था कि आज का दिन हमे साथ-साथ बिताना चाहिए। हमे मैनेजमेंट के वादा पर जरूरत से ज्यादा निभर नही करना चाहिए। उनकी लापरवाही के कारण बाकर कोई खतरा मोल लेना नही चाहते थे इसलिए उन्होंने कल अपना बोरिया बिस्तर समेटा और यहा से चले गये।"

"क्या वह सचमुच चले गये?"

'बेशक चले गये।'

आपने बाकर को यह क्या बताया कि हम सब को वही खत मिले थे?"

"वह मेरे कमरे मे आये और उन्होने दूसरे खत को मेरी मेज पर पडे देख लिया। लेकिन यह मानना होगा कि मने उन्हे रोक रखने की हिम्मत नही कर पाया। वसे भी उनका फैसला बिलकुल अटल था। उनका कहना था, 'निमाणस्थली पर पूण सुरक्षा सुनिश्चित हो जाये, फिर ये लोग विदेशी विशेषज्ञो को बुलायें।'"

"खैर, कुल मिलाकर उनका इस तरह सोचना गलत नही है।'

मर्री क्लाक के पास गया और उसके कधे पर अपना हाथ रखकर बोला

'आइये, बिल्कुल खुलकर बाते करते हैं। आपको यह दिखाना पसद नही कि अमरीकी डर गये है। लेकिन इसके लिए अगर हम मे से एक भी रुक जाये तो वही काफी होगा। जहा तक मेरी बात है, मुझे यह देश अच्छा लगता है। यह मुझे किसी हद तक मेक्सिको की याद दिलाता है जहा मैंने कई साल बिताये हैं—अपनी जिंदगी के सबसे अच्छे साल, जब मैं जवान था। मैं स्वभाव से ही आवारा हू—और जोखिमबाज भी। खतरा हिम्मत को बढाता है और बोरियत का अच्छा इलाज है। लेकिन आप

जोखिम क्यो मोल लेते है? मास्को मे आपको किसी और काम पर लगा दिया जायेगा।'

क्लाक ने मर्री को कसकर चिपटा लिया और उसकी कमर को हलके से थपथपाया।

"अरे, छोडो भी, यार! मैं समझ गया था कि तुम अच्छे आदमी हो, और, इस क्षण को मैं कभी नही भूलूगा। लेकिन, हा, मैं वापस नही जा रहा और हम यहा साथ जमे रहेगे। आओ, हाथ मिलायें—आज से हम दोस्त है।'

'जैसी आपकी मर्जी,' क्लाक के हाथ को भीचते हुए मर्री ने कहा। "वहरहाल म आपको दिन अपने साथ गुजारने का सुझाव देने आया था। दो पिस्तोला के साथ दो आदमी और एक पिस्तौलवाले एक आदमी मे बहुत फर्क है हाथ मुह धोकर और कपडे वदलकर मेरे कमरे म आ जाइय। मै जाकर इस बीच शेव कर लेता हू—एक तो इसलिए कि आज त्यौहार है और दूसरे, इसलिए कि हमारे सैनिको को भी मोर्चे पर जाने के पहले शेव करने की अच्छी आदत थी तो, ठीक है, म चला। तयार होकर आ जाइये।"

क्लाक मुह से सीटी बजाता हुआ कपडे वदलने लगा। वह बहुत विचलित हो गया था और अपनी भावुकता को दिखाना नही चाहता था। उसे इस दिन से कोई शिकायत नही थी, जो उसकी जान को लेने के खतरे का पैगाम लेकर आया था, मगर इसके स्थान पर जिसने उस आज मित्रलाभ करवाया था।

दरवाजे पर खटखट हुई। दस्तक पोलोजोवा ने दी थी।

उस झगडे के बाद से वह विशेष अवसरा पर ही उसके पास आती थी। अनुवादिका के काम से पोलोजोवा मुक्त न हो सकी। कोम्सोमोल समिति ने, नासिरद्दीनोव के सुझाव पर, बिना आज्ञा अपना काम छोड देने के लिए उसकी सख्त भर्त्सना की थी और उसे तुरत अपने काम पर वापस जाने का आदेश दिया था। न आसुओ से काम चला, न मुह फुलाने से। बठक के बाद उसे घर पहुचाते समय और रोनी बच्ची जैसे उसके आचरण के लिए उसे मजाक म चिढाते हुए नासिरद्दीनोव ने उससे कहा

"मरियम, सुनो, हर कोम्सोमोली की आन यही है कि वह अपने सभी कर्तव्यो को पूरा करे। यह कही नही कहा गया है कि काम पूर्णत सुखद

ही होगा। किसी पराये वर्ग के व्यक्ति पर नाराज़ होना भी हास्यास्पद है।"

पोलोज़ोवा सिनीत्सिन के पास जाकर अपील करने की हिम्मत नही कर पाई। वह अपने काम पर अगले दिन ही इस तरह से लौट आई, मानो कुछ हुआ ही नही था—अलबत्ता क्लाक के साथ उसके सबध अत्यत औपचारिक हो गये।

यही कारण था कि आज उसके इतनी जल्दी आने से क्लाक अचभे मे आ गया।

पोलोज़ोवा न नेमिरोव्स्की के बारे मे बात करना शुरू किया और सक्षेप मे बताया कि उसे क्या गिरफ्तार किया गया है। क्लाक ने बेचनी का अनुभव करते हुए स्टूल पर से एक सिगरेट उठाया और मेज़ पर पडी *माचिस को उठाने के लिए अपना हाथ बढाया।*

बाद मे क्या हुआ क्लाक फिर उसे पूरी तरह से याद नही कर सका। बहुत करके वह इस तरह हुआ होगा तीली निकालने के लिए उसने माचिस की डिबिया को खोला—जो एक ऐसी क्रिया है, जिसे हम उसके अलग अलग हिस्सो का विश्लेषण करने के झझट मे पडे बिना बिलकुल यत्रवत करते हैं।

लेकिन बाद मे जो हुआ, उसने यात्रिक हरकतो की इस शृखला को तोड दिया। डिबिया से तीली की जगह पीले रोयेंदार टागोवाली एक लबी सी मकडी उछली और छलाग मारकर क्लाक के कोट पर जा चढी। क्लाक ने माचिस को गिरा दिया, एक कदम पीछे हटा और इस घिनौने कीडे को झाड फेंकने के लिए अपना हाथ उठाया। लेकिन तभी पोलोज़ोवा ने तेज़ आवाज़ मे चिल्लाकर कहा "उसे हाथ मत लगाइये!" और क्लाक का हाथ अधर ही उठा रह गया। मकडी दो तीन छलागो मे क्लाक की टाग से फर्श पर कूद गई और क्षण भर को मानो सोच म खडी हो गई। यह क्षण ही उसके लिए घातक था। पोलोज़ोवा ने मेज़ पर से एक मोटा शब्दकोश उठाया और *अपनी पूरी ताकत से उसे मकडी* पर दे मारा। जब उसने नीचे झुककर शब्दकोश को उठाया, तो कुचली हुई मकडी अपनी रोयेंदार टागो को हवा म असहायतापूर्वक पटक रही थी।

पोलोज़ोवा स्टूल पर ढह गई।

क्लाक को इस बात का अस्पष्ट सा अहसास था कि कोई बहुत गभीर

घटना घट गई है, मगर वह निश्चय के साथ नही कह सकता था कि वह क्या है। उसने प्रश्नभरी आखो स पोलोज़ोवा के पीले चेहरे की तरफ देखा।

'क्या बात है? आप इस तरह पीली क्यो पड गई ह? क्या यह ज़हरीली है?"

जी हा। यह फलागा है। कहते हैं कि इसका विष साघातिक होता है।"

'अच्छा, यह बात।'

"यह आई कहा से—इस डिबिया म से?

क्लाक ने झुककर फश पर से माचिस को उठाया।

"जी हा, इसी माचिस मे से। म इसम स तीली निकाल रहा था भई, वाह!'

"आप हस क्यो रहे है?"

'म फौरन समझ नही पाया था। बात यह है कि आज पहली मई है—उन गुमनाम पत्रो के लेखक की दी हुई तारीख। हम अभी अभी यही बात कर रहे थे कि वह अपने वादे को पूरा करेगा या नही। तो, वादा तो उसने पूरा कर दिया और सो भी इतनी चालाकी के साथ—असली एशियाई तरीके से। साला कही का। मगर उसने यह माचिस यहा मेरे पास कैसे रखी? यह है सचमुच चकरानेवाली बात।'

वह उत्तेजना के साथ कमरे म चहलकदमी करने लगा।

"मैं भी नही समझ पा रही हू। मैं जानती हू कि आपके मकान पर एक विशप पहरेदार लगा दिया गया है। यह बिलकुल समझ मे न आनेवाली बात है। अगर आप अब काम छोड दें और यहा से ,

"इसकी चिता छोडिये—म नही जा रहा। देखता हू कि किसीने मन म मुझे यहा से भगाने की ठान ली है। मुझे तब लोगो की बात मानने की आदत नही, जब वे जबरदस्ती मेरी रजामदी हासिल करने की कोशिश करते ह। म यही रहूगा। म जानता हू कि ये सज्जन कौनसा खेल खेलने की कोशिश कर रहे ह। ये लोग ऐसे मूख नही है—एक अमरीकी इजीनियर को जान से मार दिया और, फिर विदेशो मे अफवाह उडा दी कि सोवियत सघ मे विदेशी विशेषज्ञो का जीवन सुरक्षित नही है। वास्तव म यह बहुत ही सुविचारित योजना है। बस, अकेली दिक्कत की बात यह है कि इन

सज्जना ने इसके लिए मुझे ही चुना है। अभाग्यवश, अपनी सारी कोशिशो के बावजूद म वाक्र का जाना नही रोक पाया, मगर आप मेरी तरफ से साथी सिनीत्सिन से यह कह सकती ह कि अगर मेरा सहकर्मी अपने मन म यह ठान ले कि खुले आम उन कारणो को बताये, जिनकी वजह से उसे यहा से जाना पडा था, ता मैं किसी भी समय अखबारो म यह कहन क लिए तैयार हूं कि यह सब झूठ और बकवास है।'

क्लाक ने देखा कि पोलोज़ोवा की बडी बडी आखे उस पर टिकी हुई ह – इस बार सख्ती स नही, बल्कि एक सहानुभूतिपूर्ण अचरज के साथ। उस लगा कि यह वह अवसर है कि जब वह एकबारगी अपन दोषानुभूति के उस भाव का अत कर सकता है, जिसका वह पोलोज़ोवा क साथ अपने झगडे के समय से अनुभव करता आ रहा हे। इस बात की अनुभूति स उस एक अस्पष्ट सा हर्ष हुआ। उसे लगा कि वह बडी उदारता दिखा रहा है – उसकी स्थिति म हर कोई व्यक्ति ऐसा नही कर सकता – और इस खयाल स उसका मन और भी खुश हो गया। उसन मेज़ पर से अनजले सिगरेट को उठाया, मेज़ की दराज़ से माचिस को निकाला, उसे सहज सावधानी की मुद्रा स धीरे स खोलते हुए और इस बात की तसल्ली करते हुए कि उसके भीतर बस तीलिया ही हैं, उस म स एक तीली निकाली। उसने देखा कि पोलोज़ोवा की घबराहटभरी निगाह उसकी हर हरकत का अनुसरण कर रही ह और उसने बडी लापरवाही दिखाते हुए सिगरेट को सुलगा लिया।

"साथी क्लाक , पहली बार उसन क्लाक को साथी कहा था और क्लाक को यह सबोधन सुअर्जित सम्मान जैसा लगा था अगर आपका कोई विशेष कायक्रम न हो, तो आज का दिन मुझे अपने साथ बिताने दीजिये। आपको यह बात उपहासजनक लग सकती है मगर आज आप पर कही कोई और आपदा आ पडे, ता स्थानीय परिस्थितिया स आपकी अपेक्षा अधिक परिचित हान क कारण मैं शायद उपयोगी साबित हो सकू।"

"आप यह क्यो समझती हैं कि यह मुझे उपहासप्रद लगेगा? आपन तो आज एक तरह से मरी जान ही बचाई है अगर आप चिल्लाई न होती, तो मैंने अवश्य ही इस अपन हाथ स झटक दिया होता और इस तरह म मारा जाता। आज का दिन आपक साथ बिताना मर लिए बडा सुखद होगा,

मुझे बस यही हिचक है कि मेरी मौजूदगी से आप पर भी खतरा आ सकता है।"

"चिंता मत कीजिये। कुछ भी हो, मुझे दिन भर शांति नहीं मिल पायेगी।"

"अगर आप इतना आग्रह कर रही हैं, तो ..."

"आप राजी हैं? आइये, इसी बात पर हाथ मिलायें," उसने अपना हाथ बढा दिया। "जानते हैं, आप बहुत ही अच्छे आदमी हैं, इसीलिए मैं आपसे हाथ मिलाना चाहती हूं। मुझे लगता है कि हम दोस्त रहेंगे।"

मुझे तो यह लग रहा है कि हम पुराने मित्र हैं। जानती हैं, आज के दिन को मैं एक जमाने तक नहीं भूल सकूंगा। सिर्फ इस मनहूस कीड़े के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि आज मुझे दो मित्र मिले। मर्री ने भी आकर यह सुझाव दिया था कि मैं आज का दिन उनके साथ बिताऊं।

अचानक वह पीला पड़ गया।

'अरे, मर्री! कहीं उन्हें भी अपनी मेज पर माचिस न रखी मिली हो!'

क्लार्क दरवाजे से तेजी से निकला और सड़क को दो छलांगों में पार करके मर्री के फ्लैट की ओर भागा। पोलोजोवा उसके पीछे पीछे भागी।

मर्री का कमरा भीतर से बंद नहीं था। क्लार्क ने दरवाजे को धकेलकर खोला और देहली पर ही खड़ा हो गया। मर्री झुका हुआ खड़ा फर्श पर किसी चीज की तरफ देख रहा था। वह एक बड़ी सी मकड़ी थी।

'देखिये, मैंने अभी अभी क्या मारा है,' मर्री ने अपना सिर उठाते हुए कहा, "अचरज की बात यह है कि यह माचिस में से कूदी थी।"

क्लार्क सहारे के लिए दरवाजे पर टिक गया।

"मैं इसी की चेतावनी देने के लिए लपका था। यह फलांगा है।'

'वाह! क्या यह जहरीली है?'

मर्री अपने बायें हाथ को आंख टिकाकर देखने लगा।

'इसने आपको डंक तो नहीं मारा?'

"पता नहीं ... मैंने इसे हाथ से नीचे झटक दिया और फिर पैरों से कुचल दिया।"

क्लार्क ने मर्री के हाथ को कसकर पकड़ा और उसे खिड़की के पास ले गया। हाथ के घुमाव पर एक लाल उभार नजर आ रहा था।

तभी दरवाज़े पर पोलोज़ोवा पहुच गई।

"इन्होने उसे मार दिया!" क्लार्क न फश की तरफ इशारा करते हुए पोलोज़ोवा से चिल्लाकर कहा। 'आइये, जरा इनका हाथ देखिये—उस पर डक जैसा कुछ निशान है।"

पोलोज़ोवा न क्लार्क को अलग धकेल दिया और झुककर हाथ का मुआयना करने लगी।

'मुझे जरा भी तकलीफ नही हो रही है "

मर्री शात नजर आने की भरसक कोशिश कर रहा था, अपने मुह के कानो मे उसन मुसकराने तक की कोशिश की, लेकिन उसके हाठ काप रहे थे।

एक कष्टदायी खामोशी छा गई। पोलोजोवा न सारे हाथ पर बडी सावधानी से अपना हाथ फेरा। एकदम ज़र्द हुए क्लार्क ने यात्रिक रूप से अपने माथे पर रूमाल फेरा, जिस पर अचानक पसीने की बूदें फूट पडी थी।

"नही, यह फलागा का डक नही है," पोलोज़ोवा की दृपपूण आवाज़ अचानक गूज उठी—तनावपूण सन्नाटे मे यह सुनन मे ऐसी लगी, मानो अदालत ने अभियुक्त को बरी करने का हुक्म सुना दिया हो। अगर यह फलागा का डक होता, तो सारा हाथ सूज जाता और आपको बेहद दद होता। आपको शायद मच्छर ने या किसी और हानिरहित कीडे न काटा होगा। घबरान की कोई बात नही है। और कृपया भविष्य मे हर किसी जानी अनजानी चीज को हाथ से मत छाडियेगा।

खूब हसते और बाते करते हुए उसने उन्हे बिच्छुओ के बारे म दो-तीन मज़ेदार किस्से सुनाय। क्लार्क न मन मे साचा कि वह असल म मजाक करने के मूड म नही है, बल्कि सिफ वातावरण को हलका करन के लिए ही ऐसा कर रही है। इसम उसकी सहायता करने के इरादे से वह खूब जोर-जोर से और दिल खोलकर हसा। मर्री ने भी खूब ठहाके लगाये।

मजाक करते-करते ही पोलोज़ोवा न मज पर से एक कागज उठाया और कुचली हुई फलागा को उस पर उठाकर उस पास ही पडी एक माचिस म डाल दिया।

जब पोलाज़ोवा क्लार्क के कमरे म दूसरी फलागावाली माचिस को लान और इस घटना के बारे में सिनीत्सिन को खबर दने के लिए चली गई, तब क्लार्क ने मर्री से कहा

"इसी न मेरी जिंदगी बचाई।'

बहुत तेज लडकी है," मर्री न सराहना भरी आवाज म कहा। वह कमर के बीच म ठहर गया था। "तो, यह था हमारा मई दिवस का प्रतिश्रुत चमत्कार! बहुत सफाई का काम था भई! फिर भी, यह बात मरी समझ म नही आती कि ये माचिसे के हमारे कमरा में कब और क्योकर रख पाये। यह तो असली उस्ताद का काम है।'

'हा यह सचमुच हमारे साथ काफी गभीर मजाक किया गया है। सच पूछो, तो मुझे सचमुच खुशी है कि बाकर चला गया है। मैं लगातार उस यहा रुकन के लिए राजी करन की कोशिश कर रहा था, और आज कही उसे इनम स किसी कीडे न काट लिया होता, तो मेरी हालत देखने लायक होती! जाहिर है कि यह चित्रकार हम यहा से भगाने के बारे म काफी गभीर है। खैर, सुबह आपने जो फैसला किया था, उसे तो आप नही बदल रहे?"

"क्या आप बदल रहे ह?'

'मैं तो यही रुकूगा!

'ठीक है! रुकना ही चाहिए! बस यह मत समझ लीजियेगा कि आज सुबह का घटना के बाद मैं बाकर की तरह खिसक जाऊगा और आपको यहा अकेला छोड जाऊगा। सच तो यह है कि यह सारा धधा मेरे कुतूहल को जगान लगा ह। जासूसी कहानियो को म हमेशा स पसन्द करता आया हू। मै खुद ही इस रहस्य की जड म जाने की कोशिश करूगा—अपन मैनेजमेंट की सहायता के बिना, जो जाहिर है कि जासूसी के मामले म कोई बहुत उस्ताद नही है।'

ठीक है, चलिये, इस रहस्य को साथ-साथ सुलझाने की कोशिश करते है।'

फलागो के शिकारी

इस बीच पोलोजोवा मई दिवस की सजावटो से अलकृत सडक पर अपन हाथ म दोनो माचिसे लिये चली जा रही थी। सिनीत्सिन उसे अपने घर पर नही मिला था, और इस बात को महसूस करते हुए कि इस मामले मे तनिक भी विलब नही किया जा सकता, उसने तय किया कि

के स्थानीय प्रमुख से उसके घर जाकर मिले। वह बडे अरीक के किनारे एक सफेद मकान म रहता था, जिसके पास चिनार के दो पेड थे।

मई दिवस का जलूस अभी अभी ही सडक से गुजरकर गया था, और खाली मच के आगे धूल का एक बादल ऊपर उठ रहा था, मानो ट्रैक्टरो की खडखडाहट से रेगिस्तान भी जागत हो गया था और आसपास के गावो के सामूहिक कृषको के पीछे पीछे वह भी जलूस मे भाग लेने के लिए आ गया था। सडक के दूसरे छोर से घटियो की हलकी टनटनाहट आ रही थी। पीपा से लदा ऊटा का एक काफिला मथर चाल से चला आ रहा था। जाहिर था कि वह रास्ते मे ही कही अटक गया था और अब वह कसबे म उस अप्रत्याशित और बेमेल अतिथि की तरह प्रवेश कर रहा था, जो तब पहुचता है जब दूसरे अतिथि जा रहे होते हैं।

पोलोश्रोवा चढाई पर से अरीक की तरफ उतरने लगी। पुलिया पर लाल टाइया बाधे बच्चा की एक भीड उसम आग निकल गई। बच्च जलूस स वापस आ रहे थ और परेड के बाद जोश से भरे हुए अभी भी किसी चीज़ के बारे म ज़ोर-जार से बात कर रहे थे। बच्चो की इस भीड म उन्ह पहचान पाना बहुत आसान था जिन्होने आज ही पायनियर प्रतिना ग्रहण की थी और जिन्हे आज ही लाल टाइया प्रदान की गई थी। अनभ्यस्त लाल कपडे से घिरे वडी वडी आखोवाले अपने सावल सिरो को व जिस शान क साथ ऊपर उठा रहे थे उसस उन्हे दूर स ही चीन्हा जा सकता था।

चेका प्रमुख अपनी पत्नी और दो सहकारिया के साथ बरामद म चाय पी रहा था। मेज पर एक बहदाकार ठठ रूसी समोवार-आतिपूर्व रूस की एकमात्र धमन भट्टी-काली काली चिनगारिया उगल रहा था। समोवार क आकार का देखते ही कहा जा सकता था कि प्रमुख चाय पीने का शौकीन है और उसे पीना जानता भी है। वह तश्तरी स छोटा छोटी चुस्किया लगाकर चाय पी रहा था। उसके सहकर्मी प्याला स चाय सुडक रहे थ। तीना न ही ताजा इस्तरी की साफ सफेद वरदिया पहन रखी थीं।

तीना अभी अभा ही जलूस स वापस आय थ-उनकी वरदिया की समाराही सफदी इसकी गवाही दे रही था-और चायपान करके व गरमी स अपनी डटकर रक्षा कर रहे थ जिसन जम बरामदे पर सीधा धावा बोल रखा था।

पोलोज़ोवा ने प्रमुख से मिनट भर के लिए अपने अध्ययन कक्ष मे चलने का अनुरोध किया और उसे सक्षेप मे बताया कि सुबह क्या हुआ था। प्रमुख न बीच बीच म सवाल पूछते हुए उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुना। उसके प्रश्नो से यह स्पष्ट था कि वह पिछले पन्नो के इतिहास से पूरी तरह से परिचित है। उसने पोलोज़ोवा के हाथो से दोनो माचिस ले ली, मेज पर दो कागज फैलाये और हर कागज पर एक एक फलागा को रख दिया। फिर उसने अपनी दराज मे से एक आतशी शीशा निकाला और फलागा का बारीकी से परीक्षण करना शुरू किया। पोलोज़ोवा ने इस बात को खासकर देखा कि उसकी भौह किस तरह सिकुड गई है।

"दिलचस्प बात है! आपने कौनसी फलागा को मारा था?"

पोलोज़ोवा असमजस म पड गई।

"म दोनो माचिसो को एक ही हाथ म लाई थी और अब म निश्चित रूप स कुछ नही कह सकती। मैंने यह नही सोचा था कि इससे कोई फर्क पड जायेगा।"

प्रमुख ने टेलीफोन का रिसीवर उठाया और राजकीय फाम को फोन किया।

"जरा मैनेजर से मिलाइये। हा, नमस्ते! म कोमारेको बोल रहा हू। आपके यहा एक लडकी है–प्रयोगशाला की प्रमुख। वह प्रकृतिविद भी है, है न? अहा, मेरा यही खयाल था! हमे बस, यही चाहिए था। सुनिये, उसे एक कार मे बठाइये और डेढ घटे के भीतर मेरे पास भेज दीजिये खैर, खुदा हाफिज!" उसने रिसीवर रख दिया।

"तो आपके अमरीकियो का क्या हाल है? डर के मारे मरे जा रहे है, है न?"

"जी नही, इसके विपरीत बडी अच्छी तरह से पेश आ रहे है।"

"मेरे खयाल म आपने उन्हे यह तो बता दिया होगा कि फलागा का डक जहरीला नही होता?"

पोलोज़ोवा सकोच मे पड गई।

"लोग कहते है कि इसका विष साघातिक होता"

"लोग तो यह भी कहते है कि चूहे का दूध दुहा जा सकता है। और, बिटियाजी, आपको इस तरह की बकवास को दुहराते शरम आनी चाहिए। यह कोई बहुत पचीदा मामला नही है–इसका बस, एक उद्देश्य है और

वह है अमरीकियो को एशियाई विभीषिकाओं' से डराना। श्रम साधारण और परिणाम असाधारण। हमारे यहा फलागो की भला क्या कोई कमी है। मैदान म चले जाओ और चाहे जितनी पकड लो। तरीका सस्ता भी है और असरदार भी। आनेवाले लोग इनसे ऐसे डरते हैं, जस प्लेग से–कराकुर्तो क बारे मे किस्से ही उन्होने सुने होते हैं खर, अगर ऐसी कोई और बात हो तो कृपया मुझे बताना न भूलियेगा।"

"साथी कोमारको ऐसी कोई बात फिर नही होनी चाहिए। अगर अमरीकी अपना बोरिया बिस्तर बाधकर चले जाते ह, तो आप खुद समझ सकते ह कि कसी बदनामी होगी। एक तो जा भी चुका है। सिनीत्सिन न उन्हे पूण सुरक्षा का आश्वासन दिया था। ऐसे कदम उठाने चाहिए कि इस तरह की बात फिर कभी न होने पाये

देखिये उत्तेजित मत होइये–उत्तेजना से चहरे का रग खराब हो जाता है प्रमुख न फलागा का माचिसा मे रखते और उन पर पसिल से निशान बनाते हुए उसकी बात को काट दिया।

"मैं उत्तेजित नही हो रही हू। मैं तो सिफ यह जानना चाह रही हू कि क्या इन गुमनाम खता के लखक का पता चलाने के लिए कुछ किया गया है। अमरीकी लोग यह जानने के बहुत उत्सुक हैं। अगर हम उन्हे यह बता पाते कि हम कुछ सुराग मिल गया है तो बडा अच्छा रहता।"

प्रमुख न अपनी सौजन्यपूण आख उठाइ और पालोजोवा की तरफ देखा

आप अमरीकिया स कुछ भी नही कहगी। उनस मत कहिय कि आप यहा आई थी और उन्ह मत बताइये कि हमने क्या बाते की हैं।

मुझे यह सिखाने की जरूरत नही है," पालोजोवा न बुरा मानते हुए कहा, म आपके काम म हस्तक्षेप करना नहा चाहता, साथी कोमारको लकिन मरा खयाल है कि चूकि अपन अनुवाद-काय क कारण मुझे पूरे-पूरे दिन कनाक के साथ बिताने पडते हैं और चूकि यह सभव है कि उनकी जान लने की कोशिश मरी मौजूदगी म भी की जाय इसलिए शायद यह उचित ही रहे कि आप मुझे कुछ निर्देश द दें। कम स कम आप मुझ यह तो बता ही सकते ह कि किन बातो का ध्यान रखा जाना चाहिए।'

प्रमुख न अपना सिर हिलाया।

"साथी पोलोजोवा, आप हमारे किसी काम की नही। आप खुद ही देख लीजिये – मेरे पास आने के भी पहले आप दोना माचिसो को गडबडा चुकी थी। आप भी भला कैसी चेका अधिकारी बनेगी? जनतन्न के भले के लिए अपना काम किये जाइये, मगर मेहरबानी करके इस मामले म दखल मत दीजिये। हम खुद इससे निपट लेगे। न न, बुरा मत मानिये। घर बने जासूस हमेशा मुसीबत मे ही डालते है। अगर आप अपने अमरीकी पर एकाध मकडी और कुचल दें या एकाध कीडा और मार दें, तो यह हमारी बडी भारी सेवा हागी। खैर, खुदा हाफिज!"

अकेले रह जाने पर प्रमुख ने दोनो माचिसो को दराज मे रखकर ताला लगा दिया और दरवाजे पर जाकर आवाज दी

"साथी गाल्किन! साथी गाल्किन!"

एक गठीले बदन के आदमी ने कमरे मे प्रवेश किया।

"हसन को मैदान मे जाकर मेरे लिए दो फलागा लाने के लिए कहिये। बस, जरा जल्दी। समझे?"

"ठीक है।"

कामारेका बरामद मे वापस आ गया।

"क्या, व्रोश्किन, क्या खयाल है – एक बाजी पिंग पौग की हो जाये? बहुत दिन हो गये तुम्हे हराये हुए।"

व्राश्किन उसका सहकारी और मित्र था। बासमचियो के और जगली सूअर के शिकार पर भी दोना साथ साथ ही जाया करते थे।

"ठीक है, हो जाये।"

उसी समय बरामद मे भारी भूरा पग्गड बाधे एक सावले व्यक्ति ने प्रवेश किया, बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि एक महाकाय कुम्हडे ने प्रवेश किया, क्योकि एकदम कृश और झुर्रीभरा वह आदमी तो पग्गड का बस, पुछल्ला जैसा लगता था – उसके चारा हाथ पैर चार अकुरो जैसे ही लगते थे।

"शाबाश, हसन, सलाम अलैकुम!" प्रमुख न कुम्हडे के दायें अकुर को पकडकर हिलाते हुए कहा, "शाबाश, आओ, अदर आओ। नही, जूती उतारने की जरूरत नही – अरे, यह कोई मसजिद नही है।"

आध घटे बाद जब एक कार मकान के बाहर चिनार के पडा के नीचे आकर खडी हुई और एक लडकी बरामदे की सीढियो पर चढने लगी,

तो उसकी घर स निकलते एक झुरियादार आदमी से भेंट हुई, जिसने एक बडा पगड बाध रखा था।

दरवाजे पर ही कोमारेको उसे मिल गया।

"आप राजकीय फाम से आई ह है न? हम आपका ही इतजार कर रहे थे। आइये, अदर आइये," उसने अपने अध्ययन कक्ष के दरवाजे को कसकर बद कर लिया "आप प्रकृतिविद हैं, ठीक है न? अच्छा, बताइये, अगर म आपको एक दो कीडे दिखाऊ, तो क्या आप उनम भेदाभेद कर सकती हैं? बहरहाल ठीक यही होगा कि आप खुद ही देखकर बताय "

उसन उसके आगे एक कागज पर चार मरी हुई फनागा रख दी।

राजनीति और सिचाई

कोमारेको के घर स लौटने पर पोलोजोवा ने देखा कि दोनो अमरीकी इस बात पर विचार कर रहे हैं कि छुट्टी के दिन को किस तरह बिताया जाय। समस्या इतनी आसान नही थी–न कुछ किया जा सकता था और न कही जाया ही जा सकता था। मर्री ने सलाह दी कि जराना का शिकार करने चला जाये–आज इस बात का खतरा नही था कि पज से आनेवाले ट्रक शिकार को डराकर भगा देंगे। क्लाक ने राय दी कि चलकर शहर म घूमा जाय और मई दिवस की सजावट को देखा जाये। पोलोजोवा न क्लाक की राय का समथन किया।

तीना धूलभरी खाली सडका पर निकल पडे। उन्होने एक दूकान पर दो दो गिलास ठडा क्वास* पिया और फिर मुख्य अरीक के ढाल पर उतरकर एक बडे चिनार के नीच एक चायखान म जाकर दरी पर बठ गये। कसबे म इसके अलावा मनोरजन की और कोई जगह नही थी।

क्लाक उत्सवी उमग म था। उस लग रहा था, जस आज उसकी सालगिरह हो और आसपास की सभी चीजें–चायखान का पुराना समावार और चिनार का बूढा पड तक–खास उसी क लिए लाय गय उपहार हो। अपने आसपास देखत समय यह खयाल उसक दिमाग म बार बार आ जाता

---

* रूसी पेय।

था कि अगर कही वह मकडी किसी और कोण से कूदी होती, तो आज यह कुछ न होता—न चिनार का पड, न समोवार, न यह दरी, न दरी पर सफेद पतलून पहने बैठा यह आदमी, जिसे एक स्त्री का बढा हुआ हाथ प्याले मे महकती पीली चाय पेश कर रहा है और जो इस एक साधारण से सबोधन "क्लाक" का सुनते ही कुत्ते की तरह अपना सिर घुमा देता है। इसलिए उसे समोवार की कुटिल बनावट मे, चिनार के पेड की विवेकपूर्ण उपयोगिता म, कुछ ही दूरी पर बहती अरीक की कलकल मे कुछ सात्वनादायी अनुभूति हा रही थी। वह हसता और मजाक करता करता ऐसी ऐसी मजाकिया बाते कहता चला गया, जैसे अपनी चढती जवानी के समय से कभी उसके दिमाग मे भी नही आ पाती थी, लेकिन जो आज न जाने क्या अत्यधिक विनोदपूर्ण लग रही थी। चाय पीती पोलोजावा के तो हसत-हसत पट म बल पडन लगे थे।

आखिर चाय खत्म हो गई और वहा से चलने का समय हो गया, मगर जाने को जगह कोई थी ही नहीं। मर्री ने अपना प्रस्ताव दुहराया कि शिकार खेलन चला जाये मगर पोलोजोवा उम दिन उनके शहर के बाहर जान के खिलाफ थी।

वे अरीक के किनारे किनारे टहलने लगे। तभी अचानक बडे जोर की आधी आई और निमिष मात्र मे ही रेत की बडी बडी लहरो ने मारे कसबे को आखो से ओझल कर दिया। क्लाक खडा होकर यह इतजार करने लगा कि धूल बैठ जाये और वे लोग आगे बढें। तभी हवा का एक जोरदार झोका और आया और सिर पर से उसकी टापी को उडा ले गया। वह हवा मे कौए की तरह फडफडाई और फिर उडकर चली गई। पीछे भागकर उसे पकडने का सवाल ही नही उठता था—धूल के इस घने मटियाले कुहरे मे कदम भर दूर की चीजा को भी पहचान पाना असभव था। उसने पोलोजोवा को आवाज दी—वह उसकी बगल मे ही एक पड पर टिकी खडी थी। लेकिन न वह नजर आ रही थी और न पेड। क्लाक ने अपना हाथ बढाकर उसे टटोला और एक दो कदम आगे बढाने पर मर्री से जा भिडा। वे मूसलाधार वर्षा के समय पेड के नीचे खडे आदमियो की तरह अपनी सास रोके, होठ भीचे और आखें मिचमिचाते खडे थे। सूई जैसी पनी धूल उनके चेहरो पर थपेडे मार रही थी, उनके नथुनो मे घुसी जा रही थी और दाता मे किरकिरा रही थी।

कुछ समय के बाद हवा का जोर कुछ कम हो गया और धूल धीरे धीरे बठने लगी। वह जमीन पर अभी भी घुटने घुटने ऊची उड रही थी, जिसके कारण उसके ऊपर तैरता सा कसबा बडा अवास्तविक लग रहा था—मकान और पेड हवा म अधर लटके हुए थे और उनके और जमीन के बीच लहराती धूल की एक मटियाली परत फैली हुई थी जिस पर वे रेगिस्तान म मरीचिका की तरह लग रहे थे।

"आपकी टोपी कहा है?'

क्लाक ने अपनी उगली से सामने खुले आकाश की तरफ इशारा किया।

कोइ बात नही उसकी परवाह मत कीजिये। मेरे यहा चलिये—म यहा पास ही मे रहती हू —मैं आपको दूसरी टोपी दे दूगी।'

पोलोजोवा ने सडक को पार किया और मिट्टी के एक झोपडे के सामने जाकर खडी हो गई।

यह रहा मेरा घर आइये पधारिये। आप हाथ मुह तो धोना नही चाहगे? गद स आप एकदम मटियाले हो गये ह।

तौलिये से अपना मुह पोछते पोछते क्लाक न उस छोटे से कमरे पर एक निगाह फिराई। दीवार और फश मिट्टी के थ। नन्ही सी खिडकी पर टगे साफ सफेद परदे को देखकर यह कहना एकदम आसान था कि इसम कोई स्त्री ही रहती होगी। फर्नीचर के नाम पर बुन जमा चादर से ढका एक पतला सा पलग एक छोटी सी मज एक स्टूल और किताबो का एक बक्सा था। मेज और बक्सा किताबो क करीने स लगे चट्टो से अटे पडे थ। दीवार म ठुकी एक कील पर धारीदार ड्रेसिग गाउन लटका हुआ था।

क्लाक न मज पर स कुछ किताबें उठाइ और उनक नामो पर नजर डाली। सभी रूसी म थ।

'समय म नही आता,' उसने रूसी म कहा। यह उन दस-बारह रूसी वाक्यो म स एक था जो उसने निर्माणस्थली पर सीख लिय थे।

'देखिय न कितनी बार मन आपस वादा किया है कि म आपको रूसी सिखाऊगी और हर बार मन उस तोडा है—कभी वक्त ही नही मिल पाया। आइय, स्टूल क इन दोनो सिरो को पायदा उठाकर पहला पाठ पर डालते हैं। क्या खयाल है, आपका?

क्लाक न सिर हिलाकर सहमति जताई।

'य कौनसी किताबें ह? क्षण भर की चुप्पी क बाद उसन पूछा।

"ये? यह है मार्क्स की 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास', यह रही एगेल्स की 'प्रकृति की द्वद्वात्मक गति', यह भी मार्क्स की ही किताब है 'अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत'।"

"सभी अर्थशास्त्र की ही किताबें हैं?"

"जी हा, राजनीतिक अर्थशास्त्र की।"

"और सिचाई की किताबें?'

"सिचाई के बारे मे किताबें भी हैं। वे रही, बक्से पर।" उसने किताबो के एक छोटे से ढेर की तरफ इशारा किया।

"आप अर्थशास्त्री बनना चाहती हैं या सिचाई विशेषज्ञ?"

उसकी आवाज मे भरा व्यग्य पालोज़ोवा से छिपा न रहा।

क्या आप यह सोचते हैं कि सिचाई विशेषज्ञ को विश्व अर्थतत्र के प्रश्नो को नहीं समझना चाहिए?"

"अर्थशास्त्र, दर्शन, राजनीति, सिचाई—हर चीज की जानकारी रखना असभव है। यह बात सर्वज्ञानवादियो के जमाने मे ही सभव थी। आज अगर कोई हर बात की जानकारी चाहे, तो वह आदमी या तो अति प्रतिभाशाली होगा या फिर बिलकुल अनाडी। अगर आप अच्छा सिचाई इजीनियर बनना चाहती ह, तो आपको अपना पुस्तकालय बदलना होगा। ये सभी पुस्तकें" उसने मेज और बक्से की किताबो के ढेरो की तरफ इशारा किया, "सिचाई की समस्याओ के बारे मे होनी चाहिए। और," उसने किताबो के छोटे से ढेर की तरफ इशारा किया, "ये अन्य सभी प्रश्नो के बारे मे हो सकती हैं।'

उसे पालाजोवा पर इस तरह लैक्चर पेलते खुशी हो रही थी।

लेकिन मेरी राय मे अगर आप अपनी ही विशेषता के अलावा और किसी चीज का अध्ययन नही करते, तो आप अच्छे विशेषज्ञ तक नहीं बन सकते,' पोलोज़ोवा ने कहा।

"आप इस बात पर विश्वास कर सकती हैं कि मैं एक अच्छा सिचाई विशेषज्ञ हू लेकिन राजनीति के बारे मे म कुछ भी नही जानता।"

"क्या आपको इस बात पर बहुत गर्व है?"

"अगर मैंने राजनीतिज्ञ बनने की सोची होती, तो म सिचाई का अध्ययन नही करता। मैंने राजनीति का अध्ययन किया होता और कांग्रेस के चुनावो मे भाग लिया होता।'

"अहा! तो आप इसीको राजनीति कहते है, है न? कांग्रेस के चुनाव मे खडे हो गये! बात यह है कि मेरे लिए राजनीति एक बिलकुल ही अलग चीज है। उदाहरण के लिए, अमरीका मे आप नये बागानो के लिए लाखो हैक्टर की सिचाई कर चुके है। अब अपनी उपज के लिए मडिया न होने के कारण इन बागानो के मालिक उन्हे जला रहे है, शायद साल भर के भीतर वे आपकी बनाई सिचाई प्रणाली को भी नष्ट कर डालेगे, ताकि काश्त का रकबा कम किया जा सके। तो फिर इसका क्या लाभ कि आपने उसे बनाया? या फिर यह बात है कि इससे आपको क्या लेना देना?"

'आपका यह खयाल है कि क्योकि मै अमरीकी हू और इजीनियर हू और क्योकि मै कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य नही हू इसलिए इसका यही मतलब है कि मै पूजीवादी हू शत्रु हू। यह बेकार बात है। आप मेरे बारे मे जानती ही क्या है? कुछ भी तो नही! मेरे पिता साधारण प्रेस कपोजीटर थे, जबकि आपके पिता शायद कोई वकील या डाक्टर थे। हो सकता है कि मुझमे आपकी बनिस्बत ज्यादा सर्वहारा खून हो।"

'मेरे पिता एक पेशेवर क्रातिकारी थे। बुद्धिजीवी वर्ग की होने के बारे मे इस तरह की चुटकी लेना अच्छा नही। असल मे मेरा पालन पोषण मजदूर वर्गीय वातावरण मे ही हुआ था। जब मेरे पिता को निर्वासित किया गया था तब मै एकदम बच्ची थी। मेरे पिता के एक साथी ने, जो पार्टी के सदस्य थे और मजदूर थे, मुझे शरण दी। मै एक मजदूर बस्ती मे ही बडी हुई। बाद मे, कई वर्ष बाद जब मेरे पिता फरार होकर विदेश पहुच गये, तो उनके साथियो ने मुझे उनके पास इगलैड भेज दिया। हम वहा कुछ ही वर्ष, फरवरी क्राति तक ही रहे थे।"

"मै कोई चमनवाली बात नही कहना चाहता था। मै सिर्फ यह कहना चाहता था कि आपकी कल्पना मे हर अमरीकी, जो मजदूर नही है, पूरा थैलीशाह है। वैसे ही जैसे हमारी कार्टून पत्रिकाओ मे रूसियो को हमेशा बडी-बडी दाढीवाले और मुह मे छुरा दबाये ही दिखाया जाता है।"

"मान लीजिये मेरी धारणा इतनी सीधी-सादी नही है—लेकिन हा इस बात को मै बेशक मान लूगी कि आपके बारे मे शायद ही कुछ जानती हू और अमरीकी जीवन के बारे मे मुझे सिर्फ उपन्यासो और अखबारो को पढकर ही जानकारी हुई है।'

"तो, क्या आपने, इसका मतलब यह है कि आपने आज एक ऐसे

आदमी की जान बचाई है, जिसे आप जानती ही नही। शायद वह बचाने लायक था ही नही? आखिर क्या फलागा को कुचलने म आपने अपनी जान को खतरे म नही डाला था, वह आपके ऊपर चढ सकती थी। बेशक, इसमे भी राजनीति का कुछ तत्व जरूर है—आपने मुझे नही, बल्कि एक अमरीकी इजीनियर को बचाया, जिसके कारण आपके देश को नुकसान उठाना पड सकता था।"

'जब कोई आदमी खतरे मे होता है, वह दुश्मन ही न हो, तो कोई खडा होकर यह नही सोचता कि उसकी मदद क्या की जाये—आप बस मदद करते हैं और क्या! और फलागो के जहरीली होने की यह सारी बात बकवास है। बहुत करके उन्हे आपके पास यही सोचकर छोडा गया था कि उनसे आप डर जायेंगे, क्योकि चिट्ठिया वाछित प्रभाव नही पैदा कर पाई थी।"

"कुछ भी हो, मैं आपका आभारी हू।

इजीनियर ऊर्तावायेव का प्रयोग

नहर के तल को एक कॉफर बाध नदी से अलग करता था। उसके दोनो तरफ अपनी गरदने ताने और मानो अचरज मे देखते दो एक्स्केवेटर खडे थे। उन्होने ककरो की ऊपरी परत को उलीचने का अपना काम खत्म कर दिया था। इसके नीचे चट्टान शुरू हो जाती थी और उसकी सतह को खुरचते हुए एक्स्केवेटरो के दात बेबसी से खनकते थे। तब लोग नहर के तल मे कूद पडते और चट्टान को एमोनल के विस्फोट से उडाने लगते। दिन मे तीन बार नहर के तल से सीटियो की सनसनाती चीख उठती और लोगो की भीड ढीले पत्थरो पर तेजी से चढ जाती। इसके बाद नीचे से पहले विस्फोट की आवाज आती, उसके बाद दूसरे, तीसरे, आठवे की तोप के धमाका की दबी हुई आवाज की तरह मद और बधी हुई। यह हमले के पहले की अल्पकालिक गोलाबारी होती थी। और जब सोलहवा धमाका हो चुका होता, तो लोग कुदालो को सगीनो की तरह पकडे ढीली मिट्टी को तोडने के लिए ढाल के नीचे की तरफ लपक पडते। उनके पीछे-पीछे और लोग लपके हुए आते, टूटे पत्थरो को हथगाडियो पर लाद लेते

और तख्ताबंदी की पतली पट्टी पर गाड़ियों को आगे धकेलते हुए तेजी से दौड़ पड़ते।

तख्तों की इस पट्टी को दौड़ते हुए एक सांस में ही पार करना पड़ता था। सेकंड भर को भी रुकने का मतलब था सारे बोझ को अधबीच में ही उलट देना। वे तख्तों को तेजी के साथ एक सांस में पार कर जाते और हथगाड़ियों को जोरदार खड़खड़ाहट के साथ खाली कर देते, दूसरे मजदूर पत्थरों को लपक लेते और एक्स्केवेटर के खुले दांतोंवाले डोल में डाल देते। इसके बाद एक्स्केवेटर की गरदन ऊपर उठती और अर्धवृत्ताकार घूमकर डोल में भरे पत्थरों को झकझोड़कर नदी की पीली धारा में उलट देती जो काफर बांध के दूसरी तरफ तेजी से बहती जा रही थी। नदी में जिस जगह मिट्टी और पत्थर का यह ढेर गिरता वहां क्षण भर के लिए एक भंवर बन जाता और फिर कुमक की तरह तेजी से आती शक्तिशाली लहरें इस विशाल दान को समेट लेतीं और मानो अदृश्य खड़खड़ाती हथगाड़ियों पर लादकर साथ में बहा ले जातीं।

कनाक बांध के ऊपर खड़ा कल के काम की रिपोर्ट को पढ़ रहा था कि तभी उसने कौश और मोरोजोव को आते हुए देखा।

'कहिये, आपके यहां क्या हाल है?' कौश ने अंग्रेजी में कहना शुरू किया 'कुछ प्रगति हो रही है है न?'

'बहुत कम। हमें नहर की खुदाई का काम रोककर यहां क्रेनों की जगह दो एक्स्केवेटर लगाने पड़े हैं। और कोई उपाय था ही नहीं। अगर कहीं हम बजरों को दो कतारों के साथ एक साधारण कनवेयर भी लगा सकते होते तो सारा काम दो-चार दिन में ही खतम हो गया होता।'

'इसके बारे में बात करना ही बेकार है। हमने कुछ सौ मोटर पट्टों का अनुरोध मास्को भेज रखा है, मगर यह एक बहुत ही दुर्लभ वस्तु है और इसे जल्दी पाने की शायद ही आशा की जा सकती है। क्या आप एक्स्केवेटर के डोल से एक माइन हॉइस्ट नहीं बना सकते? और कुछ नहीं तो इससे एक ब्यूगाइरम तो आपके काम के लिए खाली हो हो जायेगा।'

"मगर ढांचा कहां है? मैं पहले ही पूछ-ताछ कर चुका हूं। मिल ही नहीं सकती।

'हां, इस बारे में अभी कुछ नहीं किया जा सकता। बात यह है कि पहले तैयारी का सारा काम करने का वक्त था ही नहीं और नहर

खोदना और साथ ही साथ गारी चीजे भी इक्ट्ठा करना काफी मुश्किल काम है।"

"क्षमा कीजिये कि मै विघ्न द रहा हू," क्लाक के पीछे से मर्री की आवाज़ आई—वह कीश को सबोधित कर रहा था। "मुझे आपस एक गभीर मामले पर बात करनी है। मै कल शाम आपसे मिलन के लिए आपके कार्यालय मे गया था, मगर आप वहा ये नहीं। यह बहुत अच्छा है कि मिस्टर मोरोज़ोव भी यहीं हैं। यह काफी महत्वपूण सवाल है। क्या आप मुझे दस मिनट दे सक्ते है?"

'क्यो नही, अवश्य। चलिये, साथी मोरोज़ोव के युत मे चलते हैं। वहा हम निर्विघ्न बातचीत कर सक्ते हैं।"

युत की घनी छाया मे प्रवेश करके वे नक्शो से अटी एक मेज के आसपास बैठ गय और क्षण भर के लिए बिना बोले बैठे ठडी हवा का नाको से पान करत रह। आखिर मर्री न कहना शुरू किया

'इस बात को मैं अच्छी तरह से अनुभव करता हू कि उप मुख्य इजीनियर हाने के नात मिस्टर ऊर्ताबायेव मेरे निकटस्थ प्रमुख हैं। मै नहा चाहता कि आप लोग यह सोचें कि म किसी भी तरह उन्ह आपकी निगाहो मे गिराना चाहता हू। मै इस बार मे कई दिन से सोच रहा हू और आखिर इस निष्कष पर पहुचा हू कि इस बारे म अब चुप रहने का मुझे कोई अधिकार नही है।"

उसन अपने पाइप से राख का झाड दिया।

कीश एकाग्र होकर उसकी बात सुनने लगा।

'विशेपकर अपन सहयोगी बाकर के चले जाने के बाद से, क्याकि मैंने इस बात का ज़िम्मा ले रखा है कि एक्स्केवेटरो के सयोजन के काम को मैं पूरा करवा दूगा, इसलिए म अपने को इस काम के लिए उत्तरदायी समझता हू और इस बात की छूट नही दे सकता कि इन मूल्यवान मशीना का सत्यानाश किया जाये। इसका मतलब सार निर्माण काय का ही सवनाश करना होगा और आप सज्जनो को मुझसे यह पूछने का अधिकार होगा कि जब यह सवनाश किया जा रहा था, तब म वहा था और मन आपको समय रहते क्यो नही आगाह किया। मुझे क्षण भर के लिए भी इस बात मे कोई शक नही है कि मिस्टर ऊर्ताबायेव अच्छे से अच्छे इरादे से काम कर रह हैं और उन्हे यह कदम उठान की प्रेरणा काम को तेज करने की

अत्यत सराहनीय इच्छा से ही मिली है। मगर इरादा एक बात होती है और उसके व्यावहारिक परिणाम दूसरी और इस मामले म परिणाम विनाशक सिद्ध हो सकते हैं।'

जरा रुकिये, म यह बात अभी तक नही समझ पाया हू कि ऊर्तावायेव ने किया क्या है। एक्स्केवेटरो के सयोजन का काम क्या उनकी देखरेख मे है—आपकी नही ?"

'व्यवहार म मैं न तो सयोजन काय का जिम्मा ले सकता हू, न उसके लिए जवाबदही कर सकता हू। एक्स्केवेटर अब यहा अलग अलग हिस्सो के रूप म नही लाये जा रहे ह। उन्हे अब यहा से एक सौ बीस किलोमीटर दूर मिस्टर ऊर्तावायेव की निजी देखरेख म घाट पर ही सयोजित किया जा रहा है।'

लेकिन उन्हे फिर यहा कसे लाया जा सकता है? ठहरिये जरा, इसम जरूर कोई न कोई गडबड है।'

बेशक है। आप जानते ह कि हमारे पास एक्स्केवेटरो को अलग अलग हिस्सो म घाट से निर्माणस्थली पर लाने क लिए काफी शक्तिशाली ट्रैक्टर नही ह। मिस्टर ऊर्तावायेव ने इस समस्या का बहुत ही आसान हल निकाल लिया है। प्रत्यक्षत उनका तक यह है जब खुद एक्स्केवेटरो म कटरपिलर लगे हुए ह, तो उन्हे यहा ढोकर लाने की क्या जरूरत है? एक्स्केवेटरो को घाट पर ही सयोजित कर ल और उन्हे खुद ही चलाकर यहा ले आयें। अगर ये भारी भरकम मशीनें दिन म सात किलोमीटर ही चल तो भी वे किसी भी सूरत म कोई दो सप्ताह म यहा पहुच जायेंगी जबकि इसका कोई ठिकाना नही कि ट्रैक्टर कब पहुचगे।

आह, अब म समझा।"

'लेकिन समझ की कसौटी पर यह योजना खरी नही उतरगी। एक्स्केवेटर कोई मोटर ट्रक नही होता और उसे ऐसी यात्राओ क लिए नही बनाया जाता। उसम कटरपिलर इसलिए होते ह कि काम की प्रक्रिया म वह इधर-उधर चल सके। मगर इस तरह का आना जाना कुछ मीटर या कुछ दजन मीटर रोज से ज्यादा नही होता—न कि सकडो किलोमीटर। इस प्रयोग का एकमात्र नतीजा यह होगा कि सभी एक्स्केवेटर बरबाद हो जायेंगे। अगर उनमे से एकाध निर्माणस्थली पर पहुच भी गया तो हफ्ते दो हफ्ते क भीतर वह कबाड क ढेर पर डाले जाने क ही लायक रह जायगा।

ध्यान रखे कि घाट से लेकर यहा तक उसे लोयस मिट्टी पर होकर आना
होगा। आप खुद जानत ह कि यह मुलायम और चिकनी मिट्टी कसी सक्षारक
होती है और मशीना के पुरजा को कितनी जल्दी खराब कर देती है।
सक्षेप म अगर आप इस मूखतापूण प्रयाग को रोकने क लिए तत्काल कदम
नही उठाते, तो मुझे मजबूरन सारी जिम्मदारी से इनकार करना होगा
और आपस यह अनुरोध करना होगा कि एक्स्केवेटरा के सयोजन की
देखभाल के काम से मुझे मुक्त कर दिया जाय। अगर वाकर यहा होते,
तो वह फम की ओर स अपनी मशीना के ऐसे दुरुपयोग के विरुद्ध निरपेक्ष
विराध प्रकट कर सकते थे। उन्होने मुझसे इस बात की कई बार शिकायत
की थी कि एक्स्केवेटरो को इस तथ्य की परवाह किये बिना यहा जगह
जगह ले जाया जाता है कि इसस मशीनरी खराब हो जाती है।
अभाग्यवश, म इस फम का प्रतिनिधि नही हू और मिस्टर ऊर्तावायेव की
योजनाओ को क्रियान्वित होन स रोकने का अधिकार मरे पास नही है।'

समझा ठीक है, हम कल ही साथी ऊर्तावायेव को यहा बुला
भेजेंगे और मिलकर इस बात पर विचार करेंगे कि हल क्या हो। म और
साथी मोरोज़ोव दोनो आपके बहुत आभारी हैं। आप विश्वास कर सकते
हैं कि हम कल जो भी फैसला लगे उसका आधार आपके सुझाव ही होगे।
कीश ने उठकर मर्री से हाथ मिलाया।

जब मर्री चला गया, तो मोरोज़ोव उछलकर उठ खडा हुआ और
उत्तेजना के साथ युत म चहलकदमी करने लगा।

इसका मतलब क्या है? क्यो? ऐसी शमनाक बात हुई, तो कसे?
ब्यूसाइरस फम का प्रतिनिधि यहा ऊर्तावायेव की बगल म था, और
न सिफ यह कि उसन उसकी राय लेना ही ज़रूरी नही समझा, बल्कि
उसन जाहिरा तौर पर सारे एक्स्केवटरो का सत्यानाश करने के लिए उसके
जाने का फायदा भी उठाया है। जानते ह म तरह-तरह के निर्माण कार्यों
को देख चुका हू, मगर एसी बातो से सामना होन का मेरे लिए यह पहला
ही मौका है।

"ज़रा ठहरिये, इवान मिखाइलोविच, आखिर बात इतनी साधारण
नही है। उसने जो भी किया, अच्छे इरादे से ही किया।'

भाड म जाये उसके ऐसे इरादे।'

आप खुद ही देख लीजिये अगर एक्स्केवेटर साबुत आ गये होते,

तो हमारे पास दो हफ्त के भीतर छत्तीस एक्स्केवेटर होते और हम पूरे जोर स काम करना शुरू कर देते। सिद्धातत विचार ऐसा बुरा नही है।"

सिद्धातत तो एक्स्केवेटरा को यहा गुब्बारे से लाना भी कोई बुरा विचार नही होगा।'

सारी मुसीबत यह मनहूस लोयस मिट्टी ही है, जो सभी मशीनो को बरबाद कर देती है।"

हम ब्यूसाइरस फम को कसे मुह दिखा पायेंगे? अरे, यह तो एक पूरा तमाशा हो जायेगा। वे हर अखबार मे इस मामले का प्रचार करेंगे। बस इसी बात की जरूरत थी कि उनका प्रतिनिधि यहा से चला जाये और दो सप्ताह क भीतर हमने बाईस एक्स्केवेटरा का सत्यानाश करक रख दिया।

बेशक यह एक अप्रिय घटना है। हम सयाजन के काम को फौरन राकना होगा। आज ही साफ आदेश भेज दीजिये और ऊत्तानायव का यहा बुला भेजिये।

कमाल की बात है। यह सीधे सीधे इस इराद स किया गया है कि मनजमट क आगे एक हुई-हुआई बात भुगतने क लिए छाड दी जाय। आपने ऊर्तानायव की सूरत भी ग्खी है? नही। अपने नये आदेश जारी करने के पहले उसने नय मुख्य इजीनियर स सलाह करना भी अनावश्यक समझा। मन भी उस कभी नही दखा है। यहा आत समय वह गस्ते म ही मेरे सामन स निकल गया हागा—घाट पर भी उससे मरी मुलाकात नही हुई थी। वह अच्छी तरह स जानना ह कि हम यहा आय हुए दा हफ्ते हा चुके हैं और उसन इस बात की पूछताछ करन की भी तकलीफ नही की कि काम की आम योजना म कुछ परिवतन तो नही किय गय ह। और उसन पूछताछ इसलिए नहा की कि अगर वह हमस मिलता, ता अपन इम प्रयाग क बारे म उस अवश्य बताना पडता और यह वह पहल स जानता था कि कोई भी इसकी अनुमति नहा दगा। वह यह सब अपन आप—बिना किसी अधिकार क—कर रहा है और इसक लिए उस पर मुकदमा चलाया जा सकता है।

लेकिन दखिय इवान मिखाइलाविच, उसा न आन क अन्य कारण भी ता हा सकते ह। लाग कहत ह कि ऊत्तानायव एक अच्छा इजीनियर है वह बड उपक्रमशाला उत्साहा और उद्यमा कायकर्ता है। जब तक चेरयाकाव और येरमिन यहा रहे हमशा कठिनाइया लत रहा उनम लगातार

लडता रहा। कुछ इजीनियरो का कहना है कि अगर ऊर्तावायेव के प्रस्तावो को स्वीकार करके नियान्वित कर दिया गया होता, तो निर्माण काय की हालत इतनी खराब न होती। चेत्वेयाकाव के विरुद्ध सघष म वह विजयी हुआ–चेत्वेर्याकाव को बरखास्त कर दिया गया। वह यहा अकेला ताजिक इजीनियर है। वह यहा लगभग इस निर्माण काय के शुरू होने क समय से ही काम कर रहा है। काई वजह नही थी कि केद्र स एक नया आदमी भेजने के बजाय उसे ही क्या न मुख्य इजीनियर नियुक्त कर दिया जाता। ऊर्तावायेव शक्की आदमी है। हर कोई मानता है कि उसे यहा सताया गया था और अपनी पहल को दिखान का मौका नही दिया गया था। वह मेरी नियुक्ति को अपने प्रति अयाय समझ सकता है और इसमे अचरज की काई बात नही है कि यहा आने और नये मैनेजमेंट का सलामी देने के बजाय उसने यहा स दूर रहना ही पसद किया हो।'

"क्षमा कीजिय, मगर ऊतावायेव कम्युनिस्ट है, और यहा की परिस्थितिया को देखते हुए काफी पुराना कम्युनिस्ट भी है।'

निस्सदेह म इस बात को समझता हू, मगर पार्टी सदस्यता के लिहाज के बावजूद बुरा मान लेना मानव स्वभाव ही है। यही कारण था कि मन उस नही बुलवाया था। मैंने साचा था कि उस सारी बात पर विचार करने का अवसर द देना चाहिए–फिर वह अपनी मरजी स ही आ जायगा और हमारी आपस मे अच्छी तरह से निभ जायगी।'

'आपकी यह तक प्रणाली किसी काम की नही। और उसे फौरन न बुलवाकर आपने गलती की है। आपको इन भावनाओ से छुटकारा पाना होगा! अगर ऊर्तावायव के बुरा मानने के बारे मे आपका खयाल सही है, तब तो बात और भी बुरी है। इन बाता को अनदेखा करना ठीक नही है। हम ऊर्तावायेव से पार्टी समिति मे जवाब तलब करेंगे और आपका उससे कहना हागा कि उसे आपके आदेशो का निर्विवाद रूप से पालन करना होगा। यहा दो मुख्य इजीनियर नही है–मुख्य इजीनियर सिफ एक है। उपक्रम अगर एक यक्ति प्रबध का उल्लघन नही करता, तो बहुत अच्छी बात है, किंतु अगर वह महत्त्वाकाक्षा पर आधारित है, तो उसस सिफ नुकसान ही हो सकता है। और यह बात कि आपने ऊर्तावायेव का फौरन ही नही बुलाया, आपको परोक्ष रूप से इसका जिम्मेदार बना देती है। इसका कल ही अत करना होगा। म तुरत इस आशय का आदेश लिखता हू कि एक्स्केवटरो का

तो हमारे पास दो हफ्ते के भीतर छत्तीस एक्स्कवेटर होते और हम पूरे ज़ोर से काम करना शुरू कर देते। सिद्धान्ततः विचार ऐसा बुरा नहीं है।"

'सिद्धान्ततः तो एक्स्कवेटरों का यहां गुज़ार से लाना भी कोई बुरा विचार नहीं होगा।"

सारी मुसीबत यह मनहूस लोयम मिट्टी ही है, जो सभी मशीनों को बरबाद कर देती है।'

हम ब्यूसाइरस फर्म को क्या मुह दिखा पायेंगे? अरे, यह तो एक पूरा तमाशा हो जायेगा। वे हर अखबार में इस मामले का प्रचार करेंगे। बस इसी बात की जरूरत थी कि उनका प्रतिनिधि यहां से चला जाये और दो सप्ताह के भीतर हमने बाईस एक्स्कवेटरों का सत्यानाश करके रख दिया।'

बेशक यह एक अप्रिय घटना है। हम सयोजन के काम को फौरन रोकना होगा। आज ही साफ आदेश भेज दीजिये और ऊर्तावायेव को यहां बुला भेजिये।

कमाल की बात है। यह सीधे-सीधे इस इरादे से किया गया है कि मनेजमेंट के आगे एक हुई-हुआई बात भुगतने के लिए छोड़ दी जाय। आपने ऊर्तावायेव की सूरत भी देखी है? नहीं। अपने नये आदेश जारी करने के पहले उसने नये मुख्य इजीनियर से सलाह करना भी अनावश्यक समझा। मैंने भी उसे कभी नहीं देखा है। यहां आते समय वह रास्ते में ही मेरे सामने से निकल गया होगा—घाट पर भी उससे मेरी मुलाकात नहीं हुई थी। वह अच्छी तरह से जानता है कि हम यहां आये हुए दो हफ्ते हो चुके हैं और उसने इस बात की पूछताछ करने की भी तकलीफ नहीं की कि काम की आम योजना में कुछ परिवर्तन तो नहीं किये गये हैं। और उसने पूछताछ इसलिए नहीं की कि अगर वह हमसे मिलता, तो अपने इस प्रयोग के बारे में उसे अवश्य बताना पड़ता और यह वह पहले से जानता था कि कोई भी इसकी अनुमति नहीं देगा। वह यह सब अपने आप—बिना किसी अधिकार के—कर रहा है और इसके लिए उस पर मुकद्दमा चलाया जा सकता है।"

लेकिन देखिये, इवान मिखाइलोविच उसके न आने के अन्य कारण भी तो हो सकते हैं। लोग कहते हैं कि ऊर्तावायेव एक अच्छा इजीनियर है वह बड़े उपक्रमवाला, उत्साही और उद्यमी कार्यकर्ता है। जब तक चेल्वर्याकोव और येरमिन यहां रहे वह सही रवैया लेते हुए उनसे लगातार

लडता रहा। कुछ इजीनियरो का कहना है कि अगर ऊर्तावायव के प्रस्तावो का स्वीकार करके क्रियान्वित कर दिया गया होता, तो निर्माण काय की हालत इतनी खराब न होती। चेर्त्वेर्याकोव के विरुद्ध सघप म वह विजयी हुआ–चेर्त्वेयाकाव को बरखास्त कर दिया गया। वह यहा अकेला ताजिक इजीनियर हे। वह यहा लगभग इस निर्माण काय के शुरू होने के समय से ही काम कर रहा है। कोई वजह नही थी कि केंद्र से एक नया आदमी भेजने के बजाय उसे ही क्या न मुख्य इजीनियर नियुक्त कर दिया जाता। ऊर्तावायव शक्की आदमी है। हर कोई मानता हे कि उसे यहा सताया गया था और अपनी पहल को दिखाने का मौका नही दिया गया था। वह मेरी नियुक्ति का अपने प्रति अन्याय समझ सकता है और इसमे अचरज की कोई बात नही है कि यहा आने और नये मैनेजमट को सलामी देने के बजाय उसने यहा से दूर रहना ही पसद किया हो।"

'क्षमा कीजिय, मगर ऊर्तावायव कम्युनिस्ट है और यहा की परिस्थितियो को देखते हुए काफी पुराना कम्युनिस्ट भी है।'

निस्सदेह म इस बात को समझता हू मगर पार्टी सदस्यता के लिहाज के बावजूद बुरा मान लेना मानव स्वभाव ही है। यही कारण था कि मैने उसे नही बुलवाया था। मैने सोचा था कि उसे सारी बात पर विचार करने का अवसर दे देना चाहिए–फिर वह अपनी मरजी से ही आ जायेगा और हमारी आपस म अच्छी तरह से निभ जायगी।"

"आपकी यह तक प्रणाली किसी काम की नही। और उसे फौरन न बुलवाकर आपने गलती की है। आपको इन भावनाओ से छुटकारा पाना होगा! अगर ऊर्तावायेव के बुरा मानने के बारे मे आपका खयाल सही है, तब तो बात और भी बुरी है। इन बातो को अनदेखा करना ठीक नही है। हम ऊर्तावायव से पार्टी समिति मे जवाब-तलाब करगे और आपको उससे कहना होगा कि उसे आपके आदेशो का निर्विवाद रूप से पालन करना होगा। यहा दो मुख्य इजीनियर नही ह–मुख्य इजीनियर सिर्फ एक है। उपक्रम अगर एक व्यक्ति प्रबध का उल्लघन नही करता, तो बहुत अच्छी बात है, किंतु अगर वह महत्त्वाकाक्षा पर आधारित है, तो उससे सिर्फ नुकसान ही हो सकता है। और यह बात कि आपने ऊर्तावायव को फौरन ही नही बुलाया, आपको परोक्ष रूप से इसका जिम्मेदार बना देती है। इसको ठीक ही करना होगा। म तुरत इस आशय का आदेश निकालता हू कि एक्स्कवेटरो को

सयाजन अविलव बद कर दिया जाय और ऊर्नावायव का यहा बुलाया जाये। हम दाना ही इस आदश पर हस्ताक्षर करगे।"

रेगिस्तान मे दौड-धूप

दो दिन माराज़ाव न ऊर्नावायव क आन का इतजार किया। तासरे दिन सुबह एक ट्रक घाट स आया। ऊर्तावायव इस बार भी नही आया था। उसन इस आशय का पत्र तक नही भेजा था कि वह किस कारण नही आ पा रहा है। मारोजाव न कार मगवाई। दस मिनट बाद वह उसमे वठा मैदान म घाट का दिशा म जा रहा था।

उसका ध्यान न जराना की तरफ गया, न आजकल अपना ग्रीष्मावकाश हान क कारण रास्ते भर आजादी क साथ चरत ऊटा का तरफ, जो सारी सडक पर जहा-तहा मरम्मत क लिय लाय गय ट्रका का तरह लेटे हुए थे। न उसका ध्यान सडक क किनारे उन मर हुए जानवरा की तरह जिन्हाने सुदूर नदी तक घिसट घिसटकर पहुच पान क पहले ही प्यास के मारे दम तोड दिया था पडे टूटे हुए ट्रक्टरा की तरफ हा गया। चारा तरफ रेगिस्तान था, जिसम जहा-तहा कटीली झाडिया उगी हुइ थी।

मारोज़ाव का नाराज़ीभरा चितन तब टूटा जब कार अचानक स्तेपा मे बसी एक छोटी सी बस्ती मे जा घुसी, जिसम कुछ बारके और बरामदेदार सफेद मकान थे। सारी बस्ती मे पड लगे हुए थ। बिलकुल मरभूमि के बीच मरीचिका की तरह। मोराज़ोव न ड्राइवर से गाडी रोकन के लिए कहा, कार स उतरा और सडक के किनारे एक पेड की पत्तिया का हाथ लगाकर दखा। भ्राति नही थी—पत्तिया सचमुच का थी। यह पोपलर का छोटा सा पड था जो पिछले साल से ज्यादा पहल का लगा हुआ नही हो सकता था। उसकी पर्णावली की सुकुमार हरितिमा इसकी साक्षी थी।

यह कोई मरीचिका नही थी। यह निर्माण परियाजना के दूसरे सैक्शन पर काम करनेवालो की बस्ती थी। मारोजोव ने इस जगह को पहली बार ही दखा था। आत समय वह घाट मे रात म आया था, जब वह गाडी की बत्तिया की निकल चढी कची स उसके सामने अधेरे मे से सफाई से कटी सडक क अलावा और कुछ नही देख पाया था।

उसने ड्राइवर से गाडी को बस्ती के बीच म से ले चलने का कहा।

उमने देखा कि वहा जमीन का एक आयताकार टुकडा बाड से घिरा हुआ है–प्रत्यक्षत यह भावी उद्यान था। यहा हरियाली की चौडी और बराबर पट्टिया थी। खुली जगह के बीच मे पूरे न बने बरामदे जैसे सायबान के नीचे एक खुला मच था। मोरोज़ोव न गाडी रुकवाई और किसी से सैक्शन के प्रमुख को बुलाकर लाने के लिए कहा।

एक कुत्ते को साथ लिये सफेद कमीज पहने एक ठिगना आदमी आया।

क्या आप ही साथी रियूमिन ह ? '

जी हा, मै ही हू। '

"मेरा नाम मोरोज़ोव है। बताइये तो, आपन कौनसा जादू करके यहा पेड लगा लिये और कैसे व बडे हो गये? आप पानी कहा स लाये?"

यहा से कोई सात किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी सी अरीक है–पुरानी सिचाई प्रणाली की एक शाखा। मने अपनी अरीक का उसके साथ जोड दिया और एक छोटा-सा पपिग स्टेशन बना दिया। वही से पानी लेकर पडा को दे देते है। '

'लेकिन पानी आपकी अरीक म कैसे आया? इस मिट्टी पर सात किलोमीटर कोई मज़ाक थाडे ही है।"

बेशक, काम तो बहुत मुश्किल था। पहले तो पानी जमीन म ही समा जाया करता था। लेकिन हम लगे ही रहे और अब, जैमा कि आप देख रहे है, हमे काफी पानी मिल जाता है। '

' क्या आप यहा बहुत समय से है?'

"एक साल से। निर्माण काय के शुरू होने के समय से।

"आपन इस जगह को बढिया बना लिया है। पहले सैक्शन के मुकाबले यह कही अच्छी है। '

'वहा मैनजमेट कई बार बदल चुका है। एक मनेजर एक चीज़ शुरू करता है, तो दूसरा–दूसरी। लेकिन मै यहा एकदम शुरू स ही हू। हमारे पास मामान होता, तो साल भर मे हम कही ज्यादा बना मकत थे।

"आप बनात किस चीज स ह? सरकडा स?'

सरकडे और मिट्टी। लकडी बहुत कम ह। यहा हम पष्ठभूमि मे है। सारी निर्माण सामग्री मुख्य सैक्शन को ही भेजी जाती है। बेशक, वहा काम भी ज्यादा और अधिक कठिन ह–चट्टानें आर कक्कर जब कि यहा की मिट्टी लोयम है। लेकिन फिर भी, एक मान म हमे कुछ मन्द

दना लाभकर ही होगा। लगिय त मुख्य मैंशन की सभी इमारत अस्थायी ही हैं, लेकिन इस जगह भावी राजकीय फाम की एक बस्ती बनान का याजना बनाई जा रही है। हमारी बस्ती इस बात का ध्यान म रखत हुए ही बन रही है। लेकिन मैनजमट स एक छस्टा भर लकडी वसूल कर पाना भी विकट काम है। उसक लिए हर बार जाकर घुटन टेककर भीख मागनी पडती है।

"काम की क्या हालत है?

बडी मशीना क बिना जितना भी काम किया जा सकता है, वह सब वक्त पर खत्म कर दिया जायेगा—बल्कि शायद समय क पहले ही। जहा तक मशीना का सवाल है, उसम हम घाटे म ही रह ह। ट्रैक्टरा के मामले म हम बेहद बदकिस्मत हैं—लगभग सभी की मरम्मत हो रही है और फालतू पुरजा का अभाव है। मैकनिकल डिपाटमट न समय रहते इस तरफ ध्यान नही दिया था। काम का हाथ स ही या घोडा की मदद से करना हागा। घाडे ही त्राता है। लकिन चारा जुटान म हम बहुत मुश्किल पडती है। पिछले साल ता हमारे घाडे भूखे मरे—राजकीय फाम ने हम सूखी घास दी ही नही। इस वसत म हमन तय कर लिया कि राजकीय फाम पर निभर नही करगे और घास हमन अपन आप ही काट ली। यहा घास काफी अच्छी पैंदा होती है बस, उसे वसत क शुरू मे ही—धूप म उसके जल जान के पहल ही—काट लेना चाहिए। हमन काइ तीस गाज घास काटी थी। यह अगले साल तक के लिए काफी हागी बशर्ते कि व उसे जला न दें।'

क्या मतलब—वे जला न दें? कौन?

"स्तेपी मे कुछ किगिज छाकरे या कोई और लाग आग लगा ही देते ह। इस साल दो बार तो आग लग भी चुकी है। हर किसी का अपना अपना काम छोडकर घास को बचान के लिए भागना पडा। हमन खाइया खोदकर उसे किसी तरह बचा ही लिया। जब आप आगे जायेंगे तो देखेंगे कि सभी टीले काले पडे हुए हैं। पिछले कुछ सप्ताहा स स्थिति कुछ शात है मगर क्या भरोसा है—किसी भी रात को आग लग सकती है और ऐसी गरमी मे ता एक चिनगारी भी काफी हाती ह। हम रात को बारी बारी से पहरा देते हैं। हमन हथियारबद घुडसवारा की गश्त का भी प्रबध किया है, लेकिन चौकसी के लिए जगह इतनी बडी ह कि निश्चिन्त नही हुआ जा सकता।"

"हा, आपके यहा तो दक्षिणी अमरीकी घास मैदानो जैसी हालत ही है। बासमची भी है क्या?"

'पिछले साल थे। उन्होने हमारे कुछ टेकनिशियना को मार डाला था। मगर इस साल हमे उनकी कोई खबर सुनने को नही मिली है। आबादी से उन्हे कोई मदद नही मिलती। लोग दखते है कि काम चल रहा है—उन्हे आशा है कि जल्दी ही पानी मिलने लग जायेगा। यह सब उनके हित की ही बात है। उन्होने आग बुझाने मे हमारी मदद की और पहरेदारी मे भी हाथ बटाते है। कुल मिलाकर हालत सुधर रही है।"

ता यह कहिये कि आपके सैक्शन म काम की हालत कोई खराब नही है?

हमारे कारण गाडी नही रुकेगी। हमारे यहा सारी मुश्किल बस एक ही जगह पर है जहा दा एक्स्केवेटरो के बिना काम नही चल सकता। सुना है कि घाट से कुछ एक्स्केवेटर खुद ही चलाकर इधर लाये जा रहे है—क्या आप उनमे से दो एक हमे नही दे सकते?'

एक्स्केवेटर अभी काफी समय तक नही मिल पायेगे। ट्रैक्टर जिन एक्स्केवेटरा को लेकर आ रहे है वे मुख्य सैक्शन को मिलेगे। इसलिए जल्दी एक्स्केवेटर पाने की आशा मत कीजिये। ठीक है, तो, नमस्ते!"

'हमारे सैक्शन को नही देखियेगा?"

"नही, अभी नही। मुझे जरूरी काम है। अगली बार मैं आपके पास विशेषकर आऊगा और दो एक दिन ठहरूगा। आप मुझे रात को तो टिका लेगे, न?'

'बडी खुशी के साथ।"

कार आगे चल पडी। एक बार फिर सडक के दोनो तरफ स्तेपी दगे हुए चितकबरे घोडे की तरह उनकी आखो के आगे नाचने लगी।

चाल की तेजी के कारण सामने की स्तेपी एक नीरस मटियाली धोवन मे परिणत हो गयी थी। मोराजोव का दूर स धूल का एक विराट स्तभ मैदान मे धीरे धीरे आगे बढता दिखाई दिया। धूप को रोकने के लिए आखो पर हाथ की आड करके उसने उसकी तरफ ज्यादा बारीकी के साथ देखा। धूल के बादल से एक विशाल छड सी निकली हुई थी। यह एक एक्स्केवेटर का हमाला था। मोरोज़ोव ने ड्राइवर को कार रोकने को कहा और उसमे खडा होकर उस महादानव को धीरे धीरे रेगिस्तान मे रेगते

आते देखने लगा। उसके होठों से गालियों की एक अस्पष्ट बाढ फूट पडी।

'खडे किसलिए हो? चलो आगे!" वह अचानक ड्राइवर पर बरस पडा और तुरत ही अपने आवेश पर लज्जा का अनुभव करने लगा। 'क्या घाट अभी दूर है?' उसने अपने स्वर को यथासभव मित्रतापूर्ण बनाने का यत्न करते हुए क्षण भर की खामोशी के बाद पूछा।

यही कोई नब्बे किलोमीटर।'

'तो जरा दाबो एक्सेलेरेटर को—हम बहुत धीरे जा रहे है।'

ड्राइवर ने कार को ऐसा झटका दिया, मानो वह कोई जिगडैल घोडा हो और वह स्तेपी को अधाधुध चाल से पार करने लगी।

कोई सात किलोमीटर बाद मोरोजोव को दूसरा एक्स्केवेटर नजर आया, मगर इस बार उसने कार को नही रुकवाया। फिर उसने तीसरा एक्स्केवेटर देखा और फिर चौथा। घाट पहुचने के पहले उसको छ एक्स्केवेटर मिले।

कार ने हवा के झोके की तरह घाट म प्रवेश किया। ड्राइवर ने अचानक ही ब्रेक लगाया और मोरोजोव उसके खुले दरवाजे से कूदकर क्या उडता हुआ तटबध के चरमराते कक्रो पर आ खडा हुआ।

'साथी ऊर्ताबायेव कहा है?

लोगो ने बारको की तरफ इशारा कर दिया। मोरोजोव बारको की तरफ गया और वहा मैदान के छोर पर उसने दो अधसयोजित एक्स्केवेटर देखे। सयोजन-कार्य का सफेद सूट पहने एक ताजिक निदेशन कर रहा था। मोरोजोव सीधा उसी के पास गया।

क्या आप ही साथी ऊर्ताबायेव है?

'हा।"

'आपको मेरा पत्र मिला?

और आप कौन है?" ऊर्ताबायेव ने मोरोजोव का सिर से पैर तक मुआयना किया।

"मै मोरोजोव हू।"

"नये प्रमुख?" उसका लहजा उग्र और उपहासपूर्ण था।

"आपको मेरा पत्र मिला?" मोरोजोव न यह अनुभव करते हुए कि उसका गुस्सा उस पर हावी होता जा रहा है और अपने आत्म नियत्रण को न गवाने का प्रयास करते हुए दुहराया।

' मिला था।

"तो ?"

"चलिये, यहा मे चलते हैं। वही बैठकर बाते करते हैं   भाइयो, मेरे बिना ही काम पूरा कर लेना," ऊर्तावायेव ने मजदूरो से चिल्लाकर कहा, "मैं बाद मे आकर देख लूगा।"

इधर-उधर देखे बिना वह सीधा बारका की तरफ चल दिया। मोरोज़ोव ने उसे अधबीच मे ही पकड लिया।

"सयोजन का काम फौरन बद कीजिये और जो एक्स्केवेटर सयोजित किये जा चुके हैं, उन्हें खुलवा दीजिये।"

"जल्दी मत कीजिये," ऊर्तावायेव ने अवज्ञापूर्ण स्वर मे कहा, "आइये, इस बारे मे बाते कर लेते हैं। आज मुझे आठवे ब्यूसाइरस का सयोजन खत्म कर देना चाहिए और मैं आज ही रात को मुख्य सैक्शन आकर आपसे मिलने की सोच रहा था। क्या आप यहा विशेषकर एक्स्केवेटरो के लिए ही आये है?"

ऊर्तावायेव की मुद्रा और जिस तरह उसने "विशेषकर" शब्द पर ज़ोर दिया, उसमे उपहास और तिरस्कार का पुट था।

"हा। और ऐसी कोई चीज नही है, जिसके बारे मे हमे कोई खास बात करनी हो। आपको निर्माण प्रमुख और मुख्य इजीनियर द्वारा हस्ताक्षरित एक औपचारिक आदेश मिला कि आप सयोजन के काम को तुरत बद कर दें और मुख्य सैक्शन पहुच जायें। आपने न केवल इस आदेश की पूर्ति करने की परवाह ही नही की है, बल्कि एक्स्केवेटरो का सयोजन और उन्हे चलाते हुए रवाना करना भी जारी रख रहे हैं। आप जानते ह कि पार्टी की भाषा मे इसे क्या कहा जाता है?"

"मैं यह जरूर जानता हू कि निर्माण-प्रमुख और मुख्य इजीनियर जब किसी नये काम पर आते हैं, तो उनके लिए यही अच्छा रहता है कि वे अधाधुध आदेश जारी करना न शुरू कर दें, बल्कि पहले काम की हालत से परिचित हो ले।"

वे घाट के मैनेजर के तख्तो से बने छोटे से कमरे मे खडे थे। ऊर्तावायेव ने दरवाजे का ताला बद कर दिया और चाबी को मेज पर फेंक दिया।

"तो आप यही सोच रहे ह? क्या आप यह समझते हैं कि आपको अपनी मरजी के मुताबिक सारे एक्स्केवेटरा को तोडने दिया जायेगा? आप गलती पर है। हम जानते हैं कि अपने को बहुत समझनेवाले नौजवान

इजीनियरा की खरदिमागी से कैसे निपटा जाता है। आदेश की पूर्ति न करने के लिए आपको उप मुख्य इजीनियर के पद से अस्थाई रूप से कार्यवचित किया जाता है और आप सारा चार्ज साथी कोश को दे देंगे।"

आप जरूरत से ज्यादा जल्दबाजीभरा निर्णय ले रहे हैं और अपने कधों पर एक बहुत गभीर दायित्व डाल रहे हैं। एक्स्केवेटर जब तक काम करना शुरू नही कर देते तब तक उनको हालने के लिए ब्यूमाइरस फर्म उत्तरदायी है। इस मामले म मै उसके प्रतिनिधि, इजीनियर बाकर द्वारा दी गई फर्म की सहमति से काम कर रहा हू। अगर एक्स्केवेटर टूट जाते हैं तो इसकी जिम्मेदारी ब्यूसाइरस फर्म पर होगी।

'यह झूठ है! मै पहले से ही जानता था कि फर्म जाने पर आप सारा दोष बाकर के मत्थे मड देंगे क्योकि वह यहा से चला गया है और आप यह समझते है कि हम आपकी बात की सचाई की जाच नही कर सकते। खैर, आप गलती पर हैं। जाने के पहले बाकर ने अपना काम एक दूसरे अमरीकी इजीनियर के सुपुर्द कर दिया था और उस आदेश ने दिये थे और वह आपके मूर्खतापूर्ण प्रयोग का एकदम विरोध कर रहा है और इस बात की धमकी दे रहा है कि अगर एक्स्केवेटर तुरत खोल नही दिये जाते, तो वह कोई भी जिम्मेदारी नही लेगा।

रुकिये जरा इसमे जरूर कोई गलतफहमी होगी।'

कोई गलतफहमी नही है, प्रिय साथी ऊर्तावायव यह बस इमानदार लोगो मे सर्वत्र स्वीकृत इस नियम की ही एक मिसाल है कि आपने पकाया है, तो आप खाइये, उसका दोष औरो पर थोपने की कोशिश मत कीजिये।

'लगता है कि आपको शायद यह खयाल है कि निर्माण प्रमुख के पद ने आपको अपने अधीनस्थ पार्टी सदस्यो के साथ गुस्ताखी से पेश आने का अधिकार दे दिया है। मै आपके अनुचित सकेता को नही समझता और समझने से इनकार करता हू। आखिर यह सारा मामला बहुत आसानी से साफ किया जा सकता है। बाकर कहा चला गया है?'

'अमरीका।

"यह कैसे हो सकता है? अभी तो एक्स्केवेटरो का सयोजन भी खत्म नही हुआ।"

अनजान होने का ढोग न कीजिये, साथी ऊर्तावायव। इजीनियर बाकर को गये एक हफ्ता हो गया। आपका हर मजदूर इसके बारे मे

जानता है और निर्माणस्थली पर हर कोई इस बात का उसके जान के एक हफ्ते पहले से जानता था। आपकी चालाकी बेकार है और यह आपके लिए कोई तारीफ की बात नही है। आप ब्यूसाइरस फम और निमाण काय, दोनो के प्रसग मे मनमानी करने के दोषी है और इसकी आपको जवाबदेही करनी होगी। किसी और की पीठ पीछे छिपने की कोशिश करने का कोई फायदा नही। आपके करने के लिए बस यही बात रहती है कि आप एक्स्केवेटरा के तुरत खोले जाने का आदेश जारी कर दें। जिन एक्स्केवेटरा को यहा से रवाना किया जा चुका है, उनके साथ क्या किया जाये, यह हम कल तय करगे।"

'लेकिन आप क्या इस बात का नही समझत कि यही अकेला तरीका है जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकत है कि एक्स्केवेटर निर्माणस्थली पर सचमुच जल्दी से जल्दी पहुच जायें '

' यह हुई बात! आपका इसी से कहना शुरू करना चाहिए था। आपका तरीका बस यह सुनिश्चित करेगा कि मशीने टूट जाये और ब्यूसाइरस फम से हमारा झगडा हो। वाकर न पहले ही आपकी योजनाश्रा का विरोध किया था। जाइये और मशीनो के खोले जान का हुक्म दीजिये। आप स्वय मेरे साथ चलेगे।'

'लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि आप गलती पर है '

"हो सकता है। ऐसा हुआ, तो अपनी गलतियो की मैं खुद जवाबदेही करूगा। आप आदेश जारी करेंगे या नही?'

"नही।"

"अहा, तो यह बात है!"

'आपने अभी अभी मुझे कायमुक्त किया है। इस क्षण के बाद मेरे आदश बध नही है। आप स्वय ही आदेश जारी कीजिय।"

यह बात कवल तिरस्कारपूण ही नही चुनौती जैसा भी प्रतीत हा रही थी। मोरोजोव न जिसने प्रत्यक्ष प्रतिरोध की अपक्षा नही की थी, तुरत उत्तर नही दिया। ताजिक की आखे जिद्द और विद्वेष स जल रही थीं।

'ता ऐसे हैं स्थानीय कमचारी!' माराजोव न सोचा।

उसने मेज पर से चाबी उठाई और दरवाजा खोला।

"ठीक है इस आदश का खुद म जारी करूगा। और आपके साथ हम पार्टी समिति म बात करगे।"

मोरोजोव उसी दिन वापस रवाना नही हो सका—कार मे कोई खराबी आ गई थी जिसकी मरम्मत जरूरी थी। अगले दिन सुबह, जब मोरोजोव कार मे बैठ चुका था खबर मिली कि घाट से पद्रह किलोमीटर दूर एक बजरा डूब गया है जो दो एक्स्केवेटरो के पुरजे लेकर आ रहा था। सारे मजदूरो को तुरत वहा भेजना पडा ताकि व पुरजो को पानी के प्रवाह के साथ बह जाने या चट्टानो मे टकराकर क्षतिग्रस्त होने के पहले नदी के पेंदे से निकाल सके।

पुरजो को निकालने के काम का मोरोजोव ने स्वय निदेशन किया। देर गये रात तक कपडे उतारकर आदमी मशालो और कार की बत्तिया के उजाले म तूफानी पानी से लडते और टक्कर लेते पुरजा पुरजा करके मूल्यवान चीजो को निकालने मे लगे रहे। पौ फटत फटते अधिकाश भाग बचाया जा चुका था। बस एक बॉइलर और आधा कैटरपिलर ही नही मिल पाये। उन्हे बहाव के साथ साथ और नीचे जाकर ढूढना पडा।

पसीने से तर और थकान से निढाल मोरोजोव मिनट भर को कार में लेट गया। इतना कीमती समय नष्ट करने के लिए उसे अपने ही ऊपर गुस्सा आ रहा था। क्या यहा दो एक्स्केवेटरो को बचाने के लिए इतना समय लगाना उचित था जब वहा मैदान मे छ और एक्स्केवेटर नष्ट हो रहे थे? उसे एक मिनट भी नष्ट नही करना चाहिए था। वह कार से उतरा, अपने पर हावी होती भारी निद्रालुता को भगाने के लिए सिर को ठडे पानी म डुबा दिया और ऊर्नावायेव को ढूढ निकालने के बाद ड्राइवर को कूच करने का आदेश दिया।

जब वे घाट के सामने से निकले तब तक सूरज काफी ऊपर चढ चुका था। मोरोजोव चुप रहा—वह खिन्न मन था और ठिठुर रहा था। ऊर्नावायेव भी चुप ही रहा। कार सडक की तहदार धूल को तेजी से पार करती चली जा रही थी और धूल उन के रोयो की तरह दोनो तरफ उडती जा रही थी। ऊर्नावायेव ने जब सामने काफी दूर एक एक्स्केवेटर को आगे जाते देखा तो उसके चेहरे पर चमक आ गई। सीट पर घूमकर वह देर तक उस पर आखें जमाये रहा। मोरोजोव एक कोने म कमर झुकाये आखें बद किये बैठा था। रेगिस्तान की भूरी पीठ पर कोडे की तरह पडती सीधी सडक का जसे कोई अन्त ही नही था। आसमान से रिसकर आती चिपचिपी गरमी आखो को बद किये दे रही थी, जिससे उन्हे मुश्किल से ही खोला जा सकता था। मोरोजोव को नीद आ गई।

उसकी आख एक कर्णभेदी शोर से खुली। कोई दो सौ कदम की दूरी पर एक के पीछे एक दो एक्स्केवेटर स्तेपी पर रगते चले जा रहे थ। उनके आगे किसी अप्रत्याशित मचसज्जा का स्मरण दिलाती रग बिरगे खाके की तरह दूसरे सैक्शन की बस्ती फैली हुई थी।

लाल झडे और रूमाल लिये मजदूरो की एक घनी भीड एक्स्केवेटरो का स्वागत करने के लिए बस्ती से उमडती निकली चली आ रही थी। भीड ने हवा मे अपनी टोपिया उछालते हुए उल्लासपूर्ण चीत्कारो स उनका स्वागत किया।

मोरोजोव ने, जो अभी अधजगा ही था, इस सबको एक ही नजर मे देखकर भौंह चढा ली और आख के कोने से ऊर्ताबायेव पर नागजी-भरी नजर डाली। ऊर्ताबायेव प्रत्यक्षत मोरोजोव की उपस्थिति के बारे मे बिलकुल भूल चुका था। सीट पर खडा भीड का अभिनदन करते हुए उसने अपनी टोपी को हवा म हिलाया और ताजिक भाषा म चिल्लाते हुए कुछ कहा।

भीड ने "हुर्रा" का जोरदार नारा लगाकर जवाब दिया।

यह मोरोजोव की बर्दाश्त के बाहर था।

'आप पूरी तरह से होश खो बैठे ह, साथी ऊर्ताबायेव!'

ऊर्ताबायेव ने उसकी तरफ न समझनेवाली निगाह से देखा।

"लेकिन मने आपसे कहा था '

' क्या कहा था?"

व पहुच जायेंगे! मैंने आपसे कहा था कि वे पहुच जायेंगे!"

"और हफ्ते भर के भीतर वे सिर्फ कबाडखाने के लायक रह जायेंगे!'

'यह हम देख लेंगे,' ऊर्ताबायेव का चेहरा स्याह हो गया।

कार भीड के बराबर आ गई। पहली कतार मे मोरोजोव की निगाह झुत्ता लिये नाटे कद के एक आदमी पर पडी और उसने ड्राइवर के कधे को छुआ। कार रुक गई। रियूमिन पास आ गया।

'यह कसा मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन है?' उसकी तरफ झुकते हुए मोरोजोव फूट पडा, "दुर्लभ विदेशी मुद्रा को बहाया जा रहा है बाहर से मगाई मशीनो को नष्ट किया जा रहा है और आप खुशी के मारे पागल हुए जा रहे ह! आप बाह फैलाते हुए उनका स्वागत कर रहे हैं! मजदूरो को अपनी जगह पर जाकर काम जारी रखने दीजिये—यह कोई उत्सव नही है। जहा तक

एक्स्केवेटरा का सवाल है उन्ह आप अपन मवशन पर ही ग्ख मकत ह, जिससे व और आग न जान पाय। आप दो एक्स्कवटर चाहते थे—इन्ह ही ले लीजिये।

रियूमिन अवाक खडा कुछ भी न समझत हुए मोरोज़ोव की तरफ घूरे जा रहा था।

इसी बीच भीड न यह जानकर कि निर्माण प्रमुख कार म जा रहा है, उसे घर लिया और मोरोजोव का जारदार जय जयकार किया। अब ता बात असह्य हो गई। मोरोजोव न हाथ हिलाकर ड्राइवर को इशारा किया। ड्राइवर न कार का स्टार्ट किया और हान बजाया। मगर भीड न रास्ता नही दिया। हान की कणभदी चीखा क साथ कार न धीर धीर आगे सरकना शुरू किया और आखिर भीड स निकलकर फाटक से आगे की और पूरी चाल स दौडन लगी। मोरोजोव ने तिरछी नजर स उर्तावायेव की तरफ देखा। उर्तावायेव हस रहा था।

भीड अचरजभरी आखा स कार को देखती धीरे धीरे बिखर गई। रियूमिन और उसका कुत्ता सडक के बीच म खडे रहे। मिनट भर दोनो जाती हुई कार की तरफ देखत रहे—यहा तक कि वह धूल क बादल म आखो से ओझल हो गई। कुत्ता ही पहले मुडा और उसने अपने मालिक के हाथ को चाटा। रियूमिन ने उस कान के पीछे सहलाया।

"कुछ समझ म आया बेग? झुककर कुत्ते को थपथपाते हुए उसन कहा पता नही क्यो उन्होने हम झाड लगाई और फिर दो एक्स्केवेटर भी दे दिये। मैंने तीन दिन पहले मागे थे तो उसन साफ इनकार कर दिया। दिलचस्प बात है न? कोई बात नही हम एस नखरेवाले नही इसलिए एक्स्केवेटरा को ले लगे—व काम आयग। और हम बुरा भी नही मानेंगे है न? क्या कहत हो?

कुत्ते न दुम हिलाकर सहमति जताई।

बुखारा के अमीर का सहचर

मज पर रखी घडी दमे क रोगी की तरह घरघराती हुई चार बार खासा। सिनीत्सिन न उठकर अपना ड्रेसिंग गाउन पहना और बाहर चला गया। उसन मन म साचा कि अभी पार्टी समिति क कार्यालय म कोई भा

नही होगा और वह बिना बाधा के एक घटा अतिरिक्त काम कर डालेगा। वह स्नान करके कमरे म वापस आया और कपडे पहनने लगा।

ग्रीष्म प्रभात की ठडी हवा न थकान को पूरी तरह से मिटा दिया। चलते चलते वह मन ही मन सबसे जरूरी कामो के बारे म सोचन लगा, जिन्ह तुरत निपटाना था—एक्स्केवेटरो का मामला, अमरीकियो की हत्या का प्रयत्न, नहर-तल की खुदाई के काम म अवरोध, मैकेनिकल डिपाटमट का धाधला कारो का धाधना, हर सेक्शन म पार्टी इकाई के गठन क आधार पर पार्टी सगठन को पुनगठित करन का काम, दूसरे और तीसरे सैक्शनो की पार्टी इकाइयो का गठन, अखबार को पाच दिन मे कम मे कम दो बार निकालने का इतजाम करन का काम—कितन ही काम थे और हर काम दूसरे से ज्यादा महत्त्वपूर्ण और जरूरी था।

सिनीत्सिन पार्टी कार्यालय म धडाम स कुरसी म गिर गया और सिर को हाथो पर टिका दिया। उसे लग रहा था कि वह अच्छी तरह स काम नही कर पायगा। उसन आखें उठाइ, तो उसकी निगाह पीले रग के एक बडे लिफाफे पर पडी। लिफाफे पर टेढी मेढी अरबी लिपि म पता लिखा हुआ था "कम्युनिस्ट पार्टी की समिति को मिले"। सिनीत्सिन ने लिफाफे को खोला। उसके भीतर पेंसिल से लिखा एक बडा कागज था। दायें स बाये जाते अजीब अरबी अक्षर कभी ऊपर चढ जाते, तो कभी नीचे चले जाते। सफे के नाचे की तरफ कई अगूठो के निशान थे। पूरे कागज को दखकर यही लगता था कि जसे आशुलिपि की किसी पाठ्यपुस्तक का कोई जटिल अभ्यास हो।

उसने अपने को काबू म किया और अलग अलग अक्षरो को मुश्किल से एकसाथ जोडकर उनसे शब्द बनाते हुए पढ़ना शुरू किया

सेवा मे,

कम्युनिस्ट पार्टी की समिति

हम नीचे दस्तखत करनेवाले दहकान, गरीब किसान, खेत मजदूर और मजदूर भी कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार और चेका को भी खबर देते हैं कि उन्ह सोवियत सत्ता के दुश्मन और बुखारा के अमीर के और बासमचियो और अफगानिस्तान के पूजीपतियो के भी सहचर, सैयद ऊर्ताबायव साकिन चुबेक

को गिरफ्तार कर लेना और गोली स मार देना चाहिए, जा अब तक निर्माणस्थली पर इजीनियर की हैसियत स काम करता रहा है

सिनीत्सिन न माथ पर हाथ फेरा और कागज का आखा क और करीब खीच लिया।

और जिसक वड सबूत ह। तीन हफ्ते हुए जब मुख्य मुनीम और इजीनियरी डिपाटमट क प्रमुख अफगानिस्तान भागकर गय तो उनके साथ दा अफगान मजदूर भी भागकर गय थ जा उनक गाइड थे। इन अफगाना को ऊर्तावायव न ही काम पर रखा था और इसके अलावा अफगानिस्तान भागकर जाने के एक दिन पहले वे सयद ऊर्तावायेव से मिलन के लिए आये थ और जब व उसके पास से गये, तो उनके पास एक वडल था, जिसकी तसदीक इन दहकाना और मजदूरा स की जा सकती है—आलिम अस्मतुद्दीनोव ख्वाजा मूमिनोव याकूवजान अब्दुरसूलाव और अब्दुला इमाम वेरदी जा पहल सक्शन पर काम कर रहे थे और जिन्होंने सडक स गुजरत वक्त अफगाना का ऊर्तावायव के यहा से वडल लिये निकलते दखा है जिससे उन्हे वडा हैरानी हुई थी। हम सोवियत सरकार को इसकी इत्तला इसलिए द रहे हैं, क्योकि पिछल साल भी, वासमचियो के हमले के तीन दिन पहले, अफगानिस्तान स दो दहकान सयद ऊर्तावायव के पास इस बहाने आये थे कि वे अफगानिस्तान म सामूहिक फाम कायम करना चाहते हैं और तीन दिन बाद ही अफगानिस्तान से वासमचिया का हमला हुआ और कई दहकान स्वयसवक उसम मारे गये। आदीना तकीयव और हलमुराद इक्रामोव इसके गवाह ह।

और जब वासमचिया ने मैंयक किशलाक के पास घात बिठाई और स्वयसवका के दस्ते पर हमला किया जिसम दहकान सामूहिक किसान और पार्टी का उम्मीदवार सदस्य ईसा ख्वाजायारोव गाइड था और जिस दस्त का नायक ऊर्तावायव था, मिलिशियामैन इब्राहीम रहीमाव, हाकिम मीरकुलानाव जिला कार्यकारिणी समिति क प्रधान अब्दुरहीम कुरबानाव अभियोक्ता

खानजर खुदाईकुलोव, दहकान रजब समनदरोव और कई और लाग, जिनके नाम याद नही है, लडाइ म मार गय और दो रूसी टेक्निशियनो को वासमचियो ने ऊर्ताबायेव के हुक्म स गोली से मार दिया था और खुद ऊताबायेव को वासमची सरदार फैयाज के हुक्म से छोड दिया गया था और इज्जत के साथ वासमचियो के एक घोडे पर रवाना कर दिया गया था। लाल अक्तूबर सामूहिक फाम का उम्मीदवार पार्टी सदस्य ईसा ख्वाजायारोव इसकी गवाही दे सकता है, जिसन सोवियत सरकार को अपन अनपढ होने के कारण पहले इसकी इत्तला नही दी थी। हम इस बात की तसदीक करते है कि यहा लिखी हर बात सच है।

इसके बाद कई दजन अगूठा के निशान थ।

बाहर एक ट्रक इस तरह घनघना और कपकपा रहा था, मानो मक्खीमार कागज पर चिपकी अपने को छुटा पाने म असमथ मक्खी। नहर के तल म चट्टान को बारूद से उडाया जा रहा था। विस्फोटो की आवाज पड को गिराती कुल्हाडी की चोटो की तरह बधी और दबी हुई आ रही थी। बारको के बीच की खुली जगह मे हवा की लहरे गरमी म कपन कर रही थी। एक कार आकर खडा हो गई। कामारेको न ड्राइवर से इतजार करन के लिए कहा और मैदान का पार करके पार्टी समिति के कार्यालय मे प्रवश किया।

"अहा, तुम बिलकुल सही वक्त पर ही आये हो।" सिनीत्सिन ने हर्षपूवक कहा।

उसने और लोगो को कमरे से जान को कहा और दराज से अगूठा के निशानोवाला एक बडा कागज निकालकर कामारेको को दिखाते हुए कहा

"अच्छा, देखें, इसके बारे मे तुम क्या कहते हो।"

उसने एक एक वाक्य करके सारे बयान का अनुवाद कर सुनाया।

"सुनो, इसका एक कागज पर लफ्ज ब लफ्ज अनुवाद करके मुझे दे दो। फिर हम इसकी जाच कर लगे।

'क्यो, क्या यह ज्यादा ठीक नही रहगा कि म तुम्हे अगूठो के निशान लगी मूल प्रति ही दे दू?'

'अगूठा के निशान इकट्ठा करना मुश्किल नही है—वे हर किसीसे मिल सकते है। लेकिन क्या तुम इस ख्वाजायारोव को जानते हो?'

हा। इस नाम का एक उम्मीदवार पार्टी सदस्य नहर पर काम कर रहा है। अनपढ सामूहिक कृषक ह – किसी भी तरह की काई विशेषता उसने नही दिखाई है।'

' इस फैयाज वाड क बार म मुझे यहा क भूतपूव चेका प्रमुख पखाविच न भी बताया था। यह बिलकुल सही है कि उस वक्त कयक के पास हमारे एक पूरे दस्त का सफाया कर दिया गया था – एक ऊर्नावायव ही जिन्दा बच पाया था। खुद फैयाज न ही उसे जान दिया था। ऊनावायव का कहना ह कि उसन फैयाज को अपन हथियारा क साथ आत्मसमपण करन के लिए राजी कर लिया था। वह उसी दिन पखाविच के पास गया था। उसने उसे बताया था कि फैयाज स्वयसवको के आगे आत्मसमपण करने को तैयार नही ह और सिफ चेका प्रमुख के सामन ही हथियार डालेगा। ऐस मामले हमारे पास अक्सर आते रहे है। उन्हान तीन दिन बाद दागाना कैयक दर्रे म हथियार डालन का वादा किया था। दो दिन बाद ओस्तापोव की कमान म हमारे दस्त न हमला करके उनका सफाया कर दिया, इसलिए दर्रे मे मुलाकात की नौबत ही नही आई। फैयाज खुद अपने एक दो बासमचिया के साथ भाग निकला मगर हमारे लागा न पहाडा मे दूर तक उनका पीछा किया। इसके बाद फयाज का एक बासमची फरखार मे चेका प्रमुख के सामन उसका सिर बोरे म लकर हाजिर हुआ। इस आदमा का नाम बुआनदीक ख्वाजा गिल्दी था। वह अब मूमिनाबाद म रहता है। उसन कैयक के पास क छापे म बासमचिया की तरफ स अवश्य हिस्सा लिया हागा इसलिए वह हम जरूर कुछ बता सकगा। यह सब तुम्हारी जानकारी के लिए बता रहा हू।

' दिलचस्प बात है! मतलब यह कि बयान है तथ्या पर हा आधारित।

"दखा, अपनी तरफ स इस मामले की तुम उसी तरह जाच करो जिस तरह किसी भी पार्टी सदस्य के बार मे आनेवाले हर बयान की करत हो। अगूठा के निशाना पर ज्यादा भरोसा मत करा। व दजना का तादाद मे मिल सकते हैं। यह मालूम करा कि ख्वाजायारोव कैसा आदमी है। उसीन यह बयान दिलवाया हागा। जहा तक मेरा सवाल है म इसी मे लग जाता हू और गवाहो से पूछताछ शुरू कर देता हू। म बुआनदीक को तथा कुछ और लोगा का भी बुलवाऊगा।

मतलब यह कि तुम भी यही समझते हो कि यह सच हो सकता है?"

"शैतान ही जाने। म तो ऐसी ऐसी बात देख चुका हू कि कसम खा ली हे कि कुछ भी हो जाये, अचरज नही करूगा। एक्स्केवेटरो की क्या खबर ह? कोई फैसला किया?'

'फैसला क्या करना था? जो दो एक्स्केवेटर दूसरे सक्शन तक पहुच गये थ, उन्ह वही छोड दिया गया है। फिलहाल वे काम कर रहे हैं। दूसरो का स्तेपी मे ही छोड दिया गया है और हमने उन पर पहरेदार नियुक्त कर दिय है। जब ट्रैक्टर आ जायेंगे, तो हम उन्ह वही खोल डालेंगे और पुरजा पुरजा करके यहा ले आयेंगे। घाट पर मशीनो को खालना शुरू कर दिया गया ह। ऊर्तावायव का अपन पद से मुअत्तिल कर दिया गया है। मोरोज़ाव इस बात पर ज़ोर दे रहा हे कि उस सख्त भत्सना के साथ बरखास्त कर दिया जाना चाहिए। यह तो मैं भी कहूगा कि इस सारे मामले म ऊर्तावायेव का रवैया शुरू से अत तक बडा निदनीय रहा है। उसने मोरोजोव का आदेश मानन स इनकार किया और, आदेश के विरुद्ध, मशीनो का सयोजन करता रहा।'

'इसके बारे म तुम्ह सबसे पहले किसन बताया?'

'मर्री न।

वह कहता है कि ऐसी यात्रा के बाद एक्स्केवेटर खराब हो जायेंगे?'

'पूरी तरह से। वह कोई भी जिम्मेदारी लेने से इनकार करता है।"

'दूसरे सैक्शन के पास जो दो एक्स्केवेटर छोड गय थे, उनके चालक कान ह?'

"सेत्योल्किन और सैक्शन के प्रमुख का भाई रियूमिन।"

"पार्टी सदस्य ह?'

"हा।"

"वे क्या कहते हैं?'

"दानो ही ऊर्तावायव का समथन करत ह। उनका कहना है कि मशीनें अच्छी हालत म है। लेकिन यह क्या पूछ रह हो?"

'मेरी इस मामले म दिलचस्पी है। अगर दोनो एक्स्केवेटर ठीक काम करत हैं, तो इसका मतलब है कि ऊर्तावायेव का प्रयोग आखिर इतना मूखतापूण भी नहा था। क्यो, ठीक ह न?'

"फिर भी य दोनों एक्स्केवेटर ठीक काम भी करें, तो भी ऊर्तावायेव का बीस से अधिक एक्स्केवेटरों के साथ 'यूसाटरस फम के स्पष्ट विरोध के बावजूद निर्माण प्रमुख और मुख्य इंजीनियर के आदेश के विरुद्ध अपनी ही जिम्मेदारी पर प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं था। ऐसी बातों के लिए नियंत्रण आयोग लोगों की पीठ नहीं ठोकता।

खैर, अपना काम करो। मैं भी चलता हू। मुझे खबर देते रहना।'

लेकिन यह बताओ—इस सारे मामले के बारे में तुम क्या सोचते हो?

'मैं कुछ भी नहीं सोचता मेरे भाई। मुर्गे ने सोचने की गलती की थी, सो उसने अपनी गरदन गवाई। पहला काम है पता लगाना, सोचना मैं बाद में करूगा। मेरी राय जानना चाहते हो? खाली बैठे ही मत रहा करो—कुछ कसरत भी किया करो—इससे खून की गरदिश बढ जाती है। हा मेरे पास पिंग पौंग के कुछ नये गेंद आये हैं। किसी शाम को आ जाओ, तो हो जाये एकाध गेम। खैर, खुदा हाफिज!'

ऊर्तावायेव का पैरोकार

सारा निर्माणस्थली 'ऊर्तावायेव कांड' और पार्टी से उसके प्रस्तावित निष्कासन विषयक अफवाहों से गरमियों की शाम को मच्छरों के दल की तरह गूजने लगी। पार्टी तफतीश के लिए निर्धारित दिन के आते आते तीनों ही सकरण पाठ को दोहराते स्कूली छात्रों की तरह ऊर्तावायेव के नाम के सभी रूपों को दुहराने लगे।

उस दिन पार्टी समिति में कामकाज ढीली-ढाली रफ्तार से ही हो रहा था। लगता था जैसे आनेवालों की संख्या भी रोज से कम है। सिनीत्सिन अलग अलग सैक्शनों में पार्टी इकाई के आधार पर पार्टी काय के पुनगठन के बारे में स्थानीय अखबार में अपने लेख के प्रूफ पढ रहा था कि तभी नासिरुद्दीनोव ने उसके कमरे में आकर कहा

मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हू, साथी सिनीत्सिन। मुझे ऊर्तावायेव के मामले के बारे में कुछ कहना है।'

आओ, बैठो," सिनीत्सिन ने उठते हुए कहा।

उसने जाकर अपने कमरे को पार्टी समिति के शेष भाग से अलग करनेवाले परदे को पिन से नत्थी कर दिया। इसका मतलब था कि दरवाजा बद है और सचिव व्यस्त है।

"सुना है ऊर्तागायेव को पार्टी से निकालने का सवाल आज पार्टी समिति के ब्यूरो के सामने पश होनेवाला है। क्या यह ठीक है?"

"हा।'

"साथी सिनीत्सिन, मुझे भय है कि ब्यूरा गलती कर रहा है–बहुत ही बडी गलती। इसी लिए मै आपको आगाह करने के लिए आया हू। ऊर्तावायेव को नही निकाला जाना चाहिए–वह दाषी नही ह।'

'दोषी नही है? चलो, अच्छी बात है। तथ्य सामने रखो। गलती का तो जब भी सुधार दिया जाये, ठीक ही रहता है।

'तथ्य मेरे पास नही है, लेकिन यह मै जानता हू कि वह दोषी नही है।"

सिनीत्सिन ने नाराजी के साथ अपनी पेंसिल से मेज़ को खटखटाया। तुम्हे बस यही कहना था? यह तो कोई ऐसी वडी बात नही है। पार्टी समिति का ब्यूरो मात्र तुम्हारी निजी राय के कारण ता अपना फैसला नही बदल सकता। इसके लिए उसके सामने तथ्य होन चाहिए।'

'तथ्य तो आपके पास भी नही है!'

'बकवास मत करो, करीम। बेहतर होगा कि जिन चीजा को तुम समझते नही, उनके बारे म बाते न करो। ऊर्तावायेव पर हमारी जो आस्था और आशा थी, उसके साथ उसके विश्वासघात को देखकर मुझे उससे कही ज्यादा क्लेश हुआ है, जितना किसी और को। जब सामने विश्वासघात का प्रत्यक्ष मामला पेश होता है, तो उसमे व्यक्तिगत मैत्री की बात नही उठ सकती, साथी नासिरुद्दीनोव। इस बात को याद रखो। कोम्सोमोल समिति के सचिव को यह मालूम होना चाहिए। मेरा खयाल था कि तुम ज्यादा समझदार हो।"

'बेकार नाराज़ होन का काई लाभ नही, साथी सिनीत्सिन। मै कोई बच्चा नही हू। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है और इस बात को मै कभी नही भूलूगा लेकिन आप अक्सर मुझसे ऐसे ही बाते करते है, मानो म बच्चा ही हू। यह ठीक नही है। तब से म बडा हो गया हू। पार्टी

के प्रारंभिक नियमों को मैं जानता ही हूं, इसलिए मुझे उनकी सीख देने की जरूरत नहीं। अगर मैं आपके पास महज इसलिए उर्तानायेव की पैरवी करने के लिए आया हूं कि वह मेरा मित्र है, तो आपको मेरे मुंह पर थूक देना चाहिए। मैं कहता हूं कि आपके पास कोई तथ्य नहीं है और मुझे मालूम है कि मैं क्या कह रहा हूं। मैं इसी इलाके का रहनेवाला हूं—यहीं मैं बड़ा हुआ हूं। आपको जमा बयान मिला है, मैं ऐसे बहुत से देख चुका हूं। हमारे यहां जैसे ही कोई सक्रिय कार्यकर्ता सामने आने लगता है, खतरनाक होने लगता है अमीर लोग उसे कत्ल करने के बजाय उसकी बदनामी करने की कोशिशें करना शुरू कर देते हैं—वे उसके खिलाफ लिखित बयान भिजवाने का इंतजाम करते हैं, उन पर दर्जनों अंगूठों के निशान लगवाते हैं गरीब किसानों को भड़काते हैं, जो उनके इशारों पर नाचते हैं। उनमें से हर कोई कुरान शरीफ को हाथ में उठाकर यह कह देगा कि आपने उसके बाप का कत्ल किया है, मां का शीलभंग किया है और उसकी बेटी को फुसलाया है। और वे अपनी लड़की तक को पेश कर देंगे और वह इस बात की तसदीक करेगी कि यह सब सही है। और जब आप उन्हें भड़कानेवाले आदमी को पकड़ लेंगे और उनके आगे बचाव का रास्ता नहीं रहने देंगे, तो वे सभी बेचारगी में सिर झुकाकर कहने लगेंगे हम तो जाहिल हैं, न पढ़ सकते हैं, न लिख हमें भड़का दिया गया है। आप हमारे देश को अभी जानते नहीं, साथी सिनीत्सिन।

कुछ जरूर जानता हूं मेरे प्यारे करीम—तुम मुझे सिखाओ मत। मैंने भी ऐसे कई बयान देखे हैं और मैं यह जानता हूं कि उनके प्रति क्या रवैया अपनाना चाहिए। पहले तथ्यों की जांच किये बिना हम कोई फैसला लेनेवाले नहीं थे। ख्वाजायारोव अमीरों का कोई मोहरा नहीं है। ख्वाजायारोव बासमचियों से लड़ा था और ऊतावायेव ने हमारे साथ गद्दारी की थी और छिपे छिपे उनके साथ काम कर रहा था। ख्वाजायारोव बासमचियों से लड़ते हुए घायल हुआ था और उसके खिलाफ कोई भी कुछ नहीं कह सकता है। उसने हमें कैंयक के पास की लड़ाई के बारे में जो बताया है ऊतावायेव को तो गोली से उड़ा देने के लिए वही काफी है।"

"तो क्या एक ही गवाह काफी है?'

"कभी कभी एक भी काफी होता है। लेकिन अगर तुम्हारी दिलचस्पी हो, तो मैं तुम्हें बता सकता हूं कि उसके अलावा हमारे पास और गवाह

भी हैं। मैं तुम्हें यह सब इसलिए बता रहा हूँ कि तुम इस बकवास को अपने दिमाग से निकाल सको। फैयाज का एक आदमी बच रहा था—वही, जिसने पिछले साल अपने सरदार का सिर फग्गार में चेका को पहुँचाया था। इस आदमी का नाम कुआनदीक है और उसने बासमचियों की तरफ से कैंपक के पास के धावे में हिस्सा लिया था। कुछ दिन पहले कामारेंको ने उससे पूछताछ की थी। कुआनदीक का कहना है कि फयाज ने उनसे पहले ही कह रखा था कि ऊर्ताजायेव को हाथ न लगाया जाय। यह है पहला तथ्य। वह कहता है कि दोनों रूसी टेकनिशियन लडाई में नहीं मारे गये थे बल्कि बंदी बना लिये गये थे और बाद में, जब ऊर्ताजायेव फयाज से बात कर रहा था, गोली से मारे गये थे। और ऊर्ताबायेव वहाँ खडा हुआ था और उसने उनको गोली से मारे जाना देखा था। उसके लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण थी कि हमारी तरफ का कोई गवाह ज़िंदा न बचे। यह है दूसरा तथ्य। जब फैयाज ने ऊर्ताजायेव को रिहा किया और एक घोडे पर सवार करवाकर वहाँ से विदा किया, तो उसमें और बासमचियों में ऐसी कोई बात नहीं हुई थी कि फैयाज का गिरोह तीन दिन बाद हथियार डाल देगा, जैसा कि ऊर्ताजायेव का दावा है। इसके विपरीत ऊर्ताबायेव के रवाना होने के बाद फैयाज ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि तीन दिन बाद हम कुरगान-तेपा में होंगे, जहाँ सभी कुछ तैयार होगा। सभी समझ गये कि यह सब तैयारी ऊर्ताजायेव ही करेगा। क्या यह तुम्हारे लिए काफी है?'

आपने किसी बासमची की गवाही पर कब से विश्वास करना शुरू कर दिया है, साथी मिनोत्सिन?

कुआनदीक इस इलाके का निवासी नहीं है—वह मूमिनाबाद का रहनेवाला है। यह कोई नहीं सोच सकता था कि उससे पूछताछ की जायेगी। तुम्हें और सबूत चाहिए? तो हमारे पास और सबूत भी है—एक्स्केवेटरों का मामला। क्या यह काफी नहीं है?"

'जहाँ तक एक्स्केवेटरों का सवाल है, तो पालाजोवा ने इंजीनियर क्लार्क से इस बारे में पूछा था। क्लार्क को नहीं मालूम कि ऊर्ताजायेव ने बाकर से परामर्श किया था, या नहीं।"

"लेकिन मर्री को मालूम है और यह काफी है। ऊर्ताबायेव पूरे एक महीने से हमें झाँसा देने की कोशिश कर रहा है—उसने बाकर को मास्को

और "यूयाक" तार भेजे, लेकिन हमारे कथन का खडन करने के लिए उसे कोई जवाब नही मिला। क्या तुम यह सोचते हो कि ऊर्नावायेव का बरबाद करने के लिए सभी ने—व्यूसाइरम फम, दहकाना और वासमचिया न भी मिलकर साजिश की है? अरे, छोडो भी करीम। जाओ, जाकर अपना काम देखो।"

मैं जानता हू कि मामला बहुत उलझा हुआ है, लेकिन इसी लिए इसे इतनी जल्दबाजी मे नही निपटाना चाहिए। जरूरत पडने पर उसे कभी भी पार्टी से निकाला जा सकता है। एक और बात याद रखनी चाहिए—ऊर्नावायेव यहा अकेला ताजिक इजीनियर है, हमारे पास और ऊतावायव नही हैं। ऐसे लोगा के साथ लापरवाही नही करनी चाहिए।"

करीम अभी तुम मुझे सिखाने लायक नही हुए हो। मैं यह सब पहले से हा जानता था। तुम बस, मेरा समय नष्ट कर रहे हो।"

"मैं समय नष्ट नही कर रहा। मेरे शब्दा को आप याद रखेंगे, साथी सिनीत्सिन। आप एक बहुत बडी गलती कर रहे ह—एक भयानक गलती! ऊर्नावायेव दोषी नही है।"

"भई, मैं तो तुम्हारी यह ताता रटत सुनते सुनते थक गया हू। गरमागरम हवाई बाते करने के बजाय अपनी बात को साबित करो, तब हम उसके बारे म बाते कर सकते हैं।'

म साबित कर दगा। बस तब बहुत देर हो चुकी हागी और तब आपका अपनी गलती की जवाबदेही करनी होगी साथी सिनीत्सिन।

'मेरी चिता मत करो। मैं तब से अपन कामा की जवाबदेही करता चला आ रहा हू, जब तुम घुटना ही चला करत थे। म तुम्हारी सलाह के बिना भी अपन कामा को कर सकता हू।

मैं आपके खिलाफ नही जाना चाहता था, साथी सिनीत्सिन। आप खुद मुझे इसके लिए मजबूर कर रह हैं।"

"सुनो, अगर तुम्हे अपने सही होने के बार म इतना विश्वास है, ता तुम इसके बार मे सीधे ताजिकिस्तान की केद्रीय समिति के पास जाओ। बस, इतनी बकबक मत करो और किसी को डराने की कोशिश भी मत करो। अगर तुम कोरी बकवास जसा ही सबत पश कर सकते हो, तो हम जल्दी ही तुम्हे ठीक कर सकत हैं। खर अब मेरा और समय नष्ट

मत करो। अच्छा हो कि तुम अपना ध्यान कोम्सोमोल ब्रिगेड की तरफ दो–कल वह प्रतियोगिता मे फिर हार गई थी।"

वह चिढ गया था और आज ही उसका शात रहना सबसे ज्यादा जरूरी था। नासिरद्दीनाव के साथ इस बातचीत ने उसे अप्रत्याशित रूप से क्षुब्ध कर दिया था। यह लडका, जिसे पाच साल मे उसने अपने छोटे भाई की तरह समझा था और उसकी हर सफलता पर खुश हुआ था, आज किसी मूर्खतापूर्ण बात पर उसका विरोध करने की, उसे ही सलाह देने की, उसे सीख देने की कोशिश करने की, उसके विरुद्ध युद्ध घोषित करने की धृष्टता कर रहा है। सिनीत्सिन ने अपने मन मे कहा कि ये लोग कितने कृतघ्न ह, मगर उसने तत्क्षण अपने को सयत कर लिया। वास्तविकता यही थी कि उसने इस छोकर के लिए जो कुछ भी किया था, वह पार्टी का सदस्य होने के नाते उसका प्राथमिक कर्तव्य ही था।

अपने कागजो को अपने पोटफोलियो म भरकर सिनीत्सिन पार्टी समिति के कार्यालय से निकल पडा। उसे कुछ फौरी समस्याओ के बारे म मोरोजोव के साथ बात करनी थी।

युत मे उसे खुद मोरोजोव के अलावा कीश, मर्री और नाटे कद का एक साफ सुथरा टेक्निशियन ("जन्म से किसी कुलीन घराने का होगा," सिनीत्सिन न सोचा), जो मर्री का अनुवादक था, बैठे मिले। टेक्निशियन करने को कुछ न होने के कारण बैठा अपने दात कुरेद रहा था। मर्री कीश से अंग्रेजी म कुछ कह रहा था, जब कि मोरोजोव, जो मुश्किल से कुछ समझ पा रहा था, ध्यान से इस बातचीत को सुन रहा था। सिनी-त्सिन ने ऊर्तावायेव का नाम सुना। उसन मोरोजोव की तरफ प्रश्नभरी निगाह से देखा। मोरोजोव न खामोशी से इशारा करके उसे अपने बराबर बैठने के लिए कहा और कीश की तरफ झुकते हुए कहा

"आप बाद मे मुझे इसका अनुवाद कर देंगे न? म सब कुछ नही समझ पा रहा।"

कीश ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

"आपको यह बात समझनी चाहिए, मिस्टर कीश," मर्री अंग्रेजी मे कह रहा था, "कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह बात बहुत ही अप्रिय है। देखिये, मने ही आपका ध्यान सबसे पहले मिस्टर ऊर्तावायेव के प्रयोग

की तरफ खींचा था। सुना है कि मिस्टर ऊर्तायेव का कहना है कि उन्होंने बाकर की अनुमति प्राप्त कर ली थी। मैं यह नहीं कह रहा कि यह संभव नहीं हो सकता। ठीक है कि जहां तक मुझे याद पड़ता है, मुझसे बात करते समय बाकर ने एक्स्केवेटरों के अपनी ही शक्ति पर चलाये जाने पर सख्त नाराजी जाहिर की थी। लेकिन आखिर यह भी तो हो सकता है कि बाकर के जाने के ठीक पहले मिस्टर ऊर्तायेव ने उन्हें कायल करने में सफलता प्राप्त कर ली हो। बाकर ने, मान लीजिये, अपनी एक दो मशीनों के साथ प्रयोग करने की अनुमति दे दी हो। इसलिए यह संभव है कि मेरे सहयोगी ऊर्तायेव अपने अधिकार से कुछ हद तक ही आगे गये हों"

'मेरी समझ में नहीं आता कि आप ऊर्तायेव की सफाई देने को इतने उत्सुक क्यों हैं?' नीश ने टोकते हुए कहा।

"देखिये बात यह है कि इस तरह से यही प्रतीत होता है कि मैंने बिलकुल अनजाने ही अपने नाजिक सहयोगी के लिए अड़चन पैदा कर दी है। यह हमारी व्यावसायिक नैतिकता के एकदम प्रारंभिक सिद्धांतों के भी विपरीत है। मेरे सहयोगी ऊर्तायेव इसे लांछन समझ सकते हैं। तथ्य तथ्य ही है कि इस मामले के कारण ऊर्तायेव को तकलीफ उठानी पड़ी है। मेरे लिए यह बात बड़ी अरुचिकर है। आप स्वयं इंजीनियर हैं और आप इस बात को समझ सकते हैं। मैं आपसे यह अनुरोध करने के लिए आया हूं कि मेरे सहयोगी ऊर्तायेव की गलती के कारण आप तुरंत कोई निष्कर्ष न निकाल बैठिये। अगर मैंने यह अनुभव किया कि मैंने एक स्थानीय सहयोगी के भविष्य को बिगाड़ा है, तो उससे यहां मेरे भावी कार्य में गंभीर बाधा पड़ेगी।"

आपका यह सोचना गलत है कि मैनेजमेंट ने साथी ऊर्तायेव को उनकी गलती के कारण बरखास्त किया है। साथी ऊर्तायेव को कोई गलती करने के कारण नहीं, बल्कि बाद में उसे दुरुस्त करने से इनकार करने के लिए, निर्माण प्रमुख की आज्ञा का पालन न करने के लिए बरखास्त किया गया है। एक्स्केवेटरों के किस्से का इस मामले से जरा भी ताल्लुक नहीं है और खुद आपका सरोकार तो और भी कम है। और जहां तक बेकार के आदमियों द्वारा ऊर्तायेव के मुकदमे के बारे में फैलाई अफवाहों का सवाल है वह बिलकुल अलग ही मामला है। साथी ऊर्तायेव को

कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होने के नाते उसके आगे हमारे निर्माण काय से प्रत्यक्ष रूप से सबध न रखनेवाले कुछ कामो के लिए जवाबदेही करनी होगी। आपका व्यावसायिक अत करण एकदम साफ है '

"मै निर्दोष हू "

छ बजे ब्यूरा के सदस्य एक एक करके पार्टी समिति के कार्यालय मे एकत्र होन लगे, जहा ब्यूरो ऊर्तावायेव के प्रश्न पर विचार करनेवाला था। बाहर, दरवाजे के पास गैर पार्टी मजदूरो की एक छोटी सी भीड जमा हो गई थी।

जब ऊर्नावायेव आया, तो मजदूर उस पर शत्रुतापूण नजर डालते हुए आपस मे कानाफूसी करने लगे।

ऊर्तावायेव जल्दी से पार्टी समिति के कार्यालय मे घुस गया। उसे ब्यूरो की मेज के पास ही जरा एक तरफ बैठा दिया गया। पाच मिनट बाद सिनीत्सिन और कोमारको ने नियत्रण आयोग के एक प्रतिनिधि के साथ कमरे मे प्रवेश किया।

सिनीत्सिन ने बैठक की कारवाई शुरू करते हुए कहा कि कायसूची पर बस एक ही प्रश्न है और वह है साथी ऊतावायव का मामला, जो १९२४ से पार्टी के सदस्य है। उनपर वासमचिया के और अफगानिस्तान मे उनके सरगना के साथ सबध रखने का, दो टेकनिशियनो की हत्या का और जान बूझकर तोड फोड की कारवाइया करने का इलजाम लगाया गया है।

उसने रूसी और ताजिक दोनो भाषाओ मे वह बयान पढकर सुनाया, जो ख्वाजायारोव तथा अन्य मजदूरो ने पार्टी समिति को भेजा था और सक्षेप म एक्स्केवेटरो की कहानी सुनाई। उसने यह कहकर अपनी बात को खत्म किया कि पार्टी समिति के ब्यूरो ने उसके बताय सभी तथ्यो की विश्वसनीयता की जाच कर ली है। उसने प्रस्ताव किया कि प्रश्नो को तीन भागो म बाट देना चाहिए–ऊतावायेव पर लगाये गय इलजामो की सत्यता से सबधित प्रश्न, गवाह ख्वाजायारोव से पूछे जानेवाले प्रश्न, और स्वय ऊतावायव से पूछे जानवाले प्रश्न। उसन अनुरोध किया कि बठक म इस नियम का सख्ती के साथ पालन किया जाये, क्योकि इससे कारवाई मे बहुत सुविधा और आसानी हो जायेगी।

पहले वर्ग के प्रश्न मुख्यत ख्वाजायारोव तथा अन्य गवाहों की शिनाख्त और एक्स्वेवेटरो के मामले से सम्बंधित थे। इसमे बहुत देर नहीं लगी।

गवाह ख्वाजायारोव से मेज के पास आने और वहा से सवालो का जवाब देने के लिए कहा गया। एक दुबला पतला दहकान अपनी जगह से उठा, जो कमर पर रुमाल से बधा एक मैला सा चोगा पहने हुए था। उसकी पोशाक जगह-जगह से फटी हुई थी और बगल और इधर-उधर के छेदो से रूई के गुच्छे निकले हुए थे, जिससे वह थाग से सने घोडे जैसा लग रहा था। उसकी बाई आख गायब थी, जिसके कारण उसका चेहरा सपाट हुआ सा लग रहा था। वह सिर्फ ताजिक मे बोल रहा था।

उससे यह बताने के लिए कहा गया कि कयक के पास घात मे ऊर्तावायेव के दस्ते का किस तरह सफाया किया गया था। अपनी मूछ और दाढी के ऊपर हाथ फेरकर मानो पानी निचोडते हुए उसने कहना शुरू किया

'जब हम कॅयक किशलाक के पास पहुचे, तो अचानक हम पर जमे बीस बदूको की गोलिया बरसना शुरू हो गई। मेरा घोडा अपने पिछले पैरो को झटकता हुआ वहा का वही गिर पडा। मेरे पास हथियार नही थे, क्योकि मै गाइड था। समझे ? मैने मन मे कहा—अगर मै सडक पर ही रहूगा, तो ये लोग बहुत करके मुझे मार डालेगे और हथियार मेरे पास थे नही। लेकिन बिलकुल पास ही एक नीची-सी दीवार थी और दीवार मे एक दरार थी, जिससे उस पर चढकर दूसरी तरफ जाया जा सकता था। और जब मैने देखा कि कितने ही घोडे और आदमी जमीन पर पडे हुए है और कितने ही बिनसवार घोडे सडक पर सरपट भागे जा रहे है तो मै चढकर दीवार के दूसरी तरफ चला गया और दरार के पास घास पर पड गया। मुझे सडक से नही देखा जा सकता था, लेकिन मै दीवार की दरार मे से सारी सडक को देख सकता था। और मैने देखा कि किशलाक मे से काले घोडो पर सवार बासमची दौडते हुए आये और दस्ते पर टूट पडे—और तब तक दस्ते मे रह ही कितने लोग गये थे! और जब बासमची ऊर्तावायेव के पास पहुचे, तो उसने अपना हाथ उठा दिया और अपने हाथ मे वह कुछ पकडे हुए था। समझे ? लेकिन उसके हाथ मे था क्या, यह

म गया और अपनी टाग की मरहमपट्टी करने के लिए कहा। उसी वक्त एक कार इस्तालिनाबाद जा रही थी और बडा अफसर न मुझे उसी कार पर बैठा दिया और यह हुक्म दिया कि मुझे इस्तालिनाबाद म अस्पताल ले जाया जाय। मैं दो महीने अस्पताल मे पडा रहा।

'जब म अस्पताल से निकला, तो मुझे इस्तालिनाबाद की सडक पर ऊर्तावायेव मिला और मुझे बहुत अचरज हुआ। और ऊर्तावायेव भी मुझे पहचान गया और मेरे पास आकर बोला 'सलाम अलैकुम, ईसा! तुम्हा ने तब हमे कैयक के पास फसवाया था। मैं अभी तुम्हारी गिरफ्तारी का हुक्म निकलवाता हू!' म बेहद डर गया और मन मे कहने लगा 'म इस बात को कैसे साबित कर सकता हू कि दस्ते का मन नही, बल्कि इसीने फसवाया था' यहा इसकी बडी इज्जत है और यह पढा लिखा आदमी है, जब कि म एक सीधा-सादा दहकान हू और मने लिखना पढना कभी सीखा नही है—यकीन किसकी बात पर किया जायेगा—उसकी या मेरी?' समझे? और म उसकी खुशामद करने लगा कि वह मुझे पकडवाये नही बल्कि घर जाने दे। मैंने उससे कहा कि तब मुझे कैयक के पास टाग मे गोली लग गई थी और मैं अपनी जख्मी टाग लिये लिये खरबूजे के खेत म होकर भाग निकला था और मने यह कुछ नही देखा कि कोई मारा गया है या नही। और उसने इस बात पर विचार किया और फिर बोला 'अच्छा ठीक है, म तुम्हे गिरफ्तार नहा करवाऊगा। सीधे अपने घर चले जाओ और इस बात को याद रखना कि कयक किशलाक के पास मने फैयाज को इस बात के लिए राजी किया था कि वह सेना के सामने हथियार डाल दे।

"मै अपने सामूहिक फाम चला गया लेकिन उसके बाद मैंने अपने पडोसियो का कहते सुना कि निर्माणस्थली पर मिट्टी खोदने के लिए मजदूरो की जरूरत है और इसलिए मैं जाकर भरती हो गया। और वहा मने ऊर्तावायेव को फिर देखा और हर कोई यही कहता था कि वह यहा बडा महत्त्वपूर्ण आदमी है। लेकिन फिर लोग कहने लगे कि सबसे बडा अफसर ऊर्तावायेव से नाराज है और उस पर मुकदमा चलाया जायेगा। और हमारी इलाके के सचिव न कहा कि हम बासमचियो के मददगारो का भेद खोलना चाहिए क्योकि हो सकता है कि बासमची फिर अफगानिस्तान से आ जायें और हमारी फसल को रौंद डाले। समझे? और मजदूरो न यह कहना

मे गया और अपनी टाग की मरहमपट्टी करने के लिए कहा। उसी वक्त एक कार इस्तालिनावाद जा रही थी और बडा अफसर ने मुझे उसी कार पर बैठा दिया और यह हुक्म दिया कि मुझे स्तालिनावाद मे अस्पताल ले जाया जाये। म दो महीने अस्पताल मे पडा रहा।

"जब मैं अस्पताल से निकला, तो मझे इस्तालिनावाद की सडक पर ऊताबायेव मिला और मुझे बहुत अचरज हुआ। और ऊर्ताबायेव भी मुझे पहचान गया और मेरे पास आकर बोला 'सलाम अलैकुम, ईसा! तुम्ही ने तब हमे कैयक के पास फसवाया था। मैं अभी तुम्हारी गिरफ्तारी का हुक्म निकलवाता हू!' मैं बेहद डर गया और मन मे कहने लगा 'म इस बात को कैसे साबित कर सकता हू कि दस्ते का मैंने नही बल्कि उसीने फसवाया था? यहा इसकी बडी इज्जत ह और यह पढा लिखा आदमी है, जब कि मै एक सीधा सादा दहकान हू और मैंने लिखना पढना कभी सीखा नही है—यकीन किसकी बात पर किया जायेगा—उसकी या मेरी?' समझे? और मै उसकी खुशामद करने लगा कि वह मुझे पकडवाय नही, बल्कि घर जाने दे। मन उसस कहा कि तब मुझे कैयक के पास टाग म गोली लग गई थी और म अपनी जख्मी टाग लिये लिये दरवजे क खेतो मे होकर भाग निकला था और मैंने यह कुछ नही देखा कि कोई मारा गया है या नही। और उसन इस बात पर विचार किया और फिर बोला 'अच्छा, ठीक ह, मै तुम्हे गिरफ्तार नही करवाऊगा। सीधे अपने घर चले जाओ और इस बात को याद रखना कि कैयक किशलाक के पास मन कैयाज को इस बात के लिए राजी किया था कि वह चेका के सामन हथियार डाल दे।'

मै अपने सामूहिक फाम चला गया लेकिन उसके बाद मन अपने पडोसियो को कहते सुना कि निर्माणस्थली पर मिट्टी खोदने के लिए मजदूरो की जरूरत है और इसलिए म जाकर भरती हो गया। और वहा मैंने ऊताबायेव को फिर देखा और हर कोई यही कहता था कि वह यहा का महत्वपूर्ण आदमी है। लेकिन फिर लोग कहने लगे कि सबसे बडा अफसर ऊर्ताबायेव से नाराज ह और उस पर मुकदमा चलाया जायगा। और हमारी इकाई के सचिव न कहा कि हम बासमचियो के मददगारो का भेद खोलना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि बासमची फिर अफगानिस्तान स आ जायें और हमारी फसल को रौंद डाल। समझे? और मजदूरो न यह कहना

उसने एक मैला सा कागज निकाला और उसे मेज पर रख दिया।

"इस प्रार्थना पत्र में उन्होंने कहा है कि उनके पास यह सिखाने के लिए एक प्रशिक्षक भेजा जाय कि सामूहिक फार्म कैसे संगठित किया जाता है। मेरे खयाल से इसमें कोई अजीब बात नहीं है। अफगानिस्तान से सीमा चूंकि बंद नहीं है, इसलिए हमारे सामूहिक फार्मों के बारे में खबर काफी फैली है और अब भी फैल रही है। अफगान दहकानों को—और खासकर उन्हें, जो हमारे यहां काम कर चुके हैं—निजी कृषि पर हमारी सामूहिक कृषि की श्रेष्ठता नजर आती है और वे इस 'राज' को खुद जानकर खुश ही होंगे। साथियो, आपको मालूम करना चाहिए कि अफगानिस्तान से इस तरह के कितने पूछताछ करनेवाले बाउमानाबाद की जिला समिति के सचिव के पास आते हैं और पंज दरिया के दूसरे किनारे पर सामूहिक फार्म का संगठन करने में सहायता देने के लिए प्रशिक्षकों, ट्रैक्टरों और बीज की मांग करते हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक बात है कि जो दहकान यहां पहले काम कर चुके हैं, वे मेरे पास ही आये। मैं यहां अकेला ऐसा ताजिक हूं, जो इंजीनियर और पार्टी सदस्य है और उनकी निगाहों में उनकी भाषा बोलनेवाला बड़ा अफसर है। यह अचरज की बात होगी कि वे मेरे बजाय किसी और के पास आयें। मुझे उन्हें इस बात का विश्वास दिलाने में बहुत मुश्किल हुई कि हम उनके पास प्रशिक्षक नहीं भेज सकते। मैंने उन्हें ताजिक भाषा में एक पुस्तिका दी, जिसमें सामूहिक फार्मों के बारे में निर्देश हैं और उन्हें बाउमानाबाद की जिला कार्यकारी समिति जाने की सलाह दी, जिसने, मुझे यकीन है, बीज देकर उनकी सहायता की। मेरे खयाल से यह जानना बहुत मुश्किल नहीं होगा कि वे बाउमानाबाद गये थे या नहीं।"

'लेकिन आप खुद कहते हैं कि इस तरह के बहुतेरे लोग बाउमानाबाद आते रहते हैं। आप यह कैसे कह सकते हैं कि वे वहीं थे या कोई और?'

"हां, यह तो ठीक है। इस बात को बिलकुल ठीक तरह से कह पाना असंभव है।

मारोजोव को, जिसने अभियुक्त पर से क्षण भर को भी अपनी आंखें नहीं हटाई थीं, लगा कि ऊर्ताजायेव के चेहरे पर एक कुटिल मुसकान थिरक रही है।

"तो यह रही पिछले साल अफगानिस्तान से आनेवालो की बात," ऊर्तावायेव ने अपनी बात जारी रखी। "साथियो, मेरा अनुरोध है कि इस मुलाकात की तारीख मे जान बूझकर जो परिवर्तन किया गया है, उस पर गौर कीजिये। दहकान मुझसे मिलने के लिए हमले के तीन दिन नही, एक महीने या शायद उससे भी ज्यादा पहले आये थे।"

"आप यह कैसे साबित कर सकते है?"

ऊर्तावायेव ने प्रश्नकर्ता की तरफ देखने के लिए अपनी आखे उठाई और वे अपने ऊपर जमी हुई मोरोजोव की आखो से जा टकराइ। मोरोजोव को दमकती दो शैतानीभरी और तिरस्कारपूर्ण चिनगारिया नजर आइ।

'अफगानिस्तान की इस दरखास्त पर कोई तारीख है?' कोमारेको ने पूछा।

नही। दहकानो को अपनी दरखास्तो पर तारीख डालने की अभाग्यवश आदत नही है।'

"इसलिए इसकी भी पुष्टि नही की जा सकती?'

ऊर्तावायेव ने आस्तीन से माथे का पसीना पोछा और एक बार फिर उसकी आखे मोरोजोव की ओर उठ गइ। और इन आखो की चालाकीभरी चमक से मोरोजोव को अचानक साफ हो गया कि ऊर्तावायेव असल मे जरा भी विचलित नही है—वह एकदम शात और आत्मविश्वास से परिपूर्ण है और यह माथे को आस्तीन से पोछना, यह हाथो का कापना, कागजो को इस परेशानी के साथ टटोलना—यह सब कोरा अभिनय है पहले से सोचा और रिहर्सल किया हुआ।

'बोलते रहिये।

तो, दो अफगानो के आकर मुझसे मिलने के किस्से के सिलसिले मे ऐसा अक्सर होता रहता था कि अफगान मजदूर सभी तरह के मामलो को लेकर मेरे पास आते रहते थे, क्योकि अपनी भाषा मे वे न फोरमैन से बात कर सकते थे और न सेक्शन प्रमुख से ही। ऐसा भी होता था कि वे मुझसे मेरे घर आकर मिला करते थे। मै निश्चयपूर्वक नही कह सकता कि उस खास दिन कोई मुझसे मिलने आया था या नही। मुमकिन है कि कोई आया हो।

'और क्या यह सभव है कि ये दोनो अफगान आये हो?"

'हाँ, सभव है कि ये दोना गफगान ग्राये हा, क्याकि ऐमी काइ बात नही थी, जा उन्ह औरो स अलग करती और मै इमकी तो काइ पेशीनगोई कर नही सकता था कि उनका भाग जान का इरादा है।"

एक बार फिर ऊर्ताबायेव की आखें जाकर मोरोजोव पर टिक गइ।

"लेकिन तब आप यह क्या कहते हैं कि सारा किस्मा मनगढत है? जाहिर तो यही हो रहा है कि यह जरा भी मनगढत नही है," मोराजाव ने यह महसूस करत हुए रुखा आवाज म कहा कि खून किस तेजी के माथ उसके चेहरे की तरफ जा रहा है।

यह मनगढत है कि मैंने पहले से यह जानते हुए कि हो अफगाना से मुलाकात की कि व भाग जानवाले हैं।

"तो आप नही जानते थ कि व भाग जाने की सोच रहे ह?'

' नही, मैं नही जानता था। फिर जहा तक कयक क पास हम पर छाप का सवाल है, मुझे सबसे पहले यही कहना है कि मैने ख्वाजायारोव का पहले कभी नही देखा है। बल्कि यह कहिये कि नही–यह बात पूरी तरह से ठीक नही है। मैन उनका चेहरा पहले कही न कही जरूर देखा है। मने उन्ह कही देखा हे। जब वह अपनी कहानी सुना रहे थे, मैं यहा बठा उन्ह देख रहा था और यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि मन उन्ह कहा देखा है।

"कही यह कयक की ही तो बात नही है? जरा याद करने की कोशिश कीजिये।

'नही ख्वाजायारोव कयक म नही थे। और उन्होने हमारे दस्त म गाइड का काम कभी नही किया।'

लेकिन फिर भी उनका चेहरा परिचित है?

"हा, उनका चेहरा परिचित है।'

लोग हसन लगे।

' मेरे शब्दा को मजाक म बदलन की कोशिश करना अच्छी बात नही है, साथियो। मेर लिए यह हसी की बात नहीं है।

"हा, मै भी यही समझता हू!'

तो खैर, ख्वाजायाराव की यह सारी कहानी पूरी तरह से मनगढत है। ख्वाजायाराव न हमारे दस्ते म थे, न कयक के पास। अभाग्यवश, इस मामूला

सी वात का भी सवूत नही दिया जा सकता, क्योकि स
मै ही जिदा बच पाया था।"

"यही तो सबसे अजीब बात है!"

'मुझे यह बताने की अनुमति दीजिए कि कैयक में

"बेशक, बताइये।"

"हमारा बारह आदमियो का दस्ता घात मे फस
जहा तक याद कर सकता हू, वासमचियो के अपने छिपने
ऊपर धावा करने से भी पहले उनका सफाया हो चुका
गोलियो मे से एक मेरे घोडे को ही लगी थी, जिससे
और मेरी टाग उसके नीचे फस गई "

घोडा मारा गया था या घायल हुआ था?"

"घायल नही हुआ, मारा गया था। घोडे से गिरते
आ गया था और ठीक से यह नही देख सका कि हमारे
घात मे ही मारे गये है या कोई जिदा बच रहा है और
खात्मा किया गया। किसी भी सूरत मे, जब मुझे घोडे के
निकाला गया, तब सारे दस्ते मे अकेला मै ही जिदा

"और दोनो रूसी टेकनिशियन?"

"और सब के साथ ही मारे गये थे।"

'उन्हे बाद मे गोली नही मारी गई?"

'मै फिर कहता हू सारे दस्ते मे अकेला मै ही जि
प्रत्यक्षत इसी लिए उन्होने मुझे मारा नही, बल्कि
बना लिया और हमारी फौजो की सख्या और स्थिति के
जानकारी हासिल करने की आशा मे मुझे अपने सरदार
फैयाज़ ने खुद मुझसे पूछताछ करना शुरू की। मैने
लाल सेना की टुकडियो की सख्या बढा चढाकर बताई, कू
सरदारो के हथियार डालने की बात कही, यह साबित कि
का खेल खत्म हो गया है और हथियार डालने की सलाह दे
जो लोग अपने हथियारो सहित आत्मसमर्पण कर दगे, उ

म आ गई थी कि इब्राहीम बेग ने जनता की सहायता का वादा करके, जिससे अब खुद उसे ही भागना पड रहा था, उसे एक बेकार के यमले मे फसा दिया है। उसने मुझसे कहा कि उसने पहले इसलिए आत्मसमर्पण नही किया था कि उसे स्वयसेवक दस्ता पर विश्वास नही है। स्थानीय आबादी मे उसके बहुत पुराने और पक्के दुश्मन थे, जो उसके हाथ म पडते ही अपना हिसाब बराबर करने म चूकनेवाले नही थे। उसने कहा कि वह बस चेका प्रमुख के आगे ही आत्मसमर्पण करने के लिए तयार है। मने इसकी व्यवस्था करने का वादा किया। हमने तय किया कि तीन दिन बाद फैयाज और उसके आदमी दागाना कैयक खड्ड म इतजार करेंगे और अगर चेका की टुकडी वहा पहुच जाये, तो व अपने हथियार डाल देंगे। उसके साथ मेरा यह समझौता हो जाने के बाद उसने मुझे एक नया घोडा दिया और वहा से जाने दिया। म वहा से कूरगानतपा गया और वहा के तत्कालीन चेका प्रमुख, साथी पखोविच को यह सब बताया। तीन दिन बाद हम दागाना कैयक खड्ड गये, मगर वहा कोई नही था।

'अहा, तो फैयाज ने आत्मसमर्पण नही किया?'

'मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिये। जहा तक म जान पाया हू, हमारे एक और दस्ते ने एक दिन पहले अकस्मात फयाज के गिरोह पर हमला कर लिया था और उसका लगभग पूरी तरह से खात्मा कर दिया था।'

"लेकिन इस सूरत मे इस बात का क्या सबूत है कि फैयाज ने कभी हथियार डालने का इरादा किया था और उसने आपके साथ यह समझौता किया था?'

'मेरी गवाही के अलावा इसका कोई और सबूत नही है।

'यह बहुत कमजोर सबूत है और क्या आप ख्वाजायारोव से स्तालिनाबाद मे नही मिले थे और उनसे वहा बात नही की थी'

'नही, म उनसे न मिला, न मने बात की। मैं आपको पहले ही बता चुका हू कि म ख्वाजायारोव को नही जानता।"

'लेकिन ख्वाजायारोव जिस समय की चर्चा कर रहे ह, तब क्या आप स्तालिनाबाद मे थे?

"अगर आपका आशय बासमचियो के खत्म किये जाने के दो महान बाद के समय से ह, तो म उस समय स्तालिनाबाद म था।"

"अहा, तो आप उस समय स्तालिनाबाद मे थे?"
"हा, उस समय मै वहा था मै अपनी बात जारी रखू?"
"हा, एक्स्केवेटरो के बार म बताइय।"
"एक्स्केवेटरा को सयोजित करके घाट से चलाकर ले जाने का विचार मुझे परिवहन के मामले मे एकदम निराशाजनक परिस्थिति से सूझा था, जिसने हमारी निर्माणस्थली के सारे काम को रोक रखा था। एक्स्केवेटरा को ट्रैक्टरो की सहायता के बिना मुख्य सैक्शन ले आने का मतलब होता सारे काम को कुछ ही हफ्तो के भीतर पूरे जोर के साथ शुरू कर देना, इसका मतलब होता निर्माण काय को कई महीने आगे बढा देना। बेशक, मैंने इस प्रयोग को अपन आप, ब्यूसाइरस फम के प्रतिनिधि की सहमति के बिना जुरत नही की। मै इस फम के प्रतिनिधि, इजीनियर बाकर से मिला और मैंन अपनी योजना उन्ह समझाई। बाकर ने कहा कि यह सही है कि उनकी फम के बनाये एक्स्केवटरो को इतनी दूर तक कभी नही चलाया गया है—उनकी अधिकतम सीमा सात से दस किलोमीटर प्रति दिन से अधिक नही थी—लेकिन उन्होने कहा कि सैद्धातिक दृष्टि से यह असभव नही है और उनकी फम की तो ऐसा प्रयोग करने मे दिलचस्पी तक होगी। उन्हाने कहा कि यात्रा के बाद बस, एक्स्केवेटरा की मरम्मत मे हद से हद एक हफ्ता और लगाना पडेगा। अगर हम ट्रैक्टरो का इतजार करते, तो उस पर जितना समय नष्ट होता, उसके मुकाबले यह नही के बराबर था। चेत्वेर्याकाव तब जाने ही वाले थे और उन्हे कुछ भी करने का अधिकार नही था। नये प्रमुख अभी आय नहीं थे। और कोई था ही नही, जिससे मै सलाह लेता। मै घाट चला गया और मन एक्स्केवेटरा को सयोजित करना और चलाकर रवाना करना शुरु कर दिया। जब कुछ एक्स्केवेटर रवाना भी हा चुके थे और बाकी मे से आधे लगभग पूरी तरह स सयोजित हो चुक थे, मुझे साथी मोराज़ोव से एक अप्रत्याशित पत्र प्राप्त हुआ, जिसम सख्ती से यह आदेश दिया गया था कि मै एक्स्केवेटरा का सयोजन अविलब बद कर दू और मुख्य सैक्शन पहुचू। क्षण भर के लिए तो मै बिलकुल हक्बका गया। फिर मैंने सोचा कि शायद नय प्रमुख को अभी इस मामले के बारे मे इजीनियर बाकर के साथ परामश करने का समय नही मिल पाया है और उन्ह डर है कि इस काम को मै अपन जोखिम पर कर रहा हू। मै उन एक्स्केवेटरा को तो, जो रवाना हा चुके थे और अधबीच मे

थे, रोक नही सकता था। मैंने तय किया कि जो दा एक्स्केवेटर आधे सयोजित हो चुके हैं, उनका सयोजन खत्म कर दू और फिर जाकर नये प्रमुख से मिल लू। मुझे विश्वास था कि यह आदेश गलतफहमी के अलावा और कुछ नहा है और जब साथी मोरोज़ोव को पता चलेगा कि मैं व्यूसाइरुस फम का रजामदी से काम कर रहा हू, ता वह अपने आदेश की पूर्ति पर ज़ार नहा देंगे। *तभी, बिलकुल आखिरी वक्त पर, साथी मोराज़ोव अप्रत्याशित रूप* से आ पहुचे, उन्होंने मुझे मुअत्तिल कर दिया और एक्स्कवटरा क खोले जाने का आदेश जारी कर दिया।"

'तो आप अब भी इसी बात पर जोर देते हैं कि आप इजानियर बाकर की अनुमति से काम कर रहे थे?' मोरोज़ोव सवाल करते हुए ज़रा *सा उठ गया।*

'हा, उनकी पूरी रजामदी से।

'बेशक, इसको भी साबित नही किया जा सकता, क्योंकि इजीनियर बाकर अमरीका चले गय हैं।'

'इसको साबित किया जा सक्ता है–अलबत्ता इस वक्त नही।"

"*लेकिन यह हो कैसे सकता है? इजीनियर बाकर ने आपसे एक बात* कही और इजीनियर मर्री से दूसरी?"

"मैं खुद इस बात को नही समझ पा रहा। शायद इजीनियर बाकर आखिरी वक्त पर फम के प्रति अपनी जवाबदेही के दृष्टिगत घबरा गये और अपन कहे से मुकर गये।'

"रुकिय, ज़रा रुकिये। अगर आपन इजीनियर बाकर से इस बार मे कभी भी बात की होगी, तो इस बातचीत का कम से कम एक गवाह होना चाहिए–अनुवादक।"

क्षण भर का खामोशी छा गई। मोरोज़ोव ने अपनी आखें भीच ली। यह बिलकुल निशाने पर चोट थी। ऊर्वावियेव का चेहरा लाल हो गया, पहली बार उसकी आवाज़ मे अनिश्चय और उलझन की गूज थी।

"मैं स्वय अग्रेज़ी बालना सीख रहा हू और थोडी बहुत बाल भी लेता हू। और इस बारे मे मैंने बाकर स अनुवादक के बिना बात की थी।'

'फिर भी, जैसा कि मुझे अच्छी तरह स मालूम है, और मौका पर

जब आप अमरीकियो से बात करते थे, तो आप अनुवादक की सहायता लेते थे।"

"हा, आम तौर पर, अगर सवाल बहुत मुश्किल होता, और मुझे शब्द न मिल पाते, तो मैं अनुवादक की सहायता लेने लगता था।"

"बस इसी प्रश्न पर ऐसा हुआ कि आपको शब्दो की दिक्कत नही पडी और आपने बिना अनुवादक के काम चला लिया, जो इस वक्त यहा गवाही दे सकता था।"

"हा, इस बातचीत के समय कोई अनुवादक मौजूद नही था।"

"लगता है कि आप हमको बच्चे समझते है, ऊताबायेव!"

"क्या आपको अपनी सफाई मे यही कहना है?" नियत्रण आयोग के प्रतिनिधि ने रुखाई से पूछा।

"हा, इतना ही "

ऊर्ताबायेव ने फिर माथे को आस्तीन से पोछा। इस बार मोरोजोव को उसकी हरकत की सचाई मे शक नही हुआ। "तुम्हे कोने मे धकेल दिया गया है और इससे तुम नही निकल पाओगे," उसने मन मे कहा।

"साथियो, मै इस बात को समझता हू कि ये सारे तथ्य, जिन्हे मेरे शत्रुओ न इतनी कुशलता से विकृत कर दिया है, मेरे खिलाफ जा रहे है, और परिस्थितिया का सयोग कुछ ऐसा विचित्र है कि मै एक भी तथाकथित ठोस प्रमाण से, अपने पक्ष मे बोलनेवाले एक भी गवाह से उनका विरोध नही कर पा रहा हू। इस बात को मै समझता हू कि आप मेरी बात को नही मानेगे, अगर मै आपसे कहू कि म निर्दोष हू "

ऊर्ताबायेव की आवाज़ थरथराने लगी और फिर अचानक मानो इस डर से कि उसकी आवाज़ काफी तेज़ नही है और सब लोग उसे सुन नही पायेंगे, उसने चिल्लाकर कहा

"मै निर्दोष हू, साथियो!"

इससे एक खलबली सी मच गई। कमरे म एकदम सन्नाटा छा गया।

"नाटक रच रहा है! इसे मच पर जाना चाहिए न कि पार्टी समिति के ब्यूरो के सामने आना चाहिए," मोरोजोव ने नाराजी के साथ सोचा।

ऊर्ताबायेव ने माथे को आस्तीन से पोछा और सूखी, फीकी आवाज म अपनी बात पूरी की

"मैं पार्टी के लिए की अपनी छोटी छोटी सेवाओं का उल्लेख नही करूगा। पार्टी ने मुझे सब कुछ दिया है। मैंने पार्टी को बस वही दिया है, जो हर पार्टी सदस्य के लिए देना जरूरी है। पार्टी ने मुझे पढने के लिए भेजा। पार्टी ने मुझे आदमी बनाया। मुझमे जो कुछ भी उपयोगी और अच्छी चीज है, उसके लिए म पार्टी का ऋणी हू। पार्टी को मुझस हर वह चीज छीनने का अधिकार है, जो उसने मुझे दी है। मुझे पार्टी स निष्कासित करने का अथ है मेरे जीवन को ले लेना। पार्टी ने मुझे जीवन दिया है पार्टी को उसे ले लेने का अधिकार है।"

उसने कुछ कागजा को–जो प्रकटत उसके समापन भाषण के नाट थे, जो उसने दिया नही था–हाथ मे मरोडकर पोटफोलियो म ठूस दिया।

मिनट भर को खामोशी छाई रही।

"खैर, यह सब करुणरस का उदगार है जिससे मामले के सार म कोई अतर नही आता," मोरोजोव न कहा "हर चीज साफ है और अब वक्त के हाथ से निकल जाने के बाद अफसोस करके आप कुछ नहा कर सकते।"

"हा, मामला साफ है।"

"तो, साथियो, क्या कोई और सवाल है या हम इस पर तुरत मत ले ले?"

"मामला साफ है!"

'तो इस पर मत ले लीजिये।"

ऊर्तावायव के पार्टी से निष्कासन के पक्ष मे कौन है?'

ग्यारह हाथ उठे।

"विपक्ष मे कौन है?"

कोमारेको और एक्स्केवेटर चालक मेत्योलकिन ने अपन हाथ उठा दिये।

"मैं सभा की कारवाई समाप्त घोषित करता हू।"

ऊर्तावायेव उठा, क्षण भर क लिए वह ऐसे आदमी की तरह अपनी जेबा को टटोलता रहा, जिसका बटुआ खो गया हो, फिर उसन अपना पार्टी काड निकाला और उसे मेज पर रख दिया। फिर बिना इधर उधर देखे वह तेजी से कमर से निकल गया।

साथी कोमारेको का सदेह

सिनीत्सिन और दिनो की बनिस्वत जल्दी घर लौट आया। आज की शाम को उसे ऐसा ही लग रहा था, जैसा किसी सजन को बडी सफाई और निर्दोषता के साथ, चिकित्साविज्ञान की कला के सभी नियमा के अनुसार किये बडे कठिन आपरेशन के बाद लगता है, जिसके दौरान रोगी की आपरेशन टेबल पर ही मौत हो जाती है।

सिनीत्सिन देर तक कमरे मे इधर मे उधर चहलकदमी करता रहा। दरवाजा चरमराया। कोमारेका न कमरे मे प्रवेश किया।

"मै इधर से ही गुजर रहा था, इसलिए सोचा कि तुम्हे भी झाक ही लू। कोई खबर है?"

"अब तो तुम्हारी ही बारी है। ऊर्तावायेव को गिरफ्तार करना होगा।"

मै लोगा को बिना बारी के ही गिरफ्तार करता हू, इसलिए इस बार भी मै अपनी बारी नही ले रहा हू।"

"तुम तो हमेशा मजाक करते हो। सारी बात के साबित हो जाने के बाद उसे इस तरह आजाद नही छोडा जा सकता।"

"क्या नही?"

"तुम मजाक कर रहे हो या सजीदगी से कह रहे हो?"

"बेशक, सजीदगी से ही कह रहा हू।"

"तुम्ह उन ठोस तथ्या की परवाह नही है, जिन्हे जाच के दौरान सिफ मैने ही नही, बल्कि तुमने भी प्रमाणित किया था?'

"हो सकता है कि जा तथ्य प्रमाणित किये गये थे, वे ऊर्तावायेव को पार्टी से निकालने के लिए काफी हा। उसे गिरफ्तार करन के लिए हमे एक दो और बाता को साफ करना होगा।"

"अफगानिस्तान से उसके जो सबध हैं क्या तुम्हारे लिए यह काफी नही है?"

"अफगानिस्तान से सबध पूरी तरह से प्रकट नही हुए ह। कुआनदीक झूठ बोल सकता है। एकमात्र गवाह तुम्हारा ख्वाजायारोव ही है।"

तो, शायद तुम्हारी राय मे उसे निकालना गलत ह?'

बाहर का दरवाजा धडधडाया। सिनीत्सिन उठकर खडा हो गया। पोलोजोवा ने कमरे मे प्रवेश किया।

"म विघ्न तो नही डाल रही?"

"कोई बात नही। इस बार आप क्या नही खबर लेकर आई ह? अमरीकियो को तो कुछ नही हुआ?"

"कोई और फलागा को नही निकली?" कोमारेको ने पूछा।

"नही। कोई खास बात नही हुई है। आज शाम को इजीनियर क्लाक ने पहली बार मुझे अपने शक के बारे मे बताया। इस सवाल म गये बिना कि वह कितना सही है, मैंने यह अपना कतव्य समझा कि आपको इस बारे मे बताऊ, खासकर इसलिए भी कि निस्सदेह उनकी मशा यही थी कि मैं ऐसा ही करू।"

"हा हा, बताइये। यह बात दिलचस्प होनी चाहिए," कोमारेको ने उल्लसित होते हुए कहा।

"आपको याद होगा कि जब अमरीकियो को पहली बार धमकी भरे पत्र मिले थे, तब सब यही पूछते थे कि पत्र उनके कमरे मे पहुचे कसे होगे। उन्होने भी इस बारे मे माथापच्ची की और क्लाक को यह विचार पैदा हुआ कि हो सकता है कि उन्हे आकर मिलनेवाले लोगो म से ही किसी ने इन पत्रो को चुपके से कमरे मे रख दिया हो।"

"बहुत अच्छे! यही सबसे सीधा और समझदारी का समाधान है," कोमारेको ने कहा।

"तो खैर, क्लाक ने यह याद करने की कोशिश शुरू की कि उस दिन उनसे मिलन के लिए कौन कौन आया था। और वह इस नतीजे पर पहुचे कि दोनो ही बार ऊर्ताबायेव उनके कमरा मे आया था।

"क्या? फिर ऊर्ताबायेव?" सिनीत्सिन ने कुरसी को अलग खिसका दिया और कमरे मे चहलकदमी करना शुरू कर दिया।

"साथी सिनीत्सिन, आपको उस समय भोजनालय म हुई बातचीत याद है, जब क्लाक और मर्री ने अपने को मिले खत आपको पहली बार दिखाये थे? आपको याद है कि आपने कहा था कि कोई ताजिक ककाल की खोपडी नहीं बनायेगा, क्योकि यह एक यूरोपीय प्रतीक है?"

'हा, मुझे याद है।'

'क्लाक का ध्यान इस बात की तरफ गया था कि ऊर्ताबायेव, जो इस बातचीत के समय मौजूद था, आपके इस विचार का बडी उत्सुकता से समर्थन कर रहा था कि कोई ताजिक उन रुक्को का रचयिता नही हो सकता।"

"तो, फिर?"

"फिर फलागा म विस्स न यह वात निर्णायक रूप से सावित कर दी कि रक्को का रचयिता कोई ताजिक ही होना चाहिए। कोई यूरोपीय इस तरह की बात सोच भी नहीं सकता था। इस बात की पुष्टि म क्लाक का ध्यान इस तरफ गया है कि जिस समय माचिस खाली गई थी, तव खुद ऊर्तावायेव वहा नहीं था मानो वह पहल से ही अपन उस समय अयत्र हाने का बहाना कायम करना चाहता था। इस वात की तरफ उनका एक विचित्र सयोग की तरह ध्यान गया है कि जसे ही ऊर्तावायेव की अपनी परेशानिया शुरू हुई–एक्स्केवेटरो का मामला, आदि आदि–धमकीभर खता का आना भी एकदम वद हो गया, माना उनका रचयिता और बाता मे व्यस्त था और इस खेल को जारी रखना उसके लिए सभव नही रहा था। मुझे आपको वस यही वताना है। वहुत समय तक इजीनियर क्लाक अपने शक के बारे म किसी को बताने का फैसला नही कर पाये, क्योकि उन्हें मालूम था कि ऊर्तावायेव कम्युनिस्ट है। उन्हाने अब यह जानने के बाद ही ऐसा करने का निश्चय किया है कि ऊर्तावायेव को पार्टी से निकाल दिया गया है। मैं आपको क्लाक की बात लफ्ज़-ब-लफ्ज़ बता रही हू। जहा तक मेरा सवाल है, मैं यह जरूर कहूगी कि म यह विश्वास नही कर सकती कि ऐसा हो सकता है। मुझे ता यही लगता है कि यह कोई दुर्भाग्यपूर्ण सयोग है "

धयवाद, साथी पोलोजोवा। आपने बिलकुल ठीक ही किया है–खासकर इसलिए कि जहा तक मुझे मालूम है, आप और नासिरद्दीनोव ऊर्तावायेव के बहुत अच्छे मित्र ह और आपको उसकी निर्दोषता का विश्वास है।'

"मैंने अपने कतव्य का ही पालन किया है। लेकिन इसका यह मतलब नही कि मैं अपनी निजी राय न रख सकू। मैं अब भी यही समझती हू कि ऊर्तावायेव के मामले म कोई दुर्भाग्यपूर्ण गलती हुई है, जिसे मैं सुलझा नही सकती मगर मेरी आशा है कि उसे सुलझा लिया जायेगा।'

'अभाग्यवश आपकी निजी राय स मामले म कोई नई बात नही पैदा हाती। जहा तक साथी नासिरद्दीनोव की बात है, उनके लिए यह ज्यादा सही होगा कि वह पार्टी समिति के निणयो की आलोचना न कर और अय कोम्सोमोल सदस्या को इस मामले मे न घसीटें।

"साथी नासिरद्दीनोव और मं किसी भी तरह कोम्सोमोल समिति की राय का प्रतिनिधित्व नही करते, बल्कि अपनी निजी रायो को ही प्रकट करते हैं। मेरा खयाल है कि कोम्सोमोल और पार्टी के हर सदस्य का,- अगर वह यह समझता है कि किसी सुयोग्य पार्टी सदस्य के बारे म गलती हो गई है, न केवल यह अधिकार है, बल्कि कर्तव्य है कि वह इस गलती को सुलझाने और सही करने के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करे। इसका कोम्सोमोलियो को पार्टी समिति के निर्णयो के बारे म बहस मे घसीटने से कोई ताल्लुक नही।"

'आप निश्चित रहिये कि मैं सबसे पहले यह साबित करनेवाले का स्वागत करूगा कि ऊर्ताबायेव के मामले का फसला करने म हमने गलती की है।"

"मुझे इसमे कोई शक नही है।'

"अभाग्यवश कोई भी इसे साबित नही कर पाता। सारा मामला निजी हमदर्दिया और राया के बारे मे निरर्थक बात पर आकर खत्म हो जाता है। इन बेकार की बातो को खत्म किया जाना चाहिए।"

ठीक है, आपको इनके बारे मे कुछ और सुनने को नही मिलेगा।"

"यह हुई ठीक बात!' सिनीत्सिन पोलोज़ोवा के साथ दरवाजे तक गया। "हा, तो क्या कहते हो? क्या तुम अब भी ऊर्ताबायेव को गिरफ्तार नही करोगे?' उसने कोमारेको से पूछा।

"मुझे अपने विवेक के अनुसार काम करने दो। अपने किये की मैं जवाबदेही करूगा।"

'मुझे डर है कि तुम अपने ऊपर बहुत बडी जिम्मेदारी ले रहे हो। मैं कम से कम यह जानना चाहूगा कि तुम किस बिनाह पर इस तरह से चल रहे हो? क्या यह भी कोई निजी विश्वास की ही बात है या इसमे कोई और महत्वपूर्ण बात है?"

"जानते हो, इस मामले मे कुछ ऐसी बात है, जो अभी तक पूरी तरह से सुलझी नही है।'

"मुझे यही डर है कि कही ऐसा न हो कि इधर तो तुम किसी रहस्यमय राजनीतिक षडयन्त्र का पता लगाने की कोशिश मे लगे रहो और उधर व धागे भी तुम्हारे हाथ म निकल जायें, जो अपने आप हाथ म आ गये थे। तुम लोग कभी कभी ऐसा भी करते हो। यकीन करो, म इस इलाके म

तुम से कही ज्यादा पहले से काम कर रहा हू और मुझे कुछ अनुभव हो चुका है। ऐसा कभी नही होता कि एक ही स्थान पर बिलकुल समातर काम करते दो सगठन हो, जिनमे से एक सिफ तोड फोड और आतक की कारवाइया करे और दूसरा बासमचियो और अफगानिस्तान के साथ सबध रखे। ऐसी बाते नही हुआ करती।"

"हा मेरा भी यही खयाल है।"

'धागे का एक सिरा हाथ मे आ गया है तो सारी लच्छी खुलकर रहेगी।"

वशर्ते कि धागे का यह सिरा टूट न जाये। सारी बात यही है ०क तरह स पकड रखी जाये ,

'और तुम्हारा खयाल है कि ऊर्तावायेव यही धागा नही है?

'मेरे खयाल मे नही।'

तुम विना बात के मामला उलझा रहे हो। याद रखो कि अगर ऊर्ताबायेव को आजाद रहने दिया जाता है और अमरीकिया की जान लेने की कोई और कोशिश की जाती है, तो म इस बात को अपना कतव्य समझूगा कि ताशकद म चेका प्रमुख को अपनी राय से अवगत करू।'

इसका तुम्हे अधिकार है। चाहो, तो तुम इतजार किये बिना भी यह कर सकते हो। खर खुदा हाफिज।'

कोमारेको घोडे पर सवार हो गया और बारका से घिरी खुली जगह को कदम चाल से पार करने लगा। सारी बस्ती सो रही थी— दुशाले की तरह रात म लिपटी हुई। जहा-तहा एकाध उजाली खिडकी अधेरे म झिलमिला रही थी। दूर स देखन पर खिडकिया तारा की तरह टिमटिमा रही थी। खिडकियो के काचा म म राहगीर मानो दूरबीन के काच म से और लोगा के नैशिक जीवन के अलग अलग टुकडा को दख सकता था। लीजिये, हरी टोपी पहने वह ताजिक खिडकी पर बैठा कोई किताब पढ रहा है। वहा वह चेचकरू फोरमन जिसका चश्मा उसकी नाक पर स फिसला जा रहा है, मज पर दुहरा हुआ नीले ग्राफ-पेपर पर कोई नक्शा बनाने म लगा हुआ है। व्यक्तिया की ज़िदगियो के टुकडे

कोमारको ने रास को झटक से खीचा। उस अवसर और लागा की ज़िन्दगिया म झाकन का अनाहूत अतिथि की तरह उनके पिछवाडा की

ताका झाकी करने का अवसर मिलता रहता था। पारिवारिक डाक्टर की तरह वह यहा के हर आदमी के भीतर बाहर को जानता था। जब वह लोगो से मिलता, तो वह उनमे उनके बालो या खाल के रग या किसी और बाहरी पहचान के निशानो से भेद नही करता था। वह उन्हे वैसे ही पहचानता था, जैसे कोई डाक्टर अपने पुराने मरीजो को उनके भीतरी अगो की विशिष्टताओ से पहचानता है—भूरे बालोवाला लबा आदमी नही, बल्कि बढी हुई तिल्लीवाला आदमी, भारी बदन का चेचकरू आदमी नही, बल्कि बिगडे जिगर का आदमी, लाल बालोवाली पीन पयोधरा स्त्री नही, बल्कि गुरदे के दर्द की शिकार। कोमारेको वह देखता था, जो उसके आसपास के लोगो मे से और किसीको नजर नही आ सकता था। मामूली खरोच जैसे छोटे से दाग से विकृत उजली मूछोवाले सीनियर टैकनिशियन के चेहरे मे उसे लाल सेना की गोली दिखाई देती, जिसे कभी निकाला नही गया था—वह गोली, जिसने इस सौम्य चेहरे को तब बिगाडा था जब इस पर ताजिक टोपी नही, बल्कि प्रतिक्रातिकारी जनरल आगेल के चिह्न से अकित फौजी टोपी सजा करती थी। कपास चुनते एक सीधे सादे दीखनेवाले दहकान की आखो मे—जो पुरस्कृत तूफानी मजदूर और एक टोली का नायक था—अपनी कुदाल उठाते हुए उसके सधे हुए हाथ की निपुण गति मे उसने लडाई मे कैद किये तीन लाल सैनिको के सिरो को कलम करती और अत मे अपने ही सरदार का भी सिर उतारती टेढी बासमची तलवार की चमक को देख लिया। फीके कत्थई बालोवाली एक स्त्री—मुख्य खजाची की पत्नी—के होठो पर थिरकती उदास मुसकान मे, जो खाने का सामान खरीदने के लिए अक्सर उसकी खिडकी के पास से हाथ मे थैला लिये गुजरती थी, वह चतुराई से छिपाये सोने के दात को नही बल्कि बिन चबाये कागजो की भिची हुई गड्डी को देखा करता था, जिसे इसी मुसकराते हुए मुह ने उस दिन निगल लिया था, जब इस महिला के पहले पति—जारशाही खुफिया पुलिस के एक प्रधान—के घर की अचानक तलाशी ली गई थी।

कोमारेको नही मानता था कि लोग सभी तरह से परिपूर्ण और निष्पन्न होते है। वह उन्हे अपने निर्माण की सुदीर्घ प्रक्रिया मे, अपनी सामाजिक जीवनी के पूरे भार के साथ देखा करता था।

घोडे ने ठोकर खाई। कोमारेको ने रास खीच ली और बस्ती के छोर पर बने आखिरी झोपडे के पास से कदम चाल मे निकल गया। बस्ती

सो रही थी और वह सुमा की असावधानी भरी टाप से उसकी नीद म खलल नही डालना चाहता था। उसन पीछे की तरफ निगाह डाली। बहुत दूर–मुख्य सैक्शन पर–बत्तिया जल रही थी, एक ट्रैक्टर समान गति से धडधड करता हुआ नहर के तल मे रिस आये पानी को उलीच रहा था। बस्ती सो रही थी, नहर के तल पर काम चल रहा था। इस सब का–बस्ती की शातिमय नीद का, ट्रैक्टर के इजन की अविराम धडधड का, सारी निर्माणस्थली के सामान्य रूप से काम करने का वह, कोमारेको, जवाबदह है। भारी जिम्मेदारी के अहसास ने उस पर बोझ नही डाला–उसने उस गव की एक सुखद भावना से भर दिया। कोमारेको ने अपना सीना फुला लिया और रास को झटका दिया। घोडा हलकी चाल से भागन लगा। सिर के ऊपर नैशाकाश चीटियो से भरी बाबी की तरह तारो से भरा हुआ था।

कोमारेको को सिनीत्सिन के चेहरे की सख्त और परेशानीभरी मुद्रा याद आ गई।

"हर किसीको गलती करने का अधिकार है,' उसने बडी स्पष्टता के साथ सोचा, "एक मेरे सिवा। मुझे चूक करने का अधिकार नही दिया गया है।"

और उसीके साथ इसी खयाल की एक कडवी गूज की तरह उसके मन मे यह बात भी उठी

"और फिर भी मै चूक करता ही हू। हा, इसकी तरफ से आखे मूदना ठीक नही। ठीक है कि नेमिरोव्स्की को पकड लिया गया है, मगर वह बहुत दर से पकडा गया–सारे काम को अव्यवस्थित करने का मौका पा जान के बाद। नेमिरोव्स्की के खिलाफ सारे सबूत मैने ही जुटाये थे। लेकिन इसका क्या फायदा? मुझे सबूत पहले ही इकट्ठा कर लेन चाहिए थे। येरेमिन का निष्क्रिय प्रतिरोध और अधापन कोई बहाना नही है। फिर चूक हुई और अब ऊर्तावायेव का मामला है। एकदम अनपेक्षित। सदेह की जरा भी गुजाइश नही। आकस्मिक रिपोट है। अगर ऊर्तावायेव सचमुच इस सबका दोषी है, तो ईमानदारी का एकमात्र रास्ता यह है कि म कम जिम्मेदारी के काम पर तबादला किये जाने का अनुरोध करू"

कोमारको ने अपने होठो को भीच लिया। वह अपने को बहुत अच्छा चेका अधिकारी समझता था, लोगो के आरपार देख लेने की अपनी शक्ति

पर उसे गव था। और तभी अचानक–उ्तावायव। ऊनावायेव के मामल म चव अक्षम्य हागी। ऐसी गलती करोवाला चेका अधिकारा इस याग्य ाही कि गव निर्माणस्थली की सुरक्षा के उत्तरदायित्व का वहन कर सवे।

अगर उ्तावायेव दोषी है," उसन सोचा, 'तो मुझे इस्तीफा दे देना होगा और कोई और काम नेना हागा। किसी दूकान म जाकर आटा तालन का काम।"

नहर-तल में हलचलभरी रात

उस दिन सुबह वलाक को खबर मिली कि स्तालिनाबाद से कग्रीट मिश्रक और चट्टान की मरमाई करने के लिए कप्रेसर आ गय ह और व नदी के दूसरे किनार पर घाट पर इतजार कर रहे हैं। उसने तय किया कि उनके पहुचने तक वह बस्ती मे ही रहेगा और मशीना का खुद ही प्राप्त करेगा। उसे बहुत लबा इनजार करना पडा, क्योकि सारी सुबह घाट पर लकडी ढोनेवाला की भीड रहा, जा पिछले दा दिन स पार करा की अपनी वारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। कग्रीट मिश्रक शाम के करीब पहुचे। मशीनें प्राप्त कर लेन के बाद क्लाक कोश से मिलन के लिए गया और उसस माइन हाइस्ट बनान के लिए कुछ लकडी देने का अनुरोध किया–काफी लकडी आ गइ थी और इसका कोई भरोसा नही था कि दुबारा वह कब आयेगी। कोश न सभी सँभावना स आये लकडी व आवश्यक अनुराधा की गड्डी पर निगाह डाली सरसरी तौर पर यह हिसाब लगाया कि जिसकी आवश्यकता कितनी बडी है और उसे लकडी देन क लिए तैयार हा गया। क्लाक न तय किया कि दा एक्स्केवेटरा का दो एक दिन के भीतर अपन असली काम क लिए मुक्त कर दिया जायगा।

अपनी विजय पर उल्लसित हात हुए क्लाक ने पोलोजोवा और फोरमैन का लान के लिए कार भेज दी। वह नष्ट हुए समय की क्षतिपूर्ति करने के लिए उसी दिन हाइस्ट के निर्माण की तयारी शुरू कर देना चाहता था।

एक वन्ड का बुलवाया गया। टापी पहन एक दाढीवाला वढा आय और विनयपूर्वक दरवाजे की चौखट पर ही खडा हा गया।

"आप माथी प्रोतूला हैं, न?" फोरमैन न पूछा।

जी हा, म कनीमता प्रातूला ही हू।

"हम नहर तल मे एक माइन हॉइस्ट खडा करना है। क्या आप यह काम कर सकेंगे?"

"क्यो नही? कर सकता हू।'

"लेकिन क्या आपने पहले कभी यह बनाया हे?"

"क्या, माइन हाइस्ट? नही, मैंने कभी नही बनाया।'

"चलिये, कोई बात नही। हम आपको खाका और सारे नाप दे देंगे। आप अमरीकी इजीनियर की देखरेख मे काम करेंगे।"

'ठीक हे," क्लीमेती ने रजामदी जताई।

क्लाक न एक कागज पर हॉइस्ट का खाका बनाकर बढई को दे दिया। क्लीमेती कागज को अपनी उगलियो मे थामकर देर तक खाके की तरफ देखता रहा, मानो वह उसे हल करन के लिए दी गई कोई चित्र पहेली हो।

"हा, तो कहिये! समझ मे आ रहा है, न?"

"कागज पर तो सब हमेशा ही बिलकुल ठीक नजर आता है, लेकिन बनाना शुरू करने के बाद इसका क्या ठिकाना है कि क्या बनेगा!"

आप खाके तो समझ लेते है, न?" फोरमैन न उसकी तरफ सदेह-भरी नजरो से देखा।

"हम बढई है। हमारा काम लकडी से बनाना है, कागजो से नही," क्लीमेती ने बुरा मानते हुए जवाब दिया।

"लेकिन, मरे भाई, इसे खाके के बिना अपनी अक्ल से ही नही बनाया जा सकता। क्या आपके यहा ऐसा काई नही, जो खाका को समझता हो?'

"हमन कागजा के बिना ही इमसे भी ज्यादा बडी बडी चीजे बनाई है। तुम बस यह बता दो कि तुम्हारा यह हाइस्ट होगा क्सा—यह कितना ऊचा होगा और कितना चौडा—और हमारी चिता मत कीजिय, हम इसे बिलकुल ठीक बना देंगे।"

तुम कभी किसी खान मे गये हो?

"हा, गया हू। लेकिन यहा तुम्हारी यह खान कहा है?"

अरे, खान नही, लेकिन सिद्धात वही है '

"दखा, सिद्धात विद्धात की बात मैं नही जानता। मैंन इस तरह की काई चीज कभी नही देखी है और इस बार मे मैं झूठ बोलना नही चाहता।'

"तुम भी अजीब आदमी हा! खर, दखो, यह एक तरह का लकडी

का मीनार सा होता है, जो ऊपर की तरफ पतला होता जाता है और उसके ऊपर एक पहिया होता है।'

'जानता हूं।"

"तो यह भी वैसा ही होता है, बस, उसमे कुछ छोटा और पतला होता है और इसमे आने-जाने के पिंजरे की जगह एक्स्केवेटर का डोल ऊपर नीचे जाता है। और सबसे ऊपर, जहा पहिया है, वहा एक तरफ जाता एक छोटा सा मच होता है।"

'लकडी का?"

"हा, यह एक पतली सी पुलिया जैसा होता है और इस तरह बनाया जाता है कि उस पर होकर डोल एक तरफ जा सके। मीनार का पैंदा खुद–नीचे–नहर के तले मे है। यह कोई पचीस मीटर ऊंचा है और ऊपरवाला पहिया घूमता रहता है और डोल को कुए से बाल्टी की तरह खीचता रहता है। ऊपर आ जाने पर डोल को एक तरफ ले जाना होता है। इसके लिए हमे मीनार से लेकर नहर-तल के किनारे तक यह पुलिया बनाने की जरूरत है ताकि डोल उसके साथ जा सके और पत्थरो को लेवा पर उलट सके '

"किस पर?

"लेवा पर–मतलब तटबध पर।'

"तो ऐसा कहो न। हमने कोई अमरीकी भाषा तो पढी नही थी," कनीमेतो ने कनाक की तरफ तिरछी नजर से देखा।

"खैर, तो तुम समझे?"

"इसमे समझने का है क्या–यह तो बिलकुल मामूली चीज है। बस, यह बता दो कि तुम्हारा यह जतर खडा कहा किया जायेगा और मैं तुम्हे बता दूगा कि हमे कितनी और किस किस्म की लकडी की जरूरत है।'

"चलो, कोशिश करते है। हम मवशन की तरफ ही जा रहे है। हमारे साथ ही चले चलो, और खुद चलकर देख लो।"

तीनो कार मे जा बैठे।

नहर-तल मे अब तीनो पारियो मे काम होता था। दिन रात ट्रक खडखडाते रहते, दिन रात दोनो डान एक के बाद एक घरघराते हुए ऊपर उठते, अधबीच मे ही जाकर उलटे हो जाते और पत्थरो को नीचे नहर मे उलट देते और वे नहर की काली या रगत की तूफानी गहराइयो मे

शक्र के ढेला की तरह से घुल जाते। रात के समय चारो ग्रोर मीलो मे नज़र ग्रानेवाला बिजली का एक विशाल गोला नहर-तल पर पूनम के चाद की तरह से निकल ग्राता ग्रौर नीचे, पतली पगडडी पर हथगाडिया के हत्थे थामे लोगो की एक ग्रतहीन कतार लगातार इधर उधर भागती रहती, सर्चलाइट की रोशनी मे जिनके चेहरे सफेद पाउडर से थुपे जैसे लगते। वे ग्रपनी हथगाडिया को खाली करते ही फिर लपकते ग्रा जाते ग्रौर एकाकी मकान की कारनिस पर व्यग्रतापूर्वक चलते निद्राचारियो की तरह उनके ग्राने जाने का यह सिलसिला लगातार चलता चला जाता।

कार जब बस्ती पहुची, तो ग्राधी रात हो चुकी थी। यहा का ग्रधेरा प्रकाश की सूइयो से छिदा हुग्रा था। नहर-तल के ऊपर प्रकाश का उद्दीप्त गोला लटका हुग्रा था, मगर खुद नहर-तल मे खामोशी छाई हुई थी—एक्स्केवेटर खामोश खडे थे, उनकी बाहे नमाजियो की तरह ग्रासमान की तरफ उठी हुई थी।

"दोनो एक्स्केवेटर क्या बेकार खडे है? क्या पट्रोल नही है?'

दुबला पतला सौम्य-स्वभाव फोरमैन ग्रद्रेई सवेल्यविच चिता के मारे ग्रपनी सीट पर उठ खडा हो गया।

'नही, यह नही हो सकता—कल ही तो उन्हे पट्रोल मिला था। समझ मे नही ग्राता कि क्या बात है। दोनो एक्स्केवेटर एकसाथ ही तो रुक जानेवाले नही थे।"

कार खडी हो गई। वे उतरे ग्रौर गिरते पडते ढाल पर चढने लगे। कुछ लोग ऊपर नहर-तल के छोर पर खडे हुए थे। क्लाक ने उनमे कीश ग्रौर सिनीत्सिन को चीन्ह लिया। कोई गभीर ही बात होगी।

"क्या बात है?"

सिनीत्सिन ने ग्रपनी घडी की तरफ देखा। "वे दालो-वरजीवाले काम पर नही ग्राये है। फिर खेल करने लगे है!"

"साथी पोलोजोवा!' सिनीत्सिन ने ग्रावाज दी। "मैने ग्रभी नासिरुद्दीनोव को छोकरो को खबर देने ग्रौर फौरन एक कोम्सोमोल टुकडी जुटाने के लिए भेजा है। ग्राप कार लेकर कूरगान चली जाइये। ग्रापको जो भी कोम्सामोली मिले, उन्हे ले ग्राइये।"

"ठीक है, साथी सिनीत्सिन।"

वह तेजी के साथ ढाल पर उतर गई।

"एक्स्केवेटर तो ठीक है, न?" कीश न किसीसे पूछा।
क्लाक चुपचाप उसके पीछे पीछे चल दिया।
साथियो, तयार रहिय। हम लाग घटे भर के भीतर फिर काम करना शुरू कर देंगे।"
एक्स्केवेटर चालक ने सहमति मे सिर हिला दिया। चमडे का गरम कोट पहने होने पर भी वह काप रहा था।
"आपको क्या हो रहा है? आपकी तबीयत तो खराब नही?"
'मलरिया ह। कोई बात नही "
'आप घर ही क्या नही रह गये? पहली पारी के चालक स आपकी जगह ले लेन को कहा जा सकता था।'
'कोई चारा नही था। वह बीमार है। कहते हैं कि उस निमानिया हो गया है। दूसरी पारी के चालक न उसकी जगह दो पारी लगातार काम किया है।"
"धत तेरी की! खैर, क्या आप काम खीच लगे? कल हम आपका बदली का जुगाड कर लेगे।"
'मैं खीच लूगा। यह कोई पहला ही मौका तो नही है।"
उसने अपन चमडे के कोट का कालर ऊचा किया और चालक-कक्ष म जा बैठा।
"अद्रेई सवल्येविच, अद्रेई सवल्यविच!" क्लीमेती फारमैन की आस्तीन को झटके द रहा था, 'आपका वह जतर कहा खडा किया जायगा? वहा नीचे, है न?'
"भाड मे जाये तुम्हारा यह जतर! दखत नही, इस वक्त यहा उसकी बात नही हो रही है?'
'आप मुझे बस यह दिखा दीजिये कि वह लगेगा कहा। सार नाप-जोख मैं खुद ही ल लूगा।'
"वहा, नीचे। हा, हाइस्ट लगान स पहले हम अभी इस जगह से तीन मीटर चट्टानी पत्थर और हटाने ह। आर अभी पत्थरो को उठाकर ल जाने के लिए कोई नहा है, इसलिए हाइस्ट का शायद अभी इतजार ही करना पडेगा।"
क्लामती न अपनी जेब से पमाना निकाला और उतरकर नम्बर-तन की तरफ जाने लगा।

कुछ देर बाद क्लाक ने, जो तटबंध के किनारे पर अयमनस्कतापूर्वक चहलकदमी कर रहा था, दूर से आती एक मोटर और समवेत स्वर में गाये जानेवाले गान की आवाज सुनी। इस गीत ने उसे मास्को में सुने उस गीत की याद दिला दी, जब लाल सैनिकों की टुकडी सड़क पर उसके बराबर से गाती हुई गुजरी थी।

कुछ मिनट के बाद एक कार नीचे तटबंध पर आकर खडी हो गयी। कोई दर्जन भर तरुण, जो लडकों से कुछ ही बडे रहे होंगे, एक लडकी के साथ साथ कार से उतर पडे—क्लाक ने देखा कि लडकी पालोज्ञावा है। नौजवान गाते गाते ही लपकते हुए ऊपर चढने लगे, मानो वे धावा मारकर उसे जीतना चाह रहे हों। क्षण भर को क्लाक को यह लगा कि जैसे वह सैनिकों को युद्धाभ्यास करते देख रहा हो। ऊपर चढ जाने के बाद कोम्सामोली सिनीत्सिन के सामने कतारबद्ध खडे हो गये।

"नासिरद्दीनोव कहा है?"

"अभी आ रहे हैं। हम उनसे आगे निकल आये हैं।'

नासिरद्दीनोव अन्य कोम्सोमोलिया के साथ दूसरी तरफ से आ रहा था। वे लोग दुहरी कतार में चले आ रहे थे। सर्चलाइट की चमक में उनके सावले चेहरे कलई चढे जैसे लग रहे थे। गीत एक बार फिर फूट पडा और वे खडे ढाल पर एक कतार में लपकते हुए उतरकर नहर-तल की तरफ जाने लगे।

"नासिरद्दीनोव!"

"हा, साथी सिनीत्सिन!"

"तुम अच्छे संगठनकर्ता नही हो। तुम्हारे हथगाडी लेकर काम करने का क्या फायदा—यह तो कोई भी कर सकता है। कोम्सोमोल समिति के सचिव को सगठन करना आना चाहिए। यह क्या—क्या तुम इन पचीस से ज्यादा लोग इकट्ठा नही कर सकते थे?'

'रात का वक्त है, साथी सिनीत्सिन, आधे घटे के भीतर सभी लोगो को नही ढूढा जा सकता था। कल मैं ज्यादा अच्छा इतजाम करूगा, मगर आज मैं और ज्यादा लोगो को नही जमा कर पाया—इसलिए खुद मुझे काम करना होगा।"

नासिरद्दीनोव मुसकरा दिया, सावले चेहरे में उसके दात एक

सफेद फाक की तरह चमक उठे। जवाब का इनजार किये बिना वह लपककर आगे र पीछे चला गया।

साथी स्ताक!'

पगडण्डी के उभार पर पोलातावा खड़ी हुई थी।

आप अब घर चले जाइये। म यहां लड़का के साथ ही काम करगा। आप सुबह की पारी पर आ जाइये। मैं आपका यहीं इतजार करूगा।"

नीचे पहली हथगाडिया न खड़खड़ाना भी शुरू कर दिया था और गनियो की आवाजे आने लगी थी।

अद्रई मवेत्यविच, अद्रेई सवेल्यविच!" क्लीमती फाग्मैन की आस्तान को झटक जा रहा ता, मैंन सारे नाप ले लिये हैं। इस बनाया तो जा मकता है। कल ही नकडा का तैयार कर लेना चाहिए। मैं उसे खुद छाटूगा। लकड़ी बिलकुल ठीक ही किस्म की आई है। हम परसो ही काम शुरू कर देगे। लेकिन आप यह कह रहे थे कि पहले चट्टानी पत्थर हटाने होगे। लेकिन क्या इस काम को ये लोग करगे?' उसने कोम्सोमोलियो की तरफ इशारा किया।

फोग्मैन ने सिर के इशारे से सहमति प्रकट की।

"हा, यही। नहीं, ता और कौन?"

'लेकिन उनमे इतनी ताकत कहा है? य नही कर पायेंगे!"

जितना कर सकत हैं, उतना तो करेंगे ही।

इन्ह बहुत वक्त लगेगा। ऐसे काम क लिए अच्छे हट्टे कट्टे आदमी चाहिए—य बच्चे तो महीन भर म भी कम नहीं कर सकते। क्या, इसके बिना काम नही चल सकता?"

नहीं, नहीं चल सकता। म तुमसे पहले ही कह चुका हू। अगर तुम्ह इतनी ही चिन्ता है, तो जाओ, पत्थर अपने आप हटाओ। मीन मग्न तो सभी निकाल सकते ह, लेकिन जब हाथ बटाने का सवाल आता है, तब सभी की नानी मर जाती है!'

फारमन एक्स्केवेटर की तरफ चला गया।

हाथ ऊपर-नीचे, ऊपर नीचे आ-जा रहे थे। नाने ठेला के भार र कमर तक्त रुकाए रह थे। छोकरे अपनी हथगाडिया के हत्था का उसी तरह, जैसे किसान अपने हल का पकडता ह, पकड़े हुए उन पर अपना पूरा जोर

के साथ चुके हुए थे और उनकी हथगाडिया पथरीली जमीन म हला की तरह ही उलट और अटक रही थीं।

"न, छोकरा को आदत नहीं है," क्लाक न मन म कहा, ' इन दो टोलिया का काम ये नही कर सकते।"

वह अब भी ढाल की चोटी पर खडा-खडा अविश्वास के साथ नीचे की तरफ देख रहा था। पाल्तोजोवा और हरी टापी पहन एक लडका हथगाडिया से गिरे पत्थरा का एक्स्केवेटर के डोल म डाल रह थे। क्लाक वहा का वही खडा रहा। सच पूछो तो उसके करन के लिए कुछ भी नही था, पर उसे लग रहा था कि वहा से चले जाना अटपटा लगेगा। वह यह दिखावा करत वही रुका रहा कि जैसे काम की निगरानी कर रहा है मगर साथ ही उस यह भी लग रहा था कि खाली दशक की तरह स खडे रहना कितना मूखतापूण है। उसन फोरमैन की तलाश मे आखे उठायी, मानो सोच रहा हो कि फोरमन जो कर रहा है, उससे उसे भी कुछ करन का इशारा मिल जायेगा।

कुछ ही दूर टोपी पहने दाढीवाला बढई नीच पेंदे की तरफ देख रहा था। वह भी क्लाक की ही तरह वहा जमा हुआ था, मानो उसे भी यह न मालूम हा कि वह खुद क्या करे। क्लाक को यह सादश्यता क्षोभजनक लगी। वह कार की तरफ जान के लिए मुडा ही था कि तभी उसन देखा कि दढियल पगडडी पर उतरकर तल की तरफ जा रहा है। क्लाक कुतूहलवश ठहर गया। नीचे पहुचकर दढियल लडको को धकेलत हुए आगे निकल गया और उसने जमीन पर से एक गैंती उठा ली। मिनट भर वह अनिश्चय के साथ खडा रहा, फिर वह मुडा और फिर उसन सबसे दुबले लडके के पास जाकर, जिसने अधबीच मे ही अपनी हथगाडी को उलट दिया था, हाथ से उसे नरमी के साथ अलग कर दिया और उसके हाथ मे गती थमा दी—वैसे ही, जसे बच्चे को नाराज न होने देने के लिए उसके हाथ मे खिलौना दे देते ह—और हथगाडी को फिर लादकर उसे सफाई के साथ तख्ता पर से डोल की तरफ ले गया। नीचे से वाहवाही की गुजार फूट पडी।

क्लाक जहा का तहा खडा था। उसे और भी ज्यादा अटपटा लगन लगा। उस लगा कि अब अगर वह मुडकर कार की तरफ जाने लगेगा, तो हर कोई उसकी तरफ देखेगा।

तभी एक बिलकुल अप्रत्याशित बात हुई। एक एक्स्केवेटर का बिलकुल

सफेद फाक की तरह चमक उठे। जवाब का इतजार किये बिना वह लपककर औरो के पीछे चला गया।

साथी क्लाक।"

पगडडी के उभार पर पालोजाया खडी हुई थी।

'आप अब घर चले जाइये। म यहा लडको के साथ ही काम करुगी। आप सुबह की पारी पर आ जाइये। मैं आपका यही इतजार करुगी।

नीचे पहली हथगाडिया न खडखडाना भी शुरु कर दिया था और गनिया की आवाजे आने लगी थीं।

'अद्रेई सवेल्येविच, अद्रेई सवेल्येविच।" क्लीमेती फारमैन की आम्तीन को झटके जा रहा था, 'मन सारे नाप ले लिये ह। इसे बनाया जा सकता है। कल ही लकडी का तैयार कर लेना चाहिए। मैं उसे खुद छाटूगा। लकडी बिलकुल ठीक ही किस्म की आई है। हम परसो ही काम शुरु कर देंगे। लेकिन आप यह कह रहे थे कि पहले चट्टानी पत्थर हटाने होंगे। लेकिन क्या इस काम को ये लाग करेंगे?" उसन काम्सोमालियो का तरफ इशारा किया।

फोरमैन ने सिर के इशारे से सहमति प्रकट की।

हा, यही। नही, तो और कौन?"

लेकिन उनम इतनी ताकत कहा है? ये नही कर पायेंगे।"

"जितना कर सकते है उतना तो करेंगे ही।

'इह बहुत वक्त लगेगा। ऐसे काम के लिए अच्छे हट्टे कट्टे आदमी चाहिए – ये बच्च तो महीने भर म भी इसे नही कर सकते। क्या, इनके बिना काम नही चल सकता?"

नहीं, नहीं चल सकता। म तुमसे पहले ही कह चुका हू। अगर तुम्हे इतनी ही चिता है, तो जाओ, पत्थर अपने आप हटाओ। मान मरा ता सभी निकाल सकते है, लेकिन जब हाथ बटाने का सवाल आता है, तब सभी की नानी मर जाती है।"

फोरमन एक्स्केवेटर की तरफ चला गया।

टाब ऊपर-नीचे, ऊपर नीचे आ जा रहे थे। नीचे ठेला क भार म दबे तख्त कराह रहे थे। छोकरे अपनी हथगाडिया के हत्या को उसी तरह, जैसे शिकारी अपने कुत्ता को पकडत ह, पकडे हुए उन पर अपना पूरा जोर

के साथ झुके हुए थे और उनकी हथगाडिया पथरीली जमीन मे हला की तरह ही उलट और अटक रही थीं।

"न, छोकरा को आदत नही है," क्लाक ने मन म कहा, "इन दो टोलियो का काम ये नही कर सकते।"

वह अब भी ढाल की चोटी पर खडा खडा अविश्वास के साथ नीचे की तरफ देख रहा था। पोलोज़ोवा और हरी टोपी पहने एक लडका हथगाडिया से गिरे पत्थरा को एक्स्केवटर के डाल मे डाल रहे थे। क्लाक वहा का वही खडा रहा। मच पूछा, तो उसके करन के लिए कुछ भी नही था, पर उसे लग रहा था कि वहा से चले जाना अटपटा लगेगा। वह यह दिखावा करते वही रुका रहा कि जैसे काम की निगरानी कर रहा है मगर साथ ही उस यह भी लग रहा था कि खाली दशक की तरह से खडे रहना कितना मूखतापूण है। उसन फोरमैन की तलाश मे आखें उठायी माना सोच रहा हो कि फोरमन जो कर रहा है, उससे उसे भी कुछ करने का इशारा मिल जायेगा।

कुछ ही दूर टोपी पहने दाढीवाला बढई नीचे पेंदे की तरफ देख रहा था। वह भी क्लाक की ही तरह वहा जमा हुआ था, माना उस भी यह न मालूम हो कि वह खुद क्या करे। क्लाक को यह सादश्यता क्षोभजनक लगी। वह कार की तरफ जान के लिए मुडा ही था कि तभी उसन दखा कि दढियल पगडडी पर उतरकर तल की तरफ जा रहा है। क्लाक कुतूहलवश ठहर गया। नीचे पहुचकर दढियल लडका को धकेलते हुए आगे निकल गया और उसन जमीन पर से एक गैती उठा ली। मिनट भर वह अनिश्चय के साथ खडा रहा, फिर वह मुडा और फिर उसन सबसे दुबले लडके के पास जाकर, जिसन अधबीच मे ही अपनी हथगाडी को उलट दिया था, हाथ से उसे नरमी के साथ अलग कर दिया और उसके हाथ मे गैंती थमा दी—वैसे ही, जैसे बच्चे का नाराज़ न होने देने के लिए उसके हाथ म खिलौना दे देते है—और हथगाडी को फिर लादकर उसे सफाई के साथ तख्ता पर से डोल की तरफ ले गया। नीचे से वाहवाही की गुजार फूट पडी।

क्लाक जहा का तहा खडा था। उसे और भी ज्यादा अटपटा लगने लगा। उस लगा कि अब अगर वह मुडकर कार की तरफ जाने लगेगा, तो हर कोई उसकी तरफ देखेगा।

तभी एक बिलकुल अप्रत्याशित बात हुई। एक एक्स्केवेटर का बिलकुल

ऊपर तक भरा डोल उठकर ऊपर गया नहीं। नीचे लोगों ने शोर किया और उसकी जंजीर को झटका, मगर डोल वहीं निश्चल पड़ा रहा।

कनाक तेजी से एक्स्केवेटर के पास गया और फोरमैन से जा टकराया, जो चालक की निश्चल देह को उसके कक्ष से बाहर खींचकर ला रहा था। कनाक ने चालक को पत्थरों पर लेटाने में उसकी सहायता की।

"क्या बात है?" उसने फोरमैन के कान के पास चिल्लाकर कहा और फोरमैन को यद्यपि अंग्रेजी नहीं आती थी, फिर भी वह समझ गया और बोला

"मलेरिया।"

कनाक भी समझ गया। चालक बेहोश हो गया था। कनाक ने उसके कोट के बटन खोले, तो उसके नीचे से भाप सी उठने लगी। फोरमैन पानी लाने के लिए लपका। कनाक ने मरीज के माथे पर अपना हाथ रखा। माथा जैसे जल रहा था – उसे कम से कम चालीस डिग्री सेंटीग्रेड बुखार रहा होगा। फोरमैन पानी लेकर दौड़ा दौड़ा आया और उसे होश में लाने लगा। बीमार ने अपनी आँखें खोलीं। वे जल सी रही थीं और उनमें पुतलियाँ पारे की बूंदों की तरह ऊपर नीचे फुदक रही थीं।

कनाक ने मरीज के कंधों को पकड़ा और फोरमैन को उसके पैर पकड़ने का इशारा किया। दोनों मिलकर उसे नीचे खड़ी कार तक ले गये। कनाक ने अपने हाथ से ड्राइवर को बस्ती की तरफ इशारा किया और खुद तटबंध पर चढ़ने लगा। फोरमैन खामोशी से उसके पीछे पीछे हो लिया। निश्चल खड़े एक्स्केवेटर के पास आकर दोनों खड़े हो गये।

फोरमैन ने हाथ हिलाया। शब्दों में रूपांतरित करने पर इस इशारे का मतलब था "खेल खतम!"

कनाक ने ढाल से नीचे की तरफ निगाह डाली, जहाँ निश्चल पड़े डोल के आसपास लोगों की एक भीड़ जमा हो गई थी। फिर अपनी बर्फ सी सफेद पतलून पर अफसोसभरी निगाह डालते हुए वह मुड़ा और एकदम चालक-कक्ष में घुस गया।

फोरमैन की अचरज के मारे आँखें फट गई।

डोल थरथराया और झटके के साथ ऊपर की तरफ उठ गया। नीचे से एक हर्षपूर्ण शोर उठा और बांध की दूसरी तरफ का पानी जैसे गुस्से के मारे खौलने लगा।

होती हैं और इन सनका को महना होता है–कभी यह मत जताम्रा कि तुम उस पर हस रहे हो, क्योकि कोई भी मालिक इस वात को बरदाश्त नहा करेगा। जहा तक निर्माणस्थली पर आनेवाले विदेशी विशेषज्ञा की बात थी, अद्रेई सवेल्यविच उनकी कदर करता था, क्याकि वे इस बात को समझत थ कि काम तो काम ही है, जिसमे कोई "तडक भडक" नही होती और व भी "सनका" का व्यग्यपूर्ण आखा से देखत थे। व खुलकर भी ऐसा कर सकते थे, मगर इस मामले मे वे शिष्टाचार के सामान्यत स्वीकृत नियमा का ही पालन करते थे।

रात मे पारी भर एक मामूली एक्स्केवेटर चालक की तरह काम करने के लिए एक अमरीकी इजीनियर का चालक कक्ष मे बैठ जाना–इस तरह की कोई भी बात देखन का अद्रेई सवल्येविच का यह पहला मौका था। ढग से दखने पर यह भी एक "मनक" ही थी, मगर इसे मात्र एक व्यग्यपूर्ण मुसकान के साथ नहा उडाया जा सकता था। यह काम के कवहरा के खिलाफ जाता था। अद्रेई सवेल्येविच का इससे बहुत परशानी हुई।

"भई वाह, यह तो खूब चना रहा है!" डाल को इतनी तजी क माथ उठते गिरते देखकर कि लोग मुश्किल से पूरी तरह से भर पा रहे थे, अद्रेई सवल्येविच न अपन मन मे कहा।

अब सकोच का अनुभव करन की उसकी बारी थी। तटबध के किनार पर बिलकुल अकेला खडा और अपने चारा तरफ नजर डालता हुआ वह सोच रहा था कि इस असामान्य स्थिति मे उसे क्या करना चाहिए। जाहिर था कि ऐसे वक्त यहा खाली खडे रहना ठीक नही था, जब विदेशी इजीनियर तक काम म सहायता द रहा था।

गैती की ठक ठक और हथगाडिया के पहिया के चू चू का आवाज अब पहले से भी ज्यादा जोर के साथ गुजित हो रही थी।

अद्रेई सवेल्यविच को तनाव की ही तरह एक आकस्मिक घटना न बचा लिया। अचानक नीचे से एक चाख सुन पडा और एक आदमी जमीन पर गिर पडा फिर वह उठा और मिट्टी की दीवार का सहारा लेकर खडा हो गया।

तब अद्रेई सवेल्यविच नीचे उतर गया, मानो यह देखने के लिए कि क्या हो गया है। नीचे अपन को पसीने म तर लोगा क बीच पाकर उसन बगल पडी गडबड म बिना किसी की निगाह म आये एक गैता उठाई

और टोपी को आखो तक खीचकर वह शर्माते शर्माते पत्थर तोडने लगा।

पहली शिफ्ट के लोग जब अगली सुबह को काम पर आये, तो वे सीधे ही नहर तल म उतरकर नही चले गये। उसक पहले ऊपर एक फौरी सभा हुई। सभा की शुरुआत ट्रेड यूनियन समिति के सचिव गालत्सेव ने की, जो हलके रग के बाल और लबी टागावाला दुबला पतला आदमी था। उसके बालो और बरौनियो की चूजे जैसी सफेदी के कारण, जो धूप मे जल सी गई लगती थी, उसकी उम्र का अदाजा लगाना बहुत मुश्किल था। निर्माणस्थली पर उसे "मिस्री" के नाम स पुकारा जाता था, शायद इसलिए कि उसे देखकर यही लगता था कि वह रुई के गोदाम मे सोया था और उसे रोयें का झाडने का वक्त नही मिल पाया और उसके सिर, भौंहो और बेहजामत चेहरे पर रुई का सफेद रोया लगा रह गया है।

उस दिन सुबह सुबह ही गालत्सेव की सिनीत्सिन से बडी अप्रिय बातचीत हुई थी–सिनीत्सिन ने उसे सुबह चार बजे बिस्तर से घसीटकर निकाल बाहर किया था। यह उन बातचीतो मे एक थी, जिनमे एक बोलता रहता है और दूसरा बिलकुल खामोश रहता है। हुआ यह कि पिछली शाम को–पाप छिपाये नही छिपता–गालत्सेव न छोटे खजाची के बच्चे की साल गिरह के उपलक्ष्य मे एक बोतल वोदका पी थी और रात को दो बजे घर लौटने के बाद दीन दुनिया को भुलाकर सो गया था। सिनीत्सिन से यह सुनकर कि दाला बरजीवाले काम पर नही पहुचे, उसन यह बिलकुल वाजिब बात कहकर बचने की कोशिश की थी कि वह रात भर तो नहर-तल मे बैठा रह नही सकता। लेकिन सिनीत्सिन न उसकी तरफ ऐसी अर्थपूर्ण नजर दौडाई कि गालत्सेव के मुह से फिर बात नही निकल सकी। मन ही मन उसने सभी टोली समितियो का अविलब पैरो पर खडा करने का सकल्प किया।

तीन घटे के भीतर सभा का आयोजन हो गया।

पत्थरो के ढेर पर, जिसे मच का काम देना था, चढते हुए गालत्सेव ने अनुभव किया कि उसके भीतर वक्तत्व का तूफानी प्रवाह उमड रहा है।

उसन मौके के अनुसार एक अच्छी गरमागरम तकरार झाड दी, कारी कमाई के लोभियो को गरमागरम गालिया दी–चटपटी जरूर, लेकिन अश्लील नही, और अपन भाषण मे औद्योगिक वित्तीय योजना तक को

' बोल सकते हो ?"

"क्या, क्या तुम्हारे खयाल म मेरे मुह मे जवान है ही नही ?'

"तो मच पर चले जाओ   साथियो, अब साथी प्रातूला बोलेगे, जिन्होने रात की सारी पारी कोम्सोमोल टुकडी के साथ काम किया है।"

क्लीमेंती कुछ परेशान सा वहा खडा होकर हाथो म अपनी टोपी को मरोडने लगा

"हा तो, साथियो, बात यह है कि मुझे यहा एक होस्ट बनाना है। इसके साथ एक मच होना है, ताकि पहिये के सहारे खीचे पत्थर उस पर होकर चले जायें। इससे आपको बडी मदद मिलेगी और हम बढइयो के लिए भी यह बडा दिलचस्प काम है। बस, अकेली दिक्कत यह है कि मुझे यह बात पसद नही कि कोई काम पडा रहे। अगर कोई मुझे कोई काम देता है, तो मैं उसे फौरन ही पूरा कर डालना चाहता हू। तो, यह अपने अन्द्रेई सवेल्येविच है, है न यह बोले कि कुछ नही किया जा सकता। यह बोले कि पत्थर ले जाने के लिए कोई नही है। यह बोले कि जब तक पत्थर जाता नही, तब तक रुके रहो। लेकिन मैंने उनसे कहा–क्या ये लोग पत्थर ले जा सकते है? मैंने कहा कि इस हिसाब स तो काम रुका ही रहेगा। और कुछ ही पहले अन्द्रेई सवेल्येविच न मुझसे कहा था–तुम्हारा यह जो जतर है न, यह कोई मामूली चीज नही है। वह बोले कि इसमे बडा भारी सिद्धात लगा है और तुम इसे कागजो के बिना नही बना सकते। तो मैंने उनसे कहा–भाई, हम इससे भी ज्यादा बडी बडी चीजें बना चुके है–हमने मिले बनाई है, पवनचक्किया बनाई है, तो तुम्हारे इसी जतर मे क्या सुरखाब के पर लगे हुए है कि जो हम इसे नही बना सकते? मैंने कहा–तुम दिखा भर दो कि इसे कहा बनाया जाना है और हम इसे बिलकुल ठीक बना देंगे। और तब देखा कि अभी तो पत्थर भी नही हटाया गया है और यह बोले कि जब तक यह नही होता, तब तक हम कुछ नही बना सकते। लेकिन काम को टालना किसीको भी अच्छा नही लगता–जहा कहा कि यह काम करना है, तो उसमे फौरन ही लग जाने को मन करता है। और तब देखा यह कि अभी तो पत्थर ले जाना है–जब यह ही नही हुआ तो भला हम बना कैसे सकते ह? बेशक, यह काम तो करना ही होगा। नही, तो काम रुका ही रहेगा, बस   "

घसीटते हुए बताया कि कोम्सोमोल टुकडिया ने अपने कायभार की ग्यारह घन मीटर से अतिपूर्ति की है।

वह भाषण हमेशा उसी तरह दिया करता था, जिस तरह वह ताश खेला करता था—तुरुपा को वह आखिर तक बचाकर ही रखता था, जिसस श्रोताओं के सवाल करने या टोकने पर उसे चुप न रह जाना पड। आज भी वह बिलकुल कायदे से ही अपनी चाल चल रहा था, क्योंकि उसके हाथ म तीन बहुत अच्छे तुरुप थे—क्लाक, अद्रेई सबल्यविच और बढई क्लीमेंती। तुरुप पसीने से तर और तेल से सन भीड मे ही खडे थ। गालत्सेव ने उनका बिना जल्दबाजी के बारी बारी से उपयोग किया। सबसे पहले उसन क्लीमेंती को लिया—एक बगचेतन मजदूर, जिसन आकस्मिक सकट का उन्मूलन करने मे अपने आपको दिलोजान से झोक दिया था, फिर वह अद्रेइ सबेल्यविच पर आया—औद्योगिक वित्तीय योजना पूर्ति के लिए साझे सघप म मजदूर जनता के साथ इजीनियरी टेक्निकल स्टाफ क एकजुट होने का नमूना, लेकिन उसने आखिर जब अमरीकी इजीनियर क बारे मे कहना शुरु किया, जिसन बीमार पड गये एक्स्केवेटर चालक की जगह रात की सारी पारी भर काम किया था, तो तालियो की अविराम गडगडाहट शुरू हो गई। भीड मे से किसीन चिल्लाकर कहा 'उछालो उसे'' हतप्रभ क्लाक को उसके जबरदस्त प्रतिरोध के बावजूद कई हाथो न पकडकर उठा लिया और चार बार ऊपर उछाल दिया और इसके बाद उसकी जमीन पर गिरी टोपी को बडे आदर के साथ उठाकर उसे दे दिया गया और उसकी अपनी पतलून झाडने मे मदद की और दोषी भाव स मुसकराते हुए उसे मुक्त कर दिया गया।

गालत्सेव कामचलाऊ मच से नीचे उतरा। वह अपने भाषण और उससे पैदा हुए प्रभाव से खूब सतुष्ट था। पत्थरो स उतरते समय वह ठोकर खा गया और सीधा क्लीमेंती की बाहो म जा पडा।

'क्या तुम इन लोगो से कुछ शब्द नही कहोगे, साथी क्लीमेंती?'' अपने को सभालते हुए उसने ऐसे कहा, मानो उस समय वह क्लीमेंती की ही तलाश म था।

सवाल इतना अप्रत्याशित था कि क्लीमेंती ने अपनी टोपी उतारकर हाथ म ले ली।

"क्या म?"

बोल सकते हो?"

"क्यो, क्या तुम्हारे ख्याल मे मेरे मुह मे जबान है ही नही?"

"तो मच पर चले आग्रो साथियो, ग्रव साथी प्रीतूना बोलेगे, जिन्होने रात की सारी पारी कोम्सामोल टुकडी के साथ काम किया है।"

क्लीमती कुछ परेशान सा वहा खडा होकर हाथो मे अपनी टोपी को मरोडने लगा

"हा तो, साथियो, बात यह है कि मुझे यहा एक हायस्ट बनाना है। इसके साथ एक मच होता है, ताकि पहिये के सहारे खीचे पत्थर उस पर होकर चले जायें। इससे आपको बडी मदद मिलेगी और हम बढइयो के लिए भी यह बडा दिलचस्प काम है। बस, अकेली दिक्कत यह है कि मुझे यह बात पसद नही कि कोई काम पडा रहे। अगर कोई मुझे कोई काम देता है, तो मै उसे फौरन ही पूरा कर डालना चाहता हू। तो, यह अपने अन्द्रेई सवल्येविच है, है न यह बोले कि कुछ नही किया जा सकता। यह बोले कि पत्थर ले जाने के लिए कोई नही है। यह बोले कि जब तक पत्थर जाता नही, तब तक रुके रहो। लेकिन मैने उनसे कहा—क्या ये लोग पत्थर ले जा सकते है? मैने कहा कि इस हिसाब से तो काम रुका ही रहेगा। और कुछ ही पहले अन्द्रेई सवल्येविच ने मुझसे कहा था—तुम्हारा यह जो जतर है न, यह कोई मामूली चीज नही है। वह बोले कि इसमे बडा भारी सिद्धान्त लगा है और तुम इसे कागजो के बिना नही बना सकते। तो मैने उनसे कहा—भाई, हम इससे भी ज्यादा बडी बडी चीजे बना चुके है—हमने मिले बनाई है, पवनचक्किया बनाई है, तो तुम्हारे इसी जतर मे क्या सुरखाब के पर लगे हुए है कि जो हम इसे नही बना सकते? मैने कहा—तुम दिखा भर दो कि इसे कहा बनाया जाना है और हम इसे बिलकुल ठीक बना देंगे। और तब देखा कि अभी तो पत्थर भी नही हटाया गया है और यह बोले कि जब तक यह नही होता, तब तक हम कुछ नही बना सकते। लेकिन काम को टालना किसीको भी अच्छा नही लगता—जहा कहा कि यह काम करना है, तो उसमे फौरन ही लग जाने को मन करता है। और तब देखा यह कि अभी तो पत्थर ले जाना है—जब यह ही नही हुआ, तो भला हम बना कैसे सकते है? बेशक, यह काम तो करना ही होगा। नही, तो काम रुका ही रहेगा, बस "

ज्यादा लोगो की समझ मे नही आया कि क्लीमेती क्या कह रहा है, मगर वह काफी देर तक बोलता रहा, बल्कि कुछ जाश तक मे आ गया और पत्थरा के ढेर पर से उतरते हुए अपनी टोपी से मुह का पसीना पाछने लगा। हर किसीने जार से तालिया बजाईं– उसने जो कहा था, उसके लिए नही, बल्कि रात मे उसने जितनी हथगाडिया ढोई थी, उसके लिए।

कोम्सोमोली नहर-तल से बाहर आ गये, क्योंकि शिफ्ट अभी अभी खत्म हो गई थी। वे उल्लासपूर्वक शोर मचाते हुए क्लाक के आसपास इकट्ठा हो गये।

नहर-तल मे काम करने की उस स्मरणीय रात के बाद से क्लाक जिधर भी मुह करता, वही चेहरे उसकी आखो के सामने आ जाते थे। सडक पर, खान के कमरे मे, निर्माणस्थली पर, सिनेमा मे–सब कही ये अपरिचित सावले चेहरे मित्रतापूर्ण मुसकराहट के साथ उसका अभिवादन करते। पहले तो क्लाक को यह देखकर अचरज हुआ कि उसके परिचितो का दायरा कितना बडा है। उनके इस अभिवादन मे कोरी औपचारिकता नही थी। वे उसके साथ मात्र एक परिचित की तरह नही, बल्कि अपने ही एक आदमी की तरह पेश आते। क्लाक मुसकराहट के साथ उनके अभिवादन का प्रत्युत्तर देता। यहा आने के बाद के प्रारभिक सप्ताहो मे वह जिस जबरदस्त अकेलेपन का अनुभव किया करता था वह इन लोगो की मृदु मुसकाना मे धीरे धीरे विलीन हो गया था, जिनके साथ उसने एक शब्द का भी आदान प्रदान नहीं किया था, मगर जिनकी आखें बस मित्रता की भाषा ही बोलती था।

एक बार रात मे काफी देर से बस्ती की तरफ लौटते समय क्लाक का ध्यान इस बात की तरफ गया कि कोई उसके पीछे पीछे आ रहा है। अगली शाम को पीछे की तरफ घूमकर देखने पर उसने पाया कि एक स्याह सी आकृति उसके कोई दस कदम पीछे पीछे चला आ रहा है। यह बार आकस्मिक बात ही नहीं हो सकती था। क्लाक ने पावाशाना को इस बार मे बताया, तो उसने कुछ दोषी भाव से उसे बताया कि उन धमकीभरे पत्रो के बारे मे जानने के बाद कोम्सोमोलियो ने इस ढग से उसे सारी रातो मे घर पहुचाने का जिम्मा ले लिया है कि सदा मे हारे गत

को घर लौटते समय कही उसके साथ कोई बुरी बात न हो जाय। क्लाक ने बुदबुदाकर कुछ न समय म ग्रानवाली बात कही—यह कहना मुश्किल था कि इस तरह की चौकीदारी से उसे खुशी हुई या नाराजी। ग्रसल म उसे बस सकोच हो रहा था, लेकिन यह सकोच स्नेह की एक ऐसी भावना स परिपूण था, जिसस उसे ग्रच्छा ही लगा। ग्रब निर्माणस्थली पर घूमते समय वह चौकन्ना होकर ग्रपने ग्रासपास नहा दखा करता था, जैसा कि वह पहले किया करता था। वह ग्रब सभी तरफ से ग्रनगिनत ग्रदृश्य मित्रा से घिरे होने की एक नई ग्रौर सुखद ग्रनुभूति से भरा हुग्रा था।

इस समय, जब काम्सामोली उसके ग्रासपास इकट्ठा हो रहे थे, वह उनमे कोई ग्रच्छी बात कहना, उन्ह यह समझाना चाह रहा था कि वह उनकी मित्रता की कदर करता है ग्रौर उसके मन म भी उनके लिए बहुत दोस्ती है। मगर उसे उस लखक की ही भाति सही शब्द नही मिल पा रहे थे, जो ग्रचानक ग्रपन हस्ताक्षर देने को कहा जान पर सकोच मे पड जाता है, क्योकि वह जानता ह कि इसके लिए उसे साथ ही बिना तैयारी के कुछ लिखना भी होगा ग्रौर ऐसा करना उसे इसलिए ग्रौर भी मुश्किल लगता है कि वह जानता है कि उसका लिखा हाथ दर-हाथ सभी का दिखाया जायेगा।

इसी वक्त "मिस्री' नौजवाना को ग्रलग हटाता वहा तक ग्राया ग्रौर उसने पोलोजोवा से किसी बात का ग्रनुवाद करके क्लाक को बताने के लिए कहा। वह चाहता था कि क्लाक शाम को मजदूरा ग्रौर इजीनियरा की सभा मे ऊनातायव के मामले के बारे म कुछ कहे। उसे एक्स्केवेटरा का घाटाला समझाने के लिए बस, कुछ ही शब्द कहन होगे ग्रौर ग्रमरीकी विशेषज्ञ ग्रगर भाषण द दें, तो कुल मिलाकर यह बहुत ग्रच्छा होगा। मर्री ने इनकार कर दिया है—कहता है कि उसने लोगा के ग्रागे कभी भाषण नही दिया है। मजदूरा का क्लाक की उसके पहले भाषण के समय से ही याद है, उन्ह यह भी मालूम है कि उस रात को नहर-तट म सकट का सामना करने मे उसने कैसा भाग लिया था। इस तरह भाषण दन के लिए वही सबसे उपयुक्त व्यक्ति है।

क्लाक ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। गालत्सेव न जोर देने की कोशिश की, लेकिन क्लाक ने सख्ती के साथ उसकी बात को काट दिया—वह भीड के सामन भाषण नही द सकता, वह एक्स्केवेटरा का

विशेषज्ञ नही है और न होने का दिखावा ही कर सकता है। पालोज़ावा के मुह मे बारक मे अपने पहले भाषण की याद से उसे अब चिढ आ गई। उसके बारे मे वह हमेशा कुछ खीझ के साथ ही सोचा करता था, जिसे उसने न तो तब और न कभी बाद मे ही किसी पर ज़ाहिर किया था। पोलोज़ावा तक को उसका कोई अदाज नही था। समय के साथ खीज की यह भावना धूमिल पड गई थी, लेकिन एक ऐसी घटना की याद अब भी उसे कचोटती रहती थी, जिसमे वह खुद अपनी ही नज़र मे बडी उपहासास्पद स्थिति मे सामने आया था।

गालत्सेव ने आखिर इस निश्चय पर पहुचकर कि वह अमरीकी को राज़ी नही कर सकता, उससे शिष्टतापूर्वक विदा ली और अपनी लबी टागो पर बस्ती की तरफ चल दिया। रास्ते मे वह गराज मे गया और उसने उस सहायक मिस्तरी को अपने साथ लिया, जो सुबह उससे मिलने के लिए ट्रेड यूनियन समिति के कार्यालय मे आया था।

दाला-वरज़ीवाला की बारक के पास पहुचने पर उसने उससे बाहर ही इतज़ार करने के लिए कहा

'तुम बारक के बाहर ही रहो। जब मैं बुलाऊ, तब आ जाना।"

बारक मे असाधारण खामोशी छाई हुई थी। "मिस्री' को आते देख दाला वरज़ीवाले और भी सटकर बैठ गये। यह स्पष्ट था कि वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

'मिस्री मेज पर जाकर बैठ गया, अपनी तबाकू की थली निकाली और निर्विकार भाव से एक सिगरेट बनाने लगा। सिगरेट बना लेने के बाद उसने थली को अपने सबसे पासवाले आदमी की तरफ खिसका दिया, जैसे कह रहा हो, 'लो, तुम भी बनाओ।'

कोई कुछ नही बोला।

हा, तो फिर? तुमने कुछ सोचा? आखिर "मिस्री' ने सिगरेट का धूआ खीचते हुए कहा।

कोई जवाब नही मिला।

क्या बात है—तुम्हारी जबान तो नही खो गई?'

'कुज़नत्सोव को बोलने दो,' एक नाक से बोलता आदमी बोला।

भीड मे से अपना रास्ता बनाते हुए नाटा बनियान पहने एक आदमी आगे आया। उसके बायें हाथ पर तार से छिद्रित सा एक बडा-सा गहना गुदा हुआ था।

"किसीन भी हमे काम पर जाने से नही रोका है, हम किसीको भी पकडवाएगे नही।"

"और किसको किसगे पकडवाने की बात की जा रही है?' गालत्सेव ने मेज पर से उछलकर और कुजनत्सोव पर झपटते हुए कहा, 'तुम तोता की तरह एक ही बात दुहराते रहते हो, 'हम उनको पकडवायगे नही, हम उनको पकडवायेंगे नही,' और सोचते हो कि यही मजदूर एकता है। एकता किसके साथ? वर्ग शत्रु के साथ, कुलाको के साथ, और भला किसके साथ! क्या तुम्हारे खयाल मे ऐसे भगोडे कुलाको की कोई कमी है, जो निर्माणस्थली पर हमारे बीच मे घुस आये है? उनका औरो से भेद कैसे किया जाये—मेरी-तुम्हारी तरह सभी के दो हाथ और दो पैर है। उन्हे कैसे पहचाना जाये? उनके चलाये आदोलन स! अगर तुम्हारी टुकडी मे उन मूअरो मे से कोई आदोलन करता है, तो उसका गिरेबान पकडकर उसे निकालकर सारे मजदूरो के सामने लाओ और कहो—'यह रहा एक कुलाक आदोलनकर्ता, यारो, जरा देखो तो इसकी तरफ, मजदूर के भेस मे छिपा हुआ है!' यह होता है असली मजदूर का तौर-तरीका! और तुम क्या कर रहे हो?"

"हमारे यहा कोई कुलाक फुलाक नही है, इसलिए हमारी आखो मे धूल झोकने की कोशिश मत करो!" कुजनेत्सोव ने गुर्राते हुए कहा।

"नही है? अच्छी तरह जानते हो? चलो, फिर देख लेगे।"

"मिस्त्री" उठकर दरवाजे की तरफ चल दिया। सब किसीने यही समझा कि वह नाराज होकर जा रहा है। लेकिन उसने दरवाजा खोला और आवाज दी

"कोज्यूरा, आ जाओ।"

दूसरे सैक्शन का मिस्तरी अदर आ गया।

हा, तो बताओ तो, कौन है?"

कोज्यूरा ने भीड पर अपनी आखे दौडाइ, सामनेवालो को अलग करके पीछेवालो पर निगाह डाली और सबको देख लेने के बाद हैरानी से बोला

"लेकिन वह तो यहा नही है!"

"क्या मतलब कि यहा नही है?"

'नही है। मैंने कल उसे देखा था, पर आज वह नही है। सफेद कमीज पहनता है वह, उसके बाल तो सनई है, पर दाढी लाल है।"

दाला वरजीवालों ने आपस मे एक दूसरे की तरफ देखा।

"कही यह प्तीत्सिन की बात तो नही कर रहे," तरेलकिन ने अचानक कहा, 'प्तीत्सिन! लेकिन वह गया कहा?'

सभी मानो आगे आने के लिए रास्ता बनाते हुए अलग हो गये, लेकिन प्तीत्सिन नही आया।

"क्या कहा था तुमने, लाल टाटीवाला न? अरे, अभी तो वह यहा था!"

"हा हा, था तो!'

"एकदम यही तो खडा था!"

"लेकिन वह गया कहा होगा? बारक मे दूसरा दरवाजा तो नही है?'

कुछ लोग बारक के दूसरे सिरे की तरफ लपके।

"खुला पडा है! खुदा कसम, एकदम खुला पडा है! इतनी जल्दी मे वह गया कि दरवाजा बद करने का भी वक्त उसके पास नही था।'

"यह रहा तुम्हारा प्तीत्सिन!' अपने चारो तरफ देखते हुए 'मिस्री" चिल्लाया। "कोज्यूरा! भागकर जाओ मिलिशिया के पास!"

दरवाजा भडाक से बद हो गया। बारक पर एक भारी खामोशी छा गई।

"तो, तुम्हारे यहा कोई कुलाक फुलाक नही है, है न?"—'मिस्री' कुज्नेत्सोव की तरफ बढा और कुज्नेत्सोव कदम कदम दीवार की तरफ खिसकने लगा। "मैं तुम्हारी आखो मे धूल झोक रहा था, क्या? और यहा, तुम्हारी टुकडी मे प्तीत्सिन तुम्हारी नाक के ऐन नीचे बैठा हुआ था! सौ फीसदी सर्वहारा, है न? और क्या तुम्हे यह मालूम है कि तुम्हारे इसी प्तीत्सिन ने तवोर नगर के पास अपना फालतू माल मता छीन लिये जाने के बाद एक सामूहिक फार्म का सारा अनाज जला दिया था? फार्म का सत्यानाश हो गया और वह टूट गया। मेरे पास आज सुबह ही एक आदमी आया था और उसीने मुझे यह सब बताया। हो सकता है कि मेरी बात गलत हो, लेकिन कुछ भी हो, उसमे बहुत मिलता है। उसने कहा कि हम उसे ढूढ रहे है—सब जगह उसकी तलाश कर रहे है, पर वह तो ऐसे गायब हो गया है जैसे तालाब मे पत्थर। उसने कहा कि फिर पता चला कि वह यहा घुस आया है और उसने पहले सैक्शन मे छिपने का ठिकाना खोज लिया है "

' दरवाजा धडाक से खुला और इतनी लबी पतलून पहने, कि जो उसकी बगल तक चढी हुई थी और सुतली से कमर पर बधी हुई थी, एक लडका भागता हुआ बारक मे घुस आया

"यारा! देखा तुमने? एक आदमी नदी मे कूद गया और तैरकर भाग गया। खुदा कसम, झूठ नही कह रहा! पानी उसे एक किलोमीटर बहाकर ले गया। उथले पानी मे वह बाहर निकल आया और फिर दूसरे किनारे पर चढ गया।"

"लो, यह रहा तुम्हारा प्तीत्सिन!" अपना हाथ नचाते हुए "मिस्री" ने कहा। "'हम उनको पकडवायेंगे नही, हम उनको पकडवायेंगे नही',— और तुमने उसे पकडवाया भी नही, क्यो है न?"

"मिस्री" दरवाजे को इतनी जोर से बद करता हुआ बाहर चला गया कि छत से मिट्टी के टुकडे झड पडे। मिनट भर बाद ही वह तेजी से पार्टी समिति के कार्यालय की दिशा मे जा रहा था।

अपना दैनिक चक्कर पूरा करके कोई दो घटे बाद गालत्सेव उस युत मे पहुचा, जिसमे स्थानीय अखबार के सपादकमडल का कार्यालय था और वहा तरेलकिन और कुज्नेत्सोव से एक बार फिर उसका सामना हो गया।

'तुम यहा क्या कर रहे हो?"

"हम अखबार मे एक ऐलान निकलवाने के लिए आये है उसी झगडे के बारे मे यह कि हमने गलती की थी, वगैरह वगैरह और हमने कुछ जिम्मेदारिया भी ली है "— कुज्नेत्सोव न ' मिस्री" की तरफ देखे बिना पसीने से तर एक कागज उसके हाथ मे ठूम दिया।

"मिस्री ने उस पर एक सरसरी नजर डाली।

'और जहा तक आदोलन करनेवालो का सवाल है, हमने दो और को गोदाम म बद कर दिया है, जिससे वे कही भागने न पायें। अब यह पता लगाना है, कि मामला क्या है और वे क्या कर रहे थे हा, अगर यह पता लगे कि वे कुलाक नही ह, तो उन्ह तग न किया जाये। हम सब न यह तय किया है कि हर किसीके कधा पर अपना सिर है और इसलिए सब बराबर जिम्मेदार है।"

उन्होने अपनी टोपिया ठीक की और जल्दी से युत से चले गये।

सारे सैक्शन म यह खबर एक्सप्रेस तार से भी ज्यादा तेजी के साथ

फैल गई कि दाला वरज़ीवालो ने अखबार मे एक ऐलान भेजा है और वे दिन को बारह बजे काम पर आ रहे हैं।

बारह बजन मे ठीक पाच मिनट पर दाला-वरजीवाले नहर-तल के रास्ते पर नजर आये। क्लाव और पोलोज़ावा जब प्रायश्चित्तकर्ताओ के जलूस को देखन के लिए नहर-तल से ऊपर आये, तब वे किनार पर पहुचने ही वाल थे।

'दखो तो उन्हे! लगता है, जसे मेला देखने जा रहे हो।"

दाला-वरज़ीवाले एक दल बाधकर चल रहे थे। ज़ाहिर था कि आने के लिए उन्हाने लबी तैयारी की थी। कपडे तो उन्होन सचमुच एसे ही पहन रखे थे मानो मेला देखने को जा रहे हा। सभी ताजा धुली सफेद कमीज़ें और पालिश से चमकते बूट पहन हुए थे। वे जानते थे कि मजदूर उन्हे अनुताप म लौटते देखने के लिए आयेंगे और उनके हत दप ने उन्हे इस बात के लिए प्रेरित किया था कि औरो को यह मजा न लेन दें। उनके रास्ते के दोना तरफ उत्सुक दशनार्थियो की कतार लगी हुई थी पर वे बिलकुल सामने की तरफ देख रहे थे मानो उनको यह तक नजर नही आ रहा है कि व वहा खडे हुए हैं। सबसे आगे, एक अकार्डियनवादक उलटा चल रहा था और अपने बाजे को मोर की दुम की तरह फला रहा था। उसके सामने सफेद कमीज़ पहने एक बाका नौजवान नाच रहा था, जिसके बूट चमचम चमक रहे थे और हाथ कूल्हा पर टिके हुए थे। अकार्डियनवादक अपने पर स ताल द रहा था और ऊचा आवाज म गा रहा था।

गाते गाते ही वे तटबध स उतरे गात गात ही उन्हाने नहर-तल म प्रवेश किया और जब एक्स्केवेटर व हमाले न सगीत निदशक की छडी की तरह अपनी फैली हुइ बाह स एक अधवत्त बना दिया तब जाकर ही अकार्डियन की आवाज हथगाडिया की चू चू और गतिया की ठक ठक म विलीन हो गयी।

मझधार मे पडा हुआ आदमी

पौ फटन क साथ वर्षा की एक बौछार आई और उसन अनिमिया म आगमन की प्रतीक्षा करते सहृदय गहस्थ की तरह धूलभरी धरती पर छिडकाव कर दिया।

ऊर्तावायेव ने घडी पर निगाह डाली और ट्राम पर सवार होने क लिए लपका – ग्यारह बजने मे दस मिनट बाकी थे।

चेका कार्यालय के प्रवेश द्वार पर एक सजीला लाल सनिक — उधर घूमता हुआ पहरा दे रहा था। पास लेने क बाद ऊर्तावायेव न को चौडी सीढिया को पार किया और जाकर निर्दिष्ट दरवाजे पर दस्तक

मज पर बैठे आदमी ने, जिसके पीछे दीवार पर एक बडा नक :गा हुआ था अपना सिर उठाया। कनपटी से लेकर उसके हजामत कि हरे पर भोंडेपन स सिला लवा परिचित निशान फैला हुआ था। पिछल F साल के भीतर वस उसका चौडा माथा ही और ऊचा हो गया लगता , मानो उसने सिर के बालो को लापरवाही स पीछे की तरफ धकेल ... हो और उसक वालो म अब सफदी छिटक आई थी।

म तुमसे मिलने आया हू साथी पेखोविच। बाधा तो नहा दे रहा ?"

बठो बठा, ' उसन जवाब दिया। ' चेहरा तो तुम्हारा अच्छा नहा लग रहा है हम सब ही बूढे होते जा रहे ह – और चारा भी क्या है। बरस तो बीतते ही चल जाते ह। अच्छा किया कि तुम आ गये। तुमसे मिलकर खुशी हुई। तो सुनाओ क्या खबर है ?

खबर ? ऊर्तानायेव विषण्णतापूर्वक मुसकराया। खबर क पीछ ही तो तुमस मिलन क लिए आया हू। अपना खबर बुरी है साथी पेखोविच। मरे पार्टी स निकाल जाने क बारे म सुना है ?

' सुना ता है पखोविच ने अपनी पसिल को नचाते हुए निर्विकार स्वर म कहा।

ता उसक बार म तुम्हारा क्या खयाल है ?

'बहुत पचीदा मामला है, मर भाई। शतान भी उस नहीं सुलझा सकता। और तुमन खुद उसे और भी बिगाड दिया है। भला एक्सपटरा क साथ जूझन का तुम्ह क्या पडी था ? मनजमट क फसला क खिलाफ ? इस तरह की मनमानी क लिए विशषज्ञो का दड दिया जाता है। और फिर, तुम तो कम्युनिस्ट थ।

लकिन म एसा फम क प्रतिनिधि की सम्मति स कर रहा था।"

' इसस क्या होता है, मर भाई। तुम्ह मनजमट की अनुमति लनी चाहिए थी। तुम खुद ही जानत हो कि य विदेशी फम अस्थिर मन हात है। अब जरा अपने इस प्रतिनिधि का पता लगाओ या तो कोशिश करो।'

"उसका म पता लगा लूगा। इसके लिए मुझे बस कुछ समय दीजिये। और इस मामले मे मुख्य बात एक्स्केवेटरा की नही है। इसके लिए भत्सना की अपेक्षा की जा सकती है–हद स हद सख्त चेतावनी क साथ, मगर ऐसी बाता के लिए पार्टी मे निष्कासित नही किया जाता।"

"क्या नही! मनमानी क लिए भी पार्टी से निष्कासन किया जा सकता है, और क्या!"

तुम खुद जानत हा कि मुझे किसी और बात क लिए निकाला गया है–कासमचिया और अफगानिस्तान के साथ तथाकथित सबधा क लिए। अच्छा, तुम मुझे सीधे-सीधे यह बताओ–तुम इस आरोप पर विश्वास करते हो? क्या तुम्ह इस बात पर विश्वास है कि मैने सावियत सत्ता को बासमचिया और बुखारा के अमीर को बेचा है?'

'क्या मेरी निजी राय तुम्हारे लिए जरूरी है?'

'हा, बहुत।"

"तो, देखा बात यह है–म इस पर विश्वास नही करना चाहता, लेकिन तुम्हारे विरुद्ध जो तथ्य पेश किय गये ह, व बहुत ही गभीर है। यह सिद्ध करना तुम्हारा काम है कि ये तथ्य निराधार है। कोरी ऊची ऊची बात करने से कुछ नही बनेगा।'

"सुनो, पेत्रोविच, चार दिन बाद मेरा मामला स्तालिनाबाद में केंद्रीय नियत्रण आयाग के सामने पेश होनेवाला है। मै यहा, ताशकद, खास तौर पर तुमसे ही मिलने क लिए आया हू। तुम ही अकेले ऐसे आदमी हो, जिसकी गवाही मेरी मदद कर सकती है। पिछले मार्च के हमले के समय तुम हमारे जिले के चेका प्रमुख थे। कामारको बाद म आया था, इसलिए वह सारी तफ्सील से परिचित नही है। मेरे ऊपर लगाया गया मुख्य आराप कैयक के पास हमारी टुकडी का सफाया किये जाने और फैयाज क साथ मेरी बातचीत के बारे म ख्वाजायारोव की गवाही पर आधारित है। मने इस बातचीत के बारे म सीधे तुम्हे जानकारी दी थी। अकेले तुम ही इस बात की गवाही द सकते हो कि मेरी बातचीत के बाद फयाज के गिरोह पर ओस्तापाव की कमान म हमारी लाल सेना की एक टुकडी ने हमला किया था और फैयाज के गिरोह की धज्जिया उडा दी थी और फैयाज खुद पहाडो मे खदेड दिया गया था। सक्षेप म यह कि फैयाज के लिए अगले दिन दागाना कैयक की घाटी म आना और अपने हथियार डालना नामुमकिन हो गया था। तुम यह बात जानते हो, है न?"

"हा।"

"तो इसके बारे मे केद्रीय नियत्रण आयोग को लिख दो। मुझे इस आशय का लिखित बयान दे दो।"

'बात यह है कि तुम्हारे मामले के बारे मे म जो कुछ भी जानता हू, उसकी मैं अपने स्रोतो से पहले ही गवाही दे चुका हू। इस गवाही को दुबारा देने की कोई जरूरत नही है।"

"मतलब यह कि तुम मुझे इस आशय का बयान नही देना चाहते? आखिर मैं तुमसे कोई अपनी राय देने या मेरी तरफ से कुछ करने के लिए तो कह नही रहा हू। म तो तुमसे बस, एक तथ्य की पुष्टि करने के लिए कह रहा हू, जिसे तुम अच्छी तरह से जानते हो। क्या तुम सचमुच मेरे लिए इतनी सी बात भी नही करोगे?"

"मरे खयाल मे मैंने अपनी बात को बिलकुल साफ कर दिया है—म तुम्हारे मामले के बारे म पहले ही गवाही दे चुका हू और इसे दुहराने की कोई तुक नही है।"

ऊर्तावायेव उठ खडा हुआ।

'ठीक है, तो, म चला। माफ करना कि मने तुम्हारा वक्त खराब किया।"

"तुम तो बहुत ही शक्की आदमी हो ऊर्तानायेव। मेरी बात पर विश्वास करो—इस सबस कुछ नही होनवाला है। इस बात से कोई फर्क नही पडता कि फैयाज आत्मसमपण करन के लिए आ सकता था या नही। यह साबित करना तुम्हारा काम है कि ख्वाजायारोव झूठ बोल रहा है और वह कभी भी तुम्हारे दस्त मे था ही नही। अगर तुम इस आशय की गवाही प्राप्त कर लो, तो तुम्ह और किसी चीज की जरूरत ही नही है। अगर तुम यह साबित नही कर सकते, तो चाहे तुम दजनो सिफारिशी खत ले आओ, पर उनकी बिनाह पर तुम पार्टी म वापस नही लिये जा सकते।'

ऊर्तानायेव ने अपने गुलाबी पास को उगलियो मे मरोड दिया।

'तुम मुझस नाराज मत होओ,' खिडकी से बाहर की तरफ देखते हुए उसन कहा, 'इस बात को म भी समझ गया हू कि इससे कुछ नही होनवाला है और तावक्त आने की कोई तुक नही थी ... खैर, धन्यवाद, तुम अच्छे आदमी हो

'रुको जरा, पगानिव अपनी मेज की दराज म कुछ ढूढ रहा था।

"यहा एक चीज है, जो शायद तुम्हारे काम आ सकती है अहा, यह रही!" उसन एक अखबार निकाला और उसे खोला, "यह एक अफगान अखबार है। इसमे एक लेख पर निशान लगा हुआ है। यह तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकता है।"

ऊतावायेव ने जल्दी-जल्दी लेख का पढा, जिस पर लाल पेंसिल से निशान लगा हुआ था

> हमारा दिल उस गुलाब की तरह से लहूलुहान हो रहा है, जिसे किसी लापरवाह जियारती ने रास्ते पर फेंक दिया है और जिसे किसी राह गुजरते काफिले के ऊट ने कुचलकर मिट्टी मे मिला दिया है।
>
> कितनी ही बार हमने अपने प्यारे हमवतनो से इसरार किया है कि वे अल्लाह के रहम और उसके पैगबर के करम की खातिर शरियत की पाक हिदायतो पर समझदारी के साथ अमल कर।
>
> अफसोस की बात है कि हमारी आवाज अनसुनी ही रही है, जिस तरह गहरी नीद म गाफिल मनमौजी दीनदार मुअज्जिन की अजान को नही सुनते।
>
> हमे खबर मिली है कि हाकिमत ए इमामसाहब मे कलबात किशलाक के कुछ लामजहब लोगो ने इनसानियत की भलाई और खुशहाली के लिए इस्लाम के सबसे अजीम और आला रहनुमा की ताकीदो की मुखालफत करते हुए अपने किशलाक म लामजहब लोगो को इकट्ठा करके ऐसा निजाम कायम कर दिया है, जो शरियत के खिलाफ है। आम रजामदी से अल्लाह के कायम किये जायदाद के निजाम का खात्मा करके इन दहकानो ने अपने खेतो को एकसाथ मिलाकर सोवियतो के लामजहब लोगो की तरह, जिनके कारनामो के खयाल से भी दीनदार लोग काप उठते है, एक सोवियत सामूहिक फाम कायम कर लिया है। इन काफिरो की मिसाल से बहकाव मे आकर अपनी रूहो को शैतान के हवाले करके इन मुसलमानो ने कुरान मजीद के पाक अलफाजो को भुला दिया।
>
> कलबात किशलाक के लामजहब बाशिदो ने इसी तरह अल्लाह के लगाये सभी महसूलो को भी अदा करने से इनकार कर दिया

है और इबादत और नमाज़ के मामले मे भी बहुत लापरवाही दिखाई है, जो इस्लाम की बुनियादा म एक है।

इस वक्त अल्लाह के करम और एक मजहबपरस्त हज़रत स मिली खबरो की बदौलत इस लामजहब मामले के सरगनाग्रा को मुनासिब सजा दी भी जा चुकी है। उनके सर कलम करके मसजिद क सामने रख दिये गये ह, ताकि दूसरे किशलाका के बाशिंदे यह देख सके कि कानून पाक शरियत की हिदायता के खिलाफ अमल करनेवाला को किस तरह सजा दता ह।

ऊर्तानायेव ने अखबार की तह कर दी।

"क्या तुम मुझे यह अखबार दे सकते हो?"

'ले लो। लेकिन, मेरे भाई, यह भी तुम्हार ज्यादा काम न आ सकेगा। तुम बहुत वक्त बरबाद कर रहे हो। तुम्ह यहा ही पहुचन म एक हफ्ते से ज्यादा लग गया होगा। तुम्हे कैयक से आगे कही जाने की जरूरत ही नही थी। गवाहा को मौके पर ही तलाश करो दहकाना से बात करो। मेरी बात को याद रखो। म एक पुराने दोस्त की हैसियत से बात कर रहा हू "

काना

उस इतवार को कनाक और दिना की बनिस्बत दर म सोकर उठा था और पहले वह काफी दर तक यही सोचता रहा कि खाली समय का किस तरह से काटा जाये। करने को सचमुच कुछ भी नहीं था। पानाजावा, जिसे कोम्मामाल सगठन न छोटी लाइन डालन क काम का जल्दी पूरा करन मे मदद दन क लिए बुला लिया था एक सप्ताह से घाट पर ही थी। मर्री अपनी आदत क मुताबिक बदूक लेकर वहा जंगला क शिकार पर चला गया था। कुछ दर सडका पर निरुद्देश्य घूमन के बाद कनाक न भी उसीका अनुसरण करन का निश्चय किया। उसने काम म एक बदूक उधार ली, घोडे पर सवार हुआ और उस सपाट मैदान पर दौडान लगा। मुख्य सकशन का पार करन क बाद उसा सडक का छोड दिया और कटीली झाडिया स होकर सीधा पहाडा की तरफ हो लिया। उसके पास मैदान पर बड़े-बड़े लचकीले टील, जा मगर म उठ निकल, अपनी पतला-पतली टागा

पर उछलकर खडे हो जाते और एकदम भागते हुए मैदान मे चले जाते। मैदान की पृष्ठभूमि म भूर रग क झुर्रीदार टीले उभरे हुए खडे थे, मानो अपनी महाकाय पीठा को धूप सकने के लिए दलदल की सतह पर उठकर आये दरियाई घोडा की ठठरिया हा। उनके पास पहुचता हुआ घोडा शव के साथ फूत्कार मार रहा था, माना वही य भी अपने माटे उदरा को जमीन पर घसीटत हुए भाग न खडे हा।

मगर क्लाक को जैरान दधन वा भी नहीं मिले। दिन भर भटकन के बाद वह शिकार की जिन निशानिया वो लकर वापस चला, वे थी उसकी काठी पर झूलती तीन बटेर। गरमी इतनी तेज थी कि लगता था, जैसे शुद्ध स्पिरिट पी नी हा, जिसके कारण मुख्य गला माना एठा जा रहा था। पहाड की मछली जमी लबी ढलवा पीठ पर सूरज क्षितिज मे जा लगा था और दमकते हुए काटे की तरह आखा को चौधिया रहा था। आखिर दो पहाडिया के बीच एक तग दर्रे म क्लाक का एक अनजान किशलाक नजर आया और अपने घोडे को कोडा लगा वह सबस निकटवर्ती झोपडा की तरफ सरपट बढने लगा। उसने पहले झोपडे पर जाकर रास खीची, जिसे मिट्टी की एक अभेद्य ऊची दीवार ने सडक स अलग किया हुआ था। इस इलाके के और सभी निवास गहो की तरह यह झोपडा भी सडक की तरफ तिरस्कार-पूवक अपनी पीठ किये खडा था।

क्लाक ने रकाब पर खडे होकर जोर स आवाज दी। कोई जवाब नही मिला। उसने एक बार फिर आवाज दी।

झोपडे के कोने के पीछे से एक दहकान सामने आया।

क्लाक न "आब' के जादुई शब्द का दुहराते हुए इशारे स बताया कि वह पानी पीना चाहता है। दहकान चला गया और एक तूबा लेकर वापस आया। तूबे के तोन्ल पेट मे गडगड की आवाज करता पानी निकल आया। क्लाक न हाथ से मुह को पाछा और आभार प्रदशन करने के लिए अपना हाथ दिल से लगा दिया। वह काठी पर आराम से बैठ गया कि तभी उसका ध्यान इस बात की तरफ गया कि मरी हुई बटेरो से टपकता खून उसकी काठी और बिरजिस को खराब कर रहा है। उसने बटेरा को खोलकर दहकान से इशारे से कहा कि वह उन्हे किसी चीज मे लपेट दे।

दहकान तूबे को ले गया और एक अखबार लेकर वापस आया। पहले पष्ठ के शीपक से क्लाक ने पहचान लिया कि वह निर्माणस्थली पर

प्रकाशित होनेवाले स्थानीय पत्र की प्रति है। खुले हुए सफे मे एक छेद नजर आ रहा था, जहा किसीके चित्र के सिर को कैंची से सफाई के साथ काट दिया गया था क्लाक ने पलक झपकते झपकते अनुभव किया कि दहकान भी अखबार के छेद की तरफ देख रहा है। उसने अपनी आखें उठाइ और वे दहकान की आखो से—बल्कि यह कहिये कि एक आख से—जा टकराईं। दहकान की बाईं आख नदारद थी और इससे उसका चेहरा मानो एक तरफ को खिचा-सा हुआ था। बटेरा और अखबार को छीनकर दहकान फिर झोपडे के पीछे जाकर आख से ओझल हो गया। कुछ देर बाद वह बटेरा को किसी और कागज म लपेटकर लाया और बडल को उसने क्लाक के हाथो मे ठूस दिया। क्लाक असमजस म अजनबी के टेढे चेहरे की तरफ देखता रहा। वह उसे बदी और बैर से भरा लगा—अकेली आख अधझपकी पलको के पीछे से घृणा और दबाये हुए गुस्से के साथ देख रही थी।

इस निगाह म ही कुछ ऐसी भयानक बात थी या यह अनजान वातावरण का प्रभाव था—पहाड की अधियाली घाटी म मायरे पत्थर की तरह घुसी हुई गाव की वीरान सडक—कारण चाहे कुछ भी रहा हो, क्लाक ने अचानक अनुभव किया कि एक वहशियाना आतक के दौरे ने उसके गले को आ दबोचा है। उसने रास को झटका देकर घोडे को खडा कर लिया, एकदम मोड दिया और उसे मिट्टी की इस घिरी अधी सडक से दूर स्तेपी म खुली जगह की तरफ सरपट दौडा दिया। पीछे की तरफ देखे बिना ही वह घोडे पर चाबुक बरसाता चला गया, मानो अदृश्य पीछा करनेवाले उसे आ दबोचनेवाले ही हो।

फिर जिस तरह अचानक उसने घोडे को दौडाना शुरू किया था, उसी तरह उसने रास को खीच भी लिया। उसके चारो तरफ निर्जन, निवस्त्र स्तेपी थी। पहाड की वह दरार अब मुश्किल से ही नजर आ रही थी, जहा वह अनजान और जीवनहीन किशलाक स्थित था। क्लाक ने घोडे को मामूली चाल पर छोड दिया और शान्ति के साथ सोचने लगा कि क्या हुआ था। वह था क्या? डर? यह शुरू कैसे हुआ? अगवार? नहा, अगवार से नहा, अगवार म जो छेद था, उससे—बल्कि म कटे हुए छेद म।

घोडा चाबुक की अभ्यागत मार खाने की प्रताडना म शिकार हो गया था। दोनो ही काफी देर वहीं बीच स्तेपी म खडे रहे। क्लाक

बिलकुल निरुद्देश्य तरीके से दुहराये जा रहा था "कची से कटा हुआ छेद"। अचानक उसके सिर से पाव तक कपकपी की एक लहर दौड गई— "बेशक, वह तो मेरा ही सिर था।"

घोडे के पुट्ठे पर चाबुक पडा और वह मामूली चाल से चलने लगा एक बार फिर क्लाक के मस्तिष्क के आगे अखबार का वह सुपरिचित पन्ना आ खडा हुआ, जिस पर इजीनियर क्लाक का चित्र और 'तबाकू काड" के अवसर पर दिये उसके भाषण के बारे मे लेख छपा था और उसीके साथ-साथ कागज का वह दूसरा, छोटा और सफेद टुकडा भी आ गया, जिस पर अखबार से सफाई के साथ कटा उसका सिर चिपका हुआ था, जिसके कान काट दिये गये थे और आखो को पिन से छेद दिया गया था।

"आखिर वह क्या चीज़ थी, जिससे मै इस कदर डर गया?" यह अनुभूति बडी लज्जास्पद और अप्रिय थी कि वह डर गया था, "मुझे इस जगह को अच्छी तरह याद रखना चाहिए।" क्लाक ने अपन घोडे को एक बार फिर घुमाया। इतनी दूर से घाटी पहाड के ढाल पर एक मामूली दरार जैसी लग रही थी। चारा तरफ स्तेपी का अतहीन विस्तार था। अघेरा घिरने लगा था। जगह को याद रखना मुश्किल था।

क्लाक रात को काफी देर से मुख्य सैक्शन पहुचा। सबसे पहले तो उसे यही विचार आया कि सिनीत्सिन के पास जाये और उसे सारा किस्सा सुनाये। लेकिन अभाग्यवश, सिनीत्सिन अग्रेजी नही जानता था। इसलिये इसके अलावा और कोई चारा नही था कि अगले दिन तक ठहरा जाये।

पोलोजोवा अगले दिन भी नही लौटी। मरी उत्प्लव माग के निर्माण की तैयारी के लिए किये जानेवाले काम का मुआयना करने के लिए सुबह ही दूसरे सैक्शन चला गया था।

क्लाक ने कार को जाने दिया और खीझे मन स नहर की तरफ पैदल ही चल दिया। अब मदान पर जहा तक आख जाती थी, ऊचा तट बध नज़र आता था। खुदी हुई मिट्टी की ऊचे खाचा के बीच ककरीली जमीन मे नहर का गहरा तल था।

इस विभाग मे अपना काम पूरा करने के बाद एक्स्केवेटर ताज़ा मिट्टी मे अपनी नाके घुसाने के लिए और दक्षिण की तरफ चले गये थे। अब कोई पद्रह एक्स्केवेटर काम पर लगे हुए थे। उनके पीछे पीछे विस्फोटनकर्ता

थे, जिनका काम था एक्स्केवेटरो द्वारा उघाडी चट्टानी परत को विस्फोटका से उडाना। इसके बाद गैंतियो की चोटो से खडित पत्थर को मजदूर वक्रा के खुले मुहा मे भर देते। तटबध के ढाल पर बहते झरने की तरह, उलटा तरफ माडे पहाडी नाले की तरह, कनवेयर का धडधडाता पट्टा पत्थर के खडित टुकडो को ऊपर ले जाता था।

इस जगह नहर का तल लगभग बारह मीटर गहरा था, पर अभा उम कोई छ मीटर और खोदना था। कनवेयर ठीक तरह से लगा नही था और इसलिए विस्फोटन का काम बडी सावधानी से थोडा थोडा विस्फोटक रखकर ही करना पडता था, नहीं तो इतने जतन से तैयार किये इस सारे जत्तर के ही क्षतिग्रस्त हो जाने का खतरा था। कनाक ने देखा कि विस्फोटनकर्ताओ ने फिर विस्फोटक को ठीक तरीके से नही रखा है। दुर्भाग्यवश पोलोजावा वहा नही थी और उसके बिना अपनी बात समझा पाना बहुत मुश्किल था। कनाक नहर के तल मे उतर गया और इशारा से बताने लगा कि विस्फोटक को किस तरह रखना चाहिए।

विस्फोट का क्षण निकट आ रहा था। ढाल के ऊपर ट्रैक्टर को रोक दिया गया था और कनवेयर का चलता पट्टा अचानक रुक गया था, मानो धरला अधबीच ही जमकर बर्फ बन गया हो। इजन की एकसुरी घरघराहट के बाद आनेवाली खामोशी म कनवेयर पर लुढककर तट की दूसरी तरफ जाते आखिरी पत्थरो की आवाज भी सुनी जा सकती थी। तेज सीटिया बजने लगी और मजदूर तेजी के साथ ढाल पर लपक पडे। कनाक ने उन्हे अपने से आगे जाने दिया और विस्फोटनकर्ताओ के साथ सबसे आखिर मे ऊपर चढना शुरू किया। रास्ते को छोटा करने के लिए पत्थर से पत्थर पर कूदते हुए उसने एक तरफ मुडकर एक और छलाग लगाई और उसकी ठोडी एक मजदूर की पीठ से जा टकराई जो अचानक रुक गया था। सतुलन को सभालने के लिए कनाक ने हाथ फैलाये। उसके पीछे से आनेवाला मजदूर फिसल गया और उसने हाथ से जमीन को थाम लिया। निमिष मात्र के लिए उसके चेहरे के एक हिस्से पर उसकी नजर पडी कि उसकी आखे नवरहित सपाट मुखपार्श्व—पर कनाक की निगाह जाकर ठहर गई। मजदूर का पैर फिसल गया और कनाक के पैर से जा टकराया। कनाक के मुह से एक नाम निकला और हवा को अपने हाथो से जकडते हुए वह धमाक से नाले जा गिरा

मेत्योलकिन को सुराग मिला

उस स्मरणीय दिन का निर्माणस्थली पर एक और उल्लेखनीय घटना घटी थी। उस रात को दूसरे सैक्शन के चट्टा म आग लग गई। शक था कि आग जान बूझकर लगाई गई है।

टेलीफोन के बजने की आवाज से जागकर कोमारेको कार मे बैठकर दुघटना-स्थल पर पहुचा। उसने पाया कि सारा ही सैक्शन जगा हुआ है। मजदूरो को आग बुझाने के लिए तुरत एकत्र कर लेने के कारण बस एक ही चट्टा पूरी तरह से जल पाया था। दूसरे चट्टे की आग को बुझा दिया गया था और वह इमारतो तक नही पहुच पाई थी।

अग्निकाड के स्थल से दूसरे सैक्शन की बस्ती म पहुचकर अगली सुबह कोमारेको और सैक्शन-प्रमुख रियूमिन बरामदे मे बैठे चाय पी रह थे और ऐसे चुटकुले सुना रहे थे कि कुत्ता बेग तक शिष्टतावश अपने पजे की ओट मे खीसे निकाल रहा था। तभी एक्स्केवेटर चालक मत्योलकिन बिलकुल बेदम हुआ बरामद की सीढिया पर पहुचा और उसने बताया कि एक ऊर्ताबायेव एक्स्केवेटर खराब हो गया है और उसकी मुकम्मल मरम्मत करनी होगी।

कोमारेको ने चाय को बिना पिये ही छोड दिया और अपन मेजबान से विदाई लिये बिना मेत्योलकिन के साथ बाहर आ गया। उन्होने बस्ती को खामोशी से पार किया। कोमारेको ही पहले बोला

"क्या उसे खराब हुए काफी देर हो गई?"

"आज सुबह स ही खराब है।"

"कल वह ठीक था?"

"बिलकुल शाम तक काम करता रहा था।"

"यह कब देखा कि उसमे कुछ खराबी है?'

मेत्योलकिन मुडा। उसका मूछोदार चेचकरू चेहरा सिकुडकर विकृत हो गया। उसने अचानक हाथ से अपनी टोपी को सिर के पीछे की तरफ धकेल दिया, हताशा जताने के लिए हाथ फला दिया और आगे बढ गया। तीन कदम जान के बाद वह फिर मुड गया।

"खैर, गलती तो मेरी ही है—म जानता हू। दें इसके लिए वे मुझे झाड। हमने समझा कि सारी बस्ती मे आग लग जायगी और इसलिए मदद करने के लिए लपक गये "

"छि, मेत्योलक्निन, मेरा तो खयाल था कि तुम ऐसे आदमी हो, जिस पर निर्भर किया जा सकता है और इससे भी बढकर बात यह है कि तुम कम्युनिस्ट हो।"

मेत्योलक्निन ने जवाब नही दिया और अपने बूटो की तरफ क्षुब्ध नजरो से देखता रहा।

"क्या तुम दोनो ही चले गये थे?"

"हमने काम बहुत देर से खत्म किया था। जल्दी मे थे–जितना हो सके, ज्यादा से ज्यादा करना अभी हमारी आखें जरा झपकी ही थी कि अचानक आग लग गई। हर कोई मदद के लिए दौडा और हम हम भी चले गये। और तभी

और तभी क्या? क्या तुमसे कहा नही गया था कि एक्स्केवेटर की अच्छी तरह रखवाली की जानी चाहिए?"

'बेशक कहा गया था जानता हू कि इसका दोष मेरे ही ऊपर है।"

"मुझे इससे क्या फर्क पडता है कि तुम दोष अपने ऊपर लेते हो? क्या तुम बहुत देर मे लौटे थे?"

"बहुत देर तो नही। हद से हद डेढ घटे मे।"

नुकसान क्या हुआ है?"

'एक पुरजा टूट गया है। हमारे स्टाक म ऐसे पुरजे नही है–उन्हे मगवाना होगा।"

"तुम्हारा क्या खयाल है? वह घिस गया था या किसीने उसे जान बूझकर तोडा है? कही वह किसीसे टूट तो नहीं गया?

"म नही समझता कि ऐसा हुआ होगा वह एक बहुत ही छोटा पुरजा है। अगर उसे इस ही तोडने की बात सूझी, तो हरामजादे को एक्स्केवेटरो की विशेष जानकारी रही होगी।

कामारना ने एक्स्केवेटर के इजन का बारीकी से मुआयना किया और टूटे हुए पुरजे की बडी देर तक जाच करता रहा। फिर वह एक भी शब्द बोले बिना वहा से चल दिया।

वह अभी पचास कदम भी न गया होगा कि मत्योलक्निन उसीके बराबर आ पहुचा।

'साथी कामारना!"

क्या, क्या बात है?'

"क्या आपका यह खयाल है कि पुरजा जान बूझकर तोडा गया है? क्योकि अगर बात यही है, तो जिसने ऐसा किया है, म उसे पकडे बिना नही छोडूगा। म उसे पकडकर ही रहूगा, चाहे इसमे मेरी जान ही क्या न चली जाये "

कोमारेको आगे चलता चला गया। बडी देर तक मेत्योलकिन वही खडा उसे जाते देखता रहा।

एक्स्केवेटर के पास वापस आकर टोपी को उदासी के साथ आखो तक खीचकर वह रेत पर बैठ गया। बहुत देर तक वह निश्चल एक्स्केवेटर के पास बैठा उदास आखो से रत की तरफ—बल्कि यह कहिये कि रेत मे परो से कुचलकर दबी एक छाटी सी बादामी चीज की तरफ—देखता रहा।

कई मिनट बाद ही धूप मे चमककर वह छोटी सी चीज मेत्योलकिन के ध्यान को अपनी तरफ आकर्षित कर पाई। उसने अपने पैर से उसे उलट दिया और फिर आगे झुककर उसे उठा लिया। वह काच की एक छोटी सी सपाट बोतल थी, जिसमे सुरती थी। अपनी हथेली पर लेकर उसन उसका मुआयना किया। सुरती का न वह इस्तेमाल करता था, न उसका सहकारी। इसकी आदत सिफ ताजिको को ही थी। यह बोतल यहा हाल ही मे गिरी थी।

मेत्योलकिन उछलकर खडा हो गया और बस्ती की तरफ भागने लगा। बस्ती से एक कार निकल रही थी—मैदान मे पहुचकर वह मुडी और मुख्य सैक्शन की तरफ रवाना हो गई। मेत्योलकिन तेजी से जाती कार के पीछे पीछे भागने लगा।

"साथी कोमारेको!" वह तेजी से भागते भागते ही चिल्लाया, यद्यपि कार म किसीके लिए भी उसकी आवाज को सुन पाना सभव नही था। कार धूल के बादल मे आखो से ओझल भी होने लगी थी, मगर जब तक उसम दम रहा, मेत्योलकिन उसके पीछे भागता ही रहा।

आखिर वह रुक गया। वह भारी भारी सास ले रहा था और उस बहुमूल्य सुराग को अपने हाथ मे कसकर जकडे हुए था। रास्ता चलते दहकानो ने अपने घोडा को थाम लिया और उसकी तरफ इशारा करते हुए आपस मे कुछ कहने लगे। मेत्योलकिन न सोचा कि वे उसे पागल समझ रहे होगे। दहकान कई थे, सभी एक से हरे चोगे पहने हुए थे, सभी के एक से सावले चेहरे थे और सभी व एक सी कटी हुई काली

आज धूलभरी नामहीन सडका के दोना तरफ मकान खडे हो गये हैं। अभी तीन बरस पहले ही सडका न अपनी रक्षा करने की कोशिश की थी। घोडागाडिया के पहिया पर उनका मनमानी चलती थी, जिस तरह आदमी अपनी गरन्न दबोचनेवाले को लाते मारता है, उसी तरह सडका के गड्ढे आरिया को टेढा कर देते और मोटरगाडियो की कमानिया और पहिया को ताड देते थे। तब शहर की मदद करने के लिए सुदूर उत्तर से राज लाये गय। उन्होने अडियल सडका को कूट कूटकर पत्थर की तरह सख्त बना दिया। इसके बाद चौराहो पर लक्डी की नाम लिखी छोटी छोटी तख्तिया लगा दी गइ और तब तक के नामहीन रास्ते अब नामधारी माग और पथ बन गये। अब उन पर दफ्तरी कमचारियो से भरी मोटर गाडिया तेजी से दौडती ह और बढिया घोडे जुती टमटम चलती हैं।

हर वसत म शहर पाडबदिया क जगल से भर जाता था। शरद के आते आते वे कट चुकी होती थी और उनकी जगह एक नया महल्ला पैदा हो चुका होता था।

अपनी पहले की परिचित सडका को ऊर्ताबायेव नही पहचान सका। वह कपास ओटने के एक कारखाने के पास खडा हो गया, जो पिछले साल वहा नही था। वह आहिस्ता से मुडा और शहर को अपनी पीठ की तरफ छोडकर सामने, स्तेपी के पार अफगानिस्तान की तरफ मुह करक, केद्रीय कायकारिणी समिति की इमारतवाली सडक पर चलने लगा। वह केद्रीय समिति की इमारत के सामने से गुजरा, जिसक सामने फुटपाथ के पास पत्थर के दो खभे ह, जिनके ऊपर किसी छत का भार नही—मात्र एक शिला है, जिससे एक तोरण जसा बन गया है और जिसके नीचे से होते हुए जनतत्र के सुपुत्र इमारत मे घुसते हैं। उसने सुदूर ताशकद से लाये पेडा की छाया स परिपूण शहरी बाग का पार किया। मथरा प्रकृति कब पोपलर और चिनार क पेड उपायगी, शहर इस बात की प्रतीक्षा नही कर सकता था। उसे छाया की जरूरत थी और वह यहा बनी-बनाई छाया ले आया और सकडा किलोमीटर की दूरी से उस लाकर यहा की खुली जमीन म लगा दिया—नन्हे-नन्हे पौधे नही, बल्कि पूर क पूरे हरे भरे पड।

ताजिक उपभोक्ता सहकारी सघ के फाटक से सामान और हरी चाय से लदा ऊटो का एक लबा काफिला निकला और उत्तर-पूव की तरफ चल

15—338

दाढ़िया थी। सभी ने एकसाथ अपने अपने कमरबंद में हाथ डाले और बिलकुल वैसी ही छोटी-छोटी बोतलें ली, जैसी मेल्योलकिन अपने हाथ में जकड़े हुए था। सभी ने अपनी अपनी हथेली पर जरा जरा सी सुरती डाली और बिना जल्दी किये अपने मुंहा तक ले आये। सभी की मुखमुद्रा रहस्यमय और सौम्यतापूर्ण थी। मेल्योलकिन ने अपने माथे पर हाथ फेरा। वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसकी आंखें एक की जगह दो तो क्या, दस लोगों को देख रही हैं या सचमुच उसका दिमाग ही खराब हो गया है। सबसे पासवाले दहकान ने उसकी तरफ पानी से भरा तूबा बढ़ा दिया।

मुजरिम चोगा नापता है

उस दिन ऊर्ताबायेव का मामला स्तालिनाबाद में राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग के सामने पेश होनेवाला था। ऊर्ताबायेव सुबह ही ताशकंद से वापस आया था। बस की प्रतीक्षा न करके वह इस आशा में स्टेशन से पैदल ही चल दिया कि इससे शायद वह उद्विग्नता शांत हो जाये, जो उस पर अचानक हावी हो गई थी और मानसिक संतुलन फिर हासिल हो जाये, जिसकी आज उसे इतनी आवश्यकता थी।

जब भी वह इस शहर में आता, इसे बदला हुआ पाता, मगर फिर भी वह अपने परिचित किशलाक के आदिम ढांचे को पहचान लेता था।

उस समय यहां एक गतिहीन स्तेपी थी—धूलभरे रास्तों से कटी हुई। सुदूर तेरमीज़ से ऊंट बड़ी-बड़ी शहतीरें लेकर आते थे और कोहानदार शेरों जैसे घने अयालदार ऊंटों पर झूलते तिरछी आंखोंवाले किर्गिज़ अपने बेसुरे गीत गाते थे। रेगिस्तान में सैकड़ों किलोमीटर तक घमौटे नहतार पगिना की तरह नाक उठाये हुए थे।

दूसरे किशलाक के ऊपर उस दिन उत्तेजित ततैयों की तरह हवाई जहाज मंडरा रहे थे। वे मिट्टी के जिस गांव के ऊपर घूम रहे थे, उसने पहले कभी पहिये भी नहीं देखे थे (अगर आगे जाकर बड़े-बूढ़े अपने नाती-पोतों से यह कहें कि उस समय पंखिया आसमान में मिलता था, तो यह गलत न होगा)। तरमाज़ में ह्राब जो पहला ऊंट पहला हरकार लाया था, उसके गिना रथों के साथ-साथ आज रास्ते नादन है और गा या इजना या मानाज़ में गिपार भप ग्रान है।

आज धूलभरी नामहीन सडको के दोनो तरफ मकान खडे हो गये हैं। अभी तीन बरस पहले ही सडको ने अपनी रक्षा करने की कोशिश की थी। घोडागाडियो के पहियो पर उनकी मनमानी चलती थी, जिस तरह आदमी अपनी गरदन दबोचनेवाले को लात मारता है, उसी तरह सडको के गड्ढे आरियो को टेढा कर देते और मोटरगाडियो की कमानिया और पहिया को तोड देते थे। तब शहर की मदद करने के लिए सुदूर उत्तर से राज लाये गये। उन्होने अडियल सडको को कूट कूटकर पत्थर की तरह सख्त बना दिया। इसके बाद चौराहो पर लकडी की नाम लिखी छोटी छोटी तख्तिया लगा दी गइ और तब तक के नामहीन रास्ते अब नामधारी मार्ग और पथ बन गये। अब उन पर दफ्तरी कर्मचारियो से भरी मोटर गाडिया तेजी से दौडती है और बढिया घोडे जुती टमटम चलती हैं।

हर वसत मे शहर पाडवदियो के जगल से भर जाता था। शरद के आते आते वे कट चुकी होती थी और उनकी जगह एक नया महल्ला पदा हो चुका होता था।

अपनी पहले की परिचित सडको को ऊर्तावायेव नही पहचान सका। वह कपास ओटने के एक कारखाने के पास खडा हो गया, जो पिछले साल वहा नहा था। वह आहिस्ता से मुडा और शहर को अपनी पीठ की तरफ छोडकर सामने, स्तेपी के पार अफगानिस्तान की तरफ मुह करके, केद्रीय कार्यकारिणी समिति की इमारतवाली सडक पर चलने लगा। वह केंद्रीय समिति की इमारत के सामने से गुजरा, जिसके सामने फुटपाथ के पास पत्थर के दो खभे है, जिनके ऊपर किसी छत का भार नही – मात्र एक शिला है, जिससे एक तोरण जसा बन गया है और जिसके नीचे से होते हुए जनतत्र के सुयुवा इमारत मे घुसते हैं। उसने सुदूर ताशकद से लाय पेडो की छाया से परिपूर्ण शहरी बाग को पार किया। मथरा प्रकृति कब पोपलर और चिनार के पेड उपायेगी, शहर इस बात की प्रतीक्षा नही कर सकता था। उसे छाया की जरूरत थी और वह यहा बनी-बनाई छाया ले आया और सैकडा किलोमीटर की दूरी से उसे लाकर यहा की खुली जमान मे लगा दिया – नन्हे-नन्हे पौधे नही, बल्कि पूरे के पूरे हरे भरे पेड।

ताजिक उपभोक्ता सहकारी सघ के फाटक से सामान और हरी चाय मे लदे ऊटो का एक लबा काफिला निकला और उत्तर-पूर्व की तरफ चल

15—330

दिया, जहां क्षितिज पर पहाड़ पत्थर की बाड़ की तरह फैले हुए थे। यह काफिला गम शहर जा रहा था, जहां पहली सड़क अगले साल जाकर ही बन पायगी।

ऊलानोमेव ने सड़क को पार किया और दूरकान भवन के पास एक बड़े चौक में पहुंच गया। चौक के एक कोने में कास्य मंच पर लेनिन की कास्य प्रतिमा थी, जिसका एक हाथ पूर्व की तरफ इंगित कर रहा था। सिर्फ दो साल पहले तक चौक के पूर्व में मकानों की कतार नहीं खड़ी हुई थी और वह ठेठ पवन श्रेणियों तक फैले खेतों तक चला गया था। हमारे लोग इसे दुनिया का सबसे बड़ा चौक कहा करते थे। खुले चौक से होकर खेत शहर के भीतर तक चले आते थे और वसंत में झाड़-झंखाड़ के रास्ते सड़क पर फैल जाया करते थे। इस साल चौक और पहाड़ों के बीच पहली बार इमारतों की एक सफेद दीवार खड़ी हो गई थी और खेत पहाड़ों की तरफ हट गये थे।

चौक के पीछे मुख्य सड़क शुरू होकर सकरे-से पुराने बाजार की तरफ चली जाती थी।

सड़क पर काली मिर्च, प्याज और भेड़ के मांस की सौंधी गंध छाई रहती थी। पिघलती चरबी की सनन-सनन के साथ राहगीरों की बातचीत की घरघराती आवाजें और भिश्तियों की रसहीन पुकारें मिली होती थीं।

यह तथाकथित पुराना एशिया था—वास्तविक पूर्व को देखने की उत्कंठा से अभिभूत हर आगंतुक सबसे पहले इसे ही देखने के लिए दौड़ता था। पुराना एशिया यहीं से, नगरप्रांत से शुरू होकर मुख्य सड़क के साथ-साथ सफेद इमारतों की रग्ता आती कतार की तरफ चला जाता था, सड़क को अपने घुटनभर झोपड़ों में बंद कर देता था और चौक के दूसरी तरफ फैले हुए मार्ग के विशाल परिदृश्य को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। उसके और नये शहर के बीच में लेनिन की कांस्य प्रतिमा थी।

साल भर पहले ऐसा ही था। इस साल चौक को पार करने के बाद ऊलानोमेव स्तम्भित-सा होकर वहां का वहां खड़ा रह गया। बाजार का कहीं पता न था—न मिट्टी की झोपड़ियां और न दुकानें। जहां पहले दुकानें थीं वहां खुदी हुई जमीन के सिवा और कुछ न था। सिर्फ दूर गली की तरफ एक तरफ कई बुलडोजर लगाये मिट्टी की दीवारों के अन्दर भारी मलबे का चौथाई को ढा रहे थे, जो मुख्य मार्ग का ही सिलसिला होता जाता था।

शहर आगे बढ़ता चला आ रहा था और पुराना एशियाई बाजार अपने बरतन भाड़े इकट्ठा करके नदी के पार खिसक गया था। अब भेड़ों की गंध तक वहा नहीं रही थी – चौड़े मार्ग की हवा उसे अपने साथ बहाकर ले गई थी।

जब ऊर्ताबायेव केंद्रीय नियंत्रण आयोग के कार्यालय में पहुंचा, तो उसे तुरंत जबरी के कमरे में पहुंचा दिया गया। अभियोक्ता ने काफी दूर तक उसके हाथ को अपने हाथ में थामे रखकर मित्रों की तरह उसका स्वागत किया।

"चलो, सारी बात पर सिलसिलेवार विचार करते हैं। अफगान सामूहिक फार्म के बारे में 'अनीस' में छपे लेख के अलावा तुम और क्या सामग्री जुटा पाये हो?"

"और कुछ नहीं।"

"और स्नाजायारोव? ऐं? मतलब यह कि इस बात की जड़ में तो कोई घटना नहीं थी? हो सकता है कि बहुत पहले कोई बात हुई हो? ऐं? तुम उससे पहले कभी नहीं मिले?"

"नहीं, मुझे याद नहीं पड़ता। मुझे लगा था कि मैंने उसे शायद कहीं देखा है, मगर हो सकता है कि मैंने उसे लोगों की किसी भीड़ में ही देखा हो। नहीं, मैं उससे पहले कभी नहीं मिला।"

"हूं... तो लगता है कि ब्यूरो के सामने तुमने जो बयान दिया था, उसमें तुम और कुछ नहीं जोड़ सकते, ऐं?"

"हां, मेरा भी यही खयाल है।"

"तो फिर तुम्हारे अतीत को ही लेते हैं। इसकी कुछ बात मुझे साफ नहीं लग रही है। तुम एक गरीब किसान के लड़के हो, और चुबेक किशलाक में पैदा हुए थे। फिर तुम बुखारा के मदरसे में कैसे भरती हो गये?"

"मेरे चाचा पैसेवाले मुल्ला थे। मेरे पिता का परिवार काफी बड़ा था – सब का पेट भरना मुश्किल था और मेरे चाचा के औलाद नहीं थी। मैं सबसे बड़ा बच्चा था। मेरे चाचा ने मुझे मौलवी बनाने का निश्चय किया। वह मुझे बुखारा ले गये और मदरसे में दाखिल करवा दिया। चाचा का वहां अपना हुजरा था और उससे उन्हें खासी आय होती थी। सच बात तो यह है कि मैं वहां शिक्षार्थी तो क्या, असल में नौकर जैसा ही था। मैं मुदर्रिस की खिदमत किया करता था। मैं कुल मिलाकर

कोई दो मास मदरसे में रहा। मेरे पिता और चाचा की सामाजिक स्थिति के बारे में चुग्रव में पूछताछ की जा सकती है। वहां के दहकान इस बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। मेरे पिता अभी वहीं रह रहे हैं "

"तुमने मदरसा कब छोड़ा था?'

'१६१७ में—मेरे खयाल में मार्च के महीने में। बुखारा के अमीर ने जब अपना फरमान जारी किया था, उसके कुछ ही बाद।"

"तुमने मदरसा अपने-आप छोड़ा था या तुम्हें निकाल दिया गया था?'

"मैं वहां से भाग गया था।"

'कहां भाग गये थे?

कूलाब।"

'तुम बुखारा से क्यों भागे?'

यह काफी लंबा किस्सा है और इसके अलावा, इस साबित करने के लिए कोई गवाह नहीं है।'

'लेकिन इसे साबित करना क्या जरूरी है?"

"खैर, हो सकता है कि जरूरी न हो, लेकिन इसका मेरे मामले से कोई ताल्लुक नहीं है।'

'लेकिन तुम भागे क्यों? क्या तुम मदरसे से तंग आ गये थे?"

नहीं, बात कुछ ऐसी हुई कि मेरा वहां रहना नामुमकिन हो गया।"

कोई राज है क्या? एँ?'

नहीं, राज तो कोई नहीं है। अलबत्ता बताने में वक्त बहुत लगेगा और बताने की याद कुछ नहीं है।'

'समझा अच्छा, यह बताओ, क्या तुम बुखारा में मिर्जा फाइउल्ला को जानते थे?"

मिर्जा फाइउल्ला? इनामजर की मार्फत उनसे क्या आप मिर्जा फाइउल्ला को जानते हैं? क्या आप तब बुखारा में ही थे? मिर्जा फाइउल्ला तो १६१७ में मारे गये थे।"

'किसने मारा उनको यह?'

'क्या मालूम—किसने क्यों मारा? यह मसला मीरगज़ब का था। खैर, हमारे काम तो मुझ पर मामला पड़ा था।

'क्या यह तुम्हारे हुजरे में ही हुआ था?'

"आपको यह भी मालूम है?"

अभियोक्ता की मूछो के नीचे एक मुसकान खेलने लगी।

"केंद्रीय नियत्रण आयोग को सब कुछ मालूम है। अरे, केंद्रीय नियत्रण आयोग की मरजी के बिना तो तुम्हारे चोगे का कमरबन्द भी नही खिसक सकता। क्या तुम्हारा यह खयाल है कि इस बात का फैसला करने के पहले कि तुम्हे पार्टी मे लिया जाये या नही, तुम्हारी जिदगी के हर साल को महीना महीना करके आका नही गया होगा?"

"तब फिर मुझसे क्यो पूछ रहे हैं?"

"किसलिए पूछ रहे हैं? ठहरो, अभी बताता हू क्राति के पहले, पढना शुरू करने के पहले मैं दरजी का काम करता था। मैं चोगे सिया करता था। गाहक आते और सीने का आदेश दे जाते। मैं नाप लेता और चोगा तैयार करना शुरू कर देता। कभी कभी ऐसा भी होता कि चोगा तो तैयार हो जाता, पर गाहक उसे लेने के लिए न आता। कोई गाहक इस बीच मे इतना गरीब हो गया होता था कि उसके पास अपना चोगा छुडाने लायक पैसे भी नही रहते थे, तो दूसरी तरफ, कोई इतना अमीर हो गया होता था कि अपना सस्ता चोगा लेने के बजाय वह किसी और दरजी के पास जाता और उसे अपने लिए बढिया कपडे का चोगा तैयार करने के लिए कह देता। इस तरह चोगे मेरी दूकान पर ही पडे रह जाते। कभी कभी, साल दो साल के बाद होता यह कि वे गाहक ही फिर आ जाते। पहली तरह के गाहक के पास आखिर फिर शायद पैसे आ जाते और दूसरी तरह के गाहक का इस बीच मे शायद दीवाला निकल गया होता और उसे यह डर होता कि कही ऐसा न हो कि कपडे के साथ साथ उसकी पेशगी भी मारी जाये। खर, किसी भी सूरत मे होता यह कि गाहक आता और अपने लिए बहुत पहले सिये गये चोगे को पहनकर देखता। लेकिन तब वह पाता कि चोगा उसे ठीक नही आ रहा है—या तो इस बीच भूखा रहने के कारण वह बहुत दुबला हो गया होता था, जिससे चोगा उस पर ऐसे ही लटकने लग जाता, मानो छडी पर, या वह इतना मोटा हो गया होता कि चोगा उस पर चढ ही न पाता। या उसकी तोद इस तरह निकल आती कि चोगा फटने को ही हो जाता। गाहक नाराज हो जाता, गालिया सुनाता और चल्लाकर चला जाता और मान लेता कि चोगा उसका है ही नही खैर, यही बात आदमी के किये के बारे मे भी है। कभी-कभी

बहुत पहले हुई किसी बात का खयाल आता है, तो मन में लगता है कि अहा, कितना अच्छा काम था वह! मगर मन में यह भी लग सकता है कि कितना बुरा काम था वह! और जब हम इस काम को उस आत्मा में जोडने की कोशिश करते हैं, जिसने वह किया था, तो पता चलता है कि वह उसके लिए या तो बहुत ही छोटा काम रह गया है या उसके बस से बाहर का काम हो गया है। किसी भी सूरत में नतीजा एक ही होता है– काम उसीका है, मगर फिर भी उसका नहीं है। आदमी को उसके पुराने चोगे में नहीं पहचाना जा सकता–इसके लिए उसे वह चोगा पहनाकर यह देखना जरूरी है कि वह उसे आता है या नहीं। कभी-कभी महत्व की बात यह नहीं होती कि आदमी अपने अतीत के बारे में क्या बता रहा है, बल्कि यह होती है कि कैसे बता रहा है। इसी लिए हम तुमसे बताने के लिए कह रहे हैं "

फूटी आंखवाला आदमी

तो, तुम्हारी राय में मिर्जा फतहउल्ला १९१७ में मारे गये थे?" अभियोक्ता ने अपनी कुर्सी पर पीठ टिकाते और ऊर्नाज़ियेव की तरफ अधखुली आंखों से देखते हुए पूछा।

"यह बिलकुल मेरी आंखों के सामने की बात है। क्या आपको यह नहीं मालूम?

जवरी चुपचाप अपनी मूछों को चबाता रहा और फिर बोला

'मिर्जा फतहउल्ला महमूदोव जिन्दा हैं और मजे में हैं। वह परसों ताशकन्द आये थे। उन्होंने तुम्हारे मामले के बारे में सुना तो तुम्हारे पक्ष में कहने के लिए आ गये।

हो नहीं सकता यह!'

'उनका कहना है कि उन्होंने सब कभी तुम्हारा [illegible] में पूछताछ की [illegible]। उन्होंने यह तो सुना था कि तुम भाग गये हो मगर यह नहीं पता पाया कि कहां चले गये।

'क्या वह सचमुच जिन्दा हैं?'

[illegible] हैं?

और वह हमारे पास हैं?

"बेशक। वह पार्टी सदस्य हैं। और कई जदीदों* जस नही है। वह बिलकुल शुरू स ही पूरी तरह स हमार साथ रह है। बेशक जब-तब उन्होने कुछ दक्षिणपथी प्रवृत्ति दिखाई है, मगर उन्होने अपने को जल्दी ही सभाल लिया है। मौजूदा राष्ट्रीयतावादी प्रतिक्रातिकारियो के खिलाफ उन्होने हमारी काफी मदद की है—उन्हे वह खूब अच्छी तरह से जानते हैं। तुमने जदीदो पर उनकी पुस्तिका पढी ह? बहुत बढिया है। इस पुस्तिका मे एक वाक्य ऐसा ह, जो जदीदी आदोलन का सारतत्व बहुत अच्छी तरह बताता ह। वह कहत है कि जदीद उस शिकारी का तरह है, जा तीतर पर निशाना लगाता है, मगर भालू पर चाट कर देता है और तब इतना घबरा जाता है कि अपनी बदूक फेककर भाग जाता है। बहुत अच्छी तरह से कहा है, है न? निशाना तो उन्हान उदारतावादी सविधान पाने का लगाया था, पर हाथ लगी समाजवादी क्राति! हा, जहा तक उनके अपनी बदूक फेककर भाग जान' की बात है, ता वह मिर्जा की पुरानी गलती है। मौजूदा मजिल मे उनकी जो प्रतिक्रातिकारी भूमिका है, उसको वह नजरअदाज करते हैं। फिर भी, बुनियादी तौर पर वह बडे निष्ठावान आदमी है—पार्टी के लिए अपना सिर भी दे देगे रुको जरा शायद वह आ ही गये हो। उन्होन आज आने का वादा किया था—किसी भी कीमत पर वह तुमसे जरूर मिलना चाहते थे।'

जबरी ने बटन दबाया।

सचिव ने प्रवेश किया।

"साथी महमूदोव आ गये क्या?

"अभी अभी ही आये है। भेज दू?"

"हा भेज दो।"

मिर्जा फतहउल्ला देहली पर पहुच भी गया था।

"आदाब अर्ज है, मुल्लाजी! भई वाह, क्या मुलाकात हुई है!" फतहउल्ला ने अपने दोनो हाथो म ऊर्तावायव क हाथ को लेत हुए कहा। 'क्या, तुम्ह ता इसका खयाल भी नही होगा कि मुझस मुलाकात हा सकती ह? खैर, ता इस बार तुम्ह मुसीबत से निकालन का मौका मुझे मिला है। हा तुम ज्यादा नही बदले हो, कसम खुदा की, जरा भी नही बदल हो

---

*मध्य एशियाई राष्ट्रीयतावादी सुधारवादी आदोलन म भाग लेनवाले लाग।

तुम! बस, अब तुम्हारे सिर पर इमामा नही है और तुम्हारे बाल कुछ पकने लगे है। अरे, तुम मेरी तरफ इस तरह क्यो घूरे जा रहे हो? क्या मुझे पहचान नही रहे हो? बहुत बूढा हो गया हू, है न? तो भई, समय के आगे किसका बस चलता है? अगर कही हम सडक पर मिले होते, तब तो तुम शायद मुझे पहचानते भी नही।"

"नही, आप मे ज्यादा तबदीली नही आई है," ऊर्तावायेव ने अपनी आखे फतहउल्ला के ऊपर से हटाइ नही, "लेकिन फिर भी मैं आपको नही पहचान पाता। और कुछ नही, तो सिर्फ इसलिए कि मुझे आपको जीता जागता देखने की उम्मीद ही नही थी। अब भी मैं बात को पूरी तरह से समझ नही पा रहा हू। यह हो कैसे सकता था? क्या आप वहा से सचमुच जिंदा बच निकले थे?"

'ठीक है, जरा अच्छी तरह से देख लो। मेरे ऊपर हाथ फेरकर देख लो।"

"हा, देख तो रहा हू। बस, मैं अपनी आखो पर विश्वास नही कर पा रहा। क्या मैंने इन्ही आखो से यह नही देखा था कि वे आपको किस तरह आगन म घसीटकर ले गये थे और आपके अग को अग से अलग कर दिया था।"

'तुम्हारे उसी मदरसे मे न? भई, वह भी एक अजीब तमाशा था! तब तो तुमने यह भी देखा होगा कि उन्होने उसकी आख कैसे फाड दी थी?"

"किसकी आख?

"इस जरा-जवरी को नही मालूम कि हम किस बारे म बात कर रहे हैं। वह शायद यह समझ रहे है कि हम दोनो के ही दिमाग खराब हो गये हैं। हा, भई, क्या हाल है? मै तो तुमसे दुआ-सलाम करना तक भूल गया। समझ रहे हो न कि हम क्या बातें कर रहे है?"

'नही, अभी तक तो नही समझ रहा, अभियोक्ता ने सिर हिलाया, "समझा हुआ तो ऊर्तावायेव भी नहीं लगता है।'

"मैंने तुम्हे बताया था न कि इन्होंने किस तरह मुझे अपने हुजरे म छिपा लिया था? हा, तो जब मुल्ला लोग झपटते हुए मदरसे म आये, तो इन्होंने मुझसे कहा, 'मास्टर मुहसिन के हुजरे म जाकर छिप जाइये, वहा कोई नहा है।' सोचने में वक्त जाया किये बिना म वहां भाग गया। म दौडते हुए उस पतले जीने पर चढा और हुजरे म घुस गया। हुजर

छोटा सा ही था—कोई चार कदम का—और अंधेरा था। मैंने इधर उधर निगाह जो डाली, तो देखा कि कोने मे गद्दा पर कोई लेटा हुआ है। वह सफेद इमामा बाधे हुए था—कोई इशान या मुल्ला रहा होगा। उसकी दाढी काली थी और वह अफगानी जूतिया पहने हुए था। मेरी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करू क्योकि वापस जाने का सवाल ही नही उठता था। मैंने जरा ज्यादा गौर से देखा—इशान घोडे बेचकर सोया हुआ था और खर्राटे ले रहा था। हुजरे के दूसरे कोने मे मुझे एक नीचा सा दरवाजा नजर आया—शायद किसी और हुजरे मे जाने का रास्ता। मैं हाथ-पैरो के बल चलकर उसमे घुस गया। देखता क्या हू कि ढेर सारे कबल रखे हुए हैं—वह जरूर सोने का कमरा रहा होगा। मैं एक कोने मे जाकर दुबक गया, अपने ऊपर कई कबल और तकिये डाल लिये और बिलकुल अचल होकर पड रहा। दूसरे हुजरे से बहुत शोर शराबे, हल्ले गुल्ले और चीख पुकार की आवाजें आने लगी। फिर खामोशी छा गई। मैं बिलकुल हिले डुले बिना वही पडा रहा। कोई हुजरे में आया और फिर बाहर चला गया। फिर खामोशी छा गई। मैं वही पडा पडा इतजार करता रहा। आखिर मैंने अपने मन मे कहा, 'चाहे कुछ भी हो जाय, मैं रात यहा नही गुजारूगा। कही मुदर्रिस आ गया, तो वह आफत खडी कर देगा। यहा से भाग जाना चाहिए।' मैंने मुदर्रिस का चोगा पहन लिया, जो मेरी एडियों तक आता था, दूसरा इमामा बाधा और बाहर निगाह डाली। पहला हुजरा खाली था—दाढीवाला आदमी जा चुका था। बस, चायदानी के टुकडे टुकडे हो गये थे और सारे कबल उलटे पलटे और पैरो से रौंदे हुए पडे थे। मैं चुपके से सीढियो पर से उतरा और बाहर आगन मे आ गया। वहा कोई भी नहीं था। मैंने अपनी नाक चोगे मे घुसा ली और इमामे को आखो तक खीच लिया और चुपचाप, बिना जल्दी किये फाटक पर आ गया। मैं अपनी जूतिया घसीटता और एक बार भी पीछे की तरफ न देखता हुआ चलता चला गया। मैंने फाटक को पार किया, पहली ही गली मे मुड गया और फिर ऐसे भागा, ऐसे भागा कि जैसे कयामत आ गई हो! आखिर जब मैं एक महफूज जगह पर पहुच गया, तो यकीन नहीं कर पा रहा था कि मैं बच निकला हू। मैं इस चक्कर से निकला, तो कैसे?

"दो-तीन दिन बाद हमारा एक साथी—एक और जदीद—मुझसे मिलने

आया। उसने कहा, 'जानते हो, क्या हुआ? दो दिन हुए, जब मिलर और अमीर ने हमारे प्रतिनिधिमंडल का खात्मा करने की कोशिश की था, तब एक जदीद का पीछा करती मुल्लाओं की भीड मदरसा मीर ए अरब म जा घुसी और उसने जदीद की जगह मार-मारकर एक बडे अफगान इशान का भुरता बना दिया। वह काबुल से आया था और मदरसे के मुदरिस के साथ ठहरा हुआ था। कहते हैं कि वह अमीर के पास किसी गुप्त मिशन पर आया हुआ था। जल्दी जल्दी मे मुल्लाओं ने उसे भेस बदला जदीद समझ लिया और उसे हुजरे से घसीटकर बाहर ले जाकर उसकी कसकर ठुकाई की और उसकी एक आख भी फोड डाली। अगर एक मुल्ला ने वक्त रहते उसे पहचान न लिया होता तो वे मारते-मारते उसका दम ही निकाल देते। इशान ने अमीर से शिकायत की है। कहते है कि अमीर के हुक्म से उसे महल ले जाया गया है और उसने रूसी रेजीडेसी से डाक्टर को बुलवाया है और पूछताछ शुरू करवा दी है। कहते हैं कि वह बच तो जायेगा, मगर उसकी आख अच्छी नही हो सकती। उसके बदशक्ल चेहरे पर जिन्दगी भर जदीदो का निशान बना रहेगा "

जबरी ने ऊर्ताबायेव की तरफ निगाह डाली और हसना बद कर दिया। ऊर्ताबायेव का चेहरा लाल सुर्ख हो गया था।

'एक आख फोड दी? एक आख?" उसने फतहउल्ला के चेहरे पर निश्वास छोडते हुए पूछा।

"क्या, क्या हुआ तुम्हे? दिमाग तो नही खराब हो गया? क्या बात है?"

ऊर्ताबायेव उठकर खुली हुई खिडकी की तरफ चला गया।

जबरी और फतहउल्ला ने एक दूसरे की तरफ देखा।

जब ऊर्ताबायेव ने मुडकर देखा तो उसका चेहरा शात था। वह मेज के पास आ गया।

"बेशक मैं गलती पर हो सकता हू,' उसने माना किया और नीची आवाज मे बहुत ही साफ-साफ बोलते हुए और बोलते समय जबरी पर अपनी आखें टिकाये हुए कहा, 'बेशक, मै गलती पर भी हो सकता हू लेकिन आपने आज सवाल पूछा था कि क्या मैने [illegible] का चेहरा देखा था। मुझे लगता है कि मैने उसे देखा था। असलियत यह बहुत ही पहले की बात है—और तब उसकी दोनो आखें थी। और इसी कारण यह

बात कभी मेरे दिमाग मे नही आई कि अगर ख्वाजायारोव की दाढी छाट दी जाय और दूसरी आध लगा दी जाये, तो वह इशान खालिव वनीद ए उमर की जीती जागती मूरत बन जायगा।

दर्रे मे सामूहिक फार्म

मुख्य सैक्शन से दूसरे सक्शन को जानेवाली सडक पर वीरान मैदान मे दो घुडसवार चले जा रहे थे। कुम्हलाया हुआ हलदिया आकाश धूमिल होकर पश्चिमी क्षितिज पर शुरू, पारदर्शी शिखा का रूप धारण करता जा रहा था। दिन की गरमी भी कम होने लगी थी। सवारो न सडक को छोड दिया और सीधे पहाडो की तरफ चल दिये। उनके घोडे बहुत हल्की चाल मे चल रहे थे। कोमारकी ने पसीने से तर सिगरेट का पैकेट निकाला, एक सिगरेट जलाई और अपने साथी की तरफ पैकेट बढाते हुए बोला

"लो, सिगरेट पियो, मुन्नारोव!"

वे पसीने म भीगे घोडो को तेज चलने के लिए मजबूर किये बिना खामोशी के साथ चलते चले गये। खाकी कमीज पहने गठील ताजिक ने अपनी सिगरेट खत्म की और रकाब के साथ रगडकर बडी सफाई के साथ उसे बुझा दिया।

पहाडो म एक दरार म खडे टीले के पीछे पहले झोपडे नजर आये। सवारो ने राम को झटका और किशलाक की नेवहीन सडक मे हलकी दुलकी चाल मे प्रवेश किया। कोई दसेक घरो के पास से होकर वे बहते पानी की आवाज की तरफ मुड गये और अधर लटकी एक पतली सी नाद के पास खडे हो गये और चुल्लुओ से पानी को उलीचने लगे। पानी की पतली धार की महीन खनक ने खामोशी को सुतारी की तरह से चीर दिया। सवार कुछ आगे और जाने के बाद अन्नावखाने के सामने जाकर घोडो पर से उतर गये। मुन्नारोव ने हाथो को अपने मुह से लगाकर ताजिक मे चिल्लाकर कुछ कहा। उसकी पुकार के जवाब म सबसे पासवाली दीवार के पीछे से बडे गोल माथे और बडी बडी आखोवाले एक छोकरे ने झाककर देखा और बाड मे से निकलकर सामूहिक फाम के प्रधान को ढूढकर लाने के लिए भाग गया। थोडी ही देर बाद खुद प्रधान भी आता नजर आया—अपने चोगे पर हवाई बेडे तथा रसायन सहयोग सामाइटी

के बैज लगाये एक सौम्य मुख और हलके रंग की दाढ़ीवाला दहकान। उसका मुंह जिन घनी मूछों से ढका हुआ था, उनके कारण वह मुसकरा नहीं सकता था – वह अपनी बरौनियों से, अपने दाढ़ी से और अपने सारे हट्टे कट्टे बदन से मुसकराता था। उसने अपने दोनों हाथों से मेहमानों से हाथ मिलाये। निमिष मात्र में ही अलावखाने के मिट्टी के फर्श पर नमदे के कालीन बिछ गये, तश्तरी में शहतूत और कटोरे में दही भी आ गया।

"सुनो, दौलत, हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है," मुस्तारोव ने इधर-उधर दौड़ भाग करते प्रधान को रोकते हुए कहा। "जरा एक काम करो – दहकानों को इकट्ठा करो। हमें उनसे कुछ बात करना है।"

प्रधान चला गया। कालीन पर बैठे कोमारको और मुस्तारोव ने शहतूतों को खाना शुरू कर दिया।

'बेशक, प्रबंध समिति का दुबारा चुनाव करवाया जा सकता है," मुस्तारोव ने कहना शुरू किया, "यद्यपि इसका मतलब होगा अधिकांश सक्रिय सदस्यों का हाथ से निकल जाना। लेकिन दौलत जैसा दूसरा प्रधान हमें नहीं मिलेगा। वह अच्छा किसान है, पढ़ा लिखा भी है, पार्टी का उम्मीदवार सदस्य है, और भूतपूर्व चावेसुखिया* है। उसकी काफी मान है और सारे मामूहिक काम को वह जैसे अपनी हथेली पर रखता है। उसकी जगह चाहे कोई भी क्यों न आ जाय, कोई भी काम को उसकी तरह से नहीं कर सकता।'

शहतूत की तश्तरी को खाली कर देने के बाद कोमारको ने अपना हाथ दही के कटोरे की तरफ बढ़ाते हुए कहा

अगर तुम चाहते हो कि दहकान आयें और अपने मन की बात सच सच कहें, तो उनकी जबानें खोलने का आला तरीका यही है प्रबंध समिति को फिर से चुनने के सवाल को पेश करना ही है। तुम सभा को शुरू करो, पार्टी की जिला समिति के सचिव की हैसियत से बताओ कि मामला क्या है और फिर मुझे बोलने की इजाजत दे दो। मैं उनसे मामूहिक काम की प्रबंध समिति के सदस्य के नाते ही उतना कुछ कहूँगा।'

दहकान धीरे धीरे एक एक करके जमा होने लगे और एक बड़े

---

*मध्य एशिया में सोवियत सत्ता के समर्थक स्वयंसेवक दस्तों के सदस्य।

थे बँज लगाये एक सौम्य मुख और हलके रंग की दाढ़ीवाला दह्कान। उसका मुह जिन घना मूछो से ढका हुआ था, उनके कारण वह मुसकरा नही सकता था—वह अपनी बरौनिया से, अपने दाढ़ी से और अपने सारे हट्टे कट्टे बदन से मुसकराता था। उसने अपने दोनो हाथा से मेहमाना से हाथ मिलाये। निमिष मात्र मे ही अलावखाने के मिट्टी के फश पर नमदे के कालीन बिछ गय, तश्तरी मे शहतूत और कटारे म दही भी आ गया।

'सुनो, दौलत, हमारे पास ज्यादा वक्त नही है," मुख्तारोव न इधर उधर दौड भाग करते प्रधान को रोकते हुए कहा। 'जरा एक काम करो—दहकानो को इकट्ठा करो। हमे उनसे कुछ बात करनी है।"

प्रधान चला गया। कालीन पर बठे कोमारको और मुख्तारान ने शहतूतो को खाना शुरू कर दिया।

'बेशक, प्रबध समिति का दुबारा चुनाव करवाया जा सकता है," मुख्तारोव ने कहना शुरू किया, 'यद्यपि इसका मतलब होगा अधिकाश सक्रिय सदस्यो का हाथ से निकल जाना। लेकिन दौलत जैसा दूसरा प्रधान हमे नही मिलेगा। वह अच्छा किसान है, पढा लिखा भी है, पार्टी का उम्मीदवार सदस्य है, और अतएव चोबेसुखिया* है। उसका काफी मान है और सारे सामूहिक फाम को वह जैसे अपनी हथेली पर रखता है। उसकी जगह चाहे कोई भी क्या न आ जाये, कोई भी काम को उसकी तरह स नही कर सकता।"

शहतूत की तश्तरी को खाली कर देने के बाद कोमारको ने अपना हाथ दही के कटोरे की तरफ बढाते हुए कहा

"अगर तुम चाहते हो कि दहकान आयें और अपने मन की बात सच सच कहे, तो उनकी जबानें खोलने का अकेला तरीका सारी ही प्रबध समिति को फिर स चुनने के सवाल को पेश करना ही है। तुम सभा को शुरू करो, पार्टी की जिला समिति के सचिव की हैसियत स बताओ कि मामला क्या है और फिर मुझे बोलने की इजाजत द दो। मैं उनके सामूहिक फाम की प्रबध समिति के सदस्य के नात ही उनम कुछ कहूगा।"

दहकान धीरे धीरे एक एक दो दो करके जमा हाने लगे और एक बडे

---

*मध्य एशिया में सोवियत सत्ता के समथक स्वयसेवक दस्ता के सदस्य।

दिया और खेतो को लकडी के पुरातन हलो से ही जोतता और पटेला का ही इस्तेमाल करता रहा। वह स्तेपी म हमेशा एक आदमी को चौकीदारी पर खडा रखता था, जिसका काम ही उसे जिला अधिकारियो के अप्रत्याशित दौरो की खबर देना था। ऐसा मौका आ पडने पर प्रधान चालाकी से इतना नही, जितना कि उदार दाताओ को सतोष प्रदान करने की इच्छा से तुरत यूरोपीय हलो मे बलो को जुडवाता और उन्हे धूमधाम से खेतो पर भेज देता। बहुत अरसे तक जिला अधिकारी इस बात की सराहना करते रहे कि काम को दिये औजार कितनी अच्छी हालत म है, लेकिन आखिर जब उन्हे रहीमशाह की चाल का पता चला, तो उन्हे शक हुआ कि वह जान बूझकर फसल को कम करने की कोशिश कर रहा है और उन्होने उसे उसके पद से हटाकर उसकी जगह दौलत को नियुक्त कर दिया।

थोडा थोडा करके अतावखाने के सामनेवाला मैदान लोगो से भरने लगा। सबसे आखिर म आनेवालो म एक हैदर रजबोव था, जो हाल ही मे सामूहिक कृषको की काग्रेस म शामिल होने के लिए स्तालिनाबाद गया था और वहा पता नही किस तरह शेष प्रतिनिधिमडल से अलग हो गया था। आखिर वह स्तालिनाबाद के हवाई अड्डे पर मिला, जहा वह दो दिन और रात से हर्षविह्वल हो यह देख रहा था कि हवाई जहाज कैसे उडते और उतरते है। उसके साथी प्रतिनिधि उसका और अधिक इतजार नही कर सकते थे और इसलिए एक दिन पहले ही रवाना हो चुके थे। सयोग से उसी दिन एक जहाज क्लाक के लिए डाक्टर को लेकर आ रहा था। खोय हुए प्रतिनिधि को उसी मे एक जगह दे दी गई और इस तरह वह अपने जिले म वापस ले आया गया। पायलट ने बाद म बताया कि प्रतिनिधि ने उतरकर पहले तो जहाज के आगे सिर झुकाया और फिर किसी भी बात का जवाब न देते हुए सिर पर पैर रखकर वहा से भाग खडा हुआ। किशलाक लौटने के बाद हैदर ने—जो पहले भी कभी ज्यादा बात नही करता था—अब बिलकुल मौन साध लिया और उसने सामूहिक कृषको की काग्रेस के बारे मे कुछ भी नही बताने से इनकार कर दिया। पहले तो लोगो ने समझा कि उसकी खामोशी कुछ दिन बाद टूट जायगी और फिर वह बताने लगेगा, लेकिन बाद मे उन्होने निराशा से अपने कधे उचका दिये और इस बात पर अफसोस करने लगे कि उन्होने हैदर की जगह किसी और को क्यो नही भेजा।

पद्रह लोग जमा हो गय, तो प्रधान वापस आया और बोला कि वह और किसीको नहीं इकट्ठा कर सकता – खानजरोव और कारी अब्दुरम्-तारोव बीमार ह, रहमानोव शानी करने के लिए गया हुआ है, फजलुद्दीन अहमदोव काम क काम से बस्ती गया हुआ है और जहा तक बाकी लोगो का सवाल है, उनमे से कुछ दूरवाले खेतो म हैं और कुछ अपने अपने काम से बाहर गये हुए हैं।

यह क्या बात ह? हम ग्राम सभा करने की तीन बार कोशिश कर चुके ह और हर बार आधे से भी कम लोग शामिल होने क लिए आये। इस तरह कसे काम चलेगा, दौलत?

'तो म क्या करू – म उन्हे कोई हाककर तो ला नहीं सकता? व भेडा की तरह भटक जाते ह। मैं उनसे बात कर चुका हू, उन्हे पहले से ही कह चुका हू। व आना ही नहीं चाहते।'

सभी सामूहिक कृपको को इस सभा म होना चाहिए था

तो फिर मैं क्या करू? उन्हे बाधकर लाऊ? लोगो म चेतना ही नहीं है, व अपने हित की बात भी नहीं समझते।

कोमारको से परामश करने के बाद मुख्तारोव ने सभा करने का निश्चय किया। कोमारको दही खत्म कर रहा था।

लगता है कि सारी पुरानी प्रबध समिति यहा मौजूद है और बाकी सामूहिक कृपको म से सिफ आठ ही आये ह। तो फिर कैसा चुनाव होगा – ये अपने मत अपने को ही देंगे, है न?

मने तुमसे क्या कहा था? सारे सक्रिय सामूहिक कृपक मौजूदा प्रबध समिति क सदस्य ह और उनके अलावा पाचेक काफी सक्रिय किसान भी हैं। बाकी लोग क्मावेश निष्क्रिय ह। यही तो सारी मुसीबत है – असल म ऐसा कोई और है ही नहीं, जिसे व चुन सकें।

'तुम्हे कैसे मालूम? हो सकता है कि जब जब तुम ग्राम सभा करना चाहते हो तब-तब उन्हे जान बूझकर और काम पर भेज दिया जाता है?"

मुख्तारोव ने आखिरी फिकरे को नहीं सुना। उसने सभा शुरू कर दी और संक्षिप्त प्रस्तावना क बाद कोमारको से बोलने क लिए कहा।

धीरे धीरे बोलना – म अनुवाद कर दूगा।

कोमारको ने हाथ से अपने मुह को पोछा।

"साथी दहकानो, मेरा खयाल था कि मैं सिफ पद्रह लागा सही नहा, आप सभी स बात करूगा। आपके सामूहिक फाम की प्रबध समिति का सदस्य बन मुझे यह दूसरा साल है, लेकिन एक बार भी मैंन किसा भा सभा म आने से ज्यादा सदस्या का नहीं दखा। यह काई अच्छी बात नहा है! सामूहिक किसाना म राजनीतिक वग चेतना की कमी का होना कोई सफाई नही है—यह बस इसी बात का एक और सबूत है कि प्रबध समिति अपन काम का अच्छी तरह से नही कर रही है। समिति का पहला कतव्य है सारे ही सामूहिक कृषका की राजनीतिक चेतना का ऊचा करना, उन्ह सामूहिक फाम के नतृत्व म खीचकर लाना और कामकाज को उसके अपन सकीण क्षेत्र के भीतर ही नही चलाना ठीक है, अनुवाद करो!

प्रबध समिति ने खराब काम का इजहार सिफ इसी बात म नहीं हुआ है। ख्वाजायारोव का शमनाक मामला, जो अतिम क्षण तक हमारी प्रबध समिति का सदस्य बना रहा, सारे ही सामूहिक फाम पर, और सबसे ऊपर उसके नेतत्व पर कलक लगाता है। प्रबध समिति न काफी वग सतकता नही दिखाई, वह वग शत्रु को समय रहते बेनकाब नही कर पाई, जो सामूहिक फाम मे छिपकर घुस आया था। इससे भी बढकर बात यह है कि उसन इस दुश्मन को प्रोत्साहित किया, उसे तरक्की देकर जिम्मेदारी के पद पर पहुचाया और सोवियत सत्ता का झासा दन मे उसकी मदद की। ख्वाजायारोव के काले कारनामा की जिम्मेदारी सारी ही प्रबध समिति के ऊपर है चलो, अनुवाद करो!

' अफगान दासमची ख्वाजायारोव यहा हम लोगो के बीच लगभग तीन साल सक्रिय रहा। इसम जरा भी शक नहीं कि हमारे सामूहिक फाम के भीतर उसके मददगार भी रहे होगे। प्रबध समिति यह कहकर अपना सफाई दने की कोशिश करती है कि जिस अकेले आदमी को ख्वाजायारोव के इरादा की जानकारी थी, वह था उसका तथाकथित भाई, जिसन उसे सामूहिक फाम मे प्रवेश दिलवाया था और जो उसके साथ ही अफगानिस्तान भाग गया है। यह एक बचकाना बहाना है। समिति न सिफ अपन सामूहिक फाम के सदस्या को अफगानिस्तान भाग जाने से रोकन मे ही नाकामयाब रही है, बल्कि उसन उनके भाग जाने के बाद भी ख्वाजायारोव के सगी साथिया का परदाफाश करन के लिए कुछ भी नहा किया है। इससे यह साबित होता है कि—अगर हम इस बात को कम से कम करके भी कह,

तो भी—प्रबन्ध समिति को तनिक भी वग चेतना नही है, वह जनसाधारण से अलग है और अपने ही सामूहिक फाम और उसके सदस्या की मनोदशा से बिलकुल नावाकिफ है। दूसरे शब्दा म, मौजूदा प्रबध समिति ने अपने आपको सामूहिक फाम का आगे प्रबध करन के अयोग्य साबित कर दिया है चलो, अनुवाद करो।

अत मे, पुरानी प्रबन्ध समिति के सदस्य के नाते म प्रस्ताव करता हू कि सारे ही नेतत्व का तुरत फिर चुनाव किया जाना चाहिए। यह रही पहली बात। दूसरी बात यह है कि जिस सामूहिक फाम न सोवियता की अपन बदतरीन दुश्मना का परदाफाश करने मे मदद नही की है, वह इस लायक नही है कि लाल अक्तूबर के नाम का धारण कर। इस कलक के दाग को केवल सारे सामूहिक कृपक मिलकर ही मिटा सकते ह, जिन्ह ख्वाजायारोव पथ के सभी अवशेपा का पता लगाने और नेस्त नाबूद करने म हमारी मदद करनी होगी। नई प्रबन्ध समिति के सामने भी उसके पैदा होन के साथ यह कायभार आ खडा होगा। पार्टी उसके काम करन की योग्यता की जाच इस बात स करेगी कि वह इस कायभार को किस तरह पूरा करता है अनुवाद करो, म अपनी बात कह चुका।

जब शोर कुछ कम हुआ, तो दौलत न बोलने की अनुमति मागी।

साथी दहकानो। साथी कोमारको न जो कुछ कहा है, उससे सामूहिक फाम का प्रधान होने के नाते मुझे बहुत तकलीफ हुई है। खासकर इसलिए और भी ज्यादा कि उन्हान जो कहा है, वह बिलकुल ठीक है। हमे, जो उसी गाव म रहते है, जिसम ख्वाजायारोव रहता था और उसके साथ साथ प्रबन्ध समिति मे भी काम करते थे, जिला समिति के साथियो के मुकाबले उसकी असलियत को पहले जान लेना चाहिए था। और मरे ऊपर इसका दोप औरा के मुकाबले ज़्यादा है। पिछली बार साथी मुज्नारोव ने मुझसे पूछा था, तुम पार्टी के उम्मीदवार सदस्य हो, अगर तुम खुद ही यह कहते हो कि तुम ख्वाजायारोव को अच्छी तरह से नही जानते थे, तो तुमने उसे पार्टी की सदस्यता दने की सिफारिश कसे कर दी?' ख्वाजायाराव को म और हम सब कसे जानते थे? उसके काम स, उसकी बाता से। वह वग चतन दहकाना की तरह बात करता था, सोवियता के प्रति निष्ठा प्रकट करता था। और सभा लोग इस बात की गवाही देंगे कि वह काम अच्छा करता था वग चेतन तरीके से काम करता था और उस हमारे

सामूहिक फाम का सबसे अच्छा सक्रिय सदस्य माना जाता था। आखिरी हमले के समय वह स्वयसेवका के एक दस्ते का गाइड बनकर गया था और बासमचियो से घायल होकर आया था। इसी लिए हमने उसे सबसे अच्छे चोवेसुखिया होने का सम्मानपत्र प्रदान किया। अब पता चलता है कि हो सकता है कि उसे बासमचिया ने घायल किया ही न हो, बल्कि वह हमारे सुख अस्करा से ही घायल हुआ हो। लेकिन हमे इसके बारे म कसे पता चलता? पूरा दस्ता खत्म कर दिया गया था। वह हमारे सुख अस्करा के साथ किशलाक लौटकर आया था और उसका बडा सम्मान किया जाता था। हमारी पार्टी इकाई के सचिव न मुझसे कहा, 'यह क्या बात है, दौलत? क्या अपने फाम पर तुम ही अकेले पार्टी के उम्मीदवार सदस्य हो? अगर तुम अपने सामूहिक फाम के सवश्रेष्ठ सक्रिय लोगा और चावेसुखिया को पार्टी मे लान म हमारी मदद नही करते, ता भला तुम किस तरह के कायकर्ता हो?' इसलिए जब म यहा लौटकर आया, तो म दवाजायाराव से मिला और बोला, तुम पार्टी म क्यो नही शामिल हो जाते, ईसा? तुम्हारे पास सम्मानपत्र है, तुम फाम की प्रबन्ध समिति के सदस्य हो और सामूहिक फाम के सवश्रेष्ठ सक्रिय कारकुन हो,' मैंने उससे कहा, 'पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बनने की दरखास्त दे दो।' और उसन जवाब दिया 'मैं बडी खुशी से दरखास्त दे दूगा, पार्टी मुझे पसद है और सोवियत सत्ता पसद है। लेकिन पार्टी मे मुझे नही लिया जायेगा। इसके लिए जरूरी है कि कोई पार्टी सदस्य मेरी सिफारिश करे।' और मने कहा, 'चलो, म तुम्हारी सिफारिश कर दूगा और 'लाल हलवाहा' सामूहिक फाम का आलिम असमतुद्दीनाव भी सिफारिश कर दगा।' लेकिन बताइये, क्या आपके खयाल म हम यह जानते थे कि हम किसकी सिफारिश कर रहे हैं? अब पता चलता है कि हमने गलती की, लेकिन उस वक्त सभी यही सोचते थे कि हम ठीक काम कर रहे हैं और पार्टी इकाई के सचिव तक ने इसके लिए मेरी बहुत तारीफ की थी। मैं तो अच्छा ही करना चाहता था, लेकिन अब पता चलता है कि मैं पार्टी के सामने दोषी हू और सामूहिक फाम के सामने दोषी हू। और अब पता लगता है कि मैं अपने अलावा और किसी की सिफारिश नहीं कर सकता। मतलब यह कि मुझमे वर्ग चेतना नहीं है और इसलिए मैं सामूहिक फाम का प्रधान होने का पात्र नही हू। और इसलिए, साथियो, मेरी आपसे दरख्वास्त है कि आप मुझे प्रधान के पद से अलग कर दें और

मेरी जगह किसी और को नियुक्त कर दें। सामूहिक फार्म मुझे चाहे किसी ही काम पर भेज दे, मैं आपके सामने और जिला समिति के साथियो के सामने यह साबित कर दूगा कि मैं सोवियत सत्ता के लिए काम करने मे कोई कसर नही छोडूगा और किसी भी प्रतिक्रांतिकारी साप का रास्ता रोकने से नही चूकूगा। आखिर मे, साथी दहकानो मैं आपसे कहना चाहता हू कि मैंने मेहनत से और ईमानदारी से और अपनी पूरी योग्यता से काम किया है और अगर मैंने किसीका कोई काम नही किया, तो वह मेहरबानी करके मुझे माफ कर दे और बुरा नही माने और मैं आपसे यह भी कहना चाहता हू कि यह हमारे लिए बडी शरम की बात है कि दो कुत्तो ने हमारे सारे सामूहिक फाम पर इतना बडा कलक लगा दिया ह। हम अब शरम के मारे और किशलाको मे अपने मुह भी नही दिखा सकते हैं। कल कोई भी सामूहिक फाम की पैठ मे नही गया, और भला क्या? हम जहा भी जाते हैं, लोग हमारी तरफ अपनी उगलियो से इशारे करते हैं और कहते ह, 'अहा, देखा, ये रहे 'लाल अक्तूबर' सामूहिक फाम वाले!' जब दहकानो ने यह सुना कि ख्वाजायारोव न विदेशी इजीनियर को मारने की कोशिश की थी, तब से वे हमारे सामूहिक फाम को बहुत बुरा समझने लगे हैं। इसलिए, साथी दहकानो, मैं आपसे आपके हित मे ही कह रहा हू कि आप वग चेतन बनें। और अगर आप मे से कोई भी कुछ भी जानता है, तो वह फौरन आगे आये और बोले, ताकि हमारे सामूहिक फाम पर फिर कभी ऐसा कलक न लगे, क्योकि यह हम सभी के लिए बहुत बडा सबक है।"

जबरदस्त शोर मच गया। मलिक अब्दुकादिरोव ने बोलने की इजाजत मागी और कहा कि सारा दोष प्रबध समिति के ऊपर ही लगा देना गलत है। दोष सिफ समिति का ही नही, बल्कि सारे सामूहिक कृपका का है। ख्वाजायारोव को सभी जानते थे, मगर उसकी साजिशा की काई भी थाह नही लगा पाया। और जहा तक दौलत की बात है, सामूहिक फाम के लिए उससे बेहतर प्रधान नही मिल सकता—वह पढा लिखा है और अच्छा किसान है और अगर उसकी जगह किसी कम लायक आदमी को नियुक्त कर दिया जाये, तो सामूहिक फाम का उससे कोई फायदा नही होगा।

इसके बाद बेवा जुमुरुद ने बालना शुरू किया और कहा कि दौलत को रहने दिया जा सकता है, मगर प्रबध समिति का फिर चुनाव करना कोई

बुरा नही रहेगा, क्योकि समिति के सदस्य बहुत दिना से अपन पदा पर हैं और दूसरो को भी मौका दिया जाना चाहिए। फिर सभाग्रा मे भी ज्यादा लोग आया करेगे। इसके अलावा यह बात एकदम जरूरी हे कि प्रबध समिति म मरदा के अलावा औरते भी हो। अभी क्या है कि लगता तो यही है कि सारे मरद बडे वग-चेतन हैं, लेकिन अपनी बीविया को ताले मे बद करके रखते हैं, जैसे उनका सामूहिक काम स कोई सरोकार ही नही है। लेकिन सावियतो का कहना है कि औरत भी सामूहिक फाम की उसी तरह से सदस्य हैं, जैसे कि मरद।

हसी मजाक और ठट्ठा शुरू हो गया। लेकिन तभी मुख्तारोव न सभा को काबू म कर लिया और नाम प्रस्तावित करने का आदेश दिया।

चारा तरफ से नाम आने लगे

"बेवा जुमुरुद!"

'हैदर रजबोव!"

"ठीक हे! बडा सक्रिय आदमी ह—छ महीन म ता वह हम स्तालिना बाद काग्रेस के बारे मे भी बता देगा।"

'क्या हम पुरानी प्रबध समिति के लोगो का भी चुन सकते ह?"

"निजी तौर पर पुरानी समिति के सदस्य भी चुन जा सकते ह।'

' साथी कोमारको!"

दौलत!"

"शाहाबुद्दीन कासिमोव!"

' करी अब्दुस्सत्तारोव!'

"इकराम अजीमोव!

पुनर्निवाचन के फलस्वरूप य लोग नई प्रबध समिति के सदस्य चुन गये बेवा जुमुरुद, हैदर रजबोव, करी अब्दुस्सत्तारोव दौलत बूढा इकराम अजीमाव, नियाज हसनोव और कामारको। दौलत को सभा न सवसम्मति से फिर प्रधान चुना।

मुख्तारोव और कोमारको के जाने के बाद दहकान अभी भी तरह-तरह की बाता के बार मे बहस करते हुए धीर धार बिखरकर अपन अपने घर चले गये। सबस आखिर म नियाज हसनोव और मलिक अब्दुल्कादिराव उठे। कपास की छटाई पास आ रही थी। मलिक उस दिन दूरवाले खेता पर गया था और कुछ पके हुए डाडे लेकर आया था। नियाज फसल के बार म

चिंतित था – दूरवाले खेतों की गोडाई जाहिरा तौर पर सतोषजनक नही हुई थी।

रूई को देखने के लिए वे मलिक के घर मे घुस गये। मेहमानखाने के नीम अधेरे म उन्हे बूढा इकराम अजीमोव, हैदर रजबोव, शाहाबुद्दीन कासिमोव और दो और दहकान भी मिले। सभी रूई को देखने आये थे। मलिक ने दरवाजे को बद किया, सावधानी से कुडा चढाया और मकान के जनाने हिस्से म चला गया। मेहमान कालीन पर कायदे से बैठ गये। कुछ ही मिनटो मे मेजबान लौट आया। डोडो की जगह उसके हाथ मे एक चायदानी थी। उसके पीछे पीछे एक बुरकापोश औरत थी। मेजबान न सबसे पहले उमीव हाथ मे एक प्याला दिया। जब औरत ने अपने चेहरे पर से बुरके का नकाब हटाया, तो सभी ने देखा कि उसके दाढी और नीचे की तरफ मुडी हुई मूछे ह और एक आख नदारद है।

मिस्टर क्लार्क ने रूसी सीखी

ऊपर घिरी घनी घटाओ म फटी हुई मशक की तरह [illegible] धारे गिर रही थी। वर्षा की पारदर्शी बूदें सडक की [illegible] छपाक छपाक करते हुए गिर रही थी। बाहर बारिश [illegible] पास आती टनटनाहट की आवाज सुनाई दे रही थी। [illegible] डरे हुए चूहे सा एक अकेला गधा सडक पर [illegible] हुआ बोझ लाद चला जा रहा था। पानी [illegible] गधे के पीछे पीछे अपने चोगे का सिर [illegible] मुश्किल से खीचता एक दहकान [illegible] से बने गढो मे घना कीचड फिचफिच [illegible]

क्लार्क ने अपना कलम रख [illegible] चहलकदमी करने लगा। खिडकी के [illegible] गदली धाराए बह रही थीं।

मेज के पास जाकर उसने [illegible] इस कापी में पालाजोवा [illegible] उसने पहले पृष्ठा को देखा, [illegible] के मुक्त-हस्त निशानों [illegible]

से तुलना की और सतुष्ट हो गया। इन अभ्यासा के अक्षर कतारा मे थे, वे देखने मे खासे मरदाने और ज्यादा सुघड थे और लाल पेंसिल के निशान भी काफी कम थे।

क्लाक ने एक नया सफा खोला, जिसके सिरे पर पोलोज़ोवा के हस्तलेख मे *आज की तारीख और शीर्षक लिखा हुआ था*–"*मनपसद विषय पर निबध*"। उसने कलम को स्याही मे डुबाया और फिर विचारमग्न हो गया। इसके बाद उसने बडी सावधानी के साथ अक्षर बनाते हुए धीरे धीरे लिखना शुरू किया। कोई छ लकीरे लिखने के बाद वह रुक गया और अपनी कलम के सिरे को कुतरने लगा। निबध लेखन कठिन साबित हो रहा था। उसने शब्दकोश को उलटा पलटा, एक कागज पर कुछ शब्द लिखे, फिर कापी को हाथ मे लिया, दसेक लकीरे और लिखी, फिर उठ खडा हुआ, कमरे मे चहलकदमी की, एक बार फिर शब्दकोश को उलटा पलटा, एक वाक्य लिखा, उसे काट दिया, फिर लिखा फिर काट दिया, चिढकर अपने बालो मे उगलिया फेरकर उन्हे अस्तव्यस्त कर दिया, पाच मिनट गहरे सोच मे बैठा रहा और आखिर फिर लिखने लगा। दो सफे लिखने के बाद उसने कलम को रख दिया, अपने लिखे को पढा, असताप के साथ माथे पर बल डाले और लिखे को फिर काटकर वह दुबारा लिखना शुरू करनेवाला ही था कि किसीने दरवाजे पर दस्तक दी।

पोलोज़ोवा ने कमरे म प्रवेश किया। क्लाक ने कापी को बद किया और उसकी अगवानी करने के लिए खडा हो गया।

पानी से बिलकुल तर पोलोज़ोवा कुछ मिनट खडी अपने को झाडती रही, फिर उसने अपने ऊचे बरसाती जूते उतारे और अपने पानी से सराबोर चमडे के कोट को एक कुरसी की पीठ पर लटका दिया।

"आपको देखने के लिए आज डाक्टर आया था?"

"हा," क्लाक ने रूसी मे जवाब दिया।

"और उसने क्या कहा?"

'कहा कि मैं अब बिलकुल ठीक हू और कल से बाहर निकल सकता हू।'

अपने शिष्य की रूसी को हाथो-हाथ ठीक करते हुए पोलोज़ोवा ने कहा, "बहुत अच्छे। लेकिन जानते हैं, आपके कारण डाक्टर ने मुझे खूब आडे हाथ लिया।"

"आड़े हाथ?"

"मतलब यह कि खूब झाड लगाई। यह बोलचाल की भाषा का मुहावरा है, आप अभी इसे नही जानते। सक्षेप मे यह कि उसने मुझे इस बात के लिए अच्छा लैक्चर पिलाया कि मने आपके अच्छे होने तक ठहरे बिना अभी से रूसी पढाना क्यो शुरू कर दिया है।"

'क्या बेकार की बात है। आपके और आपके पढाये बिना तो म पागल हो गया होता। मुझे खाली बैठे अब तीन महीने हो जायेंगे।

"देखिये तीन महीने को 'त्रि मेस्यात्सा' कहते हैं, 'त्रि मिस्यात्सी' नही। और हा आपने आज का निबध लिखा या नही?"

"लिखा तो है, मगर वह कोई अच्छा नही है। मुझे कल तक का मौका दीजिय, म उसे फिर लिखूगा।

'कल दूसरा निबध लिखिये। अब आगे से हम पढाई पर इतना समय नही लगा पायेंगे—शायद शामा के अलावा। और जब बरसात खत्म हो जायेगी, तब तो पढने के लिए समय रहेगा ही नही—हम मुख्य सैक्शन के काम को तेज़ी से पूरा करना होगा, नही तो हम खेतो को वसत तक पानी नही दे पायेंगे। खैर अब जरा अपना आज का निबध दिखाइये।" उसने क्लाक की कापी की तरफ हाथ बढाया। लेकिन क्लाक ने उसके हाथ को पकड लिया।

"न, रहने दीजिये। कल म ज्यादा अच्छा निबध लिखूगा।"

आप अचानक इतने सकोची क्यो हो गये ह? कोई समझेगा, जैसे आप अखबार के लिए लिख रहे ह!"

उसने कापी का लिखा हुआ आखिरी सफा खोला और ऊची आवाज मे पढना शुरू किया

'एक विदेशी आदमी

"न, न, दया करके इसे मन मे ही पढिये," क्लाक खिडकी की तरफ घूम गया।

पोलोज़ोवा ने अपने कधे मचका दिये।

'आज आपको क्या हो गया है? आपने मुझसे शरमाना कब से शुरू कर दिया है?"

उसने मेज पर से लाल पेंसिल उठाई, कापी को अपने पास खीचा और मन-मन म पढना शुरू कर दिया

से तुलना की और सतुष्ट हो गया। इन अभ्यासो के अक्षर कतारा म थे, वे देखने मे खासे मरदाने और ज्यादा सुघड थे और लाल पेंसिल के निशान भी काफी कम थे।

क्लाक ने एक नया सफा खोला, जिसके सिरे पर पोलोजोवा के हस्तलेख मे आज की तारीख और शीर्षक लिखा हुआ था—"मनपसद विषय पर निबध"। उसने कलम को स्याही मे डुबाया और फिर विचारमग्न हो गया। इसके बाद उसने बडी सावधानी के साथ अक्षर बनाते हुए धीरे धीरे लिखना शुरू किया। कोई छ लकीरे लिखने के बाद वह रुक गया और अपनी कलम के सिरे को कुतरने लगा। निबध लेखन कठिन साबित हो रहा था। उसने शब्दकोश को उलटा पलटा, एक कागज पर कुछ शब्द लिखे, फिर कापी को हाथ मे लिया, दसेक लकीरे और लिखी, फिर उठ खडा हुआ, कमरे म चहलकदमी की, एक बार फिर शब्दकोश को उलटा पलटा, एक वाक्य लिखा, उसे काट दिया, फिर लिखा, फिर काट दिया, चिढकर अपने बालो मे उगलिया फेरकर उन्हे अस्तव्यस्त कर दिया, पाच मिनट गहरे सोच मे बैठा रहा और आखिर फिर लिखने लगा। दो सफे लिखने के बाद उसने कलम को रख दिया, अपने लिखे को पढा, असतोष के साथ माथे पर बल डाले और लिखे को फिर काटकर वह दुबारा लिखना शुरू करनेवाला ही था कि किसीने दरवाजे पर दस्तक दी।

पोलोजोवा ने कमरे मे प्रवेश किया। क्लाक ने कापी को बद किया और उसकी अगवानी करने के लिए खडा हो गया।

पानी से बिलकुल तर पोलोजोवा कुछ मिनट खडी अपने को झाडती रही, फिर उसने अपने ऊचे बरसाती जूते उतारे और अपने पानी से सराबोर चमडे के कोट को एक कुरसी की पीठ पर लटका दिया।

आपका देखने के लिए आज डाक्टर आया था?"

"हा," क्लाक ने रूसी मे जवाब दिया।

"और उसने क्या कहा?"

"कहा कि मै अब बिलकुल ठीक हू और कल से बाहर निकल सकता हू।'

अपने शिष्य की रूसी को हाथा-हाथ ठीक करते हुए पोलोजोवा ने कहा, "बहुत अच्छे! लेकिन जानते हैं, आपके कारण डाक्टर ने मुझे खूब आडे हाथ लिया।'

"आडे हाथ?"

"मतलब यह कि खूब झाड लगाई। यह बोलचाल की भाषा का मुहावरा है, आप अभी इसे नही जानते। सक्षेप मे यह कि उसने मुझे इस बात के लिए अच्छा लैक्चर पिलाया कि मने आपके अच्छे होने तक ठहरे बिना अभी मे रूसी पढाना क्या शुरू कर दिया है।"

"क्या बेकार की बात है! आपके और आपके पढाये बिना तो मैं पागल हो गया होता। मुझे खाली बैठे अब तीन महीने हो जायेंगे।'

"देखिये, तीन महीने को 'त्रि मेस्यात्सा' कहते हैं, 'त्रि मिस्यात्सी' नही। और हा आपने आज का निबध लिखा या नही?'

'लिखा तो है मगर वह कोई अच्छा नही है। मुझे कल तक का मौका दीजिये म उसे फिर लिखूगा।"

"कल दूसरा निबध लिखिये। अब आगे से हम पढाई पर इतना समय नही लगा पायेंगे—शायद शामो के अलावा। और जब बरसात खत्म हो जायगी, तब तो पढने के लिए समय रहेगा ही नही—हमे मुख्य सैक्शन के काम को तेजी से पूरा करना होगा, नही तो हम खेतो को वसत तक पानी नही दे पायेंगे। खैर, अब जरा अपना आज का निबध दिखाइये।" उसने क्लाक की कापी की तरफ हाथ बढाया। लेकिन क्लाक ने उसके हाथ को पकड लिया।

"न, रहने दीजिये। कल म ज्यादा अच्छा निबध लिखूगा।"

"आप अचानक इतने सकोची क्या हो गय ह? कोई समझेगा, जैसे आप अखबार के लिए लिख रहे हैं!"

उसन कापी का लिखा हुआ आखिरी सफा खोला और ऊची आवाज मे पढना शुरू किया

"एक विदशी आदमी "

"न, न, दया करके इस मन म ही पढिये," क्लाक खिडकी की तरफ घूम गया।

पोलोजोवा ने अपने कधे मचका दिये।

"आज आपको क्या हो गया है? आपने मुझसे शरमाना कब से शुरू कर दिया है?"

उसने मेज पर से लाल पेंसिल उठाई, कापी को अपने पास खीचा और मन-मन म पढना शुरू कर दिया

एक विदेशी आदमी दुघटना के कारण अपना होश गवाकर बहुत दिन तक पलग पर पड़ा रहा। जब उसे फिर होश आया, तो वह सभी कुछ—अपना सारा पिछला जीवन—भूल गया और उसे कुछ भी याद न रहा।

वह बेहद घबरा गया और याद करने की कोशिश करने लगा। आखिर थोडा-थोडा करके उसे कुछ कुछ याद आने लगा। और जब उसे याद आ गई, तो उसे लगा कि जसे याद करना भी नही चाहिए था। फिर वह अच्छा होने लगा और अक्सर यही सोचने लगा कि शायद यही अच्छा होता कि उसे कुछ याद आता ही नही, बल्कि उसने अपने होश मे आने के दिन से ही, बिना किसी अतीत के, नये सिरे से जीना शुरू कर दिया होता। उसने मन म कहा, "मान लेता हू कि मै सभी कुछ भूल गया हू। अब मैं इस तरह रहूगा कि जैसे पहले कुछ हुआ ही नही था।"

वह काफी अरसे बीमार रहा और उसे सोचने का काफी समय मिला। एक लडकी उसे एक अनजान भाषा और एक अनजान जीवन की शिक्षा देने लगी। उसे लगा कि वह शिक्षा एक अनजान भाषा की ले रहा है, लेकिन वास्तव मे पाई उसने एक अनजान जीवन की शिक्षा है।

वह जल्दी ही समझ गया कि उसका जीवन इस लडकी से अवियाज्य रूप से जुडा हुआ है, जिसने उसे यह अनजान भाषा सिखाई है। अब तक हुई हर बात को भूल जाना आसान है, मगर वह इस लडकी को कभी भी नही भूल पायगा। वह उस लडकी स कहना चाहता था, 'मैं तुमको प्यार करता हू।' लेकिन उसे लगा कि यह तो बहुत साधारण सी बात होगी, क्योकि सभी बुरे उपन्यासो मे नायक सदा बीमार होता है और बाद म अपनी नर्स को प्यार करने लगता है और उससे शादी करने का अनुरोध करता है। उसे डर था कि वह लडकी, जो उसे पहले से जानती थी, यह समझेगी कि वह पहले का ही अनजान आदमी है और अपने तरुण जीवन को एक अजनबी के पुराने जीवन के साथ नही जोडना चाहेगी। कई बार उसने लडकी को अपनी बात समझाने और कहने की इच्छा की, लेकिन वह

यह नही जानता था कि यह कसे करे। तब वह "मनपसद विषय पर निबध" लिखने के लिए बैठ गया। लेकिन यह निबध किसी मनपसद विषय पर नही, इस बारे म है कि मै किसे प्यार करता हू।

'छि छि,' पोलाज़ोवा ने सिर हिलाया। कितन दिन से म आपको पढा रही हू – और सब बिलकुल बेकार। एक निबध म आपन पहले कभी इतनी सारी गलतिया नही की ह।

क्लाक उदासी से मुस्कराया और बोला

'मने आपसे पहले ही कहा था कि इसे आज मत पढिये – म कल अच्छा निबध लिख दूगा। बात यह है कि मने इस बडी उत्तेजना म लिखा था।"

क्या आप उत्तेजना म अग्रेजी म भी गलतिया करते हैं?"

'शायद, लेकिन इतना उत्तेजित मैं पहले कभी नही था।"

खैर, इस बात को याद रखिये कि जीज्न (जिदगी) स्त्रीलिग है, इसलिए नई जिदगी 'नोवी जीज्न नही 'नोवाया जीज्न' होती है। और प्यार करता हू' क लिए 'या ल्यूब्यू नही 'या ल्यूब्ल्यू लिखा जाता है

क्लाक ने कापी को झपटकर उठा लिया और निबध लिखे सफा को फाडने लगा।

पालोज़ोवा ने उन कागजा को उसस ल लिया।

"फाडिय मत। अपनी अध्यापिका के सामने इस तरह अभद्रता का आचरण नही करना चाहिए। निबध तो निबध ही है, उसने कागजा को अपने ब्लाउज म ठूसते हुए कहा। इतनी गलतियो के लिए तो सच, आपको बस सिफर मिलना चाहिए।

"और विषयवस्तु के लिए?

विषयवस्तु के बारे मे हम तब बात करेगे, जब आप इसे नये सिरे से, बिना एक भी गलती किये लिख लेगे। और आप चाहे कितने ही उत्तेजित क्यो न हो या ल्यूब्ल्यू' लिखने म फिर गलती न हो, इसके लिए इस अलग कागज पर बत्तीस बार लिखकर मुझे दिखाइये" उसने क्लाक की तरफ हसती हुई उल्लसित आख उठा दी।

क्लाक ने उसकी कोहनिया पकडकर अपने पास खीच लिया और चूम लिया।

दो मुलाकातें

भोर के समय चमडे के कोट, भेड की खाल के लबादे और चोगे पहने लोगो की भीड नहर मुख पर जमा हो गई। उन्होने एक विशाल फेस्टून को अपने सिरो के ऊपर उठाया हुआ था। दूकान मे लाल कपडा नही था, इसलिए लाल और सफेद बुदकियोवाले सादे कपडे पर ही बडे बडे सफेद अक्षरो मे लिखा हुआ था "कोम्सोमोल के तूफानी मजदूरो को बोल्शेविक सलाम!" बारिश इस तरह हो रही थी, मानो पहाडी नाला म बाढ आई हुई हो। पानी की बौछार से भीगे सफेद अक्षर फेस्टून पर स उखडकर बैडवालो के नमी से स्याह हुए कपडो के ऊपर आ गिरे थे, जिन्होने एहतियातन अपने बाजो के भोपुओ को अपनी पोशाको मे छिपा रखा था। बस्ती की तरफ से पानी मे छप छप करता गालत्सेव भागा भागा आया और उसने सिनीत्सिन के हाथ म पानी से तर फोनोग्राम दे दिया। सिनीत्सिन ने पानी से अधमिटे अक्षरो को बडी मुश्किल से पढा

> छोटी लाइन पर चलनेवाली पहली ट्रेन चार बजकर आठ मिनट पर दूसरे सैक्शन सही सलामत और ठीक वक्त पर पहुच गई। पाच मिनट की सभा के बाद साढे चार बजे वह मुख्य सैक्शन की तरफ रवाना हो गई। द्वितीय सैक्शन प्रमुख रियूमिन।

सिनीत्सिन ने कागज को अपनी जेब मे रख लिया और अपनी घडी की तरफ देखा।

पाच मिनट के भीतर उसे यहा पहुच जाना चाहिए।

उसने अपने चारो तरफ खडे लोगो पर एक नजर फेरी मोमजामे की बरसाती से अपने सिर को ढके कोश ऐसा लग रहा था, जैसे नाटक मे मच पर अवतरित प्रेत, मोरोजोव ने चमडे का कोट और चमडे का ही टोप पहना हुआ था ऊर्तावायेव अपनी बरसाती के बावजूद बदन तक भीगा हुआ था, कोमारको ऊपर से नीचे तक चमडे म कसा हुआ था पुराने फ़ैशन के बडे छाते के नीचे खडा ओसिप विक्टोरोविच फौवारे की तरह चारो तरफ पानी बरसा रहा था, अन्द्रेई सावेल्यविच ने अपनी बरसाती के ऊपर कधो पर एक लाल-सा मोमजामा डाल रखा था ("निश्चय ही रसोई की

मेज़ पर से उठाया हुआ है")। "फोरमैन, टेकनिशियन, मजदूर—दो सौ लोग तो होगे यहा पर। कोई बुरा तो नही रहा। ऐसे मनहूस मौसम म भी इतने सारे लोग पहुच ही गये।"

कही दूर से इजन की सीटी की गहरी आवाज़ आई। बस्ती की तरफ से आते, अजब तरीके स टेढी मेढी छलागें लगाते आखिरी आनवाले भी नजर आने लगे। चेतावनी की घटी की तरह लगातार बजती सीटी की आवाज़ पास आने लगी। पानी की झडी के कारण किसी भी चीज को साफ देख पाना असभव था। आखिर जब इजन की इस्पाती छाती अधेरे से निकलती दिखाई दी, तो ट्रेन मुश्किल से सौ कदम की दूरी पर रह गई थी। ऊपर घना सीसे जैसा धूआ मडराने लगा। बडवालो की पोशाको स निकल ही उनके बाजे चमचमाने लगे। एकदम "इटरनेशनल की धुनें गूज उठी

लाल झडा से—जो बारिश के कारण स्याह हो गये थे—सजे फक फक करते इजन ने ब्रेक लगाया, एक फूत्कार छोडी और इस तरह भाप का भभका छोडा, मानो उसके गरमी से लाल हुए पहिये बफ से ठडे पानी के तल म जा घुसे हा। इजन से और डिब्बा से बदन तक तर हए विभोर भीड कीचड मे कूद पडी। बैंड ज़ोर-ज़ोर से बजने लगा। बाजा के गलो स सगीत की धुनो के साथ-साथ इस तरह पानी की फुहारे भी छूट रही थी, मानो दमकल रबर की नलियो से पानी की धारे निकल रही हा।

सिनीत्सिन ने अपने हाथ से इशारा किया। पानी से अवरुद्ध बाजो से एक और फटी सी खखार निकली और फिर व खामोश हो गये।

"साथियो!"—पानी उसके मुह म घुसा जा रहा था, जिसके कारण बोलना लगभग असभव हो गया था। " हमारे वीर कोम्सोमोल सगठन के प्रयासो की बदौलत घाट से नहर मुख तक लाइन वक्त पर कोम्सोमोल द्वारा निर्धारित योजना के तीन महीने विछ गई है "

पानी उसकी आखो मे घुसा जा रहा था, उसके कानो मे गरज रहा था, उसके चमडे के कोट के उठे हुए कालर के भीतर रिसा जा रहा था और कमर पर ठडी धारा के रूप मे बहे जा रहा था। " ऐसे खराब मौसम के बावजूद जैसे कि आप देख रहे हैं , सिनीत्सिन ने अपना हाथ हिलाया—बोलना असभव था।

उसने अपनी तरफ आते नासिरद्दीनोव की तरफ कदम बढाये और उसे कसकर अपने से लगा लिया। एक दूसरे को अपनी बिन हजामत बनी ठोढियो

से काटते हुए उन्होंने जोर जोर से चुबन लिये। बारिश उनके गालो पर आसुओ की तरह बह रही थी—या कौन जाने, व सचमुच के ही आसू थे?

खामोशी को सुनकर बडवालो ने अपने बाजो का फूककर उनसे पानी निकाला और "इटरनेशनल" की धुनें एक बार फिर गूजने लगी।

"चलिये, सब क्लब चलते हैं!' ऊर्ताबायेव ने चिल्लाकर कहा।

"क्लब चलो! क्लब चलो!"

"छोकरा को चाय तो पिलानी ही चाहिए!"

लोगो ने नसिरुद्दीनोव और दूसरे कोम्सोमोलियो को पकडकर कधो पर उठा लिया और एक प्रयाण गीत की धुनो के साथ बस्ती की तरफ चल दिये।

जब क्लब मे स्वागत के औपचारिक भाषण चल रहे थे, कामारेवा चुपके से उठा और सिगरेट पीने के लिए बाहर निकल आया। दरवाजे मे वह ऊर्ताबायेव से टकरा गया। ऊर्ताबायेव के पानी से तर कपडो से भाप उठ रही थी।

'ज़रा एक सिगरेट तो दो—मेरी तो सभी तर हो गई है।"

"शौक से लो। तो यह है तुम्हारे यहा का मौसम, मेरे ताजिक भाइयो! और इस बात की शिकायत करते तुम नही थकते कि तुम्हारे यहा पानी काफी नही है! सरदियो मे आसमान से टपकनेवाले इस पानी को ही देख लो। इसके लिए बस इतना करने की जरूरत है कि इसे जलागारो मे इकट्ठा कर लिया जाये—फिर सिचाई की नहरो की जरूरत ही नही पडेगी। नली उठाई और बाग मे छिडक दिया पानी बस, और क्या! खैर, सुनाओ, क्या हाल है? माराजाव से तो पट रही है, न?

"और उससे पटेंगी क्या नही? वह अच्छा कार्यकर्ता है—दक्ष है, येरमिन जैसा नही है।"

"यह तो अच्छी बात है। पर तुम मुझसे मिलने के लिए कभी क्यो नही आते?'

"काम बहुत है। फिर मौसम भी कोई बहुत अच्छा नही रहा है। सच मानना, दो महीनो मे आज पहली बार बस्ती मे आया हू। जब मै आया, तो मेरी इच्छा थी कि तुमसे मिलू और तुम्हे धन्यवाद दू, पर मै बेहद व्यस्त था।'

"मुझे धन्यवाद क्यों देना चाहते थे?"

"इस बात पर विश्वास न करने के लिए कि मैं दोषी हू। पूरे ब्यूरो म बस तुम और मेन्योतस्किन ही ऐसे थे, जिन्होंने मेरे निष्कासन क पक्ष म मत नही दिया था। क्या तुम सोचते हो कि म इस बात को भूल गया हू? कुछ दिन पहले मैं दूसरे सैक्शन भी गया था—मेन्योतस्किन से भी मिलना चाहा, लेकिन उसने मुझे आते देखा, तो वह दूसरे दरवाज़े से भाग गया। आज तक म यह नही समझ पाया हू कि उसने ऐसा क्यो किया।"

"क्या भाग गया?' कामारकी खिलखिलाकर हस पडा, "उस एक्स्केवेटर के कारण वह अपने को तुम्हारे आगे दोषी समझता है, जिसकी वह रखवाली नहीं कर पाया था।'

'लेकिन उसे ब्यूरो मे किस कारण अलग किया गया?"

"पीना शुरू कर दिया था उसने। एक्स्केवेटर की बात उसके दिल को लग गई। उसके दिमाग मे यह बात समा गई कि तुम्हारा कबाड़ा आखिर उसीकी वजह से हुआ था। वह पहले नही पीता था—वह सकते हो कि औरो क लिए एक मिसाल था, कभी भी काम से गैरहाज़िर नहा हाता था। लेकिन जब उसने पीना शुरू किया तो लगातार पूरे तीन दिन गायब रहा। इसके लिए हमने उसे सख्त झाड लगाई।"

"हा, तो पीना छोडा या नही?"

"छोड दिया। उसके बाद तो तीन बोनस भी पा चुका है। अपनी दैनिक योजना की दो सौ पचीस प्रतिशत पूर्ति करता है और काम की लागत को उसने आधा कर दिया है।"

तो तुम्हारा क्या खयाल है—क्या एक्स्केवेटर को सचमुच किसान जानबूझकर तोडा था?'

'क्या कहा जा सकता है!"

"आखिर दूसरा एक्स्केवटर भी तो अब तक काम करता ही रहा है और सही सलामत है।"

"हा, अफसोस की बात है कि सिर्फ एक ही एक्स्केवेटर। एक तो अपवाद भी हो सकता है। अगर दो होते, तो बात कुछ और होती अच्छा, क्लावियेव, पुराने दोस्त क नाते मुझे एक बात बताओ—मामला तो खत्म हो ही चुका है और तुम यह भी जानते हो कि तुम्हारी मुसीबत का असली कारण यह नहीं था। मैं कुछ बिलकुल दूसरे कारणों से यह बात जानना

चाहता हू। क्या बाकर ने सभी एक्स्केवेटरों को सयोजित करके उन्हे चलाकर ले जाने का फैसला किया था, या पहले प्रयोग के तौर पर एक या दो एक्स्केवेटरो के साथ जोखिम लेने की सोची थी, ऐं? सच बतलाना। तब तो शायद तुम हद से कुछ ज्यादा ही चले गये थे, है न?"

"सुनो, मैं कम्युनिस्ट होने के नाते कहता हू कि ब्यूरो के सामने अपनी गवाही मे मैंने जो कुछ भी कहा था, वह लफ्ज ब लफ्ज सही था। मै किसी और बात मे हद से आगे चला गया था और इस बात को मैने नियत्रण आयोग के सामने स्वीकार कर लिया था। मुझे महज़ बाकर के साथ अपने समझौते के आधार पर—पहले मैनेजमेट की स्वीकृति लिए बिना सारे काम को शुरू करने का कोई अधिकार न था। इसके लिए मुझे भुगतना पडा और वह वाजिब भी था।"

"अच्छा, मै अब चला। तुम रुकोगे यही? आओ किसी शाम को मेरे घर। मेरे पास अच्छा रेडियो है। बबई भी सुन सकते हैं। नये-नये गाने और नये से नया सगीत—सब। खैर, खुदा हाफिज!"

नसिरुद्दीनोव समारोह के खत्म होने तक न रुककर चुपके से क्लब से खिसक गया और गराज की तरफ चल दिया। गराज से उसी वक्त एक ट्रक बस्ती की तरफ जा रहा था। उसे ड्राइवर के साथ ही बैठने की जगह मिल गई।

वह बस्ती के छोर पर, मुख्य अरीक के पास उतर गया और धडकते हुए दिल के साथ सुपरिचित गली मे मुड गया। अभी सुबह ही थी—पोलोज़ोवा शायद अभी सो ही रही हो।

पोलोज़ोवा के दरवाजे पर ताला लगा देख वह हैरान हो गया। तो क्या वह इतनी जल्दी ही घर से निकल गई? शायद वह ट्रेन के आने के समय उससे मिलने के लिए ही गई हो। उसे देर हो गई होगी और वे रास्ते मे एक दूसरे को नही देख पाये होगे। अफसोस! तो, अब वह क्या करे? वापस चला जाये? कही ऐसा न हो कि वे रास्ते मे फिर इसी तरह बिन मिले निकल जायें। यही इतजार करना ज्यादा अच्छा रहेगा।

दरवाजे पर बस, लकडी की एक मामूली छड ही लगी हुई थी। उसने अपना हाथ बढाया—और तभी ठहर गया। क्या उसे मरियम की गैरमौजूदगी मे

उसके कमरे मे ठहर जाने का अधिकार है? कैसा बेवकूफी का सवाल है। "तुम ट्रक से अपना सामान उठाकर सीधे मेरे यहा आ सकते हो!"—यह बात क्या मरियम ने ही नही कही थी? तो फिर यह निरथक दुविधा क्यो? उसने हिम्मत करके दरवाजा खोला और भीतर घुस गया।

उसने कमरे मे चारो तरफ निगाह दौडाई। सभी कुछ बिलकुल वैसा ही था, जैसा उसके यहा से जाने के समय था। शायद मरियम को उसके आने की अपेक्षा न हो? लेकिन अगर ऐसा होता, तो वह उससे मिलने के लिए न गई होती। इतनी जल्दी वह चली कहा गई होगी? फिर निर्माणस्थली पर सभी लोगो को मालूम था कि पहली ट्रेन आज ही आनेवाली है। यह कसे हो सकता है कि मरियम को इसकी जानकारी न हो?

अचानक उसे खयाल आया कि वह अपने सामान की गठरी लिये अभी तक बीच कमरे मे ही खडा हुआ है। उसने गठरी को किताबो के बक्से पर रख दिया। उसके दिल मे एक अजीब सा दद हो रहा था। उसने सोचा कि बैठकर मरियम का इतजार करे और स्टूल की तलाश म इधर उधर नजर दौडाई। कमरे मे एक ही स्टूल था और वह पलग के सिरहाने के पास था। उसने स्टूल पर पडी किताब को—किताब अग्रेजी मे थी—उठाया और उसे वह मेज पर रखने ही को था कि कोई चीज फडफडाती हुई फश पर जा गिरी। वह उसे उठाने के लिए झुका। वह अमरीकी इजीनियर क्लाक का फोटो था।

देर तक करीम फोटो को अपनी उगलिया मे पकडे खडा रहा। उसने फोटो मे चित्रित आदमी की आकृति के हर विवरण का अध्ययन किया, मानो उसने उसे पहले कभी न देखा हो—फीका सफेद चेहरा, अच्छी तरह सवरे हुए बाल, चौडा माथा, पतली और सीधी नाक, उदासी की छाप पडे सुदर होठ। फिर उसने फोटो को उसकी जगह पर वापस रख दिया और दीवार पर टगे छोटे-से शीशे के सामने जा खडा हुआ। शीशे से जो चेहरा उसकी तरफ देख रहा था, वह मटमैला और बिन हजामत था, सिर पर बिखरे हुए बेकाबू बाल थे और नाक बेहद छोटी थी। दपण के इस अपरिपक्व छोकर का ऊपरी होठ फडक रहा था। करीम तुरत मुड गया और उसने अपने बालो मे उगलिया फेरी। उसन अपने ओवर ऑल की छोटी छोटी बाहो से भद्देपन से निकले अपन हाथो की तरफ नाराजी के साथ देखा और उन्हे अपनी कमर के पीछे छिपा लिया। फिर वह खिडकी

के पास चला गया और बहुत देर तक उसके मटियाले काचा पर भावहीन चेहरे से देखता रहा। काचा पर होकर पानी बह रहा था।

दरवाजे के खुलने की आवाज को सुनकर वह घूम गया। पोलाज़ोवा कमर मे खडी थी। एक ही नजर मे उसने सभी कुछ देख लिया – किताबा के बक्से पर पडी गठरी, खिडकी के पास खडा नसिरुद्दीनोव – और उसका चेहरा लाल हो गया। मिनट भर दोना खामोश खडे रहे।

'अहा, तुम आ गय, करीम!' – उसकी आवाज मे कृत्रिमता थी – वह उसमे जाहिरा तौर पर जिस हर्ष और विस्मय का पुट देने की कोशिश कर रही थी, वह कही नजर नही आ रहा था।

सलाम, मरियम!"

दोनो न जल्दी जल्दी हाथ मिलाय, दोना ही अभिनदन के इस अटपटेपन को महसूस कर रहे थे। पोलोज़ोवा ने बडी लगन के साथ अपन चमडे के कोट को झाडना शुरु किया। उसने कोट का उतार दिया, आर माना यह न समझ पाते हुए वि उसके साथ क्या किया जाये, बहुत ही ज्यादा सावधाना के साथ उसे पाछकर सुखान लगी।

'कैसा खराब मौसम है! है, न? खैर, तुम सुनाआ, क्या हाल है, करीम?

ठीक ही है, मरियम। छोटी लाइन बिछाने का काम हमने खत्म कर दिया है। इसलिए म तुमस मिलन क लिए आ गया साचा, दख लू, तुम कैसी हा अगली बार आऊगा, तो ज्यादा ठहरूगा। अब म चला वहा छोकरे इतजार कर रहे हागे ' उसने अनाडीपन से बक्मे पर स अपनी गठरी उठाई और उसे अपने पीछे छिपाते हुए अपना हाथ बढाकर बाला, 'अच्छा, मरियम यह देखकर मन का बहुत खुशी हुई कि तुम अच्छी हो।

अर, इतनी बारिश मे तुम कसे जा सकत हो?"

करीम मुसकरा दिया।

"मरियम, इसी बारिश म हमन आखिरी पचास किलोमीटर पटरिया बिछाई थी। अब तो म इसका आदी हो गया हू।

'ता क्या जरा भी नही बैठोगे?"

"नही, मरियम। वहा व मरा इतजार कर रह है। मै और किसी वक्त आऊगा। अच्छा, चला।'

'अच्छा। लेकिन देखना, आना जरूर "
उसने मरियम से कसकर हाथ मिलाया और गठरी को छिपाते हुए बाहर दौड गया। खिडकी के मटियाल काचो पर बारिश धडधडा रही थी।

करीम मेस मे ज्यादा दर नही रुका। हाल ही रातो के काम की थकान से चूर और सब सो रहे थे। वह अपनी खटिया पर पहुचा अपनी गठरी उस पर रखी और फिर बाहर निकल गया। अपने साथियो के जिज्ञासाभरे सवालो को सुनने की उसे जरा भी इच्छा नही थी। बाहर बिन रुके मूसलधार वर्षा हो रही थी। क्षण भर वह इस दुविधा मे खडा रहा कि कहा जाये, और फिर तेज कदमो से पार्टी समिति के दफ्तर की तरफ चल दिया।

पार्टी समिति का दफ्तर अब बरसात शुरू होने क पहले बनी एक नई बारक म स्थित था। और सब नई बारको म उसे ढूढने मे करीम को कुछ कठिनाई हुई। वहा अपने मित्र के साथ दुआ-सलाम के बाद वह सिनीत्सिन से मिलने के लिए चला गया।

"कहो, क्या हाल है, करीम? तुम्हे देखकर बहुत खुशी हुई बहुत। मरा खयाल था कि हमारी-तुम्हारी मुलाकात इतनी जल्दी नही होगी।

क्या? क्या आपको यह विश्वास नही था, साथी सिनीत्सिन, कि हम काम का वक्त पर पूरा कर देगे?"

नही, इसम तो मुझे तनिक भी शक नही था पर शायद म ही तुम्हे यहा नही मिलता। तुम्ह मालूम नही कि मुझे अपन पद से अलग कर दिया गया है? केद्रीय नियत्रण आयोग की गश्ती समिति ने ऊर्ताबायेव काड के सिलसिले म यह कारवाई की है।'

'लेकिन इस निणय को तो रद्द कर दिया गया है न?

हा, स्तालिनाबाद म इस फसल को रद्द कर दिया गया। उन्हाने निर्माण-काय के पूरा हान तक मुझे यही रहने दने का निणय किया है इसलिए और भी कि इसम अब ज्यादा दर नही है। अलबत्ता मेरी और मोरोजोव–दोना–की सख्त भत्सना की गई है। क्या तुम ऊर्ताबायेव स मिले हो?

"हा, उसके बहाल किये जाने क कुछ समय बाद मिला था। वह पटरी बिछान की जगह आकर हमसे मिला था।"

"तो, देखा तुमने, करीम, ऊर्ताबायेव के मामले म तुम्हारी बात ही

सही निकली। याद है कि तब तुम किस तरह मेरे पास आय थे? और मैं तुम्हारी बात भी सुनने के लिए तैयार न था। बहुत शान मे आया हुआ था मैं उस वक्त।"

'ऐसी बात करने की कोई जरूरत नही, साथी सिनीत्सिन। हर कोई आदमी गलती कर सकता है। और यह तो बहुत ही मुश्किल मामला था। सभी गलती पर थे। मै भी तो कोई भी सबूत नही पेश कर सका था। आप भला मेरी बात कैसे मान लेते?"

' नही, करीम, मैं बहुत शान मे आया हुआ था। मैं खुद इस बात को मानता हू। मेरी तरफ स सफाइया दने का काई फायदा नही। मन तुम्हे तब बच्चे की तरह झाडा था। तुम मेरी आखो के सामन ही बडे हुए हो, लेकिन मेरा ध्यान कभी इस तरफ गया ही नही कि तुम किस तरह बडे हो गये हो। म तुम्हे बच्चा ही समझता रहा और तुम्हारे विकास मे मने बाधा डाली—इस बात का मैं अब महसूस कर रहा हू। मने तुम्हे अपनी पशकदमी दिखाने का मौका नही दिया। पार्टी इस तरह की हरकता को स्थानीय कायकर्ताओ क विकास को नजरअदाज करना कहती है। और पार्टी का कहना ठीक है। अलबत्ता तुम्हारे मामले म यह बात ऊर्तावायेव के मामले की वनिस्वत कही ज्यादा स्पष्टता के साथ सामन आई। मन नियत्रण आयोग के सामने इस बात को खुलकर मान लिया और यह भी बता दिया कि तुमने मुझे चेतावनी दी थी।

' मैं अगर कुछ साबित ही नही कर सका, तो वह चेतावनी कसा हुई?'

अरे, छोडो भी इस बात को! पटरी बिछान क काम ने साबित कर दिया ह कि तुम कैसी मिट्टी के बने हुए हो। पहली बार तुम्हे यह दिखान का असली मौका मिला कि तुम क्या कर सकते हो, और कितना शानदार काम तुमन करके दिखाया है! शाबाश! तुम्हारे कारण मैं खुश हू करीम, बहुत खुश। तुम मास्को जाओगे अध्ययन करन के लिए—एक शानदार कायकर्ता बनोगे।'

"हम साथ-साथ चलेगे, साथी सिनीत्सिन—इस निमाण-काय के खत्म होन के साथ। म तो चाहता हू कि जितनी जल्दी हो सके चल दें।'

नहीं, भाई, साथ साथ नहीं जायेंगे। पहले तो मुझे अपने काम र यह साबित करना होगा कि मुझे अध्ययन के लिए भेजना वाजिब होगा और मैं अपनी गलती को दुहराऊगा नहा। म किसी दूरदराज इलाके म—

शायद मत्चा जिले म—नियुक्त किये जाने की प्राथना करूगा—वहा काम
की काफी गुजाइश है।"

करीम ने हतप्रभ होकर सिनीत्सिन की तरफ देखा। दोनो चुप रहे।

जानते हैं, क्या, साथी सिनीत्सिन, मेरा भी यही खयाल है कि मुझे
भी अभी मास्को नही जाना चाहिए। पहली बात तो यही है कि अभी
साल दो साल मुझे किशलाको म ही काम करना चाहिए। मुझे अपने साथ
अपने जिले ले चलिए। मैं वहा कोम्सोमोल का सगठन करूगा। हम दोना
बहुत काम करेगे। और मास्को का पास भी खराब करन की जरूरत नही—
हम उसे जुलैनोव को दे सकते हैं—वह अच्छा वग चेतन कायकर्ता है।"

यह क्या सोच रहे हो? बकवास मत करो। तुम्हे मास्को जाने का
पास दिया जा रहा है, इसलिए सीधे सीधे चले जाओ, और क्या।"

ईमान की बात है, साथी सिनीत्सिन, मैं खुद ज्यादा अच्छी तरह से
जानता हू। अभी मैं सिफ अठारह साल का हू—मैं बाद में भी जा सकता हू।
और कई लोग तो तीस-तीस चालीस चालीस साल की उम्र मे ही अध्ययन
शुरू करते हैं, मगर फिर भी अच्छे कायक्र्ता बन जाते हैं। क्यो?
इसलिये कि उन्हे काफी व्यावहारिक अनुभव मिल चुका होता है और इससे उनकी
नीव मजबूत हो जाती है, जिस पर विनान जड पकड सकता है। लेकिन मुझे
कसा व्यावहारिक अनुभव मिला है? साथी सिनीत्सिन बात यह है कि आज
आपने पहली बार मुझसे इस तरह स बात की है जसी आप बालिग
आदमियो से करते हैं। और आपने जा कहा, वह ठीक ही है। आपने खुद
कहा है कि मुझे अपनी पेशकदमी दिखाने का मौका मिलना चाहिए। ठीक
है, तो मुझे अब व्यावहारिक काम म इसका प्रदशन करने दीजिये। म
अध्ययन के लिए बाद मे जा सकता हू। अब तक मन सभी जगह आपके
साथ ही काम किया है और हमने मिलकर अच्छा काम किया है। म जो
कुछ भी जानता हू उसे मैंने आपसे ही सीखा है और मैं और सीखना
चाहता हू। मुझे अपने साथ अपने जिले ले चलिये। इसके बाद आप मास्को
जायगे और मैं भी जाऊगा।

'लेकिन शायद म बिलकुल ही न जाऊ तो?

जरूर जायेगे। पार्टी आप जैसे कायकर्ताओ की कदर करना जानती
है। तो, हम साथ-साथ ही जायेंगे, न? इस साल हम जुलैनोव का पढने
के लिए भेज देंगे—म अभी जाकर उसे बता दता हू, वह खुश होगा, हा।"

यह क्या कह रहे हो—लगता है, जैसे तुम मेरा साथ देने के लिए ही अध्ययन करने का मौका छोड रहे हो? यही बात है, न?"

म उसे छोड नही रहा हू—मैं उसे बस, कुछ वक्त के लिए मुलतवी कर रहा हू। जिद्द मत कीजिये, साथी सिनीत्सिन। चाहे कुछ भी हो जाये, म उसी जिले मे भेजे जाने की माग करूगा, जिसमे आप जायेंगे। आखिर आप मेरे साथ काम करने से तो इनकार नही कर देंगे—खासकर यह देखते हुए कि आपका ही कहना है कि म कोई बुरा कार्यकर्ता नही हू। ठीक है, न?"

सिनीत्सिन ने अपना हाथ करीम के कधे पर रख दिया।

"बेशक तुम पढने के लिए ही जाओगे—व्यावहारिक काम की बाते करके मेरी आखो मे धूल झोकने की कोशिश मत करो। लेकिन हम बहुत अच्छे दोस्त रहेंगे—तुम बहुत अच्छे साथी हो, करीम।"

हैदर रजबोव का अपराध

कामारेको के कमरे मे सिगरेट का धूआ हवा म बदनवारो की तरह लटका हुआ था। भोर के साथ ही जो कामो से भरा दिन शुरू हुआ था, उसका अभी कोई अत होता नजर नही आ रहा था। उस सुबह एक विशेष हरकारा ताशकद से एक गुप्त पकेट लेकर आया था। पकेट मे कृषि जन कमिसारियत के मध्य एशियाई विभागो मे तोड फोड करनेवालो के एक व्यापक सगठन के बारे मे सूचना थी। मैकेनिकल डिपार्टमेंट का भूतपूर्व प्रमुख, इजीनियर नेमिरोव्स्की इसी सगठन का सदस्य था। पकेट म नेमिरोव्स्की की तफ्तीश का विवरण और उसके बयान की प्रति भी थी। उसके बयान से पता चला कि इस सगठन का एक और सदस्य, जो नेमिरोव्स्की का एक घनिष्ठ सहयोगी था, अभी निर्माणस्थलों पर ही निर्विघ्न काम किये चला जा रहा है।

कागजो को दराज म बद करके कामारेको न उसकी तुरत गिरफ्तारी का आदेश जारी कर दिया।

उसके सामने जो दयनीय नमूने का आदमी पेश किया गया, वह डर के मारे सिर से पाव तक पका पडा हुआ था और उसके हाथ इस तरह काप रहे थे कि देखकर घिन आती थी। इसके बाद दो घटे का अनिवार्य

सवाद चला – ग्राहत दप, स्पष्ट इनकार, ग्रतिशय ग्रात्मविश्वास, एक दो बार ग्रपने जवाबा मे गडबडा जाना, दोषी-जय चुप्पी, इसके बाद तोड-फोड के जरिये कमाई की नगण्य रकमो की फेहरिस्त, ग्रौर ग्रत मे – वमन की तरह बीभत्स प्रवाह मे बहकर ग्राता गिलगिला ग्रनुताप।

इजीनियर के ताशकद भेजे जाने के ग्रादेश पर हस्ताक्षर करने के बाद कोमारेको न घटी बजाकर एक गिलास कडक चाय मगवाई। उसकी ग्रपने हाथ धोने की सख्त इच्छा हो रही थी – जैसी पीपदार घाव का ग्रापरेशन करने के बाद होती है। ग्रदम्य घृणा की भावना उस पर छाई हुई थी – "इस तरह के लोग ग्रपने को हमारा दुश्मन कहने की जुरत करते है!" बरसाती पानी की तरह गदली चाय उसकी बदमजगी को दूर नही कर सकी।

टेलीफोन घनघना उठा

"मुल्लाराव ग्रौर गालियेव निजी काम से ग्राये है।"

"ग्राने दो।"

जिला समिति के सचिव ने फौजदारी ग्रनुसधानकर्ता तालार गालियेव के साथ प्रवेश किया।

"नमस्कार, साथियो! तशरीफ रखिये। कहिये, क्या सेवा कर सकता हू?"

"इन्हे तुमसे कुछ काम है," मुल्लारोव ने ग्रनुसधानकर्ता की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"सच तो यह है कि बात कोई बहुत महत्वपूर्ण नही है," ग्रनुसधानकर्ता ने ग्रपनी कुरसी को कोमारेको के करीब खीचते हुए कहा। "साथी मुल्लाराव ने बतलाया था कि ग्राप 'लाल ग्रक्तूबर' सामूहिक फाम की प्रबध समिति के सदस्य है ग्रौर इस फाम के ग्रलग ग्रलग किसानो को जानते है।"

'हा, कुछ को जानता हू।"

"हैदर रजबोव को जानते है?"

"जानता हू। हमारी प्रबध समिति का सदस्य है। इसी शरद मे चुना गया था।"

"उसके बारे मे ग्रापका क्या खयाल है? '

"किस ग्रथ मे?"

"बात यह है कि हैदर न कल ग्रपनी पत्नी की हत्या कर दी।

"हैदर रजबोव न? वही, जो स्तालिनाबाद मे सामूहिक कृपका की काग्रेस मे भाग लेन गया था और हवाई जहाज मे बैठकर वापस आया था?"

"हा हा, वही।"

"और उसने अपनी बीवी को कत्ल कर दिया है?"

'गला काट दिया। बहुत ही पाशविक हत्या है। सिर लगभग पूरा तरह से अलग कर दिया गया है। छाती मे दो घाव ह और हाथ तो बिलकुल कटे फटे हैं। जाहिर है कि उसने अपने को बचाने की कोशिश की होगी।"

"लेकिन उसने खून किसलिए किया, कुछ पता लगा?"

"पिता और पडोसियो का कहना है कि वह उसे छोडकर जाना चाहती थी। हैदर बहुत दिनो से उसे जान से मारने की धमकी दे रहा था और हर तरह से उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। इसके खिलाफ सिर्फ एक बयान है—एक औरत का—क्या नाम है उसका?" अनुसधानकर्ता न अपनी नोटबुक पर एक नजर डाली। बेवा जुमुरद। हा, तो यह बेवा जुमुरद हैदर और उसकी बीवी—दोनो—को जानती थी और उसका कहना है कि पूरे किशलाक मे उन जैसा एक दूसरे का प्यार करनेवाला जोडा और कोई नही था। कोई शौहर अपनी बीवी के साथ इतना अच्छा बर्ताव नही करता था, जितना हैदर। उसका कहना है कि चूकि उनके सबध इतने अच्छे थे और वे एक दूसरे को इतना प्यार करते थे, इसलिए इस बात को सोचा भी नही जा सकता कि हैदर अपनी बीवी का खून कर सकता है। लेकिन बेशक, यह कोई सबूत नही है। इसके विपरीत, इस तरह के अधिकाश खून ईर्ष्या के कारण ही किये जाते हैं।"

"क्या कोई चश्मदीद गवाह है?"

"पडोसियो न चीख और बडा शोर शराबा सुना। दरवाजा अदर से बद था। वे लोग बीवी के पिता को खबरदार करने के लिए भागे। वह भागता हुआ आया और दरवाजे म ही हैदर से टकरा गया, जो भागकर जा रहा था। पिता ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन हैदर ने उसे छुरे से डरा दिया। हैदर उसी शाम को किशलाक मे वापस आ गया, जब मिलिशिया मौके पर पहुच चुकी थी और मै गवाहो म पूछताछ कर ही रहा था। पहली परीक्षा म उसके शरीर पर खून के कोई निशान नही मिले। निस्सदेह, इतने जोर की बारिश म ऐसा होना कोई अचरज की बात

नही है अलावा इसके, वह अपने चाग़े और बदन को किसी भी शरीफ में धो सकता था।"

"और खुद हैदर क्या कहता है?"

"जब वह आया,—मैं उस वक्त उसी के घर मे बैठा हुआ था,—तो वह सीधा अपनी बीवी की लाश पर झपटा और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। दुर्भाग्यवश, मैं ताजिक बहुत अच्छी तरह से नही समझता। लेकिन यह भी एक आम बात ही है—बाद मे पछतावा होता ही है। इसके बाद जब उसे मिलिशिया के लोगो ने हिरासत मे ले लिया, तो उसने एकदम चुप्पी साध ली और कुछ भी नही कहा। उसे देखकर लगता है, जैसे सख्त मानसिक आघात लगा है। हम उससे कुछ भी नही जान सके।"

"रुकिये, जरा, रुकिये! मैंने उसे अभी हाल ही मे तो कहीं देखा था। अरे, कब? हा, कल ही तो—यहीं, बस्ती में ही।"

"किस वक्त? कुछ याद है?" अनुसधानकर्ता ने पूछा।

"ठहरिये, अभी बताता हू। यह कोई चार बजे की बात रही होगी, जब मैं खाना खाकर वापस आ रहा था। यहीं—इसी सडक पर, दफ्तर के पास। जानते है, यह मुझे क्यो याद आ गया? कल मुझे अपने सामूहिक फार्म के दो दहकान मिले थे—पहले यही हैदर और बाद मे शाहाबुद्दीन कासिमोव का बेटा—और वह भी दफ्तर के पास ही।"

"आपको यकीन है कि यह कल ही की और चार बजे की बात है?"

"लगभग।"

"क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। खून भी लगभग इसी समय हुआ था।"

"देखिये, मैं यह हलफिया बयान तो देना पसद नही करूगा कि यह ठीक चार ही बजे की है या यह कि वह आदमी हैदर ही था। मौसम ही कुछ ऐसा था कि जिसमे—कहते है न कि—सारे ही बिल्ले काले दिखाई देते हैं। और न मैंने अपनी घडी ही देखी थी—इसलिए मैं गलती पर भी हो सकता हू।"

"समझा। अच्छा, आप खुद हैदर के बारे मे कुछ बता सकते हैं?"

"क्या बताऊ—हैदर रजबोव के बारे में मैं शायद उतना ही जानता हू, जितना मुख्तारोव जानते हैं। हैदर ने कभी कोई खास राजनीतिक सरगरमी नही दिखाई है। उसके ससुर—मलिक अब्दुकादिरोव—ने १९२२ मे अपने

आगन म सोते दा लाल सैनिको की हत्या कर दी थी। लेकिन यह सब तो पुराने इतिहास की बाते है। उस वक्त और भी बहुतेरे लोगो ने ऐसी ही बाते की थी – महज इसलिए कि वे वर्ग-चेतन नही थ या इसलिए कि उह अमीरो ने ऐसा करने के लिए भडका दिया था। उसके बाद से उसके खिलाफ कोई एसी बात नही कही जा सकती।"

"और गवाहो के बारे मे तो आप कुछ नही बता सकते? मुख्य गवाह – हैदर का पडोसी और सामूहिक फाम का प्रधान, दौलत – तो साथी मुख्तारोव की राय मे पूरी तरह से भरोसा करने लायक आदमी है।"

कोमारेको सिगरेट से उठते धूए के छल्ले की तरफ खामोशी के साथ देखता रहा।

"जानते हो, मुख्तारोव, मुझे यह सामूहिक फाम बिलकुल भी पसद नही है। ईमान से बताओ, हम इसके सदस्या के बारे मे इसके अलावा सचमुच और क्या जानते है कि वतमान सामूहिक कृषका मे से बहुत से १६२२ मे बासमचिया के साथ अफगानिस्तान चले गये थे और फिर १६२८ मे ही लौटकर आये थे?'

"देखो, बात का बतगड न बनाओ," मुख्तारोव ने बुरा मानते हुए कहा, "ऐसे न जाने कितन दहकान है, जो पुराने समय मे बासमचिया के चक्कर मे आ गय थे। आखिर १६२२ म यहा कितन लोग यह जानत थे कि सोवियत असल मे क्या है?"

"मै उसकी बात नही कर रहा हू। म जो कह रहा हू, वह यह है – ऐसे बहुत सार अमीर थे, जो अफगानिस्तान मे अपना सारा माल असबाब बेचकर इस तरह के सामूहिक फार्मो मे छिपकर घुस आये है। और फिर उन और लोगो के बारे मे क्या कहा जाये जो अमीरो के हाथ के मोहरे है? इस जैसे सामूहिक फार्मों मे जबरदस्त राजनीतिक काय करन की आवश्यकता थी। क्या हमने इस तरह का काफी काम किया है? क्या हमने वहा काफी आदमी भेजे है? हमने वहा किसे भेजा?'

"क्या दौलत को भेजा है।"

"तुम्ह याद है कि शरद म हम वहा एक सभा करन के लिए गये थे? वहा से लौटते समय म सारे रास्त उस सामूहिक फाम के हा बार म सोचता रहा था। मुझे वहा के सक्रिय कर्मी अच्छे नहा लगते।'

"तुम्हारा मतलब किनमे है?"

पत्थरो पर फिसलता हुआ क्लाव नीचे आ पहुचा।

"क्या बात है? क्या यहा भी चट्टान है?"

अद्रेई सावेल्येविच ने चट्टान की परत का एक टुकडा उठाया, अगूठे के नाखून से उसको तोडा, उसे अपनी उगलियाम मसला और अपना आम पर रख लिया।

"काग्लोमेरेट है। स्वाद म तो मिट्टी जैसा है, पर खोदना शुरू करा, तो चट्टान है। यह एक्स्केवेटरो के बस की चीज नही है–डाल टूटने के अलावा और कुछ नही होगा। विस्फोट से उडाने के अलावा और कोई चारा नही है।"

'लेकिन यह स्तर है कितना बडा?"

"सत्रहवी चौकी तक चला गया है। नौ-दस मीटर खोदत-न-खोदते कक्कर खत्म हो जाता है और–माफ कीजिये–यह हरामी आ जाता है।'

"यह कैसे हो सकता है?" क्लाव ने अपनी टूटी फूटी रूसी मे कहा। "योजना मे कक्कर दिखाया गया है। सारी योजना एक्स्केवेटरा के काम पर ही आधारित है। अगर सभी जगह काग्लोमेरेट है, तब तो सारी योजना गई भाड मे। क्या यहा भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण नही किया गया था?"

अद्रेई सावेल्यविच न सहानुभूतिपूवक सिर हिला दिया।

"हमारी हालत को तो आप जानते ही है–बस, जल्दी, जल्दी, जल्दी! आज नीव बनाना शुरू की नही कि कल छत भी डाल दी। ता बस, बात यही है–सारा काम जल्दी जल्दी मे किया गया है, और क्या! दो-तीन जगह बरमाई की उहान–वहा उन्हे कक्कर के सिवा कुछ नही मिला और अब भुगतना हमे पड रहा है!'

"इसका जल्दी मे कोई सरोकार नही। काम जल्दी भी करना चाहिए और अच्छा भी। रफ्तार और गुण–हा! रफ्तार नही और गुण नही, तो समाजवाद भी नही।'

अद्रेई सावल्यविच हतप्रभ होकर अमरीकी की तरफ देखता रह गया और कुछ नही बोला।

"हर चौकी म स अलग अलग जगह से इस काग्लोमरेट के नमून लीजिये और उन्हे प्रयोगशाला म ले जाइये। कल शाम चार बजे तक उनका विश्लेषण हो जाना चाहिए। मर ६ या तुरत तरन्वा चौका पर

और ल्यूमाइरस-८० को नवी चौकी पर भेज दीजिये। हम वहा कोशिश करके देखते है।'

सुबह तक बारह एक्स्केवेटर खोदते खोदते ठोस चट्टान तक पहुच गये थे और काम को बद करके खडे हो गये थे।

नहर-तल से बाहर आते समय क्लाव के मुह से रूसी और अग्रेजी गालियो की एक न समझ मे आनेवाली बडी बरस रही थी। एक शिला पर बैठकर उसने मुख्य इजीनियर के लिए एक रिपोर्ट घसीटी और उसे हरकारे के हाथ दूसरे सैक्शन भेज दिया। बरसात खतम होने के बाद सारा हा मैनेजमेंट वही चला गया था। हरकारे को रवाना करने के बाद क्लाव बस्ती की तरफ चल दिया। बारक अब ठेठ नहर-मुख तक आ गई थी, रेगिस्तान मे जा घुसी थी और एक टेढी-मेढी शृखला मे नहर के साथ-साथ दूर तक चली गई थी।

नहर मुख से कक्रीट मिश्रको की बधी हुई घडघड की आवाज आ रही थी। क्लाव ने थकान से अपनी आखो पर हाथ फेरा। नहर-मार्ग का निर्माण शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। लेकिन खुदाई का काम? वह रास्ते से होकर जानेवाले एक छोटे से चश्मे पर मुड गया और ठण्डे पानी मे अपने चेहरे को ताजा किया। चट्टान के उस पार से नदी का अविराम गरज सुन पड रही थी। क्लाव इस शोर का इतना आदी हो गया था कि उसकी तरफ अब उसका ध्यान भी नही जाता था। इस सुन्दर शोर की मधुर निरन्तरता मे उसे सुन वह यकायक यह मान नहीं पाता कि यह किस चीज की आवाज है।

बस्ती धीरे धीरे जाग रही थी। रगीन बनियाने पहने लोग बारको का दहलीजो पर नजर आने लगे थे। प्रातःकालीन वायु की पारदर्शी नीलिमा को धुधलाता हुआ एक टक धुम्रपान हुआ निकल गया।

इजीनियरो और टेकनिशियनो का नई नगर, जिसमे क्लाव बस्ती से आकर रहने लगा था, और बारको से कुछ हटकर, बिलकुल नदी के किनारे पर स्थित था। क्लाव ने दरवाजे को धकेला।

"कौन, निन?"

'हा, मरी। तुम्हें जगा तो नही दिया मैने?'

"क्या अभी अभी आ रहे हो?" आखें बद किये किये ही सोयी हुई न अपने बिखरे बालो को ठीक करते हुए कहा।

'हा। मरी उन दुर्भाग्यों का सामना करना ...

क्या, कुछ हो गया क्या?" पोलोजोवा ने अंग्रेजी में पूछा।
"दस मीटर की गहराई पर हमें कंकर की जगह कार्नामरेट मिला है। उसे उडाना होगा।'
"बहुत है?"
"मोटे हिसाब के अनुसार कम से कम सत्तर हजार घन मीटर है।'
'क्या कह रहे हो! इससे तो काम में जबरदस्त रुकावट आ जायगी।"
कम से कम तीन महीने की।
लेकिन यह हुआ कैसे? क्या किसीको यह पहले मालूम नहीं था?"
"यही तो मैं भी जानना चाहता हूं। सर्वेक्षण कार्य के आधार पर, योजना के अनुसार, यह सब कंकर होना चाहिए।"
रुको जरा, मैं जरा चाय बना लाऊं हां, तो अब क्या होगा?"
देखते हैं। मैंने कीश को रिपोर्ट भेज दी है। वही फैसला करेंगे। पूरी लाइन पर मशीनों को बदलना होगा।'
उसने एक साफ कागज उठाया और मेज पर अपनी कोहनियां टिकाकर उसे अंको की तिरछी लकीरों से भरने लगा।
"बैठो, जिम। चाय पियो। बहुत परेशान हो?"
कोई खुश होने की बात तो है नहीं। हम वक्त पर काम को खत्म नहीं कर पायेंगे।
"न, एकदम आशा नहीं छोड़ देनी चाहिए। शायद कोई हल निकल ही आये। और मजदूर भेज दिये जायगे।"
"हमारे पास मशीन नहीं है। हमारे एक्सकेवेटर इस चट्टान के लिए किसी काम के नहीं।"
उसने कनाक के हाथ को सहलाया।
"मुझे बहुत खुशी है कि तुम्हें निर्माण-कार्य की सफलता की इतनी सच्ची, इतनी गहरी चिंता है। तुम तो पूरे सोवियत इंजीनियर हो गये हो—तीन दिन से शेव तक नहीं की तुमने!"
उसने लजाकर अपनी ठोडी पर हाथ फेरा।
माफ करना मेरी, मैं अभी जाकर शेव करता हूं। यह कोई सोवियतपन नहीं है—यह कोरा बेढंगापन है।"
"सुनो, जिम, मुझे तुम्हें दो खबरें सुनाना है—एक अच्छी है और एक खराब। कल तुम मुझे दिन भर नहीं मिले इसलिए यह नहीं सुना सकी।'

"अच्छा, तो बुरी खबर क्या है?"

"तुम अच्छी खबर पहले क्या नही सुनना चाहते? मुझे कोम्सोमाल समिति के ब्यूरो की सदम्या नियुक्त किया गया है। खुश हो न?

"क्यो नही! और बुरी खबर क्या है?

"मेरा तबादला दूमरे सैक्शन को किया जा रहा है। हमे कुछ समय के लिए अलग होना पडेगा—शायद निमाण काय के पूरा हाने तक।

"तुम्हारा कौन तबादला कर रहा है और क्यो?"

"कोम्सामोल समिति। मर्री का दुभाषिया चला गया है। नया दुभाषिया मगवाने की कोई तुक नही है—उसके आने आत दो महीन निकल जायेगे। और यहा मेरे अलावा और कोई नही है। यह रहा पहला कारण—यद्यपि मुख्य कारण नही। मुख्य कारण यह है कि मुझे दूसरे सैक्शन की काम्सोमोल इकाई का सचिव बना दिया गया है। जरा सोचो ता, कितना बडा, कितना दिलचस्प काम है यह!"

"हा, देख तो रहा हू कि तुम बहुत खुश हो।"

'मुझे यह सोचकर बुरा लग रहा है कि हम लोग साथ साथ नही रह पायेगे। लेकिन जहा तक खुद काम का सवाल है, म बहुत खुश हू। तुम समझ नही पा रहे हो कि कोम्सोमोल सगठन मुझपर कितना विश्वास कर रहा है। इस इकाई मे एक सौ बीस सदस्य ह। बल्कि मुझे तो थोडा डर भी लग रहा है कि मै इस काम का कर पाऊगी या नही।"

"क्या तुम सचमुच वहा जाना चाहती हो? मर्री की दुभाषिया बनकर?'

क्या मतलब कि जाना चाहती हू? क्या मने बताया नही कि मुझे नियुक्त किया जा चुका है? म आज ही जा रही हू। तुम नाराज हो? अरे जिम, नाराज नही होना चाहिए। जरा समझदारी की बात करो। आखिर जगह कोई दूर भी तो नही है—कुल बीस किलामीटर का ही ता फासला है। हम हफ्ते मे कम से कम एक बार तो मिल सकते ह—शायद ज्यादा ही। वैसे भी, अब भी हम कभी कभी कई कई दिन तक आपम मे नहा मिल पाते है। तुम इस बात को क्या नही समझना चाहत कि मेरे लिए यह एक बहुत बडा और बहुत जिम्मेदारी का काम है, जो पहली बार मेरे सुपुद किया जा रहा है और जिसे मुझे किसी भी कीमत पर अच्छी तरह से करना है। हा, जिम!'

"इस बात स म इनकार नही करता कि मर्री की स्थायी सहायिका

का काम करना किसी भी युवती के लिए बहुत दिलचस्प होगा। लेकिन यह मैं जरूर समझता हू कि मेरी पत्नी के लिए यह काम अरोचक और अनुपयुक्त होगा।"

"जिम! क्या बात है यह! ईर्ष्या? इस तरह की बात करते तुम्हे शर्म आनी चाहिए! क्या तुम सचमुच नाराज हो?"

"मैं सिर्फ नाराज ही नही हू—म इसके सख्त खिलाफ हू।"

"लेकिन भला क्यो? इसलिए कि हम साथ-साथ नही रह पायेगे या इसलिए कि मैं मर्री के साथ काम करूगी?"

"दोनो कारणो से। मेरा खयाल है कि मर्री को रूसी सीखने का उतना ही मौका मिला था, जितना कि मुझे। और अगर उसने रूसी सीखने की परवाह नही की, तो यह कोई वजह नही है कि जिसके लिए मेरी बीवी मेरा घर छोडकर उसकी दुभाषिया का काम करे।"

''मेरी बीवी, मेरा घर!' थोडा-थोडा करके तुम्हारी पुरानी भाषा फिर उभरकर आने लगी है। इसे सुनना कोई बहुत अच्छा नही लगता। हा, तो जिम! पगले मत बनो! तुम भी कैसे शेखीबाज हो! तुमने रूसी सीख ली और मर्री ने सीखना नही चाही! पहली बात तो यही है कि क्या तुम अपने दिल पर हाथ रखकर यह कह सकते हो कि अगर तुम्हे मुझसे प्यार न हो गया होता, तो तुम रूसी इतनी जल्दी सीख लेते? इसके अलावा, जब तुम बीमार पडे हुए थे, तब तुम्हे रूसी सीखने का काफी वक्त मिल गया था। दूसरी बात यह है कि अगर—मान लो, मर्री रूसी सीखना न चाहे तो उसे इसके लिए कौन मजबूर कर सकता है? मैनेजमेंट उसे दुभाषिया देने के लिए प्रतिबद्ध है। दुभाषिये के बिना वह काम नही कर सकता और मुफ्त ही तनख्वा पायेगा। सारा सवाल यह है—मर्री की यहा जरूरत है या नही? तुम खुद खूब अच्छी तरह से जानते हो कि उसकी जरूरत है, इसलिए उसके लिए ऐसी परिस्थितिया प्रदान करना जरूरी है, जिनमे वह हमारे लिए अधिक से अधिक काम कर सके। मर्री का दुभाषिया बनना 'तुम्हारी बीवी'—जैसा कि तुम कहना चाहते हो—के लिए भी कोई हेठी या बेइज्जती की बात नहीं है।"

'ठीक है, अगर मैनेजमेंट मर्री को दुभाषिया देने के लिए प्रतिबद्ध है, तो वह मुझे भी दुभाषिया देने के लिए उतना ही प्रतिबद्ध है। मैं भी वैसा ही अमरीकी हू, जैसा कि वह।'

"अभी कल ही जब तुमसे यह कहा गया था कि तुम सामान्य अमरीकी हो, तो तुम बुरा मान गये थे। सिनीत्सिन से यह किसने कहा था, 'म अमरीकी नही हू, मैं सोवियत हू'? और इसके अलावा, मेरे प्यार जिम, तुम अब बहुत बढिया रूसी बोल सकते हो और तुम्हे दुभाषिये की बिलकुल भी ज़रूरत नही है।"

"मने रूसी सीख ली है, यह मरा अपना मामला है—किसी और को इससे कोई गरज़ नही। मुझे भी रूसी सीखने के लिए कोई मजबूर नही किया गया था और दुभाषिया पाने का मुझे भी उतना ही अधिकार है, जितना कि मर्री को। जब तक तुम्हारे किसी और काम पर जाने का मतलब तुम्हारा घर छोडकर जाना नही था, मने कोई आपत्ति नही की थी। लेकिन अगर वे—मानो मेरे रूसी सीख लेने और दुभाषिये के बिना काम चला लेन के इनाम के तौर पर—मुझसे मेरी बीवी का छीन लेना और उस मर्री की दुभाषिया बना देना चाहते ह, तो म आज ही सीधा मोरोज़ोव के पास जाऊगा और माग करूगा कि मुझे मेरी दुभाषिया वापस दी जाये और क्या।"

तुम्हारी बीवी को कौन छीन रहा है? तुम यह क्या बकवास कर रहे हो? तुम्हे बस, सोने को नही मिल पाया है और इसलिए लगता है कि शायद तुम यह नही समझ पा रहे हो कि तुम कहा हो। मोरोज़ोव के पास जाने की कोशिश मत करना—अपनी और मेरी जगहसाई कराना चाहो, तो बात दूसरी है। अब तक तुम्हे जान लेना चाहिए था कि सोवियत कानून के मुताबिक पति और पत्नी एक ही जगह एक दूसरे के मातहत काम नही कर सकते हैं। और यह इनाम कौनसा है, जिसकी तुम बाते कर रहे हो? क्या बात है—रूसी बोलना सीख ली है, तो समझते ह कि सारे निर्माण-सगठन पर कोई बहुत बडा एहसान कर दिया है और हर किसीको इनका शुक्रगुज़ार होना चाहिए। भारी उपकार किया है—एक दुभाषिये की बचत कर दी है।'

"म अभी इतनी अच्छी रूसी नही बोलता कि दुभाषिये के बिना काम चला सकू।

"तुम किसको बहकाने की कोशिश कर रहे हा? मोरोज़ोव को? निर्माण सगठन को? पार्टी को? शम नही आती तुम्ह। गाहस्थ्य की पवित्रता का उल्लघन हो गया है। देखो कुछ महीना क लिए बीवी को

अलग करना चाह रहे हैं—और फौरन ही इनकी सारी सोवियत भावनाएं भी इन्हें छोड़कर चली गयी। अब अपने 'घर संसार' की रक्षा के लिए छोटे-छोटे टुच्चे झूठ बोलने से भी इनकार नहीं करते!"

"तुम्हीं उड़ाना चाहो, तो जितनी चाहो उड़ा लो। लेकिन मेरा खयाल है कि लोग साथ-साथ रहते हैं, तो उन्हें एक दूसरे की भावनाओं का कुछ लिहाज करना चाहिए। मैं तुम्हें बरज रहा हूं—तुम कहीं भी नहीं जाओगी! समझीं?'

"अहा, आपको शुरू से ही इसी तरह बात करनी चाहिए थी, फिर बहस और झगड़े का सवाल ही नहीं उठता। मैं भी कैसी पागल हूं कि मन में कुछ नहीं रखा बता दिया कि मैं कितनी खुश हूं, कोम्सोमोल की बात, अपने को मिले जिम्मेदारी के काम की बात बता दी। और बदले में क्या सुना—सिर्फ एक बात—'मेरी बीवी मेरे घर में नहीं जा सकती'। आप शायद यह समझते हैं कि हमारे देश में और हमारे यहां की हालत में भी 'मेरी बीवी' की उपाधि आपको मेरे साथ चीज वस्तु जैसा बर्ताव करने का अधिकार दे देती है। अगर हां, तो आप गलती कर रहे हैं। आप इस उपाधि को वापस ले सकते हैं। जब हमने साथ-साथ रहना शुरू किया था, तब आपने अपनी शर्तें नहीं बताई थीं और मेरा इस उपाधि को इतनी बड़ी कीमत पर खरीदने का कभी भी कोई इरादा नहीं था। मैं आपके साथ तब तक रही, जब तक यह समझती रही कि आप सचमुच हम हां लोगों में एक हैं। अब देखने में आता है कि आपके सारे सौ फीसदी सोवियत रुझान कोरे बाह्य आवरण के सिवा और कुछ नहीं थे। जरा सा कुरेदा नहीं कि आपमें छिपा क्षुद्र और टुच्चा निम्न पूंजीवादी बाहर निकल आया। नमस्कार, मिस्टर क्लाव, अगर आपको स्त्री के अपने अधूरे ज्ञान के कारण दुभाषिये की जरूरत पड़नी है तो मेहरबानी करके अपने आप तलाश कर लीजिये।

"अगर तुम जा रही हो, तो फिर लौटकर आना संभव नहीं रहेगा। मेरी राय है कि तुम इस बात पर अच्छी तरह से विचार कर लो।'

"सलाह के लिए शुक्रिया। मैं सोच चुकी। अगर आपको तकलीफ न हो तो मेरी जो कुछ चीजें हैं, उन्हें ड्राइवर के हाथ मेरे सामान भिजवा दीजिये। अच्छा, नमस्कार, मिस्टर क्लाव।'

खिड़की के कांच पर एक मक्खी निराशापूर्ण स्वर में भिनभिना रही

थी। खिडकी से वख्श नदी दिखाई देती थी। भिनभिनाती हुई मक्खी काच के ऊपर चढती जा रही थी। न, वह मक्खी नही थी, वह तो एक बडी, पतली कमरवाली धारीदार भिड थी। वह लगातार भिनभिनाती हुई हठधर्मी के साथ ऊपर चढती ही चली जा रही थी। लगता था, जैसे भिड दो स्वतत्र भागो से मिलकर बनी है—एक नन्हा सा ट्रैक्टर और उसके पीछे जुडी एक नन्ही सी गाडी। मेज पर अलकृत प्याला मे रखी चाय ठडी हो गई थी। क्लाक ने पेसिल उठाई, आकडे लिखे कागज को पास खीचा और अपने हिसाब की जाच करने लगा। अको की पक्तिया उसकी आखो के आगे बारिश की बूदो की तरह तिरछी होकर नाच रही थी। उसने कागज को मोडकर अपनी जेब मे रख लिया। किसीने बाहरी दरवाजे को खटखटाया।

"क्या अमरीकी इजीनियर यही रहते है?"

'क्यो, क्या बात है?"

मुख्य इजीनियर आपसे फौरन मिलना चाहते है।"

'ठीक है। मै अभी आता हू।"

बारक से निकलने के बाद पोलोजोवा यत्रवत मुख्य सैक्शन की तरफ चल दी। अभी समय ज्यादा नही हुआ था। कोम्सोमोल समिति के कार्यालय मे शायद अभी कोई न हो। और दूसरे सैक्शन जानेवाली कार अभी काफी देर तक नही जायेगी। पोलोजोवा नदी के साथ-साथ जा रही थी। अपमान की कडुवाहट से उसके भिचे हुए सूखे होठ थर थर काप रहे थे, उसकी आखें झुलसानेवाली शुष्कता से जल रही थी। "मै उस जैसे आदमी के साथ इतने दिन भला कैसे रह ली?"

मुख्य सैक्शन पहुचने के पहले उसे अचानक नदी के खडे तट के किनारे एक शिला पर हरी टोपी पहने एक ठिगना सा लडका दिखाई दिया।

'करीम।"

'अरे, मरियम?"

"तुम यहा क्या कर रहे हो?"

"तीसरे सैक्शन से आया था। आज काफी काम करना होगा। अब सोने का कोई फायदा नही, इसलिए आकर नदी के किनारे पर बैठ गया। ठडा है यहा और धूल भी नही है। लेकिन तुम इतनी सुबह-सुबह कहा जा रही हो?'

'मैं? मैं भी जरा घूमने के लिए निकल आई थी। सुबह कितना खामोशी होती है–मुझे यह बहुत पसद है। मैं दूसरे सैक्शन जाने के लिए कार का इतजार कर रही हू।"

ता क्या तुम वहा आज से ही काम करना शुरु कर रही हो?'

'हा, टालू क्या? बात यह है कि इकाई अब लगभग पूरी तरह स नतृत्वहीन है। जितनी जल्दी काम सभाला जाय, उतना ही अच्छा है।"

"हा, बात ता ठीक है।"

बातचीत आगे नही बढ पाई। पोलोजोवा सोच रही थी–अच्छा हा कि रुकू नही, कह दू कि कही जाने की जल्दी मे हू। लेकिन फिर उसन मन म कहा कि कही भी जाने की जल्दी नही है और इस तरह जाना अटपटा लगेगा। उसन अपनी आखे नासिरुद्दीनाव की तरफ उठाइ

'करीम!"

"हा, मरियम?"

"सुना, करीम। मै बहुत दिन से तुमसे बात करना चाह रही थी "

वह झूठ बाली और चुप हा गई।

किस बारे म, मरियम?

बात यह है कि पता नही क्या, पिछली बार अच्छा नही रहा मतलब, उस समय, जब तुम आये थ म किसी तरह तुम्ह सब कुछ बताना चाहती थी कि बात क्या है, लेकिन वक्त ही नही मिला नहा, मैं ठीक कह रही हू–बात यह नही है कि वक्त नही मिला, बल्कि यह ह कि उसके बारे म बात करना मरे लिए बहुत मुश्किल था। खर, अब मैने तुम्ह बतान का निश्चय कर लिया है और बात शुरू भा कर दा है, लकिन लेकिन यह नही समझ पा रहा हू कि कैस कहू।'

"लकिन उसकी बात ही क्या करना हा मरियम?'

'नहा उसका बात करनी है मुझे, जरूर करनी है। बात यह है कि उस वक्त–पटरी बिछाते समय–हम उत्तेजना क एस वातावरण म, इतन हिल मिलकर, इतन तनावपूर्ण वातावरण म रह र थ कि न मरा य मतलब नहा, लकिन समझत हा न कि सामूहिक उत्साह क ऐस क्षण बार-बार नही आते। जिदगी म कभी भी म उस एक सप्ताह का नहा भूल पाऊगी। म तुमस सच कह रहा हू, करीम, जब तक जिन्दा हू, उस कभी भी नहीं भूल पाऊगा।"

"म भी कभी नही भूलूगा, मरियम।"

'और, जानत हो, तब म तुम्हे, तुम सबका बहुत प्यार करती थी। न, यह भी ठीक नही है—म अब भी तुम सबका बहुत प्यार करती हू। और, करीम, म तुम्हे बहुत प्यार करती हू एक साथी के नाते तुम्हे बहुत प्यार करती हू। लेकिन, उन दिना म तुम सब का पहले किसी भी वक्त की बनिस्बत कही ज्यादा प्यार करती थी। और खासकर तुम्हे। क्याकि तुम उस सब उस चमत्कार के प्राण थे। खैर, म इस बात का कह नही सकती, लेकिन तुम समझते हा—आखिर तुम्हे भी ऐसा हा लगता था। और, समझ रहे हा, न, मुझे हमारी यह अदभुत रूप से प्रगाढ मत्री तब उस मैंने प्यार समझ लिया जस औरत किसी आदमी को प्यार करती है। लेकिन बाद म मने अनुभव किया कि बात यह नही है, म तुम्हे प्यार करती हू, बेहद प्यार करती हू, लेकिन दूसरी तरह से। और मेरे खयाल स यह अच्छा ही हुआ कि इस बात को मने हम लोगा के साथ साथ रहना शुरू करने के पहले ही महसूस कर लिया।'

मरा भी यही खयाल है, मरियम।"

'और तुम मुझस नाराज ता नही हो?'

म तुमस क्यो नाराज होऊगा? क्या काई भी अपन को किसी ऐसे आदमी से प्यार करन क लिए मजबूर कर सकता है, जिसे वह प्यार नही करता?"

'देखो करीम, उस बार जब तुम आये थ, तब यह सब समझाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। और इसलिए यह और भी मुश्किल था कि तभी मुझे एक दूसरे आदमी स प्यार हो गया था। लेकिन हो सकता था कि तुम मुचे एक बुरी बदचलन लडकी समझ लते।'

मने ऐसा नही समझा था, मरियम।"

म जानती हू कि तुम बहुत अच्छे साथी हो करीम और, फिर, बात कुछ ऐसी हुई कि यह आदमी हमारा साथी नही, बल्कि एक विदेशी इजीनियर था। तुम यह भा सोच सकते थ कि मैंने, एक कोम्सोमाली न एक अच्छे और विश्वसनीय साथी को एक विदेशी पूजीवादी की खातिर छोड दिया है।'

हमारे लडको ने यह सवाल उठाया था, मरियम और मुझसे पूछा था कि किसी भी कोम्सोमोली को पराये वग के आदमी के साथ रहने का

18

अधिकार है या नही, लेकिन मने उनसे कहा कि अगर मरियम उसके सा रह रही है तो इसका यही मतलब है कि वह कोइ पराये वग का नही, बल्कि हमारा ही आदमी है। और अगर वह अभी पूरी तरह मे हम जसा नही भी हो पाया है, तो मरियम उसको पूर्ण रूप से हम जसा ही बनन मे मदद करगी।"

क्या तुमने उनसे यही कहा था?'

'हा। इसके बाद उन्होने इस सवाल को फिर कभी नहीं उठाया।"

"तुमने ठीक कहा था, करीम।'

नीचे पानी मस्ती से कलकल कर रहा था। नहर मुख की तरफ से करीब मिथको की वधी हुई घडघडाहट की आवाज आ रही थी, मानो घाट पर धोबिन कपडे फटक रही हो।

'और तुम, मरियम, अच्छी हो? सुखी हो?

हा जानते हो, जो तुमने कहा वह बिलकुल ठीक है। बेशक, व अभी पूरी तरह से हम जैसा नही बन पाया है, लेकिन मेरा खयाल है कि मैं उसको हम जैसा ही बनन म मदद कर सकती हू और करूगी।"

तुम्हे पक्का यकीन नही है, मरियम?"

हम म से कोई भी गलती कर सकता है लेकिन मैं नही समझती कि मन गलती की है।

अगर तुम्हे कभी भी समथन और सहायता की जरूरत पडे, मरियम, तो यह मत भूल जाना कि तुम्हार पास अच्छे और विश्वसनीय साथी है।'

"मैं इस बात को हमशा याद रखूगी, करीम।

म समिति क कार्यालय जा रहा हू। अच्छा, मरियम, म चला। दूसरे सवशन म अपना काम खूब अच्छी तरह से सभालना। मैं दसेक दिन म आकर देखूगा कि तुम किस तरह स काम चला रही हो।

"अलविदा, करीम। मरा खयाल है कि म उसे ठीक ही सभाल लूगी।

इजीनियर ऊर्नावायेव का नया प्रयोग

उस शाम को मोराजान क पनट म एक विशेष बैठक हुई। खुद मोराजान क अलावा मकान म वहा काग ऊनाराराव और निम्पोटन विशेषग—एक जानिवाई—जो पाया जिसका नाम याद रखना बहुत मुश्किल था।

मोरोज़ोव ने उन्हें सक्षेप में उस खबर से अवगत करवाया, जिसे वे पहले से ही जानते थे कि अभी तक कल्पित सत्तर हजार घन मीटर की जगह दो लाख चालीस हजार घन मीटर काग्लोमेरेट हटाना होगा। इस प्रकार पैदा हुई समस्या के सभी सम्भव हलों पर उन्हें तुरत विचार करना होगा। मोरोज़ोव ने शिष्टतापूर्वक क्लाव की राय मागी। क्लाव ने अपने कधे मचका दिये

"मैं तो यही नही समझ पा रहा हू कि इस मामले म भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विसन किया," उसने रूसी म कहा, 'यह कोरी भूल नही है, यह शुद्ध ग्रतध्वंस है।"

"आपका कहना बिलकुल सही है। चेका ने हाल ही म योजना सगठना और कृषि की जन-कमिसारियत के मध्य एशियाई विभागो म तोड फोड करनेवाले एक सगठन का पता लगाया है और इस सगठन की शाखाए सिचाई प्रणाली तक भी फैली हुई थी। इसम शक नही किया जा सकता कि जब हमारे निर्माण-काय की योजना बनाई जा रही थी और प्रारभिक सर्वेक्षण किये जा रहे थे, उस समय तोड फोड की कई कारवाइया जान-बूझकर की गई थी। इन कारवाइयो का सीधा लक्ष्य था हमारे निर्माण काय को खराब से खराब स्थिति म डाल देना और उसकी प्रगति मे अधिकतम बाधा डालना। किया क्या जाय—वग सघप तो वग सघप ही है और इस मामले मे जो चीज दाव पर है, वह है कपास के बारे म सोवियत सघ की आर्थिक स्वतत्रता। असल मे तो मैं आपको यह चेतावनी देना चाहता हू कि निर्माण-काय के समाप्त होने के पहले पहले आप इस तरह के और कई अप्रिय आश्चर्यों का सामना करने की भी आशा कर सकते हैं। आज, सत्रहवी चौकी पर परीक्षण-बरमाई के दौरान बारह मीटर की गहराई पर पानी मिला। यह एक और चीज है, जिसे भूवैज्ञानिक सस्थान के सर्वेक्षक 'नही देख पाये' और, जाहिर है कि यह बात भी काग्लोमेरेट के हटाये जाने के काम म बाधक होगी।"

"मतलब यह है कि हमे विस्फोटन और पानी को पप करने के काम को साथ-साथ करना होगा?"

"जी हा। काम इतना आगे बढ चुका है कि अब नहर रुख को तो बदला नही जा सकता। हम काम की योजना का इस तरह पुनगठन करना

होगा कि इन अप्रत्याशित कठिनाइयों के बावजूद उसे नियत समय पर हा पूरा किया जा सके।"

क्लाक ने अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज निकाला।

'मैंने यह हिसाब लगाया है कि हमारे पास जो मशीनरी है, उससे कितना काम किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि दूसरे सक्शन से दो और एक्स्केवेटर यहां लाये जायें। इतनी गहराई पर मिट्टी को दो मंजिलों में ही निकालना होगा—एक एक्स्केवेटर नीचे और एक ऊपर। इस तरह की व्यवस्था करके हम काम को योजना के एक महीने के बजाय दो महीनों में पूरा कर सकते हैं—अलबत्ता पानी को पंप करके निकालने में होनेवाला संभव विलंब इसके बाहर है।'

क्लाक ने पेंसिल को रख दिया और अपने हिसाब का कागज मोरोजोव को दे दिया।

'हां, योजना तो एकदम व्यावहारिक है," मोरोजोव ने सराहना की। बस, इसे इस तरह ढालना होगा कि सारा काम एक महीने में किया जा सके।"

'यह असंभव है। हमारी मशीनें इतनी गहराई के लिए एकदम अनुपयुक्त हैं। वे इससे ज्यादा काम नहीं कर सकतीं।

इसी बात पर तो हमें विचार करना है। आपकी क्या राय है, साथी कौश?

मैं उस योजना से सहमत हूं, जो साथी ऊर्तावायेव ने बनाई है और मुझे दिखा भी चुके हैं।

बताइये साथी ऊर्तावायेव।

ऊर्तावायेव ने भी अपनी जेब में एक कागज निकाला।

'मेरी योजना इस विचार पर आधारित है कि कान्नीमरट को निकालने से संबद्ध सारा काम उन एक्स्केवेटरों को हाथ लगाये बिना, जो दूसरे सक्शन पर काम कर रहे हैं, एक महीने के भीतर खत्म हो जाना चाहिए। नहीं तो इन आकस्मिकता का सामना करते-करते हम दूसरी आकस्मिकता पैदा कर देंगे।

यह असंभव है। बस मेरे ६ एक्स्केवेटरों को छोड़कर हमारे एक्स्केवेटर ज्यादा से ज्यादा सात से साढ़े सात मीटर की गहराई तक ही काम कर सकते हैं। इस सक्शन में नहर की तह अठारह मीटर गहरा है।'

"मुझे मालूम है, साथी क्लाव। मगर ये आंकडे फर्म द्वारा निर्धारित किये हुए है—यह कहिए कि सूचीपत्र के आंकडे है। हमारे एक्स्कवेटरो की पहुच को उनके जेगला की लबाई म वद्धि करके काफी बढाया जा सकता है। अगर हम ऐसा कर ले, तो सामान्य मक-४ या व्यूसाइरस ५० भी सात क बजाय बारह मीटर और मेक ६ अठारह मीटर की गहराई स मिट्टी उलीचन लगेगा। इससे किसी हद तक एक्स्कवेटरो को जोडा म काम करना नही पडेगा और हमारे लिए दूसरे सैक्शन म काम कर रहे एक्स्केवेटरो के बिना काम चलाना सभव हो जायेगा। जेगला की लबाई को साढे तेरह मीटर तक, और एक्स्केवेटरो की क़िस्म के अनुसार कुछ मामलो मे तेईस मीटर तक बढाया जा सकता है। यह रहा एक उपाय। दूसरा उपाय यह रहा—जसा कि आप जानते ही हैं, मेक एक्स्केवेटरो के डोल हमारी मिट्टी के बहुत उपयुक्त नही ह और उनकी उत्पादकता बहुत कम है। इसलिए मेरी राय है कि उनकी जगह कुछ तो टूटे हुए व्यूसाइरसा क डोल,—जिनकी समाई कही अधिक है—० ७ और ० ६ घन मीटर क मुकाबले १ ५ घन मीटर—और कुछ हमारी वकशापा क बन डोल लगा दिये जायें। इससे एक्स्केवेटरा की उत्पादकता काफी बढ जायेगी—औसतन बीस, बल्कि पचीस हज़ार घन मीटर और कुछ मामलो म तीस हज़ार घन मीटर प्रति एक्स्केवेटर तक हो जायेगी। मै जो आंकडे द रहा हू, वे काल्पनिक नही है। उनकी मैं काम के दौरान पुष्टि कर चुका हू, वे कई एक्स्केवेटरो पर किय प्रयोगा पर आधारित ह।"

"मैं कुछ कहना चाहता हू।"

"कहिये।"

"साथी ऊर्तावायेव, आप एक अच्छे इजीनियर ह। आप खुद जानते है कि हर मशीन की अपनी निर्धारित क्षमता होती है, जिससे आग नही जाया जा सकता। मतलब यह कि आगे जाया तो जा सकता है, लेकिन ऐसा करने से मशीन जल्दी खराब होती है। उसकी जिदगी आधी रह जाती है। यह मशीन के उपयोग का बबर और विवेकहीन तरीका है। मैं इस बात की जरा भी जिम्मेदारी नही ले सकता कि इन हालतो मे क्या होगा।"

प्रिय साथी क्लाव," ऊर्तावायेव मुसकराया, "हम अपनी आयात की हुई मशीनरी के साथ कइ ऐसी बाते करते हैं, जिनकी विदेशी फर्में कभी कल्पना भी नही कर सकती। नहर-मुख और छियालीसवी चौकी पर हमारे

क्रीट मिश्रक हर पारी म सूचीपत्र मे उल्लिखित सख्या से दो गुना मिश्र तैयार कर रहे हैं। अगर हमने नियमा का सख्ती से पालन किया होता, तो हम खुदाई काय मे ड्रैग-लाइनो का भी उपयोग नही कर सकते थे। हम अपनी सारी ड्रैग लाइनें वापस भेज देनी चाहिए थी और डोलो के आने तक रुके रहना चाहिए था।"

"ड्रैग-लाइना का उपयोग आवश्यक है। मशीनो से जरूरत से ज्यादा काम लेना और उनका उस गहराई पर उपयोग करना, जिसके वे उपयुक्त नही हैं आवश्यक नही है।"

यह भी आवश्यक है। नही ता हम निर्माण-काय को समय पर पूरा नही कर पायेंगे।"

'मूल्यवान मशीना का विवेकहीन उपयोग करके उनका सत्यानाश कर देने से काम को एक महीना देर से खत्म करना बेहतर है। आपकी सरकार उनके लिए सोना देती है और आपके देश मे अन्य निर्माण-कार्यों मे भी उनकी आवश्यकता पडेगी।"

'साथी क्लाक," कीश ने बीच म कहा, "यह बहुत ही पुराना विवाद है और यह उस फिर शुरू करने का समय नही है। एक बहुत ही सीधी सादी बात को समझने की कोशिश कीजिये—हमारे देश के लिए, जो किसी भी क्षण बाहर से आक्रमण की अपेक्षा कर सकता है मूल्यवान मशीनरी के विवेकपूर्ण और मितव्ययपूर्ण उपयोग के मुकाबले न्यूनतम समय के भीतर अपने औद्योगिक आधार का निर्माण करना कही अधिक महत्वपूर्ण है। जब हमारे औद्योगिक आधार का निर्माण हो जायेगा तब हम इस मशीनरी का खुद उत्पादन कर सकेंगे। फिर, अगर आप हमारे निर्माण-कार्यों का अध्ययन करे, तो ज्यादा गौर से देखने पर आपको पता चलेगा कि मशीनरी के उपयोग का यह तरीका, जो पहली नजर म बबर लगता है अनत अगल म इतना विवेकहीन भी नही है। जटिलतम विदेशी मशीनरी की जानकारी हासिल करने म हमारा लक्ष्य बिलकुल उसी तरह की मशीनरी का ही हमारे देश म उत्पादन करना नही है, बल्कि और भी ज्यादा परिष्कृत मशीनें बनाने के लिए और ऐसी मशीनें बनाने के लिए जानकारी हासिल करना है, जो हमारी आवश्यकताओं के अधिक अनुकूल हो। उनके साथ प्रयोग करके उनको घिसते समय हम साथ ही साथ इन नई परिष्कृत मशीनों के निर्माण का रास्ता भी तैयार कर रहे है। इन मशीनों की क्षमता का

निर्धारण हमारे मौजदा काम के नये, अश्रुतपूर्व पैमाने से किया जायेगा। दूसरे शब्दो मे, विदेशी साज सामान का हमारे द्वारा बबर उपयोग—पहली नजर मे चाहे यह बात कितनी ही विरोधाभासपूर्ण क्या न प्रतीत हो—अत्यत आधुनिक प्रविधि के विकास को उत्प्रेरित कर रहा है "

"खैर, साथियो, इस झगडे को किसी और समय के लिए स्थगित कर देना चाहिए," मोरोजोव ने टोकते हुए कहा। "फिलहाल इस बात पर विचार करना ज्यादा सही रहेगा कि इस समय हम जिस मुश्किल मे फस गये है, उससे कैसे निकला जाये। जहा तक मै हिसाब लगा पाया हू, साथी ऊर्तावायेव, आपकी योजना भी खुदाई काय के एक महीने मे पूरा हो जाने को सुनिश्चित नही करती है।"

"बाकी बात विस्फोटन विशेषज्ञ और बेलदारो पर निभर करती है। अगर वे गहन काय के एक तूफानी दौर का ऐलान कर देते है और नियत लक्ष्य को पचास प्रतिशत बढा देते है—जो बिलकुल सभव है—तो हम काग्लोमेरेट की खुदाई का काम एक महीने के भीतर खत्म कर सकते है।"

"बस?" मोरोजोव ने सबकी तरफ देखते हुए कहा, "तो साथी कोश, आप कृपया साथी ऊर्ताबायेव और साथी क्लाक के साथ मिलकर काग्लोमेरेट सबधी काय की विस्तृत योजना बनाकर कल तक तैयार कर लीजिये, ताकि परसो उसके आधार पर अलग अलग टुकडियो की अपनी अपनी योजनाए तैयार की जा सके "

बदकिस्मत सामूहिक फार्म

देर गये रात को कमरा बद करके कोमारेको ने रेडियो खोल दिया। मास्को से इस बहुकठी बक्से के प्राप्त होने के बाद से तो उसने टेबल टेनिस तक खेलना बद कर दिया था और काम के बाद घर लौटकर वह घटो अपने रेडियो सेट से ही उलझा रहता था। अपनी पत्नी की प्रचड आपत्तियो के आगे झुककर—जिसकी नीद हर आधे घटे के बाद सनसनाहट और गरज की कणभेदी आवाजो से खुल जाया करती थी—कामारेको ने अपने कमरे के दरवाजे पर एक कबल तो लटका दिया, पर अपने इस मन-बहलाव को बद नही किया। सगीत से उसे कभी भी कोई बहुत लगाव नही

रहा था और इसलिए किसी भी एक प्रोग्राम को अत तक सुने बिना वह लगातार स्टेशना को बदलता रहता था। उसे तो इन गाती और गरजना लहरा की तलाश मे भटकने की प्रनिया ही सम्मोहित करती थी। डायल पर नॉब को घुमाती उसकी उगलिया के दबाव से रेडियो खासने, सनसनाने और खरखराने लगता—कही से ट् टू—टुन टुनन टुन—टू टू की आवाजें आने लगतीं, बेतार के तारो पर रहस्यमय और अबूझ सदेश दौडने लगते, पथ्वी उसकी उगलिया की हर हरकत के साथ सीटी बजाते हुए उसके आदेश का पालन करने लगती और वीणा के तारा की तरह तना हुआ उसका हर अक्षाश अपनी अपनी अबोधगम्य भाषा म गाने लगता।

कोमारेको ने नॉब का घुमाया। आवाज के टुकडा को बहाकर लाती लबी सनसनाहट एक बार फिर सुनाई देने लगी। आवाजें जमकर और फूलकर आखिर अग्रेजी म कही जानेवाली बात म परिणत हो गइ।

दरवाजे पर कवल हिला। मुल्लारोव ने कमरे मे प्रवेश किया और चकित होकर दरवाजे के पास ही खडा रह गया।

"आओ आओ।' रेडियो की चीखा के ऊपर चिल्लाते हुए कोमारका ने कहा। यह म्याऊ म्याऊ सुन रहे हो, न? अग्रेज इस बात का रोना रो रह ह कि उनकी हालत खराब हो रही है। रुको जरा, हम अभी पेशा वर भी पकड लेते ह।"

"इस सबका अलग करो। मुझे तुमसे काम है।"

कामारको न रेडियो बद कर दिया।

"क्या नई बात हो गई?"

"म तुमसे 'लाल अक्तूबर' सामूहिक फाम के बार म कुछ बात करना चाहता हू।'

"सदा तैयार—जसे हमार बाल पायनियर साथी कहत है।'

"बात यह है—वहा जल्दी ही बोआई शुरू होनेवाली है। दूसरी जुताई कुछ दिना के भीतर खत्म हो जायेगी। अब पता चला है कि सामूहिक फाम की प्रबध समिति न यह आदेश दिया है कि नदग वस्तिया मिट्टी के तीस हैक्टर क्षेत्र पर, जो मिस्री कपास के उपयुक्त है, गेहू बोया जाय, और कपास के उस मिट्टी पर बोने की सोच रहे हैं, जिसके बार म मालूम है कि वह उसके लिए बहुत अच्छी नहा है '

"इसी सबूत की तो जरूरत था।'

"क्या मतलब ?"

"मैंने कहा कि इसी सबूत की तो जरूरत थी। याद है, मैंने एक महीन पहले तुम्ह इस सामूहिक फाम के बारे मे चेतावनी दी थी ?"

"हा, तुमने ठीक ही कहा था।"

"कोई बात नही, ऐसे निराश मत हो—इस सबका नतीजा अच्छा ही निकलेगा। लेकिन क्या सामूहिक कृपको को इसके बारे मे मालूम है और वे कुछ नही कह रहे है ?"

"उनम से बहुतो को तो मालूम भी नही है। प्रबध समिति की बनाई योजना का ग्राम सभा मे अनुमोदन किया गया था। लेकिन, पिछली बार की ही तरह सभा जान बूझकर ऐसे वक्त पर बुलाई गई, जब ज्यादातर सामूहिक कृपक उसमे शामिल नही हो सकते थे। खैर, कुछ भी हो, औपचारिक रूप से योजना का अनुमोदन किया गया है। सामूहिक कृपको का समथन प्राप्त करन के लिए प्रबध समिति यह अफवाहे उडा रही है कि ज्यादा से ज्यादा अगस्त तक फिर लडाई होगी। समिति के लोगो का कहना है, 'अगर अच्छी जमीन पर कपास बोयेंगे, तो सब को भूखा मरना पडेगा। अगर लडाई छिड गई, तो अनाज का प्रदाय बद हो जायेगा। हमे अपना ध्यान रखना चाहिए और इस बात को सुनिश्चित करना चाहिए कि किशलाक मे कम से कम इतना अनाज हो कि अगले वसत तक चल सके।' और ज्यादातर दहकान अनपढ है और ऊपर से कोई बहुत विश्वसनीय भी नही है—सभी बीच के दरजे क किसान ह। उन्हे बहकाना कोई ज्यादा मुश्किल नहा है। मजेदार बात यह है—जानते हो, हमे इसके बारे म किसने बताया है ?"

"रहीमशाह आलिमाव न ?"

'तुम्हे कहा से पता चल गया ?"

"मुझे ? मुझे और सूत्रो से पता चल गया ,

'क्या रहीमशाह न ही बताया था ?"

'न रहीमशाह न नही, किसी और दहकान ने। लेकिन इससे तुम्ह क्या फक पडता है ?

"लेकिन तुमन इसके बारे म मुझे क्या नही बताया ?"

'मुझे आज ही पता चला।"

"तो, तुम्हारा इस बारे म क्या खयाल है ? तुम्ह रहीमशाह की याद

है? वही, जो सामूहिक फाम का पहला प्रधान था और जो यूरापीय हला को दिखाने क लिए पडा रहन देता था और उनकी जगह लकडी के हलाका इस्तेमाल किया करता था?"

हा, तो इसमे अचरज की क्या वात है? तब से दो साल गुजर चक है। अगर इतने दिन म भी हमारे दहकानो न कुछ भी विकास नहा किया, तो सावियत सत्ता का लाभ ही क्या हुआ? अच्छा, यह बताओ, तुमन रहीमशाह को क्या हिदायत दी है?"

अभी कोई नही। मैंने उससे बस, यही कहा है कि सामूहिक कृषका स अलग अलग बात करके समझाय और योजना को जिला अधिकारिया क हस्तक्षेप क विना बदलवान की कोशिश कर।'

बिलकुल ठीक है। और फिलहाल कोई और कदम मत उठाओ। नहा, तो सारा तमाशा बिगड जायेगा। हद से हद अगर वे योजना को बदलवान म कामयाब न हो सक, तो कुछ ऐसा करे, जिससे इस तीस हैक्टर की बोआई सबसे बाद मे ही शुरू हो।"

मैंने उससे करीब-करीब यही कहा है।'

बिलकुल ठीक है। अच्छा, सुनो। सामूहिक फाम म सोवियत समथक दहकानो का एक कद्र बन रहा है—इसमे रहीमशाह आलिमोव, हाकिम-कन्नसीव, बेबा जुमुरू, मसूर नासिरोव और पाच छ और दहकान है जो इतने वग-चेतन नही है। यह एक बिलकुल स्वाभाविक और सामान्य प्रक्रिया है। अपना ध्यान इसीकी तरफ लगाओ। निस्सदेह, सामूहिक फाम म किये जानेवाल राजनीतिक जागरण मे सभी काम म इसी कद्र का माध्यम के रूप म उपयोग किया जाना चाहिए। मैं तुमसे बेबा जुमुरू की खास तौर पर सिफारिश करता हू—वह बहुत ही समझदार औरत है।"

जानत हो इस सामूहिक फाम क कारण तो अपन पर ही थूकने का मन करता है।

कोई बात नही ऐसी बात होती ही रहती है। बहुत परेशान मत हो। वहा कुछ सफाई करनी होगी। सक्रिय कमियो की सख्या बढ रही है—और यही मुख्य बात है। तुम्हार उस तीस हैक्टर पर एक पूरा कम्युनिस्ट कद्र पैदा हो रहा है मेरे यार, और फिर भी तुम खुश नही हो। आओ बैठा अब पानी गुना है "

मुख्य नहर की खडी चट्टानी दीवार के ऊपर, तटबंध की सकरी मेड पर कुछ लोग इकहरी लकीर मे जा रहे थे। सबसे आगे आगे कमीज के बटन खोले हुए और पसीने से तर माराजाव पत्थर से पत्थर पर उछलता चला जा रहा था। उसके पीछे पीछे और लगभग साथ ही साथ भागता और उसकी छलागो की भग्न लय को पकडने की निष्फल चेष्टा करता नीली गास्केन टोपी पहने एक हाफता हुआ आदमी था। क्लाक और अद्रेई सावेल्येविच सबसे पीछे थे। टोपी पहने आदमी एक विदेशी लेखक था—एक विदेशी कम्युनिस्ट पार्टी का युवा सदस्य,—जो एक बडे उदार अखबार का सवाददाता बनकर यहा आया था। विदेशी लेखक को सोवियत सघ आये छ महीने हो चुके थे, वह कई और निर्माण-परियोजनाए देख चुका था और खासी अच्छी रूसी बोलने लगा था। इस तमाम अवधि मे वह एक अदम्य उल्लासोत्तेजना की अवस्था मे रहता आया था। जो कुछ भी देखने मे आता था, वह इतना भव्य, इतना शानदार था कि अत्यत उदात्त भावाकुल भाषा ही उसे अभिव्यक्त कर सकती थी।

ताजिकिस्तान पहुचने के पहले लेखक को अपने अखबार के सपादक का एक पत्र मिला था। पत्र द्वारा बडी शिष्ट भाषा मे उसे सूचित किया गया था कि उसके लेख अपने रचयिता की चारित्रिक चमत्कारपूर्ण शैली के बावजूद सोवियत रूस के जीवन का बहुत पक्षपातपूर्ण चित्रण करते है। सपादक ने उससे "महान रूसी प्रयोग" को अधिक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने का अनुरोध किया था। पत्र मे लिखा था कि नही तो लेखक की मौलिक और प्राजल प्रतिभा की सराहने के बावजूद अखबार का उसके लेखों को बडे अफसोस के साथ अस्वीकृत करने के लिए मजबूर होना पडेगा, क्योकि वह अपने पाठको की अपेक्षाओ की तुष्टि करने का प्रयत्न करता है, जो नये रूस के बारे मे पूर्णत वस्तुपरक और निष्पक्ष सूचना की माग करते है।

लेखक कोई कम परेशान नही था। वह इस अखबार से अपने सबध तोडना नही चाहता था, जो उसे व्यापक जनता के सामने अपने विचारो को रखने का अवसर प्रदान करता था और जो एक बहुत बडा और उत्तरदायित्वपूर्ण काम था। वह उन लोगो को यह बात नही समझा सकता था कि यहा के, उत्तेजना के आवेग से छलकते जीवन के बारे मे निष्पक्षता

के साथ लिख पाना असभव है। उसने निश... ...या कि वह कमिया और त्रुटिया की तरफ ज्यादा ध्यान देगा, लेकिन नई निमाणस्थला पहुचने के साथ वह अपन इस सकल्प के बारे मे बिलकुल भूल गया। यह देश उसे आकपित करता था, जिसक कपास के मैदाना पर उस तैमूर लग के हाथा चुनवाय हुए शवस्तूप दिखाये गय थे और जहा मैदान को चीरती हुई सिलसिलेवार नालिया हजारो साल पहल निमित सिचाई प्रणाली के अवशेषा को दर्शा रही थी। उसकी कल्पना क आगे इस रेगिस्तान म किसी अनाम खान की इच्छा से एकत्रित, घर बने कुदाला से धरती की सख्त पपडी मे दसिया किलोमीटर नहरे खादते और उनके ऊचे किनारा पर मिट्टी और पत्थर के भारी भारी बोझा का अपनी नगी पीठा पर ढोते अधनगे दासो की भीडा की तसवीर आकर खडी हो जाती थी।

आज इसी जगह पर उसने ससार म अकेले स्वतत्र लोगा द्वारा अत्याधुनिक प्राविधिक साधना से चकरा देनेवाली गहराई की एक नहर को बनते देखा। लेखक के दिमाग मे दसिया तुलनाए और ऐतिहासिक सादश्यताए रूप लेन लगी। उसके सिर के ऊपर विचा की पक्षिया जसी चीखा के साथ एक्स्केवेटरा के लदे हुए डोल मडरा रहे थे। उसक सामन का तरफ बारूद स उडाये चट्टानी स्तर क बडे बडे टुकडे इनसानी हाथ की मदद क बिना कनवेयर क सहार ऊपर जा रहे थे। लेखक कनवेयर क पास जाकर खडा हो गया और नीचे की तरफ देखने लगा। कनवयर का पट्टा उसे गलरी की याद दिला रहा था। उसक पीछे कही स स्लिप इंजन के चलन की धडधड आवाज आ रही थी।

मारोजोन न मशीना की निर्धारित क्षमता और समाजवादी प्रतियोगिता के फलस्वरूप मजदूरा द्वारा प्राप्त रेकाड तोडनवाल आकडा का हाथा हाथ उल्लेख करते हुए विदेशी लेखक का कामराजा गटापना स साज-सामान की जानकारी दी। लेखक ने अपनी नोटबुक म जल्दी-जल्दी कुछ नाट घसीट। मोराजोन न उनकी तरफ देखा नहीं लेकिन अगर उसन देखा लिया होता, तो शायद उस अचरज हाता। लिखत हुए आकडा क साथ-साथ उस पारिभाषिक शब्दा का भी एक नया और अप्रत्याशित नातिरा नजर आता - पनटवट, ड्रैग-लाइन, बकर, डम्प-कार आदि आदि। लेखक इन मनरज शब्दा को याद करक, जिन का मतलब भी नहा था, प्रविधि का ज्ञान प्राप्त कर रहा था।

सोवियत संघ में तीन महीने ही रहने के बाद यह बात वह समझ चुका था कि कंक्रीट के साँचों को छात के दस्ते जैसी चीज समझकर समाजवादी निर्माण का समर्थन करना, या भापघन की पताकाओं पर बने एक भाप योजक दंड से जुड़े हथौड़े जैसी धारणा रखना और वर्ग विहीन समाज की बात करना असम्भव है। तब उसने बड़ी उत्सुकता के साथ प्राविधिक ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया और अपने दिमाग में सैकड़ो कठिन पारिभाषिक शब्दों को ठूसने लगा, जो इस देश में तो रोजमर्रा की बातचीत में रोटी और पानी की तरह आम हो गये थे, लेकिन जो उसके दिमाग में तुरंत लोहे और इस्पात की अविराम धड़धड़ाहट में बदल जाते थे

जिस जगह मारोज़ोव रुक गया था, वहा नहर की गहराई सातह मीटर जमा बारह मीटर–तटबंध की ऊंचाई थी। नीचे, असमतल चट्टानों दर्रे के पदे में, मजदूर चट्टान के बारूद से उखड़े टुकड़ों को सब्बलों और गैंतियों से तोड़ तोड़कर हथगाड़ियों पर लाद-लादकर ले जा रहे थे और उन्हें बक्सों के खुले मुहों में उलट रहे थे।

'जरा इधर देखिये," मारोज़ोव ने विदेशी की तरफ मुड़कर कहा, "यह हमारी सबसे बढ़िया टुकड़ियों में से एक है। यह पूरी तरह से फारसी मजदूरों की ही टुकड़ी है, जो अपने देश की खुशगवार हुकूमत से बचने के लिए भागकर यहा आ गये हैं। चट्टान की खुदाई में इनका जवाब नहीं। ताजिकिस्तान को इन्होंने घर बना लिया है, जहा हर दहकान इनकी भाषा को समझता है। आपको मालूम ही होगा कि ताजिक और फारसी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और उसमें बहुत थोड़ा–खासकर उच्चारण का ही–अंतर है। इन लोगों ने अपने को यहा स्वेच्छा से एक टुकड़ी में संगठित कर लिया है और निर्माण-कार्य की समाप्ति तक यहीं काम करने का करार किया है।"

फारसी उत्प्रवासी!" लेखक ने उल्लसित होकर कहा। "कितनी मजेदार बात है! यह कहिये कि आपके यहा तो सचमुच की अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी बनी हुई है।

"अर्कई सावेल्येविच, हमारे निर्माणस्थल पर कितनी जातियों के लोग काम करते है?"

'ट्रेड-यूनियन समिति के आंकड़ों के मुताबिक सातह जातियों के।"

"रुकिये जरा, हम अभी हिसाब लगा लेते हैं। ताजिक–एक, उज़बेक–

दो, कजाख – तीन, किरगिज़ – चार, रूसी – पाच, उनइनी – छ, लेजिन – सात, ओस्सेतिन – आठ, फारसी – नौ, हिंदुस्तानी – दस, – हा, हमारे यहा कुछ हिंदुस्तानी भी काम कर रहे हैं। अफगान – ग्यारह, – अफगाना की कई टुकडिया हैं – यहा और तीसर सैक्शन म। बीस फी सदी ड्राइवर तातार ह, – लीजिये, बारह तक तो हम पहुच भी गये। मकेनिकल वकशॉपा म जमन और पोल लोग भी ह – चौदह। इजीनियरा और टेकनिशियना म जाजियाई, आर्मीनियाई और यहूदी भी ह – मतलब सवह, फिर दो अमरीकी इजीनियर हैं, जिनमे से एक सैक्शन प्रमुख है – अठारह। भला, कोई और भी है क्या?'

"तुर्क भी तो हैं, साथी मोरोज़ोव।'

'हा तुर्क और तुर्कमान भी ह – बीस जातिया के लोग। ट्रेड-यूनियन समिति क आकडे किसी काम क नही हैं। तो, साथी लेखक, यह इस बात का एक छोटा सा और सजीव उदाहरण है कि हमारे देश म, हमार किसी भी जनतत्र म किस तरह सभी जातिया के मेहनतकश लोगा के सयुक्त प्रयासा से समाजवाद का निर्माण किया जा रहा है"

नीचे, नहर क पेंदे म, खडी चट्टानी दीवार के नीचे फारसी मजदूर बधी हुई चोटो से पत्थर के टुकडे कर रहे थे। अचानक दीवार का एक हिस्सा टूट गया और एक बडी सी शिला बिना आवाज किये नीचे खिसक आई और कुछ मजदूरो क ऊपर जा पडी। एक चीख भी नही सुन पडी। कुछ मजदूरा का बस, छलाग लगाकर बच पान का ही समय मिल पाया और वे मानो स्तभित हुए खडे हो गये। शिला क नीचे स छूटने क निष्फल प्रयास म मछलिया की तरह तडपते और छटपटात दो आदमी नजर आ रहे थे।

विदेशी लेखक अचरज म मुह बाय देख रहा था और यह नही समझ पा रहा था कि हुआ क्या है। सबस पहल इस तरफ मोरोज़ोव का ही ध्यान गया।

"अरे! न्योन्दया, आदमी दब गया – एक नही"

वह कनवेयर की नाला म होकर नाच की तरह लपक गया। ऊपर परा क नीच स फिसलते पत्थर आवाज करत हुए उधर आगे आगे लुढकते जा रहे थ। इनाम और अर्दली तानल्यनिन भी उधर पीछे पीछे भाग। किनारे सबर तट क ऊपर अकेला रह गया। वह [illegible]

ढाल पर दौडते हुए नीचे जाने का फैसला न कर सवा-तीस मीटर की ऊंचाई से अपनी कमर पर फिसलकर नीचे जाने का विचार उसे भाया नहीं। वह फक पडा चेहरा लिये और अपनी गरदन को तान-तानकर नीचे देखता वहीं खडा रहा। नीचे मौत एक बलि ले भी चुकी थी। विदेशी लेखक युद्ध में जा चुका था और वहा अनेक लोगों को मारे जाते देख चुका था। मौत को देखकर उस पर कोई बहुत असर नहीं पडा। जो उसने अभी अभी देखा था कारखानों की भाषा में उसे दुर्घटना कहा जाता है। उसने मन में कहा कि अपने लेखों में निर्माणस्थली का वर्णन करते समय उसे इस दुर्घटना का अवश्य उल्लेख करना चाहिए। कम से कम तब उस पर वस्तुपरकता की कमी दिखाने का आरोप नहीं लगाया जा सकेगा। वह यह तक सोचने लगा कि वर्णन के लिए किन शब्दों का उपयोग किया जाना चाहिए— यह भगीरथ प्रयास बलिदान लिये बिना नहीं रहता। अचलायमान प्रकृति अपने अधिराज्य में समाजवाद के अनधिकार प्रवेश का उसी प्रकार प्रतिरोध करती है, जैसे यह पहले पूंजीवाद के प्रवेश का करती थी " उसने अपनी जेबों को टटोला और यह जानकर उसे बहुत खीज हुई कि चट्टानों पर उछलते समय उसकी पेंसिल कहीं गिर गई है।

नीचे मजदूरों की भीड इकट्ठा हो गई थी। शिला के नीचे सब्बल घुसाकर उसे उठाना उनके बस के बाहर का काम साबित हुआ यद्यपि लगभग बीस लोगों ने उसके लिए मिलकर कोशिश की थी। इसके लिए जरूरी था कि पहले उसे गैतियों से तोडा जाय और टुकडे टुकडे करके हटाया जाय। नीचे दबे लोगों को चोट न पहुंचे, इसके लिए शिला को दूसरी तरफ से—दीवार की तरफ से—तोडना था। दीवार का जो हिस्सा गिर गया था, उसने किनारे के तले एक गहरा कोटर बना दिया था। इस कोटर के ऊपर जो आगे निकली हुई चट्टान लटक रही थी, वह किसी भी क्षण नीचे गिरकर मदद करनेवालों को दबा सकती थी। मजदूर अनिश्चय में खडे रहे।

'यारो!' मोरोजोव चिल्लाया। हम उन्हें इस तरह मरने के लिए नहीं छोड सकते! यह चट्टान मुलायम है—दो-तीन चोटों में ही टूट जायेगा। हम सोवियत मजदूर अपने साथियों को अपनी आंखों के सामने नहीं मरने दे सकते!

मोरोजोव किनारे के नीचे जा खडा हुआ। अपने सबसे पास के मजदूर के हाथ से सब्बल छीनकर उसने चट्टान पर पूरे जोर से चोट की। तीसरे

चोट क बाद चट्टान चटक गई। क्लाव, ग्रद्रेई सावल्यविच ग्रौर तरलकिन की टुकडी के पाच छ ग्रौर मजदूर उसकी मदद करने के लिए लपर। उनके सयुक्त प्रयास से चट्टान को कई टुकडा म तोडकर ग्रलग खिसका न्यिा गया। उसके नीचे से चार लोगो को खीचकर निकाला गया। चट्टान न एक ग्रादमी की टाग ग्रौर एक का बाया कधा तोड दिया था, तीसरे मजदूर की हसली ग्रौर जाघ टूट गई थी। चौथा मजदूर एक कुचले हुए ग्र लहूलुहान पिड म परिणत हो चुका था।

ग्रद्रेई सावेल्येविच न टूटी हुई टागवाले फारसी को ग्रपनी कमर पर लान्ा ग्रार लडखडाते ग्रौर ठोकर खाते हुए उस ढाल के ऊपर ले गया। क्लाव ग्रौर एक रूसी मजदूर ने दूसर घायल को उठाया ग्रौर वहा स ल गय। तीसर को तरलकिन की टुकडी के दो मजदूर उठाकर ले गय। ग्रपन मत माथी के शरीर को फारसियो न खुद उठा लिया। पास की एक टुकडी क एक ताजिक न ग्रपना बिल्कुल नया चोगा उतारा ग्रौर उसे जमीन पर बिछा न्यिा। मौन ग्राभार क साथ फारसियो न मतक को उस पर लटा दिया ग्रौर उसके कुचले हुए चेहरे पर चोगे की बाहो को माडते हुए उसे ढककर लाश को कनकयर की तरफ ले चले। ग्रन्य मजदूर भीड बनाकर उनक पीछे चल दिय। ग्रभी वे लोग कोई तीस ही कदम गय हाग कि पीछे स एक शुष्क घरघराहट की ग्रावाज ग्राई ग्रौर ग्राग की तरफ निकला हुई चट्टान धडाम स नीच ग्रा गिरी। सभा न घूमकर दखा।

जलूस धीरे धीरे ग्रागे बढ चला।

कनकयर क पास पहुचकर मोरोजाव न ग्रपन दोना हाथा का मुह पर लगाया ग्रौर चिल्लाकर कहा

काम बन्द करो।

हथगाडिया की कणकटु चू चू ग्रचानक बन्द हो गई। मिट्टी ग्रौर पत्थर क ग्राखिरी टुकडे ऊपर जा रहे। उनक बाद कनकयर का खाली पट्टा ग्रा गया।

रोको इसे।

कनकयर रुक गया। ग्रब लिये जलूस उसक पास ग्राकर खडा हो गया।

कनकयर पर लटा दो।' मोरोजोव न ग्रादेश दिया।

मजदूरा न कनकयर क चौडे पट्ट पर उस चोगे म लिपटी लाश को सावधानी क साथ लटा दिया जिसका कुचला हुग्रा लम्बा लाल या मुडा

हुई बाहों से ढका हुआ था। लगता था, जैसे मतक ने अपने क्षत चेहरे को हाथो की ओट मे ले रखा है।

"चलाओ!"

कनवेयर का पट्टा धीरे धीरे चलने लगा। बहुरगी चोगे मे लिपटा शरीर बिना रुके और शान के साथ ढलवा किनार के ऊपर जाने लगा। अठारह एस्केवेटरो के साइरन एकसाथ ग्रदन करन लगे। अचानक, माना किसी इशारे पर अठारहा एक्स्केवेटरो के बूम अपने खाली डोला के साथ ऊपर उठ गये और जैसे सलामी देते हुए निश्चल खडे हो गये। चटकीले रग के चोगे मे लिपटा शरीर धीरे धीरे ऊपर पहुच गया

नहर-तल से निकलकर आता मोरोज़ोव ऊपर आते ही विदेशी लेखक से टकरा गया, जो उससे मिलन के लिए लपकता हुआ आ रहा था।

"अपूर्व! अदभुत!" विदेशी लेखक बार बार कहे जा रहा था। उसकी आखें जगमग जगमग कर रही थी।

"क्या अदभुत है?" मोरोज़ोव ने नीली टोपीवाले की तरफ अबूझ आखो से देखा।

"अदभुत थी! कैसी शवयात्रा थी! कितनी शानदार थी! महान फ्रासीसी क्राति के जनरलो को भी इतना मान न मिला होगा।"

ओह! " मोरोजोव बडबडाया। उस अपने इस ऊबाऊ अतिथि के होने का अब जाकर ही ध्यान आया। "जरा माफ कीजियेगा ' वह क्लाक की तरफ मुडा, "साथी क्लाक, कृपया आठवी चौकी तक काम को फारन बद करने का आदेश दे दीजिये और मजदूरो स नहर-तल से आन के लिए कह दीजिये।"

क्लाक न उसकी तरफ प्रश्नभरी दृष्टि स देखा।

"क्या मतलब? म आपकी बात पूरी तरह स समझा नही। क्या काम बद करवा रहे ह? कब तक क लिए?'

"जब तक हम किनारा को साठ डिगरी क कोण तक नही खोद लेते।'

'साथी मोरोज़ोव, आप यह नही समझ रहे ह कि इसका मतलब क्या होगा। इसका मतलब होगा कम से कम तीस हजार घन मीटर और पत्थर हटाना। इससे काम के पूरा होन मे कम स कम एक महीने का विलब हो जायेगा।"

"तो क्या आपके खयाल म मजदूरो का मारना बेहतर रहेगा?'

उन्हें यह सुनकर खुशी होगी," मोगजोव ने कडवी हसी के साथ कहा, 'और अपने सपादक को लिख दीजिये कि पक्षपातपूर्ण भावना दिखानेवाले आप ही अकेले नही है। वे हमारे साथियो की पक्षपातपूर्ण भावना से पूछताछ करते है, हम पक्षपातपूर्ण भावना से काम करते है और इसका नतीजा एक वस्तुपरक तथ्य होता है—शांति। अच्छा नमस्कार! मुझे अभी एक दो आदेश और जारी करने है।'

जिंदगी मे एक बार तो मरना ही है

तीन घटे बाद मजदूरो का एक दल दफ्तर मे क्लाक से मिलने के लिए आया।

क्या क्या चाहिए?" उन्हें दहलीज पर देखते ही आद्रेई मावल्येविच चमक गया। 'अगर तरेलकिन और कुज्नेत्सोव भी यहा है, तो इसका मतलब है कोई बखेडा। क्या क्या इरादा है?"

हमे साथी इजीनियर से मिलना है,' तरेलकिन ने आगे आते हुए क्लाक की तरफ इशारा किया, "यह एक प्रतिनिधिमडल है।

कैसा प्रतिनिधिमडल? तुम्हारी अपनी ट्रेड यूनियन समिति है, फिर तुम्हे प्रतिनिधिमडलो से क्या लेना देना? बखेडा तो तुम आज के दिन ही शुरू कर रहे हो—तुम्हे अपने पर शरम आनी चाहिए!"

"रुकिये जरा, आद्रेई मावल्येविच, क्लाक ने उठते हुए कहा, जो विदेशी लेखक को नहर मुख के निर्माण की योजना समझा रहा था। "हो सकता है कि ये लोग कोई बात सुझाने के लिए आये हो। हम मजदूरो की पहलकदमी को बढावा देना चाहिए।

'सुझाव!' नागेज फारमैन ने खीज के साथ कहा। 'इनके पास सिर्फ एक सुझाव है—काम कम और पैसा ज्यादा!"

"हा, कहिये, साथियो!"

जी बात यह है कि हमने सुना है कि पत्थर की खुदाई के काम को बन्द किया जा रहा है और आज की दुर्घटना के कारण किनारा को और ज्यादा ढालू बनाया जा रहा है। सुना है कि इसकी वजह से निर्माण-काय एक महीना बाद मे खत्म होगा। क्या यह सच है?"

"हा, है तो ऐसा ही,' क्लार्क ने जवाब दिया।

'तो, बात यह है कि हम यह कहने के लिए आये है कि हम बिलकुल इसी हालत मे—किनारा को और ढालू बनाये बिना—स्वयसेवको की तरह काम करने के लिए तैयार है। और इससे मैनेजमेट के लिए कोई परेशानी पैदा नही होगी। हम लोग स्वयसेवक हैं, इसलिए इसका यह मतलब है कि हम अपनी मरजी से ऐसा कर रहे है।

'मैनेजमेट आपके सुझाव शायद ही स्वीकार करेगा,' क्लार्क ने सख्ती के साथ कहा। वह मजदूरो के इस अप्रत्याशित निर्णय से उद्वेलित हो गया था और इस बात से डर रहा था कि कही उसकी आवाज या कथन उसकी उत्तेजना को प्रकट न कर दे।

क्या स्वीकार नही करेगा? तरेलकिन ने हैरान होकर पूछा। "जो न चाहे वे काम न करे। हम स्वयसेवको की ही पाच छ टुकडिया बना लेगे। इतना ही चाहिए भी। अगर आप चाहे तो वे लिखकर दे देगे कि यह काम वे अपनी मरजी से कर रहे है।

ठीक है मै निर्माण प्रमुख को आपके प्रस्ताव के बारे मे बता दू, लेकिन मैं फिर कह रहा हू—मैनेजमेट शायद ही आपकी जानो को खतरे मे डालने के लिए तैयार होगा।

मैनेजमेट को हमारे बारे मे इस तरह डरने की जरूरत नही, कुस्तमारोव ने आगे बढते हुए कहा, 'हर आदमी को जिन्दगी मे एक बार तो मरना ही है—है, या नही? खुद ही तो वे अखबारो और सभाओ मे हमेशा यह कहते रहते है कि निर्माण-काय एक मोर्चा है। तो अगर यह सोचा है तो इसका मतलब है कि हम यहा काम भी ऐसे ही करते है जैसे मानो मोर्चे पर ही है—है या नही? अगर मोर्चे पर बार बार कोई काम करना होता है,—छापा मारना या टोह लेना तो किन जाता—तो उसके लिए स्वयसेवक ही जाते है। और जो लोग न जाना चाहे, वे पीछे रह सकते है—उन पर कोई जबरदस्ती नही की जाती। यहा भी यही बात है। अगर लडके स्वयसेवक बनकर काम करना चाहते है, तो यह उनका अपना मामला है—मैनेजमेट को इससे क्या लेना-देना है।

ठीक है मै निर्माण प्रमुख को आज आपके निर्णय के बारे मे बता दूगा।

मजदूर बाहर जाने लगे।

"साथियो," विदेशी लेखक ने उठते हुए कहा, "म आप लोगा से हाथ मिलाना चाहता हू।"

"क्या?" तरेलकिन और कुजनेत्सोव हैरान होकर नीली टोपीवाले आदमी की तरफ आखें फाडकर देखन लगे।

"मैंने कहा—म आप लोगा से हाथ मिलाना चाहता हू। मैं आपकी वीरता से बहुत प्रभावित हुआ हू—यह समाजवाद की भूमि के अनुरूप ही है।"

तरेलकिन और कुजनेत्सोव ने एक दूसर की तरफ देखा।

"आप किसी अखबार के आदमी तो नही है?" तरेलकिन न चौकन्नेपन से पूछा।

'मैं लेखक हू।"

"हा, आप लोग अखबारा म लिखन के उस्ताद होने है!" तरेलकिन न समझदारी के साथ अपना सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन जब कोई ठोस काम करन का सवाल पैदा होता है, तो आप लोग कही नजर नही आते। अच्छा हो आप जाकर इन मनेजमेंटवाला स कह दें कि वे बेवकूफी न करें। वे तो सिर्फ यह चिल्लाना ही जानते हैं—कम काम कम परिणाम। और जब लोग काम करना चाहते हैं, तो वे उन्हे करने नही देते।'

उन्होंने विदेशी के साथ सनकता से हाथ मिलाये, अपनी टोपिया को ठीक किया और बाहर चले गये।

विदेशी लेखक को एक इजीनियर के सुपुर्द करके क्लाक मोरोजोव की तलाश मे निकल गया। उसने उसे नहर मुख पर कक्रीट के गुण की परीक्षा करने के लिए उसकी जाच करते पाया। कक्रीट कमिया की उपस्थिति मे उससे बाते न करने की इच्छा से क्लाक ने उससे क्षण भर के लिए अपने साथ आने का अनुरोध किया। वे नहर के किनारे पर जाकर एक लैंप-पोस्ट के पास पत्थर की मुडेर पर बैठ गये। क्लाक ने उसे मजदूरो के प्रतिनिधिमडल के प्रस्ताव के बारे मे सक्षेप मे बताया। मोरोजोव खामोशी से उसकी बात सुनता रहा।

"आपकी बात पूरी हो गई?"

"हा।"

'तो, सुनिये, यह सब बेकार की बकवास के अलावा कुछ नही है। हम स्वयसेवको को ऐसी हालता मे काम करने की इजाजत नही देंगे, जो उनकी जिदगी के लिए खतरनाक है। उनसे कहिये कि वे अपना यह आदोलन-

"हा, है तो ऐसा ही," क्लाक ने जवाब दिया।

'तो, बात यह है कि हम यह कहने के लिए आये है कि हम बिलकुल इसी हालत मे—किनारा को और ढालू बनाये बिना—स्वयसेवका की तरह काम करन क लिए तैयार हैं। और इससे मैंनेजमेट के लिए कोई परेशानी पैदा नही हागी। हम लोग स्वयसेवक हैं इसलिए इसका यह मतलब है कि हम अपनी मरजी से ऐसा कर रहे ह।

'मनजमट आपक सुझाव शायद ही स्वीकार करेगा," क्लाक ने सख्ती क साथ कहा। वह मजदूरा क इस अप्रत्याशित निणय स उद्वलित हो गया था और इस बात से डर रहा था कि कही उसकी आवाज का कपन उसकी उत्तेजना को प्रकट न कर दे।

क्या स्वीकार नही करेगा? तरेलकिन न हैरान होकर पूछा। 'जो न चाह व काम न कर। हम स्वयसेवका की ही पाच छ टुकडिया बना लेगे। इतना ही चाहिए भी। अगर आप चाह तो व लिखकर दे देंगे कि यह काम वे अपनी मरजी स कर रहे ह।'

ठीक है, मैं निर्माण प्रमुख को आपके प्रस्ताव क बारे म बता दूगा। लकिन म फिर कह रहा हू—मनजमट शायद ही आपकी जानो को खतरम डालने क लिए तयार होगा।'

मनेजमट का हमार बार म इस तरह डरन की जरूरत नहा,' कुज्नेत्सोव न आगे कहते हुए कहा हर आदमी को जिन्दगी म एक बार तो मरना ही है—है या नही? खुद ही तो व अखबारा और सभाओ म हमेशा यह कहत रहत हैं कि निर्माण काय एक मार्चा है। तो अगर यह मोर्चा है ता इसका मतलब है कि हम यहा काम भी ऐसे ही करना है जसे मानो मार्चे पर ही ह—है या नहा? अगर मार्चे पर कोई खतरनाक काम करना होता है—छापा मारा या टोह लेन क लिए जाना—तो उसक लिए स्वयसेवक ही जाते हैं। और जो लोग न जाना चाह व पीछे रह सकते हैं—उन पर कोई जबरदस्ती नही की जाती। यहा भी यही बात है। अगर लोग स्वयसेवक बनकर काम करना चाहते हैं, तो यह उनका अपना मामला है—मनजमट को इसस क्या लेना-देना है।

ठीक है म निर्माण प्रमुख को आज शाम निणय क बार म बता दूगा।

मजदूर बाहर जान लगे।

"साथियो," विदेशी लेखक ने उठते हुए कहा, "मैं आप लोगों से हाथ मिलाना चाहता हूं।"

"क्या?" तरेलकिन और कुज्नेत्सोव हैरान होकर नीली टोपीवाले आदमी की तरफ़ आंखें फाड़कर देखने लगे।

"मैंने कहा—मैं आप लोगों से हाथ मिलाना चाहता हूं। मैं आपकी वीरता से बहुत प्रभावित हुआ हूं—यह समाजवाद की भूमि के अनुरूप ही है।"

तरेलकिन और कुज्नेत्सोव ने एक दूसरे की तरफ़ देखा।

आप किसी अख़बार के आदमी तो नहीं हैं?" तरेलकिन ने चौकन्नेपन से पूछा।

"मैं लेखक हूं।"

"हां, आप लोग अख़बारों में लिखने के उस्ताद होते हैं!" तरेलकिन ने समझदारी के साथ अपना सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन जब कोई ठोस काम करने का सवाल पैदा होता है, तो आप लोग कहीं नज़र नहीं आते। अच्छा हो आप जाकर इन मैनेजमेंटवालों से कह दें कि वे बेवकूफ़ी न करें। वे तो सिर्फ़ यह चिल्लाना ही जानते हैं—कम काम, कम परिणाम। और जब लोग काम करना चाहते हैं, तो वे उन्हें करने नहीं देते।"

उन्होंने विदेशी के साथ सतर्कता से हाथ मिलाये, अपनी टोपियां ठीक किया और बाहर चले गये।

विदेशी लेखक को एक इंजीनियर के सुपुर्द करके क्लाक मोरोज़ोव की तलाश में निकल गया। उसने उसे नहर-मुख पर कंक्रीट के गुण की परीक्षा करने के लिए उसकी जांच करते पाया। कंक्रीट-कर्मियों की उपस्थिति में उससे बातें न करने की इच्छा से क्लाक ने उसमें क्षण भर के लिए अपने साथ आने का अनुरोध किया। वे नहर के किनारे पर जाकर एक लैंप पोस्ट के पास पत्थर की मुंडेर पर बैठ गये। क्लाक ने उन्हें [illegible] के प्रतिनिधिमंडल के प्रस्ताव के बारे में संक्षेप में बताया। मोरोज़ोव [illegible] से उसकी बात सुनता रहा।

"आपकी बात पूरी हो गई?"

"हां।"

"तो, सुनिये, यह [illegible]

हम स्वयंसेवकों को ऐसी [illegible]

उनकी ज़िन्दगी [illegible]। [illegible]

वादानन बद करे। आपके फारसी मजदूर पहले ही मेरे पास आकर य घोषित कर गये हैं कि चूंकि रूसी मजदूर स्वयसेवक बनकर काम करने क लिए तैयार हैं, इसलिए वे भी यही करना चाहते हैं। आप प्रतिनिधियो म कह दीजिये कि अगर उन्हे अपनी वीरता ही दिखाने का शौक है, तो एसा वे बिना दिखावट के, अपने नियत काम की मात्रा को बढ़ाकर सामान्य परिस्थितियों म भी कर सकते हैं।"

क्लाक का मुह लाल हो गया।

"साथी मारोजोव, आप यहा के प्रमुख हैं और निर्णय करने का अधिकार आपको ही है, लेकिन इस बारे म मुझे अपनी राय देने का आज्ञा दीजिये। मेरा खयाल है कि आप जो कर रहे हैं, वह ठीक नही है। मजदूर निर्माण काय को तेजी से करना चाहते हैं और आप उन्हें ऐसा करने नहा दे रहे हैं। यह मजदूरो के जोश पर ठडा पानी छिडकना है। यह मजदूरों की पेशकदमी को निरुत्साहित करना है। यह अवसरवाद है।"

मारोजोव ने अधमुदी आखो से उसकी तरफ देखा।

और अलग खडे खडे यह देखना कि मजदूर किस तरह मरते हैं, क्या है—बता सकते हैं आप?

"मैं अलग नहीं खडे रहना चाहता," क्लाक ने और भी लाल होते हुए कहा। 'मैं यह कहने के लिए आया था कि इजीनियरो को मजदूरों के पीछे नहीं रहना चाहिए और मैं खुद सारे वक्त मजदूरों के साथ नहर तल में ही काम करूगा।'

मारोजोव उठ खडा हुआ।

"माफ कीजिये, साथी क्लाक मैंने आपका अनुचित अपमान किया है। आपकी ईमानदारी, आपकी वीरता और हमारे निर्माण-काय के प्रति आपकी गहरी निष्ठा के बारे में मैंने कभी सन्देह नहीं किया है। आप जो कहना चाह रहे हैं, वह बहुत ही मर्मस्पर्शी और सराहना की बात है। इस बात का एक विदेशी इंजीनियर के मुह से सुनना सचमुच हृदयस्पर्शी है। लेकिन आप और आपकी इच्छा के प्रति पूरा सम्मान रखते हुए [illegible] निर्माण प्रमुख और आपका वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते मैं इस प्रकार की कियाविधि करने की अनुमति नहीं दूगा। अभी कुछ क्षण पहले आपने मुझे अवसरवादी कहा था और मैं आपसे नाराज नहीं हुआ था। मेरा खयाल है कि नागज

आप भी नही हारो। मुझे खुशी है कि आपने हमारी राजनीतिक शब्दावली को इतनी जल्दी सीख लिया है, लेकिन मुझे लगता है कि आप अभी उसके मतलब को पूरी तरह से नही समझे है। मजदूरो की पेशकदमी एक शानदार चीज है, लेकिन हमारे यहा मजदूर वर्ग के अगुआ दस्ते–कम्युनिस्ट पार्टी–के होने का और इस बात का कि पार्टी न हमे देश का और उसके निर्माण कार्य का नेतृत्व करने के लिए भेजा है एकमात्र कारण यही है कि हम इस पेशकदमी को ठीक दिशा म मोड सके। अवसरवाद, प्यारे साथी क्लार्क, न्यूनतम प्रतिरोध की नीति है। कई बार ऐसा होता है कि अवसरवादी वह व्यक्ति नही होता, जो मजदूरो की गलत दिशा मे निदेशित पेशकदमी की अगुआई करने से इनकार कर देता है और उसे सही दिशा म मोडने की कोशिश करता है बल्कि वह व्यक्ति होता है, जो अपने को इस पेशकदमी से निदेशित होने देता है, क्योकि समय विशेष पर उसे निदेशित करने की अपेक्षा उसे मान लेना अधिक आसान और लाभदायी होता है।"

"आप मुझे कायल नही कर पाये है। आपकी पार्टी का यह कहना बिलकुल ठीक है कि निर्माण कार्य एक मोर्चा है। मोर्चे का कमाडर विजय को पास लाने के लिए एक दो आदमियो की बलि देने मे कभी नही झिझकता। आप लोग मानवतावादी भावुकता की तो हसी उडाते है, लेकिन इस मामले मे खुद आपका आचरण मानवतावादियो जैसा है।"

"आप कोई बहुत अच्छी तुलना नही कर रहे है। अगर लक्ष्य हानि के बिना प्राप्त किया जा सकता है, तो उसके लिए अपने सैनिको की जानें झोकनेवाले कमाडर को बुरा ही कहना होगा। साथी क्लार्क मजदूरो और किसानो का खून बहुत कीमती है। जब उसकी जरूरत पडेगी–और वह दिन दूर नही है–तब हम मे से हर कोई अपनी जिदगी सरलता से और बिना आडबरपूर्ण शब्दो के न्यौछावर कर सकेगा। पर एक ऐसे समय पर मजदूरो की जिदगी के साथ खेलना, जब वह एक निर्मम आवश्यकता नही है, एक घोर अपराध है। चलिये इस विषय को अब खत्म करे।

"यह आपका मत है। बहरहाल, म अपनी राय पर अब भी कायम हू"

आप भी नही होगे। मुझे खुशी है कि आपने हमारी राजनीतिक शब्दावली का इतनी जल्दी सीख लिया है, लेकिन मुझे लगता है कि आप अभी उसके मतलब को पूरी तरह से नही समझे ह। मजदूरा की पेशकदमी एक शानदार चीज है, लेकिन हमारे यहा मजदूर वग के अगुआ दस्ते—कम्युनिस्ट पार्टी—के होने का और इस बात का कि पार्टी ने हमे देश का और उसके निमाण काय का नेतत्व करने के लिए भेजा है, एकमात्र कारण यही है कि हम इस पेशकदमी को ठीक दिशा मे मोड सके। अवसरवाद, प्यार साथी कनाक, न्यूनतम प्रतिरोध की नीति है। कई बार ऐसा होता है कि अवसरवादी वह व्यक्ति नही होता, जो मजदूरा की गलत दिशा मे निदेशित पेशकदमी की अगुआई करने से इनकार कर देता है और उसे सही दिशा म मोडने की कोशिश करता है, बल्कि वह व्यक्ति होता है, जो अपने का इस पेशकदमी से निदेशित होने देता है, क्याकि समय विशेष पर उसे निदेशित करन की अपेक्षा उसे मान लेना अधिक आसान और लाभदायी हाता है।"

"आप मुझे कायल नही कर पाये है। आपकी पार्टी का यह कहना बिलकुल ठीक है कि निर्माण काय एक मोर्चा है। मोर्चे का कमाडर विजय को पास लाने के लिए एक-दा आदमियो की बलि देने मे कभी नही झिझकता। आप लोग मानवतावादी भावुकता की तो हसी उडाते है लेकिन इस मामले मे खुद आपका आचरण मानवतावादिया जैसा है।"

"आप कोई बहुत अच्छी तुलना नही कर रहे है। अगर लक्ष्य हानि के बिना प्राप्त किया जा सकता है, तो उसके लिए अपने सैनिका की जानें गावनवाले कमाडर को बुरा ही कहना होगा। साथी क्लाक, मजदूरा और किसाना का खून बहुत कीमती है। जब उसकी जरूरत पडेगी—और वह दिन दूर नही है—तब हम म से हर कोई अपनी जिदगी सरलता से और बिना आडबरपूण शब्दा के न्योछावर कर सकेगा। पर एक ऐसे समय पर मजदूरा की जिदगी के साथ खेलना, जब वह एक निमम आवश्यकता नहा है, एक घोर अपराध है। चलिये इस विषय का अब खत्म कर।"

"यह आपका मत है। बहरहाल, मैं अपनी राय पर अब भी कायम हू "

फोरमैन के दफ्तर मे घुसते ही मोरोज़ोव ने एक सिहरन के साथ यह अनुभव किया कि चार बज चुके हैं। कल ही उसने यह व्यवस्था की थी कि आज शाम को ठीक चार बजे एक आयोग कत्ता-ताग पहाड के लिए रवाना होगा। यह पहाड दूसरे और तीसरे सैक्शनो की सीमा पर था। उसने आज्ञा दी कि विदेशी लेखक को तुरत ढूढकर लाया जाये—उसे उसके लिए अपने फ्लैट मे सोने की गुजाइश करनी होगी और खाने का इतजाम करना होगा—और ड्राइवर को कत्ता-ताग पहाड का सबसे छोटा रास्ता पकडने का आदेश दिया।

"आप बहुत भूखे तो नही है?" कार के चल पडने के बाद उसने लेखक से पूछा। "आप चाहे, तो मै आपको रास्ते म भोजनालय पर उतारता हुआ जा सकता हू।"

'नही, नही! मै खाना बाद म खाऊगा—आपके ही साथ।"

हमारे साथ खाना हमेशा ही सुविधाजनक नही रहता। कभी-कभी तो हम रात म बहुत देर तक खाना नही खा पाते है। लेकिन अगर आप सचमुच इतने भूखे नही है, तो आपको कत्ता-ताग की समस्या को सुलझाने के लिए नियुक्त किये गये हमारे आयोग की बैठक म उपस्थित रहना दिलचस्प लगेगा। ताशकद से हमे इस समस्या के हल मे सहायता देने के लिए एक विख्यात इतालवी विशेषज्ञ भेजा गया है, जो मध्य एशिया मे हमारी एक सिचाई परियोजना का परामर्शदाता इजीनियर भी रह चुका है। आपकी वहा उत्खनन भाग के निर्माण के हमारे फोरमैन, अमरीकी इजीनियर मर्री और ताजिक इजीनियर ऊर्तागायेव से मुलाकात होगी। आयोग भगत म लगभग पूरी तरह स अतर्राष्ट्रीय है।'

'लेकिन यह कत्ता-ताग की समस्या है क्या? क्या यह कोई ऐसा विशेष प्रश्न है, जिसे मुझ जैसा साधारण आदमी समझ नही पायेगा?'

"नही, समस्या बहुत सीधी-सादी है। एक सौ पचासवेंगी चोटी पर नहर के रास्ते मे एक चार सौ मीटर ऊचा पहाड आता है। ... इस पहाड की ढलान को बिलकुल ढूला हद तिरछी है। इस जगह पर पहाड-पहाड जमीन म गहरा कटा उतार आता है और इस का यह हिस्सा खारा की गहरा म छ से चार मीटर तक ऊचाई म हमारे गुजरता है। यह"

वत्ता-ताग पहाड़ पर, जहा ढाल और भी ज्यादा है, नहर और घाटी की सतह मे लगभग पचीस मीटर का अतर है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि नहर की बाइ तरफ तो वत्ता-ताग पहाड के छिले हुए पार्श्व से निर्मित प्राकृतिक तटबध है, जबकि दूसरी तरफ उसे नीचे घाटी से अलग करता हुआ कोई तीस मीटर ऊचा कृत्रिम बाध है। जब आप वहा पहुचेगे, तो आपके सामने सारी तसवीर फौरन साफ हो जायेगी।"

"न, मै अब भी समझ सकता हू।'

'तो वत्ता-ताग की समस्या असल म मिट्टी की समस्या है। इसलिए कि पानी उसम से रिसे नही और कृत्रिम बाध को बहाकर न ले जाये, हमे सख्त मिट्टी चाहिए। लेकिन ठीक इसी जगह हमे एक धूसर किस्म की मिट्टी मिलती है। यहा के रहनेवाले उस 'खाक-ए-कबर' कहते है। रग और खिसकने के गुण की दृष्टि से यह सचमुच राख जैसी ही है। हा, मै आपको यह बतलाना तो भूल ही गया कि खुद वत्ता-ताग को यहा की आबादी पवित्र मानती है।'

"सच? दिलचस्प बात है यह!"

'पहाड की चोटी पर एक मजार ह, जहा बहुत पुराने समय स कुछ मुसलमान पीरो के अस्थि अवशेष चिर विश्राम कर रहे है। अलबत्ता यह बात म आज तक नही समझ पाया हू कि उस जमाने म दीनदार लोग लाशो को वहा तक कैसे उठाकर ले जाते होगे। पहाड की चढाई इतनी खडी और विकट है कि आदमी का ऊपर तक पहुचना कठिन है तो, सक्षेप मे यह कि यहा की मुस्लिम आबादी का विश्वास है कि इन पीरो को खुद अल्लाह या कम से कम उसके पैगबर ने ही ऊपर पहुचाकर दफनाया है। ऐसा अधविश्वास है कि इसकी चोटी पर वही आदमी चढ सकता है, जिस पर अल्लाह की खास मेहर और करम की नजर हो। और चढाई क्योकि सख्त है और अल्लाह घमडी लोगो को पसद नही करता, इसलिए यहा के बहुत कम बाशिदो ने ही इस पर चढने की कोशिश की है। लेकिन हमारे एक इजीनियर और दो टेक्निशियनो ने इस काम को कर दिखाया—जैसा कि आप जानते ही है, हमारे लोग स्वभाव से ही जिज्ञासु है। उनमे से दो लोग तो सही सलामत वापस आ गये, मगर तीसरे ने फिसलकर अपनी टाग तोड ली। बेशक, मुल्लाओ ने अपने प्रचार मे इस घटना का खूब उपयोग किया। आपके लिए यह समझना मुश्किल नही

क्त्ता-ताग पहाड़ पर, जहा ढाल और भी ज्यादा है, नहर और घाटी की सतह मे लगभग पचीस मीटर का अतर है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि नहर की बाई तरफ तो क्त्ता-ताग पहाड के छिले हुए पार्श्व से निर्मित प्राकृतिक तटबध है, जबकि दूसरी तरफ उसे नीचे घाटी से अलग करता हुआ कोई तीस मीटर ऊचा कृत्रिम बाध है। जब आप वहा पहुचेगे, तो आपके सामने सारी तसवीर फौरन साफ हो जायेगी।"

"न, मै अब भी समझ सकता हू।"

'तो क्त्ता-ताग की समस्या असल म मिट्टी की समस्या है। इसलिए कि पानी उसम स रिसे नही और कृत्रिम बाध का बहाकर न ले जाये, हम सख्त मिट्टी चाहिए। लेकिन ठीक इसी जगह हम एक धूसर किस्म की मिट्टी मिलती है। यहा के रहनेवाले उसे 'खाक ए-कबर' कहते है। रग और खिसकने के गुण की दृष्टि से यह सचमुच राख जैसी ही है। हा, मै आपको यह बतलाना तो भूल ही गया कि खुद क्त्ता-ताग को यहा की आबादी पवित्र मानती है।"

"सच? दिलचस्प बात है यह!"

"पहाड की चोटी पर एक मजार ह, जहा बहुत पुराने समय से कुछ मुसलमान पीरो के अस्थि अवशेष चिर विश्राम कर रहे है। अलबत्ता यह बात म आज तक नही समझ पाया हू कि उस जमाने मे दीनदार लोग लाशो को वहा तक कैसे उठाकर ले जाते होगे। पहाड की चढाई इतनी खडी और विकट है कि आदमी का ऊपर तक पहुचना कठिन है तो, सक्षेप मे यह कि यहा की मुस्लिम आबादी का विश्वास है कि इन पीरो को खुद अल्लाह या कम से कम उसके पैगबर ने ही ऊपर पहुचाकर दफ्नाया है। ऐसा अधविश्वास है कि इसकी चोटी पर वही आदमी चढ सकता है, जिस पर अल्लाह की खास और करम की नजर हो। और चढाई क्योकि सख्त है और अल्लाह घमडी लोगो को पसद नही करता, इसलिए यहा के बहुत कम बाशिदो ने ही इस पर चढने की कोशिश की है। लेकिन हमारे एक इजीनियर और दो टेकनिशियनो ने इस काम को कर दिखाया—जैसा कि आप जानते ही है, हमारे लोग स्वभाव से ही जिज्ञासु है। उनमे से दो लोग तो सही सलामत वापस आ गये, मगर तीसरे ने फिसलकर अपनी टाग तोड ली। बेशक, मुल्लाओ न अपने प्रचार मे इस घटना का खूब उपयोग किया। आपके लिए यह समझना मुश्किल नही

वत्ता-ताग पहाड़ पर, जहा ढाल और भी ज्यादा है, नहर और घाटी की सतह मे लगभग पचीस मीटर का अतर है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि नहर की बाइ तरफ तो वत्ता-ताग पहाड के छिने हुए पार्श्व से निर्मित प्राकृतिक तटबध है, जबकि दूसरी तरफ उसे नीचे घाटी से अलग करता हुआ कोई तीस मीटर ऊचा कृत्रिम बाध है। जब आप वहा पहुचेगे, तो आपके सामने सारी तसवीर फौरन साफ हो जायगी।'

"न, मैं अब भी समझ सकता हू।"

"तो वत्ता-ताग की समस्या असल म मिट्टी की समस्या है। इसलिए कि पानी उसमे से रिसे नही और कृत्रिम बाध को बहाकर न ले जाये, हम सख्त मिट्टी चाहिए। लेकिन ठीक इसी जगह हमे एक धूसर किस्म की मिट्टी मिलती है। यहा के रहनेवाले उसे 'खाक ए कबर' कहते है। रग और खिसकने के गुण की दृष्टि से यह सचमुच राख जैसी ही है। हा, मै आपको यह बतलाना तो भूल ही गया कि खुद वत्ता-ताग को यहा की आबादी पवित्र मानती है।"

"सच? दिलचस्प बात है यह!"

"पहाड की चोटी पर एक मजार है, जहा बहुत पुराने समय से कुछ मुसलमान पीरो के अस्थि-अवशेष चिर विश्राम कर रहे है। अलबत्ता यह बात म आज तक नही समझ पाया हू कि उस जमाने मे दीनदार लोग लाशो को वहा तक कैसे उठाकर ले जाते होगे। पहाड की चढाई इतनी खडी और विकट है कि आदमी का ऊपर तक पहुचना कठिन है तो सक्षेप म यह कि यहा की मुस्लिम आबादी का विश्वास है कि इन पीरो को खुद अल्लाह या कम से कम उसके पैगबर ने ही ऊपर पहुचाकर दफनाया है। ऐसा अधविश्वास है कि इसकी चोटी पर वही आदमी चढ सकता है, जिस पर अल्लाह की खास और करम की नजर हो। और चढाई क्योकि सख्त है और अल्लाह घमडी लोगो को पसद नही करता, इसलिए यहा के बहुत कम बाशिदा न ही इस पर चढने की कोशिश की है। लेकिन हमारे एक इजीनियर और दो टेकनिशियनो ने इस काम को कर दिखाया—जैसा कि आप जानते ही हैं, हमारे लोग स्वभाव से ही जिज्ञासु है। उनमे से दो लोग तो सही सलामत वापस आ गये, मगर तीसरे ने फिसलकर अपनी टाग तोड ली। बेशक, मुल्लाओ ने अपने प्रचार मे इस घटना का खूब उपयोग किया। आपके लिए यह समझना मुश्किल नही

"लेकिन लगातार इस तरह उछाले खान खाते काई सा कैसे सकता है?"

"आपसे सच कह रहा हूं। बस, आदत का बात है लीजिये, आखिर हम पहुच ही गये।"

एक ऊचे बाध के तले चार कारें एक कतार में खडी हुई थीं। तटबंध पर चढने ही मोरोजाव और विदेशी लेखक की निगाह नीचे एक एक्स्केवेटर व आसपास चित्रवत खडे लोगों के एक समूह पर पडी—कोश मर्गी पोगो जोवा, ऊर्ताबायव, इतालवी फैशनेबुल माजे पहने खूब सजा सवरा नवयुवक रियूमिन और एक कुत्ता। अनुभवहीनता के कारण विदेशी लेखक ने चटकीले रंग की टोपी पहने धूप से सवलाये इतालवी का ताजिक और यूरोपीय पोशाक पहने ऊर्ताबायव का इतालवी समझ लिया। वह सफाचट चेहरेवाले साफ-सुथरे कोश को ही अमरीकी माननेवाला था कि मर्गी के पाइप के कारण रुक गया। बस, रियूमिन के असन्दिग्ध रूसी नाक-नक्श के कारण उसकी जाति के बारे में उसे कोई सदेह नहीं हुआ।

तो यह रहा कत्ता-ताग पहाड और यह रही खाक-ए-कजर'—ले जाय इसे शैतान उठाकर!' मोरोजोव ने मुट्ठी भर धूसर मिट्टी उठाकर लेखक को दी।

वे लोग एक्स्केवेटर के पास पहुच चुके थे और औपचारिक परिचय के बाद—जिसका नतीजा यह हुआ कि लेखक का लोगों को पहली नजर में पहचान लेने की अपनी योग्यता में विश्वास हिल गया—वे लोग नहर-तल के साथ-साथ चलने लगे।

मौके के सर्वेक्षण में ज्यादा देर नहीं लगी। इतालवी और विदेशी लेखक के अलावा हर कोई स्थान से खूब अच्छी तरह परिचित था। इतालवी ने जानकार की तरह धूसर मिट्टी को अपनी उगलियों में मसला उसे जीभ से चाखा, जेब से एक छोटी-सी बोतल निकाली (जिसमें शायद मूडी कोनान था) उसमें कुछ बूदें हथेली पर डाली और उसमें जरा सी खाक-ए-कजर मिलाई। नतीजे के तौर पर साधारण कीचड प्राप्त हुआ। इतालवी ने बडी सतर्कता के साथ रेशमी रूमाल से अपने हाथों को पोंछा, ऊपर पहाड और फिर नीचे नहर के तल पर निगाह डाली और दुभाषिये के जरिये कहा कि उसके लिए हर चीज साफ है और अब यहा और रुकने की कोई तुक नहीं है। सब चक्कर बाध पर आ गये और फिर दूसरी तरफ उतर गये।

से इस बात का अदाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था कि इतालवी ने जो प्रस्ताव रखा है, वह अच्छा है या खराब। लेकिन मोरोज़ोव और कोश के चेहरे कुछ भी नही प्रकट कर रहे थे।

"आपकी क्या राय है, मिस्टर मर्री?" मोरोज़ोव ने अमरीकी से पूछा।

'मिस्टर मर्री कह रहे है,' पोलोज़ोवा ने अनुवाद किया, "कि वह अपने इतालवी सहयोगी की राय से सहमत नही हो सकते। मिस्टर मर्री का विचार है कि यह आशा करना एक भ्रम होगा कि कक्रीट की दीवार पहाड को धसने से रोक लेगी। यहा हम कदम-कदम पर मिट्टी की जो अविजन धसकनें मिलती है, उनसे कक्रीट की वाहिका अनिवार्यत [illegible] और पानी रिसकर पहाड के तल मे जा पहुचेगा। पहाड [illegible] लगेगा और तब उसके धसने को रोकना और भी [illegible], क्योंकि कक्रीट की वाहिका के होने के कारण उसे साफ़ करने के [illegible] का उपयोग करना असभव हो जायेगा। मिट्टी के [illegible] हद से हद शीतकालीन वर्षा तक ही [illegible]"

"तो मिस्टर मर्री क्या सुझाव देते है?"

'मिस्टर मर्री का मत है कि एकमात्र [illegible] को न छेडा जाय और नहर को लोह-कक्रीट [illegible] के पार ले जाया जाय। पहाड की [illegible] के साथ साथ यह बाधा के बह जाने [illegible] खतरे को भी खत्म कर देगा, जब कि [illegible] की दुर्घटना कमोबेश मात्रा मे [illegible]।"

"कोई ग्यारह महीने का [illegible]" मोरोज़ोव ने अपने दिमाग़ में [illegible]।

विदेशी लेखक की आखें [illegible] पर भी वह समझ गया कि [illegible] जलसेतु एक महीने के [illegible]। [illegible] विपत्ति सर पर ही [illegible]।

समध्या [illegible] और [illegible] निर्विकार स्वर मे पूछा।

'मै बताऊँ?' [illegible]।

की एक पट्टी फैली हुई है। यह पट्टी काफी पतली है और इसी लिए हमें यह और जगहों पर नहीं मिली। हम यह ठीक इसी जगह पर इसलिए मिली कि यही वह स्थान है, जहा हमारी नहर की वाहिका प्राचीनकालीन सिचाई नहर की वाहिका के साथ-साथ आ जाती है, जिसके निशान कई जगहों पर बिलकुल साफ-साफ देखे जा सकते हैं। अगर हम इस पुरानी नहर के रास्ते का अनुगमन करें, तो यह बात बडी आसानी के साथ देखी जा सकती है कि थोडे-बहुत विचलन के अलावा यह हमारी वर्तमान नहर की दिशा में ही जाती है। हा, अपने उपकरणों की यथार्थता के मामले में हमने निस्सदेह अपने पूर्वजों को बहुत पीछे छोड दिया है। कत्ता-ताग पहाड पर दोनों वाहिकाए एकसाथ आ जाती हैं—और इसमें अचरज की कोई बात नहीं है क्योंकि नहर के लिए यही एकमात्र सभव रास्ता है—दाईं तरफ घाटी है और बाई तरफ—पहाड। खैर, इस पुरानी वाहिका में आप चाहे जहा भी खोदकर देख लें, आपको यह धूसर मिट्टी मिल जायगी। अगर आप चाहें, तो हम कई जगहों पर जा सकते हैं, जहा मैं और साथी रियूमिन पिछले दिनों से जिज्ञासावश मिट्टी को खोदकर देखते रहे हैं। आपको विभिन्न गहराइयों पर लगभग वहीं, जहा किसी समय इस पुरानी नहर का तल हुआ करता था, धूसर मिट्टी का एक मोटा स्तर मिलेगा। इससे क्या साबित होता है? मुझे लगता है कि इससे सिर्फ एक ही बात साबित होती है—धूसर मिट्टी पुराने जमाने के कीचड के निक्षेपों के अलावा और कुछ नहीं है, जो प्राचीन नहर के पेंदे पर बिछा हुआ था और उसके किनारों को मजबूती देता था। यह अनुमान करने के बाद मैंने स्वाभाविक रूप से यही निष्कर्ष निकाला कि और सभी जगहों की तरह इस जगह—कत्ता-ताग पहाड से भी धूसर मिट्टी की एक पतली पट्टी गुजरती है। मैंने और साथी रियूमिन ने नहर के तल में दूर कई जगहों पर खुदाई की और हमें कहीं धूसर मिट्टी नहीं मिली। मेरा खयाल है कि निष्कर्ष हर किसी के लिए स्पष्ट होगा। अगर धूसर मिट्टी बहुत आसानी से बह जानेवाली भी सिद्ध होती है, तो भी इसका विस्तार बहुत ही सीमित है। हम यह हिसाब लगा सकते हैं कि पहाड के पार्श्व की धसकन दो-तीन मीटर से ज्यादा नहीं होगी। निस्सदेह नहर को अवरुद्ध करने के लिए यह काफी होगा, लेकिन इसका एक एक्स्केवेटर से आसानी से उपचार किया जा सकता है। मुझे—इतना ही कहना है।"

जमा करने की राय दूगा। इससे हम किसी भी आकस्मिकता का तत्काल सामना कर सकेंगे।

तो बैठक की कारवाई खत्म की जाये?"

क्या मैं कुछ और कह सकता हू?' मर्री ने पूछा।

'इजीनियर मर्री यह कह रहे हैं, पालाजावा ने अनुवाद किया, "कि साथी उर्तावायेव और रियूमिन का प्रस्ताव दर असल यथास्थिति को बरकरार रखने का प्रस्ताव है। इजीनियर मर्री मनेजमेंट का इस तरह के निणय के विरुद्ध सचेत करते ह और आसपास के खेतो के आशिक रूप से भी जलमग्न होने से जनित विनाशकारी परिणामो की ओर इगित करते ह। नई जमीन पर काफी तादाद म आबादकारो को बसाने म जिन आम मुश्किलो का सामना करना पड रहा है, उनको देखते हुए सभव ह कि इससे लहकाना म दहशत फल जाय और इन जमीनो के आगे आबाद करने म बाधा पडे। इस तरह निमाण-काय को पूरा करने मे जल्दबाजी, जो साथी उर्तावायेव और रियूमिन के प्रस्ताव के पक्ष मे एकमात्र और निर्णायक तक है, बेकार साबित होगी। जमीन इस साल सिंच जायगी, लेकिन वह परती पडी रहेगी और आबादकारो के न होने के कारण उस पर काश्त नही की जा सकेगी। इजीनियर मर्री मनजमेंट से इस बात को ध्यान मे रखने के लिए और आज की बैठक के काय विवरण म अपनी राय दज किये जाने के लिए कह रहे ह।"

"जानते है," कार मे फिर बैठने के बाद विदेशी लेखक ने मारोजोव से कहा 'मैंने इन सभी साथियो की रायो को बडे ध्यान के साथ सुना ह। मैं यह नही सकता कि उनम से किसकी बात सही है और किसकी गलत—सभीका कहना अपने अपने ढग म ठीक ही लगता हे। मैं सिफ एक बात निश्चय के साथ कह सकता हू।

यह क्या?'

मैं आपकी जगह होना नही चाहगा।

'क्यो?"

"इस तरह की बहस के आधार पर कोई एक निणय लेना कितनी बडी जिम्मेदारी है!

मारोजोव के जवाब को लेखक न सुन पाया—कार ने एक जोरदार झटका खाया और उसका सिर एक बार फिर जोर से छत से जा टकराया।

मिस्टर क्लार्क की प्रगति

दूसरे सैक्शन की बस्ती पहुंचकर पोलोजोवा लपका-नपका काम्सामोल के जरूरी मामलों को निपटाने के बाद खाना खाने के लिए चली गई। भोजनालय में मारोज़ोव और विदेशी लेखक के अलावा और कोई न था। बातचीत करने की कोई खास इच्छा न होने के कारण वह धान में एक छोटी-सी मेज़ पर जाकर बैठ गई और सूप खत्म करने लगी।

'मरीया पावलोव्ना,' मारोज़ोव ने उसे दूसरे कोने से आवाज़ दी, 'जानती हैं, आपके क्लार्क से आज मेरा बाकायदा झगड़ा हो गया। उन्होंने मुझे अवसरवादी कहा—जी हां! मानना होगा कि हमारी शब्दावली तो आपने उन्हें काफी तेज़ी के साथ सिखा दी है। आइये, हमारे साथ बैठिये, मैं आपको सारा किस्सा सुनाता हूं। वह तो दिन दूने रात चौगुने बोल्शेविक बनते जा रहे हैं—हां, अभी ज़रा बेताल हैं।'

'आपके क्लार्क ने' शब्दों को सुनकर पोलोजोवा को बड़ा तनाव हुआ। वह लाल होकर सोचने लगी कि उसे मारोज़ोव को यह बता देना चाहिए कि वह अब क्लार्क के साथ नहीं रह रही है। लेकिन किसी कारण मोरोज़ोव से यह बात कहना उसे अटपटा लग रहा था। उसने आज्ञाकारितापूर्वक अपनी प्लेट उठाई और उनकी मेज़ पर जा बैठी।

'यह रही मार्था क्लार्क की पत्नी—हमारे काम्सामोल संगठन की सचिव,' विदेशी लेखक को उसका परिचय देते हुए मारोज़ोव ने कहा।

पोलोजोवा को अपने असमंजस को व्यक्त करने के लिए अब भी उपयुक्त शब्द नहीं मिल पा रहे थे। मोरोज़ोव और विदेशी लेखक कुछ देर बाद उठ खड़े हुए और बाहर चले गये। वह अभी तक अपने दिमाग में उपयुक्त शब्दों को ढूंढ रही थी और आखिर जब उसने बताने के लिए [illegible] बेढंगा-सा वाक्य दिमाग में जोड़ा, तो उसे यह देखकर [illegible] हुआ कि उस [illegible] के लिए अब [illegible] याद नहीं है।

'मरीया पावलोव्ना,' मारोज़ोव ने [illegible] में लौटकर कहा, [illegible] [illegible] के बारे में विचार-विमर्श करना [illegible] [illegible] भूल गया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होगा। [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]।

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह बाहर चला गया।

पोलाजोवा ने सोचा कि बैठक मे क्लाक अवश्य आयेगा और वह उसके सामने आने मे बच नही पायेगी। क्लाक को उसने अपने झगडे के बाद से नही देखा था। तब से लगभग चार हफ्ते गुज़र चुके थे। क्लाक म विच्छेद से उसे बहुत क्लेश हुआ था। उसने सोचा था कि अगले ही दिन या हद से हद तीसरे दिन पश्चात्ताप-सतृप्त क्लाक आकर अपनी गलती मान लेगा। हर बार दरवाजा बजने के साथ वह उछल पडती और धडकते दिल के साथ उसे खोलने के लिए लपकती और हर बार निराश होकर लौट आती–आनेवाला उसके काम्सोमाल सगठन का ही कोई लडका होता।

रात को अकेली रह जाने पर वह कपडे पहन पहने ही अपनी चारपाई पर पड जाती ('बडा अभिमानी है वह, हर किसीके सामने मिलना चाहता नही, शायद रात को ही आयेगा")। सुबह वह आसुओ से तर, थकी हुई और निढाल होती। देर तक वह अपने मुह को कूए के बर्फील पानी से धोती, आखो के नीचे आई कालिमा पर पाउडर थोपती और काम पर चली जाती।

क्लाक की खामोशी उसे चाटे की तरह लग रही थी। चौथी रात को उसने कपडे उतारे और पहली बार मुरदा जैसी गहरी नीद मे गाफिल हो गई। सुबह वह निरुद्वेग मन से उठी। उसने सकल्प कर लिया कि अब वह क्लाक के बारे मे नही सोचेगी और काम मे जमा हुए ढेर ने इस निश्चय की क्रियान्विति को सभव बना दिया।

दसवें दिन अपनी दराज म कागजो को देखते समय उसके हाथ म वह कागज आ गया, जिस पर क्लाक ने अपना 'मनपसद विषय पर निबध' –पहला प्रणय निवेदन–लिखा था। उसने पढे बिना ही उसके टुकडे-टुकडे कर दिये। बाहर प्रचड अफगानी हवा चल रही थी। वह दहलीज पर गई और उन्हे हवा मे उडा दिया। हवा कागज के टुकडो को समेट ले गई और उन्हे स्तेपी पर छितरा दिया। पोलोजोवा कमरे म वापस आई, चारपाई पर ढह गई और फूट फूटकर रो पडी।

उसी शाम को उसे क्लाक का एक पत्र मिला। क्लाक ने लिखा था कि वह बडे दद के साथ इस बात को अनुभव कर रहा है कि उसके लिए कोम्सोमाल का काम उनके सयुक्त जीवन से अधिक महत्व रखता है। स्त्री जितना प्यार दे सकती है, उससे अधिक पाने की अपेक्षा करना हास्यास्पद

किसी भी मज़दूर को यह नही बताया कि हमारी बातचीत का विषय क्या था और मने ऐसी कोई बात नही कही, जसी हमारे यह साथी कह रहे है।"

"नही कही ? मजदूरा ने ट्रेड-यूनियन समिति के दफ्तर मे आकर खुद मुझे बताया है।"

"वे आपसे ऐसा कुछ नही कह सकते थे! आप झूठ बोल रहे ह!"

"क्या बात कही है! मतलब यह कि मै अपने काना पर ही विश्वास न कर? इनका कहना है कि सारा मैनजमट अवसरवादी है और उसमे भी निर्माण प्रमुख सबसे ज्यादा अवसरवादी है। यह खुद प्रमुख बनना चाहते ह, और क्या!'

"साथी मोरोज़ोव, इन साथी से फौरन यहा से निकल जाने के लिए कहिये, नही तो मै खुद यहा से चला जाउगा!"

"साथी गालत्सेव, म आपको मना कर रहा हू-आप कुछ नही बोलेगे। मेरी अनुमति के बिना अब कोई कुछ नही कहेगा। साथियो, शात रहिये!"

क्लाक उठा और मेज पर से अपनी टोपी उठाकर कमरे से निकल गया।

"लीजिये, एक नया किस्सा शुरू हो गया!" मोरोज़ोव नाराज़ी से बड बडाया। "साथी पोलोज़ोवा, मेहरबानी करके आप जाइये और उन्हे समझाइये।'

पोलोज़ोवा आज्ञाकारितापूर्वक उठी और क्लाक के पीछे चली गई।

"और गालत्सेव, अमरीकी इजीनियर का अपमान करने के लिए हम तुम्हारी भर्त्सना करेगे, और इसके अलावा, तुम्हे जाकर उनसे माफी मागनी होगी।"

"साथी मोरोज़ोव, हे मेरे भगवान! वह मेरी आखा के सामने झूठ बोल रहा था-'मैंने नही कहा!' सारी गडबड उसीके कारण है। मजदूरो के सामने भडकानेवाली बाते वह करता है, और माफी मुझे जाकर उससे मागनी पडेगी!"

"जाना तो होगा ही। अगर साथी क्लाक यह कहते है कि उन्हान ऐसा नही कहा, तो नही ही कहा होगा।"

"तो मजदूरो को कहा से पता चला?"

"निर्माणस्थली पर सभी के लबे कान और लबी जबानें है। लेकिन विदेशी इजीनियरो का अपमान करने का अधिकार तुम्हे किसीने न दिया है और न देगा। समझे?'

"लीजिये, यह तो समझते भी नही, और भुगतना मुझे पड रहा है," गालत्सेव हठधर्मी के साथ कहता चला गया। "साथी क्लाक ने आज इन हुल्लडबाजों से कहा कि व्यक्तिगत रूप से वह तो इसी हालत मे पत्थर की खुदाई के काम को जारी रखने के हक मे है, लेकिन अवसरवादी मैनेजमेंट इसके खिलाफ है। बस, फिर क्या था, तूफान शुरू हो गया। स्वयसेवक ट्रेड यूनियन समिति के कार्यालय मे मेरे पास आये और बोले, 'सभा करो!' मैने उन्हे डपटकर भगा दिया। बस वहा से जाकर उन्होने अपने आप सभा जुटा ली। उनका कहना है कि अवसरवादी मैनेजमेंट और ट्रेड-यूनियन समिति मिलकर निर्माण कार्य की समाप्ति मे एक महीने की देर करना चाहते है, पार्टी और सरकार ने काम को पूरा करने की जो मियाद निर्धारित की है, उसका उल्लघन कर रहे है, मजदूरो की पेशकदमी को खत्म कर रहे है, और इसी तरह की न जाने और क्या-क्या बात। उनका कहना है कि मजदूरो को इस सडे गले मैनेजमेंट की परवाह नही करनी चाहिए और इतजाम को अपने हाथ मे लेकर काम को नियत समय पर पूरा कर देना चाहिए।"

"उन्हें भडका कौन रहा है?" मोरोजोव ने पूछा।

"सरदार उनका तरेलकिन है और उसके साथ मुख्य सैक्शन के और सब हुल्लडबाज शामिल है। जो लोग सबसे ज्यादा चिल्ला रहे है, वे ही ऐसे है, जो स्वयसेवक बनने की बात कभी सपने मे भी नही सोचते। वे चाहते है कि यह" उसने क्लाक की तरफ इशारा किया, "मैनेजमेंट के प्रमुख बन जाये।"

"तो यह हुल्लड खत्म किस तरह हुआ?"

"अभी खत्म कहा हुआ है! किसी तरह से उनके दिमाग मे अक्ल की कुछ बाते ठोककर आया हू। इनको," गालत्सेव ने फिर क्लाक की तरफ इशारा किया, "कल खुद वहा जाकर उनसे बात करनी होगी। नही तो यही लगेगा कि हमारे सैक्शन मैनेजमेंट, पार्टी सगठन तथा ट्रेड-यूनियन मे अनबन है और वे अपने झगडो का निपटारा मजदूरो के सामने कर रहे है। इस तरह से कैसे काम चलेगा!"

क्लाक का चेहरा फक हो गया था और वह अधीरता से मेज को उगलियो से ठकठका रहा था।

"साथी मोरोजोव," कमरे मे एक अप्रिय खामोशी छा जाने पर उसने कहा "मैं आपसे अनुरोध करता हू कि मुझपर विश्वास कीजिये। मैने

किसी भी मजदूर को यह नही बताया कि हमारी बातचीत का विषय क्या था और मैंने ऐसी कोई बात नही कही, जसी हमारे यह साथी कह रहे हैं।"

"नही कही? मजदूरो ने ट्रेड-यूनियन समिति के दफ्तर मे आकर खुद मुझे बताया है।"

"वे आपसे ऐसा कुछ नही कह सकते थे! आप झूठ बोल रहे हैं!"

"क्या बात कही है! मतलब यह कि मै अपने कानो पर ही विश्वास न करूं? इनका कहना है कि सारा मैनेजमेट अवसरवादी है और उसमे भी निर्माण प्रमुख सबसे ज्यादा अवसरवादी है। यह खुद प्रमुख बनना चाहते हैं, और क्या!"

"साथी मोरोज़ोव, इन साथी से फौरन यहा से निकल जाने के लिए कहिये, नही तो मै खुद यहा से चला जाऊगा!"

"साथी गालत्सेव, मै आपको मना कर रहा हू–आप कुछ नही बोलेगे। मेरी अनुमति के बिना अब कोई कुछ नही कहेगा। साथियो, शात रहिये!"

क्लार्क उठा और मेज पर से अपनी टोपी उठाकर कमरे से निकल गया।

"लीजिये, एक नया किस्सा शुरू हो गया!" मोरोज़ोव नाराज़ी से बड बडाया। "साथी पोलोज़ोवा, मेहरबानी करके आप जाइये और उन्हे समझाइये।"

पोलोज़ोवा आज्ञाकारितापूर्वक उठी और क्लार्क के पीछे चली गई।

"और गालत्सेव, अमरीकी इजीनियर का अपमान करने के लिए हम तुम्हारी भर्त्सना करेगे, और इसके अलावा, तुम्हे जाकर उनसे माफी मागनी होगी।"

"साथी मोरोज़ोव, हे मेरे भगवान! वह मेरी आखो के सामने झूठ बोल रहा था–'मैंने नही कहा!' सारी गडबड उसीके कारण है। मजदूरो के सामने भडकानेवाली बाते वह करता है, और माफी मुझे जाकर उससे मागनी पडेगी!"

'जाना तो होगा ही। अगर साथी क्लार्क यह कहते हैं कि उन्होने ऐसा नही कहा, तो नही ही कहा होगा।"

"तो मजदूरो को कहा से पता चला?"

"निर्माणस्थली पर सभी के लबे कान और लबी जबानें हैं। लेकिन विदेशी इजीनियरो का अपमान करने का अधिकार तुम्हे किसीने न दिया है और न देगा। समझे?"

"तुम्हारी जवान काफी बेकाबू हो गई लगती है, गालत्सेव," सिनीत्सिन ने सख्ती स कहा, 'कितनी बार तुम्हारी भत्सना की जा चुकी है? अगर तुम्हारा खयाल है कि भत्सनाए डाक टिकटो की तरह इकट्ठा करने की चाजें है, तो यह मत भूल जाना कि तुम्हारा सकलन पूरा करने के लिए अब ज्यादा भत्सनाओ की जरूरत नही है।'

गालत्सेव अपराधी भाव से अपना सिर खुजाने लगा और जवाब म कुछ नही बोला।

पालोजोवा ने क्लाक को सीढियो के नीचे ही पकड लिया।

'क्लाक!"

"कौन?

'मैं हू। आपसे मिनट भर बात कर सकती हू?' पोलोज़ोवा ने अंग्रेजी मे पूछा।

"बेशक।'

चलिये इसी रास्ते पर चलते हैं।

हा, बालो मेरी,' क्लाक ने गौर से उसकी तरफ देखा—वह काफी दुबली हो गई थी वहुत बदल गई थी। अब वह पहले जसी शुष्क और अहकारी लडकी नही लगती थी। वह अब एक ऐसी नारी लगती थी, जो काफी दुख भोग चुकी है। वह उद्विग्न नज़र आती थी और उसने पुराने आत्मविश्वास का आभास मात्र भी नही दष्टिगोचर होता था।

अपना नाम सुनकर पोलोजोवा असमजस म पड गई। वह क्लाक की तरफ न देखते हुए जल्दी जल्दी बोलने लगी

'मैं सबसे पहले यह कहना चाहती थी कि आपने ठीक नही किया है "

जानता हू। ऐसा अभी तक एक बार भी नही हुआ कि जब मैंने कुछ ठीक किया हो।'

'यह भी सही नहीं है। खैर पुरानी बाते मत छेडिये। म आपसे यह कहना चाहती हू कि न तो म, न मारोजोव और न वहा मौजूद लोगो म से—शायद एक अकेले गालत्सेव को छोडकर—कोई और ही निमिष मात्र के लिए भी यह सोचता है कि आपने मजदूरो से सचमुच ऐसा कुछ कहा है।'

"तो फिर साथी मारोजोव ने क्या मुझे इस तरह म अपमानित होने दिया?'

"यह कहना ठीक नही है। उन्होने गालत्सेव से बोलने को मना कर दिया था।

"उन्हे उसे बाहर निकाल देना चाहिए था।"

माफ कीजिये, लेकिन आपको निर्माण प्रमुख को यह आदेश देने का कोई अधिकार नहा है कि वह सभा का सचालन कैसे कर। और अपमान का अपमान स ही जवाब – यह अपनी पैरवी का कौनसा तरीका है। अगर आपको मुआवजा ही चाहिए था तो वह मिल गया। हो सकता है कि वह आपक रिवाज क मुताबिक न हो, लेकिन वह हमारे देश म प्रचलित रिवाज के मुताबिक जरूर है। मुझे विश्वास है कि आप यह तो नही चाहते होंगे कि आपक परितोष क लिए यहा पूजीवादी आचार-सहिता लागू कर दी जाये?

एक निम्न-पूजीवादी स पश आत वक्त पूजीवादी आचार-सहिता का ही पालन करना चाहिए।

"मजाक मत कीजिये। यहा आपको निम्न पूजीवादी कोई नही समझता। 'कोई नही?"

पालोजोवा न ऐसा दिखाया, मानो प्रश्न उसने सुना ही न हो।

'आज ही आपक सुबह क विवाद के बारे म बात करते हुए मोरोजोव ने मुझसे कहा था कि आप तो दिन दुने रात चौगुने बोल्शेविक बनते जा रहे ह। अलबत्ता यह उन्होने ठीक ही कहा था कि अभी आप जरा बेताल ह। निर्माण-काय को शीघ्रातिशीघ्र खत्म करन के लिए अपने जीवन को सकट म डालना बहुत शानदार बात है, लेकिन फिर भी यह बोल्शेविकोचित बात नही है, क्योकि इसकी कोई तात्कालिक आवश्यकता नही है। सामती शौय प्रदशन और बाल्शेविज्म एक ही चीज नही ह। बोल्शेविज्म तो

"सुनो, मरी, कदम कदम पर लक्चर सुनाने की यह रूसी झक तो उस आदमी को भी अधपगला बना सकती है जो ईमानदारी से आप लोगो से बहुत कुछ सीखने की कोशिश करता है? सच मानना, अपने पूरे बचपन म भी – जब म नीकर पहने ही घूमा करता था – मैंने कुल मिलाकर इतने लक्चर नही सुने थे, जितने यहा एक साल के निवास के भीतर सुन चुका ह।

पोलोजोवा खिलखिलाकर हस पडी।

"अगर आपको हर ही वक्त पढाते रहना जरूरी हो तो फिर हम क्या करे? असली मुसीबत यह है कि आपको अपनी हठधर्मी और अहकार स

कोई मुक्ति नही दिला सकता। आप इस बात को खूब अच्छी तरह स समझते है कि आपने गलत किया था, लेकिन आपका अहकार आपको इस बात को लोगो के सामने स्वीकार नही करने देगा। हमारे यहा लेकिन आप फिर कह देगे कि यह लैक्चर है।"

'यह बात जरा भी ठीक नही है। अगर मुझे विश्वास हो जाये, ता मैं अपनी गलती मानने के लिए बिलकुल तैयार रहता हू।"

'क्यो झूठ बोलते ह? आप ही बताइये, आपने कभी एक बार भी यह माना है कि आप गलती पर थे?'

"माना है।"

'मिसाल के लिए?'

'मिसाल के लिए, मेरी, तुम्हारे मामले मे मने गलती की थी।"

जिम!"

अगर इस तुम सीधे-सीधे और लैक्चर के बिना माफ कर सकती हो, तो इस बारे मे हम अब और बात नही करेगे। यह रही मेरी कार। चलो, सीधे घर चलते ह। सुबह म तुम्हे काम पर पहुचा दूगा।"

"और इस बारे मे और बात नही करगे?"

'और इस बारे मे और बात नही करेगे।"

"ता, ठीक है। और आज की बात के लिए तुम मोरोजोव से माफी मागोगे?'

'माग लूगा। लेकिन कल। कल तक तो ठहरा जा सकता है, न?"

उसने पालोजोवा के कधे पर अपना हाथ रख दिया और उसे कार की तरफ ले गया।

भूल से चलता छूट गया रेडियो क्लाक के खाली प्लैट म राना आवाज मे मिमिया रहा था। कनाक ने रेडियो को बद कर दिया और मेज को ठीक करने लगा। पोलोजोवा का ध्यान गया कि उसने किसी चीज को जल्दी से दराज म डाल दिया है और उसे अखबार से ढक दिया है।

'तुम कपडे बदलो, मैं चाय बनाकर लाता हू।"

वह बाहर चला गया। उसके अनभ्यस्त हाथो मे स्टोव की शिकायतभरी कराहट सुनाई देती थी। पोलोजोवा क्षण भर को ठिठकी। फिर, शरमाते शरमाते उसने दराज को आहिस्ता स खाला और अखबार को अलग खिसका दिया। अखबार के नीचे दो किताबें रखी हुई थी—"लेनिनवाद

की समस्याए" का अग्रेजी अनुवाद और द्वद्वात्मक भौतिकवाद की एक प्रारभिक रूसी पाठ्य-पुस्तक। उसने दराज को आहिस्ता से बद कर दिया, और, दपण म अपने लाल हुए चेहर को देख, खिलखिलाकर हस पडी।

तूफान के आसार

उस साल लबी सरदी के कारण बुआई का मौसम देर से आया और यद्यपि लोग उसके लिए काफी पहले से तैयारिया कर रहे थ, फिर भी,—हमेशा ही की तरह,—वह आया, तो एकदम अचानक और अप्रत्याशित रूप से।

वर्षा के खत्म होन के काफी पहले से ही बफ से ढके विस्तारहीन मदानो के आरपार ठेठ स्तालिनग्राद* से लेकर स्तालिनाबाद तक रेलवे बधा के पतले पतले स्थल-सयोजको पर तिरपाल से ढके डिब्बा की लबी लबी मालगाडिया रेगती हुई दिखाई देने लगी थी। मालगाडिया स्टेशना पर लबे-लबे पडाव डालती, अपने बफरो को खडखडाती हुई इधर उधर शटिग करती और रात को स्तेपी की वीरानगी म गायब हो जाती। रास्ते मे अगर सयोग से विदेशी सवाददाताओ को ये गाडिया मिल जाती, तो डिब्बो की खडखडाहट को सुनते ही उनके कान खडे हो जाते और वे अपने सिरो को अपने शयनयानो की खिडकिया से निकालकर उत्सुकतापूवक बाहर देखने लगते, मानो उन्हे रात के अधेरे मे अज्ञात गतव्यो की ओर जाती फौजी रेलगाडिया का चिरपरिचित शोर सुनाई दे रहा हो और पहिया की गडगडाहट से वे यह अनुमान लगाने का यत्न करते कि वे किस सीमात की तरफ जा रही ह। विदेशी सवाददाता गलती नही कर रहे थे—गाडिया बेशक अपन धडधडाते भार को लिये दक्षिण-पूर्वी मोर्चे, भारत और अफ्गानिस्तान की सीमा की तरफ ही जा रही थी। इन गाडियो मे थे ट्रैक्टर, ट्रैक्टर और ट्रैक्टर—वे बर्फानी स्तेपियो के स्तालिनग्राद से उपोष्णकटिबधीय रेगिस्तान के स्तालिनग्राद (ताजिक भाषा मे "आबाद" का वही मतलब है, जो रूसी म 'ग्राद" या "गोरोद' का—शहर) को ट्रैक्टरा के पूरे के पूरे डिवीजन लेकर जा रही थी।

---

*अब वोल्गोग्राद।

जनतंत्र पर बुआई अभियान बसंत के पहले बरसाती तूफान की तरह से फूट पड़ा। उसने सरदियों में बने जालों को उड़ाकर कागजों के ढेर के ढेर बिखरा दिया, दफ्तरों और संस्थाओं के दरवाजों और खिड़कियों को भड़भड़ाकर खोल दिया, और लोगों को अपने दफ्तरों की कुरसियों से उठाकर सीधे खेतों में फेंक दिया कि वे वहां राजकीय योजना आयोग के कांचघरों में जनित आंकड़ों को जिंदा जमीन पर प्रतिरोपण करें।

ट्रैक्टरों के झुंडों के आगमन की घोषणा करते रेत के मटियाले बादल रेंगते हुए दानवों की तरह कर्णभेदी शोर करते हुए खेतों पर मंडराने लगे। टेलीग्राफ के तारों पर तार ('बुआई अभियान – अत्यावश्यक') की एक प्रचंड, अविराम और उलझी हुई धारा गूंजने लगी और अखबारों के शीर्षकों के रूप में छापेखानों के टाइप के अक्षर (२० पाइंट, मोटा टाइप) खतरे की घंटियों की तरह घनघनाने लगे। दूसरे देशों में ऐसी आवाज आम लामबंदी के मौकों पर ही सुनाई में आती है।

स्तालिनाबाद एक ही दिन के भीतर खाली होकर अचानक एक ऐसे खामोश कसबे में परिणत हो गया कि जिसमें एक भी मोटर गाड़ी न रही। बुआई अभियान के बवंडर में फुहार की तरह फैलकर सभी उपलब्ध कारें जिले जिले भेज दी गई। तारबर्कियों की खटखट डाक्टर की हथौड़ी की तरह जनतंत्र के उत्तेजनाग्रस्त शरीर को हजारों ही जगहों पर ठोंक-ठोंककर देख रही थी। इन दिनों लोग बस, आंकड़ों में ही बात करते थे, मानो आपस में भी किसी सांकेतिक भाषा में ही बात कर रहे हों। अभूतपूर्व सट्टेबाजी के दौर में शेयर बाजार के सट्टेबाजों की तरह जिला समितियों के सचिव रात में टेलीफोन पर इस तरह के आंकड़ों को चिल्लाते चिल्लाते अपने गले बैठा लेते शहरेनौ – ४२ प्रतिशत, जलील कुल – ३८ प्रतिशत, कूरगान-तेपा – ५१ प्रतिशत, खाजद – ६४ प्रतिशत। और स्तालिनाबाद की निर्जन सड़कों पर बिजली के जीर्ण शीर्ण खंबों पर तोतों की तरह बैठे लाउडस्पीकर इन आंकड़ों को अपनी फटी हुई आवाजों में दुहराया करते।

इस साल – योजना के अनुसार – जनतंत्र में मिस्री कपास की बुआई के क्षेत्रफल में एक लाख हैक्टर की वृद्धि की जानी थी। वख्श और पंज नदियों के बीच का मैदान, जिसे अब पहली बार बांचा जा रहा था, इस रकबे का अस्सी प्रतिशत था। जब यह खबर फैली कि इस अनादि काल से जलहीन मैदान में जुताई शुरू हो गई है, तो दूर-दूर के किसानों से

बाकी पगडिया बाधे फुरतीले घुडसवार अपने घोडा को भगाते हुए उसे देखने के लिए आ गये। बुआई अब पूर जोरा पर थी, तब इतने सारे खाली लोगो का जाने का मौका कसे मिल गया, यह सोच पाना मुश्किल था। जानकारा ने बताया कि दूरस्थ सामूहिक फार्मों म से प्रत्येक ने एक चश्मदीद गवाह से इस अभूतपूर्व नज़ारे का हाल सुनन के लिए अपने श्रेष्ठतम नौजवानो म से एक एक को नियत कर दिया था और उसक इसमे लगे काय दिवमा की पूर्ति करने का जिम्मा ल लिया था। मदान की पूरी लबाई म अपन दुबले पतले घोडा पर पहरेदारा की तरह तनात घुडसवार अपनी गरदना का उत्सुकतापूवक उठाकर देखते थ या बढते हुए ट्रैक्टरा के आगे रहन और आते हुए रल को सामने स देखने के लिए हुकारते हुए घोडो को सरपट भगाये जाते थ।

ज़ोर-ज़ोर से गरजते ट्रक्टर टिड्डी दल की तरह विशाल जलूस के रूप म दुदम्यतापूवक लगातार बढते ही चल जाते थे। लगता था कि उनकी तादाद हज़ारा म है, क्योंकि उनके उठाये हुए धूल क बादल ठेठ क्षितिज तक फले हुए थे। इस लौह गजन की तरग पज नदी क पार चली जाती और अपने ऊपर बने लकडी के हल स खुरचे ज़मीन के अपने नन्हे से टुकडे के साथ साथ अतहीन विस्तार म भटका अफगान दहकान नदी क पार से उडकर आती सावियत धूलि को सूघने और चौकन्ना होकर गरजती मशीनों के इस विचित्र सगीत को सुनने लगा।

ट्रक्टर पहाडा और घाटिया को कुचलते, चढाइया पर चढते और ढालो पर से फिसलते बिन रुके लगातार बढते चले गय। पास आती इस गजना स भयाक्रात जैरानो के झुड अपनी जगहो को छोड छोड चिनगारिया की तरह स्तेपी म उड चल। पहला दिन ढलते-ढलते उनके बडे बडे समूह टक्टरा की बढती हुई कतार के आगे आगे भागे जा रहे थ। सामन से आते किसी भी आदमी को जो पहली चीज नज़र आती, वह थी दहशत के मारे भागते जरानो की लबी कतारे, फिर, उनके कई किलोमीटर पीछे, धूल का एक लहराता बादल घरघराता हुआ मदान को पार करता चला आ रहा था। जरानो न कुछ ही समय पहले बच्चे दिय थे और अपनी सीकिया टागा पर भागते उनके छौने दौडने म वयस्क पशुआ के बराबर न रह सके और लोगो ने उन्ह खाली हाथ ही पकड लिया और दूसरी शिफ्ट के खत्म होते होते लगभग हर ट्रक्टरचालक अपने अपने घुटनो पर एक एक लमटगे

चितकबरे छौने को लिये हुए था, जिसकी मुलायम मखमली आखें दहशत के मारे उसके सिर से निकली जा रही थी।

धातु के शोर का सुन आसपास के पहाडा रा खरसल गिद्धा के झुण्ड के झुड उडते हुए चले आये—उनके तेज़ कानो ने युद्ध के परिचित स्वरा को पकड लिया था। देर तक वे ट्रैक्टरचालका के कोसने की परवाह किये बिना ऊपर मडराते रहे, आखिर अपनी गलती का निश्चय कर लेने के बाद वे भारी भारी पख मारते वहा से चले गये।

मरुभूमि मे पिछले कुछ हफ्ता मे जो बस्तिया अचानक फूट पडी थी, उनमे से लोगा की भीडे भागती निकल आई। हाथा की आड से आखा को सूरज की चमक से बचाते हुए वे सामने से मथर गति से गुजरते ट्रक्टरा की कतारा को खडे होकर देखने लगे। उनके उठे हुए हाथा को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे फौजी परेड मे सलामी ले रहे हो। ये लोग नवगठित सामूहिक फार्मो के सदस्य थे कुआरी धरती की सिचाई शुरू हो जाने के बाद उस पर काश्त करने के लिए आनेवाले आबादकार—सुदूर दरवाज़ किशलाक के रहनेवाले ताजिक फरगाना की कपास की लहलहाती घाटिया के उज़्बेक, अल्ताई पवतमाला के उस पार रहनेवाले किगिज खानाबदोश, जिन्होंने अपने डेरे को उखाड दिया था और जो अपनी खानाबदोश जिदगी के टेढे-मेढे सफर को इस कल तक के रेगिस्तान मे हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर देने के लिए अपने नमदे के निवासो सहित यहा आ गये थे, जहा उन्होने अपने ऊटो को अपनी मरजी के मुताबिक घूमने के लिए छाड दिया था, क्योकि आसपास की अरीको ने उन्ह मज़बूत रस्सियो की तरह ठाव से बाध दिया था।

ट्रैक्टर ललछौंह धूल के बादल म बढे आ रहे थे और उनके आगे आगे फलागो और भाति भाति के रेगनेवाले प्राणियो के झुड के झुड भागे जा रहे थे, जो अपनी मादा से चमककर भाग खडे हुए थे। वे चौडी थूथनवाल जगली सूअरों के झुड की तरह घरघराते और फटफटाते हुए चले जा रहे थे। शाम होते-होते धूल फिर बठ चुकी थी—बस, उलटी हुई मिट्टी ही उनके तूफानी अभियान की अकेली गवाह रह गई थी।

ट्रक्टर दिन रात, दिन रात अविराम चढते चले गये। [ट्रक्टरा के पीछे पीछे घरघराते मदानी लगर चले आ रहे थे और उनके पीछे-पीछे था पट्रोल के पीपा से लदे ऊटा का एक अतहीन काफिला। खाली पीपा स लदे ऊट

की एक और कतार वापस जा रही थी। कनवेयर के घूमते हुए पट्टे की तरह ऊंटों का यह आना-जाना एक बंधी हुई रफ्तार में चल रहा था।

निर्माणस्थली पर छोटी सिंचाई प्रणाली को चरम गति में पूरा किया जा रहा था। ट्रैक्टरों और फ्रेस्नो स्क्रेपरों से लेकर बुलडोज़र, टिपर और ग्रेडर तक उपलब्ध हर छोटी मशीनरी को, जो अभी तक रियूमिन के सेक्शन की प्रशंसनीय गर्व की चीज़ थी, जल्दी-जल्दी तीसरे सेक्शन को भेज दिया गया। छोटी सिंचाई प्रणाली के समय पर पूरा हो जाने के बारे में किसीको भी तनिक भी गंभीर संदेह नहीं था। जब खेतों को पानी दिये जाने की बात उठती, तो सभी की आंखें आशंका के साथ मुख्य सैक्शन की तरफ़ ही उठ जाती थीं, जहां से दिन रात धमाकों की दबी हुई आवाजें आती रहती थीं। वहां हज़ारों घन मीटर और कांग्लोमरेट को विस्फोट द्वारा उड़ाया जा रहा था।

बुआई अभियान निर्माणस्थली से उसके ट्रैक्टरों के एक बड़े भाग को ग्रसता हुआ निकल गया और ट्रैक्टरों की अविराम घरघराहट मज़दूरों को मानो उतावला बनाने, उत्तेजित करने और उभारने लगी। हर कोई जानता था कि पानी को अगर खेतों की सिंचाई करने के लिए मुख्य नहर में समय पर नहीं छोड़ा गया, तो अस्सी हज़ार हैक्टर ज़मीन की जुताई और उसमें कपास की बुआई अकारथ रह जायेगी।

निर्माणस्थली पर इन दिनों लोगों की दाढ़ियां बढ़ी हुई और चेहरे सूखे हुए थे, अनिद्रा के कारण उनकी पलकें सूजी हुई थीं, वे बातें बहुत कम करते और ज़रा-ज़रा सी बात पर चिढ़ जाने और चिल्लाने लगते थे।

सभी जानते थे कि खेतों को पानी दिये जाने तक बचे हुए समय के एक एक मिनट का हिसाब लगा लिया गया है और बड़ी मशीनों में से अगर कोई भी एक दिन के लिए भी खराब हो गई, तो इसका मतलब होगा कि शायद पानी समय पर न छोड़ा जा सके।

नौआबादकारों की समस्या बड़ी चिंता पैदा कर रही थी। जुताई पूरी होनेवाली थी, मगर सिंचाई के लिए निर्धारित पचास प्रतिशत ज़मीन पर आबादकार अभी तक नहीं बसाये गये थे। मोरोज़ोव ने स्तालिनाबाद टेलीफ़ोन किया, ज़िला और जनतंत्रीय अधिकारियों पर चिल्लाते चिल्लाते अपने गले को बठा लिया, मगर परिस्थिति में कोई खास सुधार न ला पाया। आप्रवास ब्यूरो केवल एक ही उत्तर देता था — आबादकारों को भरती करने के काम

म इस आशय की जोरदार अफवाहो के रूप म अप्रत्याशित कठिनाइया आ खडी हुई ह कि निमाण काय के पूरा हान म विलब के कारण नइ जमीन का इस साल पानी न दिया जा सकेगा। स्तालिनाबाद इस बात की गारटी मागता था कि पानी निश्चय ही समय पर प्रदान कर दिया जायगा। मोरोजोव टेलीफोन पर थूक देता और निर्माणस्थली का मुआयना करन चला जाता।

आप्रवास केंद्र पर निभर किये बिना जिला पार्टी सगठन की ओर से मुख्तारोव नइ जमीन के कम स कम एक भाग के लिए आबादकार प्राप्त करने के लिए जी ताड प्रयास कर रहा था। मुख्तारोव खुद उन किर्गिज ऊटवाला का नई जमीन पर बसन के लिए राजी करन म सफल हो गया जा निर्माणस्थली पर अपने ऊटा के साथ सामान के परिवहन क काम म लगे हुए थे और उसन उनस दो सामूहिक फाम बना डाले। वह निमाणस्थली पर बेलदारी करनेवाले अफगान दहकाना से भी दो सामूहिक फार्मा का गठन करने मे कामयाब हा गया, लेकिन इससे समस्या हल हुई नही।

मुख्तारोव के चेहर की रौनक जाने लगी, उसके बदन का सावला रग जद पडन लगा। जिले मे बुआई अभियान पर्याप्त तेजी के साथ नही चल रहा था। 'ताजिकिस्तानी कम्युनिस्ट' समाचारपत्र इस खबर को हर दिन सारे जनतत्र भर म जोर शोर के साथ गुजा देता था। कही नाम काल तख्त पर ही न लिख दिया जाये! उसकी आखा का तारा, वह मनहूस सामूहिक फाम लीक से नही निकल पा रहा था और सभी सूचक आकडा का खराब कर रहा था। और इन सब के ऊपर यह आबादकारा की समस्या आ खडी हुई थी। ट्रैक्टर नई जमीन को जात और बो देंगे लेकिन फिर क्या होगा? गोडाई कस हागी?

अत्यत उदासीभर विचारा मे डूबा मुख्तारोव नये आबादकारा के सामूहिक फार्मा का दौरा करके पैदल वापस आ रहा था। कत्ता ताग सैक्शन की बस्ती की तरफ मुडकर वह पानी पीन के लिए दफ्तर म जा घुसा। कमरा ठडा और लगभग खाली था। इसी समय सिर्नोत्सिन न कमरे म प्रवश किया।

'रियूमिन तो नही है यहा?"

"नही, रियूमिन एक सौ तीसवी चौकी पर है।

"क्या और भी कोई बात है?" मुख्तारोव ने पूछा।

'हा, एक बात और है। आबादकारो मे–खासकर यहा, कत्ता-ताग जिले मे–बडा जबरदस्त प्रचार किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पहाड ढह जायगा और पानी सारे मैदान को डुबो देगा। किगिज लोग यहा से भागने की तैयारी कर रहे हैं।

जानते हो, इस सिद्धात को यहा मास्को के किसी प्रोफेसर ने प्रतिपादित किया था,' मुख्तारोव बोला।

'पिछले साल यहा न जाने कितने अहमक अपने अपने सिद्धान्त गढ़ने मे लगे हुए थे और अब हम उनके फल भुगतने पड रहे हैं। लडाई के बारे मे जो बेसिर पैर की बात फैलाई जा रही है, वह खासकर जोरदार है। कहा जा रहा है कि अंग्रेज़ हमारे खिलाफ अगर आज नही, तो कल लडाई का ऐलान करनेवाले हैं। बेशक इन अफवाहो मे कोई नई बात नही है। नई बात यह है कि हमने यह पता लगा लिया है कि ये आती कहा से हैं। और ये आती है मुख्य रूप से स्थानीय सामूहिक फार्मो से भरती किये गये एक दो मजदूरो से–बिलकुल ठीक कहू, तो लाल अक्तूबर' और 'लाल हलवाहा' सामूहिक फार्मो के मजदूरो से। लाल हलवाहा' सामूहिक फार्म की बात यह है कि निर्माणस्थली पर उरूनोव नाम का एक कोम्सामोली काम कर रहा था, जिसका बाप इस सामूहिक फार्म का सदस्य है। तो, बाप ने कई दिन हुए उसके पास एक दूत भेजा। उसने बेटे को हुक्म भेजा कि वह निर्माणस्थली और कोम्सोमोल से फौरन नाता तोड ले और एकदम घर लौट आये। उसने कहलवाया कि सिचाई शुरू होने के पहले ही सभी कोम्सामोलिया के गले काट दिये जायेंगे। बासमचियो वगैरह के बारे मे अफवाहो के साथ साथ यह अमीरो के उकसावे जैसा ही लगता है। हमने फैसला किया कि उरूनोव इस सामूहिक फार्म को वापस चला जाय। वह भटके हुए बेटे की तरह अपने बाप की गोद मे लौट जाये और वहा पहुचकर इस बात का सुराग लगाये कि सरगना कौन है और बिलकुल ठिकाने पर, किशलाक मे ही, जागति फैलाने का काम करे यह, मुख्तारोव, तुम्हारी जानकारी के लिए है। अगर तुम इस सामूहिक फार्म मे जाच पडताल शुरू करो तो इस बात को ध्यान मे रखना कि उरूनोव कोई भगोडा कोम्सामोली नही है, बल्कि हमारा ही आदमी है। कोमारेको इस मामले के बारे मे जानते हैं।

खूब! और 'लाल अक्तूबर' के कौन लोग है?'

"'लाल अक्तूबर' के हमारे यहा चार आदमी हैं। उनमे से दो बहुत अच्छे मजदूर हैं – तूफानी टोली के। बाकी दोनो – अजीज रहमानोव और महमूद कमरोव जाहिरा तौर पर अमीरो के हाथ के मोहरे हैं, जिनका एकमात्र काम प्रचार करना ही है। प्रकट है कि वे यहा इसी इरादे से काम करने के लिए आये हैं। लेकिन अभी हम उनको हाथ नही लगा रहे हैं, ताकि सरगना लोग सावधान न हो जाये। पिछले साल हमारे पास ख्वाजायारोव को 'लाल अक्तूबर' ने ही भेजा था। इस बात को मानकर चलना होगा कि हमे अमीरो के एक काफी विस्तृत सगठन का सामना करना है, जो पूरी चालाकी से चाल चल रहा है, ख्वाजायारोव के जरिये अफगानिस्तान से सपर्क रख रहा है और प्रत्यक्ष रूप से इस साल बासमचियो के एक और हमले पर निर्भर कर रहा है।"

"यह सब मुझे मालूम है," मुख्तारोव ने सहमति मे सिर हिलाते हुए कहा, "बस, तुम्हारे इस उस्मोव के बारे मे ही मैं नही जानता था। यही है असली खबर!"

'जानते हो, तो अच्छा ही है। खैर, सावधान रहो! तुम्हारे सामूहिक फार्मों की तरफ ध्यान देने का हमारे पास वक्त नही है – हमारी अपनी परेशानिया ही काफी हैं। उस्मोव को मैने अपवादस्वरूप ही भेजा है। कोमारेंको के साथ बात करके सारे मामले को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी खत्म करो, क्योकि निर्माण-कार्य पर इसका बुरा असर पडता है। वे आबादकारो को डराकर भगा देंगे और हमारा सारा काम अकारथ हो जायेगा। खैर, मैं चला! तुम्हे पहुचा दू?'

'नही, मै अभी रुकूगा। मै दरवाजीवालो से जाकर मिलना चाहता हू। देखना चाहिए कि उनकी ये इमारते कैसे गिर रही है। कल हमे अभियोक्ता को बुलाना होगा।"

उदासीभरी सीटी बजाता हुआ मुख्तारोव बाहर चला गया।

कुलाक की पहेली

पहाडी ढालो पर बुआई अभियान ट्रैक्टरो के गर्जन के बिना, कमकर तने जूओ की चरमराहट और गरम खामोशी को भग करते हलवाहो के एकरस गायन के साथ चलता था। हलो के चमकते फालो से काली भुरभुरी

मिट्टी हलकी सरभर करती तज ढाला पर पडती चली जाती थी और ढीला मिट्टी मे टखना तक टागे घुसाय बैंन मुश्किल के साथ आगे बढ जाते थे।

लाल अक्तूबर' सामूहिक फाम मे जुताई खत्म हानेवाली थी। पहाडी ढाल की आखिरी पट्टिया का जोता जा रहा था। शाम के वक्त थके हुए बैल और आदमी पहाडो स धीरे धीरे उतरकर आते। उनके उलटे हुए हल साथ साथ खडखड करते चलत। विशलाक की मिट्टी की छता मे साधा रेखाओ मे धूए की लच्छिया उठती जैसे आकाश का छून जा रही हा। घर घर म शारबा पकता होता।

ऐसे ही समय रहीमशाह आलिमाव न करी अब्दुस्सत्ताराव के घर म प्रवेश किया।

'सलाम अलैकुम!'

वालकुम अस्सलाम! करी न अपने मुह का हाथ से पोछ लिया। सशकित औरते अपन चेहरा का ढकते हुए जनान-खान म चली गइ। रहीमशाह निमत्रण की प्रतीक्षा किये बिना कालीन पर बठ गया और नान से एक टुकडा ताडकर उसने शारबे से भरी तश्तरी मे डुबा दिया।

कल बुआई शुरू होगी," शोरबे म भीगी नान को मुह म ठूसते हुए उसने इस तरह से कहा कि उसे हकीकत का बयान भी समझा जा सकता था और करी से पूछा सवाल भी।

करी ने सिर हिलाकर मौन स्वीकृति जनाई।

जिला अधिकारी बहुत नाराज है। कहते ह कि हमने बुआई मे बहुत दर कर दी है " यह कहते हुए उसन शोरबे के कुछ घूट पी लिये, "अब हम जल्दी करनी हागी।"

रहीमशाह ने जैसे समझते हुए दूसरा निवाला निगल लिया।

बहुत नाराज है!' उसने जानकारा की तरह कहा, "अखबार नही देखे तुमने?

करी न इनकार मे सिर हिला दिया। वह न लिख सकता था, न पढ और रहीमशाह इस बात का अच्छी तरह से जानता था।

"अखबार क्या लिखते है? करी न घबराते हुए पूछा। अखबार' शब्द स ही वह हमेशा आशकित हा जाया करता था।

रहीमशाह न बाकी नान का भी शोरबे म डुबा लिया।

"लिखते हैं कि कुछ सामूहिक फार्मों ने सबसे अच्छी जमीन पर अनाज बोया है और सबसे खराब पर कपास।

"हूं?" करी के कान खड़े हो गये।

"बहुत नाराज हैं। लिखते हैं कि सिर्फ सोवियत सत्ता के दुश्मन ही ऐसा कर सकते हैं। वे कहते हैं कि वे सभी सामूहिक फार्मों की जांच करेंगे और जहां उन्हें यह देखने को मिला कि सबसे अच्छी जमीन पर अनाज बोया गया है उन फार्मों के नाम वे काले तख्ते पर लिख देंगे। और सारे रहवासियों को यह बताने के लिए कि कौन लोग अमीरों का साथ दे रहे हैं और सोवियत सरकार के आदेशों के खिलाफ जा रहे हैं, वे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम अखबार में छाप देंगे।'

सचमुच यही लिखा है?'

अखबार तो मैं घर छोड़ आया। मेरा खयाल था कि तुमने पढ़ ही लिया होगा। तुम चाहो, तो जाकर ले आता हूं।'

'तो, यह लिखा है कि वे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम छाप देंगे?" करी ने लंबी चुप्पी के बाद पूछा।

सभी के। काले तख्ते पर। सबसे ऊपर सामूहिक फार्म का नाम और उसके नीचे प्रबंध समिति के सभी सदस्यों के नाम—अपने पिताओं के नाम के साथ। इसके बाद इन लोगों को बाजार में मुंह दिखाते भी शर्म आयेगी। कितनी अच्छी बात है कि इस साल हमारे सामूहिक फार्म के नाम पर कोई कलंक नहीं लगा है। पिछले साल तो ख्वाजायारोव के पीछे हम जिले भर में बदनाम थे।'

"हूं" करी ने परेशानी के साथ अपनी दाढ़ी को खुजलाते हुए अस्पष्ट-सी सहमति जताई।

'हां, तो दौलत कब वापस आ रहा है?' रहीमशाह ने विषय को बदलते हुए पूछा, "बुआई क्या उसके बिना ही होगी?

'कूरगान से किसी आदमी के जरिये उसने कहलवाया था कि वह परसों लौटेगा। वह जिला अधिकारियों से और अनाज लेना चाह रहा है, मगर वे दे नहीं रहे हैं।"

'अरे, हां! कासिम सयदोव की दूसरी टुकड़ी ने एक तजवीज पेश की है। वे लोग जिला केंद्र में दरखास्त करना चाहते हैं कि हमें बीस हैक्टर नई जमीन दी जाये। इसे वे योजना के अलावा बोयेंगे। उनका कहना

है कि अभी आबादकारो की तादाद कम है और अगर हम उसकी काश्त का जिम्मा ले ले, तो जिला अधिकारी उसे हमे दे देंगे। जमीन कोई ज्यादा दूर नही–पहाड की ढाल पर ही है। वह कपास के मतलब की नही है, लेकिन उस पर अनाज बोया जा सकता है। वे सभा बुलाने की सोच रहे है। अगर सभा इसके हक मे हो, तो हम साथ ही बुआई की पुरानी योजना को भी बदल सकते है। हम जिस जमीन पर अनाज बोना चाहते थे, उस पर कपास बो सकेगे और अनाज नई जमीन पर बो देंगे। बोलो, क्या कहते हो?"

"विचार तो बढ़िया है!" करी ने उत्साह दिखाते हुए कहा, "लेकिन दौलत के लौटने तक ठहरना होगा।"

'मेरा खयाल है कि उसके लौटने के पहले ही फैसला कर लेना बेहतर रहेगा, ताकि वह जिला केंद्र मे इस मामले को भी साथ ही पेश कर सके। तब शायद वे उसे अनाज भी जल्दी दे दें। नही तो उसे इसी के लिए फिर जिला केंद्र का चक्कर लगाना पड़ेगा। और अगर कई दिन बाद उनके पास गये, तो वे कहेगे–'इतने दिन मे क्या कर रहे थे? अब वक्त नही रहा है–कुछ भी हो बुआई नही हो पायेगी।''

'लेकिन दौलत के बिना मै अकेला सभा नही बुला सकता," कुछ सोचने के बाद करी ने निश्चय किया।

"क्यो नही? खूब अच्छी तरह से बुला सकते हो! दौलत की गैर मौजूदगी मे तुम उसकी जगह हो। और फिर प्रबंध समिति के सदस्यो का बहुमत भी पक्ष मे है। तुम इसके हक मे हो। बेवा जुमुर्रद हक मे है। हकीम हक मे है। नियाज और बूढ़ा करीम खिलाफ भी हो, तो भी बहुमत हमारा ही है। फिर बोमारेको भी है ही। बुआई के क्षेत्रफल को बढ़ाने के वह हमेशा ही हक मे है, इसलिए उससे तो पूछने की भी जरूरत नही। उसके बिना भी हमारा ही बहुमत है।'

"लेकिन हम दौलत का इंतजार क्यो न करे?' करी ने आग्रहपूर्वक कहा।

क्योकि बहुत देर हो जायेगी। मै तुमसे कह रहा हू। लेकिन ठीक है–जैसी तुम्हारी मरजी, वैसा करो,' रहीमशाह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। "तुम मेरी बात को याद करोगे।"

"देर हो जायेगी? करी सोचने लगा। "रुको जरा, रहीमशाह! तुम्हे जाने की ऐसी क्या जल्दी पड़ी हुई है? शोरबा तुम खा ही चुके हो, इसलिए अब जल्दी क्या कर रहे हो? जानते हो, मै क्या सोच रहा हू?'

"क्या सोच रहे हो?"

"म इस तरह सोचता हू – रहीमशाह पहले इस सामूहिक फाम का प्रधान था। सोवियत सत्ता ने उसे अपने पद से हटा दिया। इसका मतलब है कि वह खराब प्रधान था। हो सकता है कि इस वक्त वह मुझे भी खराब राय दे रहा हो।"

"जानते हो, मैं तुमसे क्या कहूगा, करी?"

"क्या?"

"म यह कहूगा – जब मैं सामूहिक फाम का प्रधान था, तब मैं अहमक था। म इस बात को नही मानता था कि अगर सोवियत सत्ता कुछ कहती है तो वह सच ही कहती है, दहकानो के भले के लिए ही कहती है। म सोवियत सत्ता पर विश्वास नही करता था, मुझे बूढा पर विश्वास था। म अपनी अक्ल का इस्तेमाल नही करता था। लेकिन सोवियत सत्ता ऐसे अहमको को पसद नही करती, जो अपने दिमाग का इस्तेमाल नही करते। इसलिए सोवियत सत्ता ने मुझे अपने ओहदे से अलग कर दिया। अब करी, तुम प्रबध समिति के सदस्य और फाम के उपप्रधान हो, जबकि मैं बस, सीधा-सादा सामूहिक किसान ही हू। म अपने दिमाग का इस्तेमाल करता हू, जबकि तुम औरो के दिमाग का उपयोग करते हो। सोवियत सत्ता ऐसे लोगो को पसन्द नही करती जो अपने दिमाग का इस्तेमाल नही करते। करी, मैं तुमसे और कुछ नही कहूगा। मैं और किसानो से बात करूगा और तुम कल सुबह मुझे बताना कि तुम सभा बलाओगे या नही।"

'अरे, रुको जरा, रहीमशाह! क्या महत्वपूर्ण सवालो का इसी तरह से फसला किया जाता है? तुम्हे ऐसी क्या जल्दी पडी है? अरे, रुको, खाना यही खाओ। लो, यह लो और एक नान " करी ने छोटी-सी सदूकची म दस्तरखान मे अच्छी तरह से लिपटी हुई नानो मे से एक निकाली और बाकी को जल्दी से छिपा दिया।

कई दहकानो ने घर मे प्रवेश किया और अभिवादन के तौर पर सीने से हाथ लगाकर कालीन पर बैठने लगे। ये लोग आठो टुकडियो के नायक थे, जो कल के काम के बारे मे हिदायते लेने के लिए आये थे – वे जानना चाहते थे कि बुआई कहा से शुरू की जाये। टुकडी-नायको के पीछे-पीछे बेवा जुमुरुद भी घुस आई। मिनट भर बाद ही नियाज हसनोव दरवाजे मे आ खडा हुआ। कमरा लोगो से भर गया।

दौलत के दाये हाथ, नियाज ने ग्रान से करी असमजस मे पड गया। वह मन ही मन इस बात पर अफसोस करन लगा था कि उसने रहीमशाह को जान क्या नही दिया, लेकिन पीछे हटने का वक्त निकल चुका था और करी को बातचीत बद करते और इस तरह रहीमशाह को यह दिखाते शरम आ रही थी कि वह–सामूहिक फाम का उपप्रधान–नियाज के आ जान से डर गया है। इससे रहीमशाह की इस पनी फब्ती की पुष्टि ही होती कि वह–करी–औरो के दिमागो का इस्तेमाल करता है।

वह शाति के साथ अपनी दाढी सहलाता रहा और बातचीत के टूटे सूत्र को फिर पकडकर ऐसी ऊची आवाज मे बोला कि बहरा नियाज भी सुन सके

'मान लो कि म बहुमत की बात मान लता हू और दौलत की आपसी तक ठहर बिना सभा बुला लेता हू। लेकिन इसके बाद? अब अशाति का समय है–तरह-तरह की अफवाह फैल रही है अशाति के समय मे हर कोई यही चाहता है कि खिलाफ म ज्यादा से ज्यादा अनाज रहे कपास को तो खाया जा सकता नही। सोवियत सत्ता को कपास की जरूरत है लेकिन दहकानो को तो अनाज ही चाहिए। अगर दहकान थाडी कपास पैदा करके न दे पाय ता क्या इससे सोवियत सत्ता गरीब हो जायेगी?

रहीमशाह ने सभी लोगो पर एक निगाह दौडाई और करी को जवाब देने के साथ ही साथ हर किसीको सबोधित करते हुए कहा

'यह कह रह हु कि दहकानो को अनाज चाहिए और सोवियत सत्ता को कपास। लेकिन जब यह दूकान जाते ह, तो इनका पहला सवाल क्या होता है? यह पूछते हैं–आपके पास कपडा है?' और अगर कपडा न हो ता नाराज हो जाते हैं। और इनका नाराज होना वाजिब भी है, क्योकि इन्हे चोगा चाहिए और इनके बेटे को भी चोगा चाहिए और इनके दूसरे बेटे का भी चोगा चाहिए और इनकी बीवी का भी चाहिए। करी, अगर तुम जरा सी कपास न बो पाओ, ता उसस सोवियत सत्ता गरीब नही हो जायेगी। लेकिन हा, अगर हर दहकान ही जरा-जरा सी कपास न पैदा कर पाया, ता हर किसीका अपने चोगे के [illegible] की जरा कमी हो जायेगी। और करी, [illegible] । सत्ता [illegible] बेचत समय यह कहा, ता तुम क्या कह [illegible] । तुम्हे [illegible] कपडा, मगर

करी, माफ करना, यह जरा कम है—एक आस्तीन का है, इसलिए इस साल तुम एक ही आस्तीनवाला चोगा पहन लेना।

सभी टुकड़ी-नायक जोर जोर से हंसने लगे।

"एक आस्तीनवाला चोगा नहीं पहना जाता," करी बोला। "तुम बड़ी चतुराई की बात करते हो, रहीमशाह। अगर तुम ऐसे ही चतुर हो तो जरा एक पहेली बुझाओ। पहले हम लोग कपास नहीं उगाते थे फिर भी बाजार में जितना चाहते उतना कपड़ा खरीद सकते थे जब कि अब हम कपास भी पैदा करते हैं, लेकिन बाजार में कपड़ा कभी काफी नहीं होता। अब यह बताओ कि इसकी क्या वजह है? तुम तो सभी कुछ जानते हो।

"करी, बदले में तुम मेरी एक पहेली बुझाओ," रहीमशाह ने कहा, "अगर पहले जितना चाहो, उतना कपड़ा खरीदा जा सकता था, तो क्या वजह थी कि जब से मैं तुम्हें जानता हूं, तुम हमेशा वही एक फटा-पुराना चोगा पहने घूमते थे और तुम्हारी बीवी भी फटी पोशाक पहने रहती थी और तुम्हारे बच्चे चिथड़े पहने फिरा करते थे?"

"यह कोई पहेली नहीं है। मैं तो हमेशा से ही गरीब था और आज भी गरीब ही हूं।"

"फिर भी अगर अब तुम अपना सदूक खोलकर देखो तो तुम पाओगे कि उसमें तुम्हारे तीन चोगे हैं, तुम्हारे हर बेटे के दो-दो चोगे हैं और तुम्हारी बीवी के पास भी बहुत कपड़े दो से ज्यादा ही पोशाकें हैं।"

"पहले यह देखो कि तुम्हारे सदूक में कितना माल है, औरों के सदूकों में बाद में ताका-झांकी करो," करी ने गुस्से में भरकर कहा।

टुकड़ी-नायक ठहाका मारकर हंस पड़े। सभी जानते थे कि रहीमशाह ने कंजूस करी के मर्म पर बड़ी सफाई से चोट कर दी है।

"तुम्हारी बात सुनकर तो, करी, हैरानी होती है," बेवा जुमरद ने बीच में पड़ते हुए कहा, "तुम प्रबंध समिति के सदस्य हो और फार्म के उपप्रधान भी हो, लेकिन तुम किसानों की समझ में न आनेवाली बात समझाने के बजाय उलटे औरों से बेवकूफी भरी पहेलियां बुझवा रहे हो। अगर तुम इतने ही परेशान हो तो मैं तुम्हारी पहेली बुझा देती हूं। करी जब तुम जवान थे, तो तुम भरपेट नहीं खाते थे, फटा-पुराना चोगा पहने घूमते थे और दस साल तुमने बैल की तरह काम किया, क्योंकि तुम काबीन

जोड़ना चाहते थे, जिससे तुम घर में बीवी ला सको और लड़के पैदा कर सको, ताकि तुम्हारे मरने के बाद कोई तुम्हारे नाम पर सूरा पढ़नेवाला भी रहे। बाद में जब तुमने काबीन दे दिये और घर में बीवी भी ले आये और बाल-बच्चेदार आदमी हो गये, तब भी तुम्हें गरीबों की तरह ही रहना पड़ा, लेकिन तुम्हें शायद उन दस बरसों का अफसोस नहीं है, जो तुम्हें काबीन के पीछे जाया करने पड़े, क्योंकि बिना बीवी-बच्चेवाला आदमी तो मर्द भी क्या कहलायेगा। अब सोवियत सत्ता ने काबीन की जरूरत खत्म कर दी है और तुम्हारे बेटे के लिए यह जरूरी नहीं रहा है कि घर में बीवी लाने के लिए उसे भी तुम्हारी तरह काम करना और भूखा रहना पड़े। लेकिन सोवियत सत्ता कहती है, 'पुराने वक्त में हमारे देहकानों को जो जिंदगी जीनी पड़ती थी, क्या उसे असली जिंदगी कहा जा सकता है?' और सोवियत सत्ता देहकानों से कहती है, 'अभी कुछ बरस और आपको कुछ चीजों के बिना रहना पड़ेगा—बेशक, पहले आपको जितनी किल्लत का सामना करना पड़ता था, उसके मुकाबले बहुत कम। फिर भी, इस वक्त आप जो तकलीफ उठायेंगे वह बेकार नहीं जायेगी। वह समय आयेगा, जब उसके बदले आपको एक नई, अच्छी जिंदगी मिलेगी। तो, करी, अब मेरे इस सवाल का जवाब दो—तुम्हारा एक बीवी की खातिर काबीन देने के लिए दस साल तक हर चीज के बिना रह लेना तो वाजिब था, लेकिन अब एक नई, अच्छी जिंदगी की खातिर काबीन देने के लिए तुम्हारा एक और चाय और कुछ और चीनी के बिना रह जाना वाजिब नहीं है? और जो देहकान तुम्हारी तरह करे क्या उसे समझदार कहा जा सकता है? खैर, करी, अब हम सबको यह बताओ—हम यही जानने के लिए आये हैं—कि तुम सभा बुलाओगे या नहीं। क्योंकि अगर तुम नहीं बुलाओगे, तो हम अपने आप बुला लेंगे।'

'आप्फोह, कैसे जल्दबाज लोग हो तुम सब!" करी ने सिर हिलाते हुए कहा। 'किसने कहा है कि मैं सभा बुलाना नहीं चाहता? रहीमशाह और मैं अभी इसी बात पर विचार कर रहे थे कि कब सभा बुलाना सबसे अच्छा रहेगा, जिससे लोगों को काम छोड़कर न आना पड़े और मैं उसके कल बुलाये जाने के खिलाफ था। मेरे खयाल में सभा आज ही करना ज्यादा ठीक रहेगा

आखिरी बाजी

चट्टान के कटाव मे घुटना तक पानी मे खडे मजदूर चट्टानी स्तर के पीले टुकडो को डोलो मे भर रहे थे। झटके के साथ घूमते हमाले की चाल की वे मुश्किल से ही बराबरी कर पा रहे थे। कमर तक नगे उनके बदना पर पसीने की धारे बह रही थी। एक महीने पहले निमाणस्थली पर काई भी काम की इतनी प्रचड गति की कल्पना भी नही कर सकता था। उन दिनो काम की रफ्तार बहुत ही धीमी थी—इस बात को हर काई अब समझ रहा था और इस महीने के मुकाबले पिछले महीने के काम के आकडे अब बेहद उपहासास्पद लगते थे। उन दिना जिन लोगा को तूफानी मजदूर होने के नाते बोनस दिया गया था—उन्हे तो अब इस बात का स्वीकारते भी जसे शरम आती थी। तट के साथ-साथ थोडी दूरी पर तैनात तीस ट्रक्टर पानी पप कर रहे थे। ट्रक्टरा के इजनो की बधी हुई धड धड जसे ताल बाध रही थी और काम उसी की रफ्तार के साथ चल रहा था—नीचे झुको! सीधे हो! डोल म डालो!

हर चार मिनट म एक बार स्किप हाइस्ट तूफानी गडगडाहट के साथ नीचे आता और फिर पूरी तेजी के साथ ऊपर चला जाता। जल्दी जल्दी मे बन धनुषाकार माग पर होकर खाली डिब्बे तेजी से नीचे आते, लदते और गियरो की कच-कच के साथ फिर ऊपर चले जाते।

आखें बद किये मोरोजोव कान लगाकर काम की बधी हुई आवाज को सुन रहा था। लगता था कि सभी कुछ ठीक ठीक चल रहा है। अगर कोई अप्रत्याशित दुघटना ही न हो जाये, तो पार लग जायगे। तभी उसके कान खडे हो गये। तटबध पर अद्रेई सावेल्येविच उसीकी तरफ भागा हुआ आ रहा था। मोरोजाव के पेट मे एक हौल सी उठ गई।

"क्या हुआ ?"

पीला पडा अद्रेई सावेल्यविच अपनी नाक को अधीरतापूवक फडका रहा था।

"हा, क्या बात है ?"

'अभी अभी क्रस्ता-ताग से टेलीफोन आया है। साथी निमाण प्रमुख आपको बुला रहे ह। मक ६ खडा हा गया है।"

"क्या मतलब ?"

'ऑय्ल पप का पिस्टर फट गया है, मेन श्र शैफ्ट जल गया है। और बेयरिंग साले न जाने कहां गये।'

मोराज़ोव को लगा कि जैसे उसका खून चेहरे पर आ गया है।

आप यह तो समझते होंगे कि हमारे लिए इसका क्या मतलब है?"

अंद्रेई सावेल्येविच ने अपनी नाक को फिर फरकाया। मोराज़ोव ने उसके विवर्ण होठों की तरफ देखा।

"लेकिन मैं इस पर चिल्ला किसलिए रहा हूं?' उसने सोचा। "इसका उससे क्या वास्ता? दुर्घटना इसके सक्शन पर तो हुई नहीं है "

फौरन कीश को बुलाओ अपने पर काबू करते हुए उसने कहा। और एक्स्केवेटर चालकों को गिरफ्तार करवा दीजिये! फोरमैन को टेलीफोन कीजिये।

'माथी कीश वहां पहुंच चुके हैं। वह डिजल इंजन का मुआयना कर रहे हैं। एक्स्केवेटर चालकों का कहना है कि आइल पाम्प में एक कील थी। उनका खयाल है कि किसीने जान बूझकर

और उन्होंने किस एक्स्केवेटर के पास आने दिया? आप इस बकवास को मेरे आगे किसलिए दुहरा रहे हैं?

हो सकता है कि मजदूरों की टुकड़ी में से किसीने?'

डिज़ल का जिम्मेदार कौन है—टुकडी या एक्स्केवेटर चालक? मोरोज़ोव गुस्से में चिल्लाया। दोनों चालकों को गिरफ्तार करवा दो!"

'ठीक है।'

मोरोज़ोव कार में बैठ चुका था। पहाड़ की तलहटी में उस तेल में सना कीश मिला।

'तो?

'सारा इंजन तहस नहस हो गया है ' कीश ने धीरज के साथ अपने हाथों को रूमाल से पोंछा लेकिन वे कांप रहे थे। 'इंजन के बन्द हो जाने तक वे उसे चलाते रहे। मरम्मत में कम से कम एक हफ्ता लग जायेगा।"

'मार डालूंगा! सत्यानाश करनेवालो! हरामजादो!' पीछे से फटी हुई आवाज़ में कोई गरजा। कीश और मोरोज़ोव ने अनायास ही घूमकर देखा। दुबला-पतला मालत्सेव दोनों चालकों को—जो बिलकुल भी

विराध नहीं कर रहे थे — कंधे पकड़कर भटक रहा था। "हरामजादे! एक्स्केवेटरा के साथ तुमने क्या किया है?"

उसने दाना चालका को छोड़ दिया और मारोज़ोव की तरफ मुड़ा, मानो कुछ कहनेवाला हो। अचानक उसका जबड़ा कपकपाने लगा। वह पलटकर एक पत्थर पर ढह गया और चेहरे को हाथों में दाबकर रो पड़ा।

"कोई उपाय है?" कौश की तरफ न देखते हुए मारोज़ोव ने निराश स्वर में पूछा।

'उपाय' कौश ने सोच में डूबते हुए दुहराया। 'काश कि हमारे पास इस जगह तटबंध को बहाने और जमीन को खानी रखने के लिए दो हाइड्रामानीटर होते तो हम एक सौ तीसवीं चौकी से एक ब्यूसाइरस १४ यहां ला सकते थे। इस ऊंचाई से वह काम नहीं कर सकता — उसका हमाना बहुत छोटा है। लेकिन यह मैं नहीं कह सकता कि हम वर्कशाप में हाइड्रोमानीटर बना सकते हैं या नहीं — और सो भी इतनी जल्दी

वह बात खत्म नहीं कर पाया। उसके और मोरोज़ोव के बीच में अचानक गालस्तेव की लंबी आकृति आ खड़ी हुई।

'जरूर बनाया जा सकता है, साथी कौश! अगर नहीं बनाते, तो मैं हरामजादों के सिर तोड़कर रख दूंगा! आप उन्हें बस यह बता दीजिये कि यह — यह हाइड्रा — बनाया कैसे जाता है। वे निश्चय ही बना देंगे! चलिये, अभी वर्कशाप चलिये!

जरा रुकिये साथी गालस्तेव, कौश मोरोज़ोव की तरफ मुड़ा। 'कोशिश तो हमें करनी ही होगी यह बात साफ है। कोई और हल हो भी नहीं सकता। आखिर हाइड्रामानीटर कोई ऐसी जटिल चीज भी तो नहीं है। अगर वे तीन सिलिंडरवाला पंप नहीं बना सकते तो सादा तो बना ही सकते हैं। चार ऐटमॉस्फियर दाब भी काफी रहेगा। चलिये, फुशोनी से मिलते हैं। कोशिश करने में तो कोई हर्ज नहीं है।"

वे तटबंध से उतरे और कार में जाकर बैठ गये।

हाइड्रोमानीटर के पक्ष में एक और बात यह है' कौश ने बात जारी रखी, 'कि वह बांध को पानी से तर करके मजबूत बनायेगा। हाइड्रामानीटर का बुनियादी सिद्धांत असल में बहुत ही सहज है — दस इंची सैक्शन और सात इंची डिसचार्ज का सेंट्रीफ्यूगल पंप। यह चार ८ मी की धार दे सकता है, जो तटबंध को बहाने के लिए काफी है।

सिलिंडर के पप से दस ऐटमास्फियर या उससे भी ज्यादा दाब हासिल किया जा सकता है। इतने दाब की धार हमारी इस चट्टान को चाकू की तरह से काट देगी। लेकिन बेशक, यह ज्यादा पचीदा धधा है "

कार इतनी तेज रफ्तार से जा रही थी कि ड्राइवर के साथ बठा गालत्सेव उनकी बातचीत के टुकडो को मुश्किल से ही सुन पा रहा था।

मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख, इजीनियर क्रुशोनी के पहले शब्दों से ही ज़ाहिर हो गया कि हाइड्रोमानीटरों और उनके काम की उसे पूरी जानकारी है। मोरोज़ोव के दिल का वज़न उतर गया। उसने पूछा कि इस बात को ध्यान म रखते हुए कि बेकार जानेवाला हर दश हर घटा कितना विनाशक है, वर्कशाप से पहले दो हाइड्रोमानीटर तैयार होकर कब मिल सकते हैं? लेकिन इस पर इजीनियर क्रुशोनी ने हताशा से कधे मचका दिये और व्यथित होकर बोला कि फाउड्री जिस तरह का ढलवा कच्चा लोहा तैयार कर रही है, कामचलाऊ किस्म के भी काम और अच्छे किस्म के इस्पात की तो बात ही क्या, अच्छे ग्रेड तक का जैसा नितात अभाव है, उसके दृष्टिगत वर्कशॉप के लिए हाइड्रोमानीटर तैयार करना सर्वथा असभव है।

मोरोज़ोव खडा मिनट भर इजीनियर के हताशाग्रस्त सुघड चेहरे की तरफ देखता रहा।

'मेरे खयाल से आप बात को पूरी तरह से समझ नहीं रहे हैं, साथी," उसने फटी हुई आवाज म कहा। 'हमारा सारा निर्माण-कार्य खतरे म है। हम खेतो की समय पर सिचाई नहीं कर पायेंगे।'

जी नहीं मैं अच्छी तरह से समझ रहा हू,' विषण्ण मुसकान के साथ क्रुशोनी ने जवाब दिया। 'लेकिन मैं आपको धोखे म तो नहीं रख सकता। हमारे पास जैसा सामान है, उससे बना हाइड्रोमानीटर पहले परीक्षण मे ही फट जायेगा।'

इवान मिखाइलोविच! ' गालत्सेव बीच ही म बोल पडा, आप इस हरामज़ादे को क्या समझा रहे है! क्या ऐसा प्रतिक्रांतिकारी कुछ समझ सकता है? भला इन हरामियो को चक्का भेजे बिना कोई काम लिया जा सकता है! चलिये, शॉप मे चलते हैं! म कारीगरो से बात करता हू। वे बना देंगे! कसम से बना देंगे!'

"हा, लगता यही है कि आपसे दूसरी तरह म बात की जानी चाहिये,"

मोरोजोव दात भीचता हुआ बोला और घबराये हुए अुशोनी को अलग धकेलकर वक्शाप मे चला गया।

वक्शॉप मे एक फौरी सभा की गइ। मोरोजोव ने सक्षेप म स्थिति पर प्रकाश डाला और कीश ने हाइड्रोमानीटर के सिद्धात और बनावट क बारे म बताया। पता चला कि वक्शाप म अच्छी किस्म का इतना इस्पात मौजूद है कि कम से कम पाच हाइड्रोमानीटरो की टोटिया बनाई जा सके। स्वय मजदूरो के प्रस्ताव पर खुद नली को लोहे से बनाने का निश्चय किया गया। श्रेष्ठतम तीन टुकडिया ने आपस म प्रतियोगिता करते हुए अगली सुबह तक एक एक हाइड्रोमानीटर बनाकर देने का जिम्मा लिया। उन्हे कीश की देखरेख मे काम करना था, जो काम का स्वय निदशन करन के लिए वही रहा।

सारी आवश्यक व्यवस्था कर लेने के बाद मोरोजोव कीश को क्षण भर के लिए अलग ले गया

"अुशोनी को काम से निकाल दीजिये! जाये वह शैतान की खाला के पास!"

"रहने भी दीजिये, इवान मिखाइलोविच, काम खत्म होने के तीन हफ्ते पहले नया वकशाप प्रमुख नियुक्त करने का क्या लाभ? इतना समय तो उसे काम की जानकारी पाने म ही लग जायेगा नतीजे के तौर पर वक्शॉप को ही नुक्सान उठाना पडेगा।"

"ठीक है, जैसी आपकी मरजी। लेकिन इस सूरत म आपको मैकेनिकल डिपाटमट को अपनी निजी निगरानी मे लेना होगा।'

"यह तो कहने की जरूरत ही नही "

वक्शाप स निकलत समय मोरोजोव का एक बार फिर नुशानी से सामना हुआ। इजीनियर के सुदर, चितामग्न चेहरे पर एक उदास मुसकान थिरक रही थी। मुसकान मानो कह रही थी, "बेशक, लोगो की भावनाओ को इस तरह से उभारकर मजदूरो से कुछ भी करवाया जा सकता है, लेकिन उसका परिणाम शोचनीय ही रहेगा।" मोरोजोव उसके पास से इस तरह से निकल गया, मानो उस देखा ही न हो।

मकेनिकल डिपाटमेट के तूफानी मजदूरो ने अपने कौल को पूरा किया। रात के भीतर बने तीनो हाइड्रोमानीटरो का अगले दिन सुबह ठीक नौ बजे

परीक्षण किया गया। रात की पारी के सभी लोग वहा मौजूद थे–अपनी अपनी बारकों मे जाने के बजाय वे सामने के किनारे पर जमकर खडे हो गये। यह भयप्रद समाचार सभीने सुन लिया था–मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख ने कह दिया है कि इन चीजो के बने हाइड्रोमानीटर दबाव को नही सह पायेंगे और परीक्षण के दौरान ही फट जायेंगे।

शातचित्त, किंतु कुछ विवर्ण कीश ने और जद पड़े मोराजोव ने हर चीज़ की बारीकी से जाच की। गालत्सेव, जो रात भर के दौरान और भी ज्यादा लबा हो गया लगता था, मजदूरो के बीच घूमता और होज पाइपो पर ठोकर खाता हठपूर्वक वही जमा रहा। मोरोज़ोव ने कईबार उसे वहा से चले जाने और बाधा न डालने को कहा। गालत्सेव कुछ अस्पष्ट सा जवाब बुदबुदाकर वहा से चला जाता और अगले होज पाइप के पास जाकर ठहर जाता। उसका खयाल था कि एक ऐसे मामले में, जिसमे कुछ मजदूरो की जान खतरे मे पड सकती थी, ट्रेड-यूनियन समिति के सचिव के नाते यह उसका कर्तव्य है कि वह विदेशी उपन्यासो मे डूबते जहाज़ के कप्तान की तरह खतरे की जगह पर ही जमा रहे।

आखिर कीश ने हाथ उठाकर संकेत दिया, ट्रैक्टर इजनो ने काम करना शुरू कर दिया और पानी की तीन जबरदस्त धारे मशीनगन की तडतडाहट जैसी आवाज़ के साथ इस्पात की टोटियो से तीन विशाल अजगरो की तरह से फूट पडी। सभी चौक पडे। पानी की मोटी मोटी धारे तटबध की धनुषाकार पाठ पर जाकर गिरने लगी और वहा से मिट्टी एक गहरी दरार छाडती हुई बहने लगी। गर्जन करता पानी दरार मे हठपूर्वक घुसता चला गया। अचानक मिट्टी की यह चौडी पच्चर कापने लगी और ढहकर धूसर मिट्टी के एक भरने के रूप मे बहने लगी। किले चढे भित्तिपातक की तरह पानी ने और नीचे प्रहार करना शुरू कर दिया। धीरे धीरे प्रहार-क्षेत्र के भीतर सारा ही तटबध ध्वस्त होने लगा, खिसकने लगा और अत मे एक चिपचिप द्रव्य के रूप मे आगे की समतल जगह पर फैल गया।

मोरोज़ोव ने माथे का रूमाल से पाछा और धीरे धीरे कटाव मे उतर गया।

साथी ऊर्तावायेव! आपसे मिलने के लिए कोई आया है। कहता है कि बहुत दूर से आया है।"

"आता हू अभी।"

ऊर्तावायेव ने लोहे की सीढी पर पैर रखा और ऊपर चढने के पहले, नहर-मुख की निर्माणस्थली पर एक आखिरी नज़र दौडाई। आखिरी चादरे उतार दी गई थी। अतिकाय मुखावरणा जैसे धनुषाकार स्लूस कपाट नियत्रण चक्का को घुमाने के साथ ज़रा भी चू-चर किये विना उठ गिर रहे थे। पानी जब कक्रीट स्तभो के बीच की जगहो मे हाकर वहने लगेगा, तो गिलोटिन के टेढे फलो की तरह नीचे आते लौह कपाट नहर की विशाल गरदन को नदी से जुदा कर देगे।

ऊर्तावायेव सीढी पर चढकर किनारे पर आ गया। नहर के मुह मे ठुसी और किनारो के बराबर कटी हुई छ मजिली इमारत जितनी ऊची कक्रीट की यह सरचना यहा से एक छाटे, एकदम यथाथ मॉडल जैसी लग रही थी। दोनो किनारो का पुल के रूप म जोडती डामर चढी छत पर भाति भाति के काठ-कबाड और लकडी स लदी गाडिया की एक लबी कतार नहर की दूसरी तरफ से आ रही थी। निमाणस्थली अतिथियो की अगवानी की तैयारी मे अपने रूप को सवार रही थी अनावश्यक सामान को पक कर रही थी और कूडे कचरे को हटा रही थी। अगले दिन काफर बाध के उडाये जाने के साथ नहर का औपचारिक उदघाटन होनेवाला था।

ऊर्तावायेव धीरे धीरे किनारे स उतरा। पहली बार उसे अफसास के साथ यह खयाल आया कि यह निर्माण-काय पूरा हानेवाला है, जिसने उससे इतना श्रम करवाया है, इतनी तकलीफें दी ह और इतनी राता की नाद छीनी है। आसन्न बिछोह का सामीप्य उसे बहुत कटु लगने लगा।

कौन वुला रहा था मुझे?"

'सफेद इमामा बाधे वह बूढा। कहता है कि खासकर आपसे ही मिलने के लिए आया है।"

ऊर्तावायेव फीका पडा नीला चोगा पहने सफेद दाढीवाले बूढे की तरफ बढा और अपनी आखो पर अविश्वास करता हुआ ठिठक गया।

"अब्बाजान!'

गाल को गाल से सटाकर वे एक दूसरे से चिपट गये। ऊर्ताबायेव ने स्नेहपूर्वक बूढ़े की पीठ को थपथपाया।

कहिये, अच्छे तो हैं? बहुत अच्छे! मुझे ढूंढ कैसे लिया? बुढ़ापे मे मुझे देखने के लिए आ गये, है न? बहुत अच्छे वक्त पर आये आप–उत्सव के मौके पर ही। चलिये, घर चलकर चाय पीजिये।"

उसने बूढ़े को, जो बिलकुल उसकी बगल तक आता था, बेटे की तरह अपने से चिपटा लिया और उसे लेकर बस्ती की तरफ चल दिया।

ऊर्ताबायेव के कमरे मे एक मेज, दो कुरसिया और एक पलग था। बूढ़े ने दहलीज से ही उसके सामान पर असतोष भरी नजर दौडाई और दीवार के पास फर्श पर ही बैठ गया।

'क्या, कुरसी पर बैठना नही पसद है?' ऊर्ताबायेव मुसकराते हुए बोला। आप जैसे थे, वसे ही रहे। खैर, कोई बात नही, चाय मै आपको बिलकुल एशियाई तरीके से पिलाऊगा।'

उसने दीवार से कालीन उतारकर फर्श पर बिछा दिया, चायदानी, दो नान और कुछ सूखी खूबानिया लेकर आया और कालीन के दूसरे सिरे पर बैठकर उसने सामान को बूढ़े के सामने रख दिया।

लीजिये, पीजिये! हरी चाय है यह। मैं भी आपके साथ ही पिऊगा। खाने के लिए मेरे पास और कुछ नही है। शायद कही कुछ सॉसेज हो, पर वह तो सूअर का गोश्त है न, इसलिए आप खायेगे नही। बाद मे भोजनालय से आपके लिए खाना ले आऊगा। खैर, सुनाइये, क्या खबर है? यहा कैसे पहुच गये?

बूढ़े ने दाढ़ी को हाथो से सहलाया, चाय का घूट लिया और नान का टुकडा लेकर उसे काफी देर तक अपने बचे हुए दातो से चबाता रहा।

'अब मैं ज्यादा नही जिऊगा," निवाले को आखिर निगल लेने के बाद उसने कहा। मरने के पहले मै जियारत करने गया था। वापसी पर सोचा कि अपने बेटे से भी मिलता चलू। मैने सुना था कि वह बहुत बडा आदमी है और आला हाकिमो के साथ रहता है। सोचा कि मुझे निकाल तो देगा नही।'

"तो यही ढोग रचाने घूम रहे हैं? आपको अपनी ये जियारतगाह मिला कहा? क्या अब भी बाकी रह गई है? मेरा तो खयाल था कि नई सड़क बनाने के लिए आपकी सारी दरगाहो को साफ कर दिया गया है।"

"म पाक पहाड की ज़ियारत करने गया," बेटे के शब्दो को खामोशी से सुनने के बाद बूढे ने अपनी बात जारी रखी। दीनदारा ने मुझे वहा पहुचा दिया, मै खुद तो वहा तक पहुच नही सकता था। पहाड के नीचे चार चार पैरोवाली मशीनें चल रही ह। वे पहाड को काट रही है धुआ उगल रही है और कुत्तो की तरह भौक रही ह। मुझे रोना आ गया, मन चोगे के दामन मे मुह छिपा लिया और वहा से भाग आया "

"अच्छा, तो आपको कस्ता-ताग जाने का भी वक्त मिल गया। आपको देखकर तो यही लगेगा कि एक किलोमीटर भी चले, तो मुह के बल गिर पडेंगे—आप इतने बूढे और कमजोर हो गये ह। लेकिन आप तो दुनिया भर मे घूमते फिर रहे है।"

"मैने कुछ दीनदारा से पूछा, पहाड के ऊपर यह दरगाह क्या बिगाड रही थी?' और उन्होने जवाब दिया, 'चूवेक का रहनेवाला सयद उस्तामायेव नाम का एक मुसलमान इन मशीनो को यहा लाया और उसने उन्हें पहाड को काटने का हुक्म दिया। दिन रात वे उसे काटती रहती ह और वह मुह मे सिगरेट दबाये कमर पर हाथ धरे खडा रहता है और उन्हें और भी गहरा काटने का हुक्म देता रहता है।' और लोगो ने मुझसे पूछा, 'तुम कहते हो कि तुम भी चूवेक के ही रहनेवाले हो। क्या तुम इस आदमी को जानते हो?' मने मुह घुमा लिया और झूठ कह दिया—परवरदिगार इसके लिए मुझे माफी दे। 'नहीं,' मैन कहा मै चूवेक म ऐसे किसी मुसलमान को नही जानता, जिसे पाक जगहो को नापाक करते शरम न आये।'"

'तो क्या अव्वाजान, आप मुझे फिर मुसलमान बनाने के लिए आये है? छोडिये भी। बेहतर हो कि आप चाय पी ले, नही तो यह ठडी हो जायेगी।"

"हा मने नही सोचा था कि मुझे जिदगी मे इतना शरमिंदा होना पडेगा। तुम्हे मदरसे म पढने के लिए बुखारा भेजने के लिए सारे खानदान को कितनी मुसीबत उठानी पडी थी। तुम्हारे चाचा ने तुम्हारे सफर के लिए कानी कौडी भी नही दी थी। वह बोला, 'पैदल पहुच जायेगा। भले लोग खाना खिला देंगे।' घर पर जो कुछ भी था, वह हमने तुम्हारे हाथ पर रख दिया था। मैने सोचा था कि वह दिन देखूगा, जब तुम बुखारा से मजहबपरस्त और दानिशमद मुसलमान बनकर वापस आओगे सोचा था कि तुम इशान बनकर लौटोगे और सारे खानदान का नाम रोशन करोगे

लेकिन तुझ शैतान ने बिगाड दिया। तूने मदरसे मे भागकर बाप दादा का नाम डुबाया। तू अधपढा मुल्ला बनकर आया और खानदान को और गाव को तूने कलक लगाया। हमारे यहा मसल है न,—खुदा दीनदारो पर जितनी भी मुसीबते डालता है, उनमे चार और सभी से खराब है—चिल्लड, पिस्सू, अफसर और अधपढा मुल्ला।"

"आपकी ये मसले पुरानी पड गई है, अब्बाजान। हमने सारे अफसरा का खात्मा कर दिया है, अब हम लोगा को मुल्ला बनाते नहा। हा, चिल्लड और पिस्सू अभी रह गये है। लेकिन अगर आपको मसले इतनी पसद है, तो एक मैं भी सुनाता हू। याद है, बाबाजान मुल्लाओ के बारे म हमेशा क्या कहा करते थे—मुल्ला सब असल मे एक ही आदमी होते है और यह एक आदमी भी नही—औरत हाता है। आप दीनदार मुसलमान है, भला आप यह कैसे चाह सकते थे कि आपका बेटा औरत बने? छि छि! यह तो मेरी खुशकिस्मती थी कि मैं वक्त रहते मदरसे से भाग निकला और इसी लिए मैं कुछ करने लायक भी हू।"

'तुम तो हमेशा से ही बदजबान रहे हो। बचपन मे जब तुम नगे ही घूमते थे, तब भी अपनी मा से बदजबानी करते थे मुझे वह वक्त याद है जब तुम चूबेक मे नई हुकूमत के प्रतिनिधि बनकर आये थे। हुकूमत सब खुदा से ही मिलती है चाहे वह कभी कभी उसे हमारे गुनाहा की सजा के तौर पर भी भेज देता है। सारा किशलाक यही सोच रहा था—'बूढे उर्ताबायेव का बेटा यहा नई हुकूमत का नुमाइदा है इसलिए हमे अब कोई डर नही है। हमारी तरफ से बोलनेवाला भी कोई है और वह हम पर अयाय नही होने देगा।' और तुमने किशलाक म आने के अगले दिन ही दीनदार मुसलमाना से उनकी जमीन-जायदाद छीन ली और उन्हे दूर दराज इलाका मे भेज दिया और हमारे किशलाक को सारे जिले मे बदनाम किया।"

'उफ, अब्बाजान! सारी जिदगी आप गरीब किसान रहे, लेकिन अब कुलाका की तरह बात कर रहे है।'

'मै यहा यह देखन के लिए आया था कि मेरा यह बेटा आला हाकिम बनकर कसे घूमता है। और मुझे सुनने को क्या मिला? चारा तरफ से शिकायत और दीनदारा का रोना चिल्लाना। जो दहकान यहा तुम्हारे यहा काम करत थे और मुसलमान रहा का बचाना चाहत थे, उन सबको

तुमने चेका के हवाले कर दिया है। ऐसी कोई जगह नही, जहा तुम्हारे नाम पर लानत न भेजी जाती हो।"

"अहा, अब्बाजान, देखता हू कि मेरे पास आने के भी पहले आपकी हमारे यहा के सभी प्रतिक्रातिकारियो से खुसुर फुसुर हो चुकी है। आप तो बडे तेज आदमी निकले! पर देखिये, हमारे कानून बहुत सख्त है! अगर उन्होंने आपका गिरेबान पकड लिया, तो ध्यान रखिये, मैं आपको नही बचाऊगा। लेकिन इस सबके बाद आप मेरे पास क्यो आये? साफ-साफ बताइये।"

"कोई नही जानता कि उस पर कब आफत आनेवाली है। और तुम्हारी आफत सिर पर ही है।"

"अगर कोई नही जानता, तो आपको कैसे मालूम?"

"अल्लाह दीनदारो को ऐसी बहुत सी बात जाहिर कर देता है, जिन्हे लामजहब लोग आखिरी घडी म ही जान सकते है।"

"आप इस तरह मेरी मौत का राग क्यो अलापे जा रहे है? और आप तो अब्बा है मेरे!"

"इस जगह के ऊपर एक बडी भारी आफत मडरा रही है। जब पहाड से पत्थर गिरता है तो अल्लाह जिन लोगो के दिमागो को खराब नही कर दता, वे वहा से भाग खडे होत ह। इसलिए मैं तुमसे यह कहने के लिए आया हू—लोग काफिरो के राज से नाराज हैं। अरे, क्या तुम्हे भी उसने पिछले साल कम मुसीबतो म डाला था? दीनदार लोग तुमसे मुह नही मोडेंगे।"

"आफ्फोह! तो हमारी निर्माणस्थली पर कौनसी आफत मडरा रही है? जरा साफ-साफ कहिये न अब्बाजान!'

'कुरान शरीफ म लिखा है—'उसके पानी को जमीन अपने मे समा लेगी और तू उसे कभी नही ढूढ पायेगा।''

"यह कहानी तो हम पहले भी सुन चुके है। पानी के धधे के हम उस्ताद हैं, आप नही। आप उसके बारे मे माथापच्ची मत कीजिये। लेकिन मुझे लगता है कि आप इस सिलसिले मे तो मेरे पास आये नही थे। आपने मुझे राह पर लाने की ठान ही रखी है तो साफ साफ कहिये। मुझे किस चीज का डर है?"

"जानकार लोगो का कहना है कि बहुत बडी तादाद म घुडसवारो ने

पज को पार किया है। उनके घोडा की टापा न सामूहिक फार्मो के खेता पर नई हदबदिया को रौद दिया है। जिस किशलाक मे एक घुडसवार जाता है, उससे दो बाहर आते ह। जिस किशलाक मे दस घुडसवार घुसत ह, उसमे स बीस निकलकर आते ह। कल यहा हजारा ही घुडसवार हो जायेंगे। वे तुम्हारी सारी मशीनो को वख्श मे फेंक देंगे। और जहा तक लामजहब लोगों का सवाल है—उनकी तो बस मौत ही है! उनका काम तमाम हो जायेगा।'

"हुह अब्बाजान, आपको सन इक्कीस की याद है, जब हम बासमचियो से लड रहे थे और उन्होने हमे कुलाब मे घेर लिया था? हमारे पास तब कोई तीस आदमी थे और बासमचिया के पास आठ सौ। तब आप किले मे मुझसे हथियार रखवाने की कोशिश करने के लिए दूत बनकर आये थे। तब, अब्बाजान, मैंने आपको क्या जवाब दिया था? याद है? मैंने कहा था—'बठिये बुजुगवार, लीजिये, चाय पीजिये। हमारे पास यहा खाने के लिए तो कुछ नही है, मगर कुछ चाय अभी बाकी है। बासमचिया का दूत बनकर मेरे पास आपके आने मे कोई तुक नही थी। मरे वालिद के लिए यह बात नामुनासिब है। अब मै आपको बासमचियो के पास वापस नही जाने दूगा। हम लोग यहा साथ साथ मरेंगे। मै आपसे छोटा हू और मुझे सोवियत सत्ता के लिए अपनी जान देते कोई हिचक नही, इसलिए आप मुझपर एक अहसान कीजिये—आप भी जान देते मत हिचकिये।' इसक बाद मने क्या किया था? मैंने आपको तालाबद कर दिया था और आप दो हफ्ते—जब तक हमारी लाल फौज की टुकडियो ने आकर बासमचिया को भगा नही दिया—हमारे किले मे ही बैठे रहे।"

बूढा कालीन पर से उठ खडा हुआ और चुपके से दरवाजे की तरफ खिसकने लगा।

"नही, अब्बाजान, ठहरिये! आप तो मेरे मेहमान बनकर आये ह, है न? इतनी जल्दी जाना तो नही हो पायेगा।"

ऊर्ताबायेव न जाकर दरवाजे मे ताला लगा दिया और चाबी को जेब मे डाल लिया।

"मुझपर मेहरबानी कीजिये और उत्सव के खत्म होने तक मेरे यहा ही रहिये। आप खडे क्यो हो गये? बठिये, और चाय पीजिये हा, तो अब बताइये—आपको यहा किसन भेजा है?"

"मुझे किसीने नही भेजा है। मैं अपनी मरजी से आया हू। मैं तुम्हे रास्ते पर लाना चाहता था। लेकिन तुम तो जैसे पहले शैतान थे, वसे ही अब भी हो।"

"छोडिये भी इस बात को! आप बहुत कुछ जानते हैं। आपकी उम्र म इतना ज्यादा जानना नुकसानदेह है। आपको मालूम ह कि पिछले साल मुझे क्या मुसीबत उठानी पडी थी और आपको वासमचियो के बारे मे भी मालूम है अब आप चालाकी मत कीजिये, अब्बाजान। सारी बात बता दीजिये। अपने बेटे मे ही नही, तो भला आप किससे मच कहगे?"

"मुझे कुछ नही मालूम। मै तो जियारत करने गया था और वापसी पर तुमसे मिलने के लिए आ गया। बासमचियो की बात तो सभी लोग कह रहे ह। न मैंन अपनी आख से उ ह देखा है, न उनके बारे म कुछ जानता हू। घर पर तुम्हारी मा मेरा इतजार कर रही हैं, मेरे जमाई मेरा इतजार कर रहे ह। मै ज्यादा नही जिऊगा। मरने के पहले घरबार का इतजाम करना जरूरी है। तुम अपनी आत्मा पर बहुत बडा पाप चढा रहे हो।"

"मेरे पाप तो न जाने कितन हैं, अब्वाजान! एक कम या ज्यादा से क्या फक पडेगा?"

"क्या तुम अपने बाप को चेका के हवाले कर दागे?'

'चेका से इस तरह मत डरिये अब्बाजान। वहा हमारे आपके जैसे ही लोग ह। फिलहाल आप मेरे मेहमान रहेगे। अगर आप समझदारी से काम लेंगे और मेरी पूछी सभी बाता का जवाब दे देंगे, तो म आपको पुलाव खिलाऊगा और चूबेक वापस भेज दूगा। मै आपको गधा खरीदने के लिए पस दे दूगा, ताकि आपको पैदल न जाना पडे – लीजिये, मिलाइये हाथ इसी बात पर! आप बहुत जल्दी मे हैं इसलिए वक्त बरबाद मत कीजिये। म आपकी मदद करूगा हा तो वासमचियो ने पज को पार कर लिया है और हमला उसी वक्त होगा, जब नहर मे पानी छोडा जायेगा? ठीक है, न?'

'मने वासमची नही देखे और यह नही जानता कि वे क्या करने की सोच रहे ह।"

"चालाकी मत कीजिये, अब्बाजान। दखिय न, चाय ठडी हो गई खर, कितन वासमचियो न नदी पार कर ली है?"

"मुझे नही मालूम।"

"सौ? या और ज्यादा?"

"मुझे नही मालूम – मैंने गिने नही।"

"लेकिन वे कितने बताते है? बहुत?"

"वे अलग-अलग बात कहते है।"

"उन्होने पज को कहा पार किया?"

"मुझे नही मालूम।"

"उफ, अब्बाजान, बातचीत नही चल सकती। ठीक है, अगर आप नही जानते, तो नही ही जानते। लेकिन आपको यह सब बताया किसने?"

"लोगो ने कहा।"

"भला यह कैसा जवाब है – लोगो ने? हम सभी लोग है। इन लोगो के नाम क्या है?"

"मुझे नही मालूम।'

"अगर उन्होंने आपसे बाते की, तो आपको कैसे नही मालूम?"

"सडक पर क्या कम लोग मिलते है? क्या हर किसीसे यह पूछा जाता है कि उसका नाम क्या है और वह कहा पैदा हुआ है?"

"तो, यह बात है आप बतायेंगे नही? क्या किया जाये, आपके पास वक्त नही है और न मेरे पास ही है। अलबत्ता, अब्बाजान, आप अभी घर नही जाने पायेंगे। हमे आपको गिरफ्तार करना होगा। और मै तो आपको पुलाव खिलाना चाहता था और घर जाने के लिए बढिया गधा दिलवाना चाहता था। अच्छा गधा तो काम पर हमेशा ही काम आ सकता है खैर, क्या किया जाये? आप बतायेंगे या नही?'

"जो कुछ मै जानता था, मै बतला चुका हू। मै और कुछ नही जानता।"

'आपको बुढापे मे चेका मे जाने की क्या पडी है, अब्बाजान? इस बात को मै सचमुच नही समझ पा रहा हू। क्या आपको यह डर है कि अगर आपने मुझे बता दिया, तो बासमची आपको मार डालेगे? अब्बाजान, आप बच्चे तो नही है है न? अपनी जिंदगी मे आप कितने हमले देख चुके है? क्या आपका यह खयाल है कि सोवियत सत्ता एक और हमले से नही निपट सकती? उफ, अब्बाजान आप जिये तो बहुत, लेकिन आपको अक्ल नही बनी। सोच लीजिये जरा जल्दी से, अब्बाजान! आप बतायेंगे या नही?"

"जो कुछ मैं जानता था, बतला चुका हू। मैं और कुछ नही जानता।"

"आप ही जानें। अच्छा, मैं चला। खिडकी से भागने की कोशिश मत कीजियेगा, अब्बाजान। मैं अभी पहरे का इतजाम कर रहा हू। यहा आराम कीजिये और दिमाग पर जरा जोर डालिये।"

ऊर्ताबायेव कमरे से चला गया और बाहर से दरवाजे पर सावधानी के साथ ताला लगा दिया।

बिनबुलाया मेहमान

अपनी आखा पर विश्वास न करते हुए शाहाबुद्दीन कासिमोव दरवाजे म खडे आदमी की तरफ टकटकी लगाकर देखे जा रहा था।

नहा, उससे गलती नही हुई थी – यह हैदर ही था।

जिस दिन हैदर को मिलिशियावाले अपने साथ ले गये थे, उस दिन से उमकी कोई खबर नही मिली थी। कहा जाता था कि उस पर क्शिलाक मे विशेप अदालत मे मुकदमा चलाया जायेगा। तीन हफ्ते गुजर गये, लेकिन इस अदालत के बारे मे और कुछ सुनन को नही मिला। फिर कोई यह खबर लाया कि हैदर के मामले की कूर्गान-तेपा म एक सामान्य अदालत मे कई अमीरो के साथ सुनवाई हो चुकी है, जिन पर मजदूर किसान निरीक्षणालय के एक अधिकारी की हत्या का अभियोग था और उस गोली से मार देने की सजा दी गई है और एक सप्ताह पहले दड को अमल मे लाया भी जा चुका है।

शाहाबुद्दीन ने क्षण भर के लिए अपनी आखें बद की और मन ही मन एक सूरा के पहले लफ्जा का पाठ किया। जब उसने आखें खोली, तो देखा कि दरवाजे म खडा आदमी गायब नही हो गया है।

'सलाम अलैकुम, शाहाबुद्दीन!' हैदर की आवाज मे पारलौकिकता का आभास देनेवाला कुछ भी न था "तुम मेरी तरफ टकटकी लगाकर क्या देखे जा रहे हो? दुआ-सलाम तक नही! क्या, क्या मुझे जीता-जागता देखने की तुम्हें उम्मीद न थी? खैर म जिदा हू। तुमसे मिलने के लिए आया हू। अदर तो आने दो!'

"वालैकुम अस्सलाम, हैदर!" सदूक की तरफ खिसकता हुआ शाहाबुद्दीन बुदबुदाया।

उसकी इस हरकत को देख हैदर तेज़ कदमो से कमरे मे घुस आया और जाकर सदूक पर बैठ गया।

'तो, कैसे हो शाहाबुद्दीन? तुम्हारे बेटे तो मजे मे हैं? लगता है कि बहुत रात करके घर आते हैं। लेकिन खडे क्यो हो? आओ, बठो। या मेरे आने की तुम्हे उम्मीद नही थी? सुनाओ, क्या खबर है? तुम सबको देखे कितना अरसा गुज़र गया! घर आकर मैंने सोचा—सबसे पहले अपने पुराने मालिक से ही नही, तो किससे मिलने के लिए जाऊ? और तुम तो इस तरह पेश आ रहे हो, जैसे मुझे देखकर तुम्हे खुशी नही हो रही।"

अधमुदी पलको के नीचे से शाहाबुद्दीन हैदर के फटे पुराने चोगे को बारीकी से जाच रहा था। लगता था कि उसके मेहमान के पास कोई हथियार नही है। क्या वह हैदर को सदूक से धकेल दे और पिस्तौल निकाल ले? लेकिन कही उसकी आस्तीन मे छुरा न छिपा हुआ हो? इतजार करना बेहतर रहेगा। उसके बेटे जल्दी ही घर आ जायेंगे। तब इस बिजूखे को चटपट और बिना शोर के खत्म किया जा सकता है। उनके आने तक इसे बातचीत मे लगाये रखना चाहिए।

"तुमने यह ठीक ही किया कि सबसे पहले मेरे पास ही आये," हैदर की हर हरकत को सतर्कतापूर्वक देखते हुए शाहाबुद्दीन ने कहा, "अगर तुम मुझसे नाराज़ हो, हैदर, तो तुम गलती पर हो। मै बहुत दिनो से तुमसे इस बारे मे बात करना चाह रहा था। अगर किसीको तुम्हारी बदकिस्मती के लिए कसूरवार ठहराया जा सकता है, तो वह मै नही, मलिक ही है। मैने उससे कहा था कि वह तुम्हारी बीवी शराफ्त को तुम्हे यह समझाने के लिए राजी करे कि अपने पुराने दोस्तो के साथ गद्दारी करना सबसे बडी नीचता है और कोई सच्चा मुसलमान ऐसा नही करता। उसमे यह हादसा हो गया, तो क्या उसके लिए मै दोषी हू? हम पुराने लोगो मे एक मसल है—अहमक से पगडी लाकर देने को कहो, तो वह साथ मे सिर भी ले आयेगा। हैदर, अगर तुम बदला लेना चाहो, तो मै मना नही करूगा। अगर तुम जाकर मलिक का सिर काट दो, तो इसका तुम्हे हक है।"

'मतलब यह कि तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नही था?' तिरछी नज़र से शाहाबुद्दीन की तरफ देखते हुए हैदर ने पूछा।

"कसम परवरदिगार की! मैंने तुम्हें वही बताया है, जो हुआ था। क्या तुम यह सोच सकते हो कि मैं तुम्हें इतनी बडी चोट पहुंचा सकता हूं? या तुम इस बात को भूल चुके हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या किया है? तुम जानते हो कि मैंने हमेशा तुम्हें अपने तीसरे बेटे की तरह प्यार किया है।"

"मेरा भी यही खयाल है।"

शाहाबुद्दीन ने हैदर पर एक उड़ती हुई नजर फेंकी। वही हंसी तो नहीं उडा रहा? अचानक एक विचार उसके दिमाग में कौंध गया, जिससे उसे कपकपी आ गई। कहीं हैदर पागल तो नहीं हो गया? शायद इसी लिए उसे रिहा कर दिया गया है? शाहाबुद्दीन ने एक बार फिर अपने नैश अतिथि पर एक चौकन्नी नजर डाली।

"ऐसी बात है," हैदर सदूक पर से उतर गया तो बुढऊ चलो, चल। तुम्हें मेरे साथ मलिक के घर चलना होगा।

"क्या कहा?" शाहाबुद्दीन ने घबराकर पूछा। 'मलिक के घर? मैं क्यों चलूं?"

"तुम्हारे सामने वह इनकार नहीं कर सकेगा।'

"अरे, दम भर रुको, हैदर। यह सब क्या मुझ जैसे बूढ़े के देखने की बात है? तुम्हारा इरादा अच्छा नहीं है। मैं तुमसे कह चुका हूं कि यह तुम्हारा हक है। लेकिन मेरे वहा चलने की क्या जरूरत है? जाना है, तो अकेले जाओ।"

"न, मालिक, नहीं। हम साथ-साथ ही जायगें। शादी की बात करने के लिए हम दोनों मलिक के घर साथ-साथ गये थे, इसलिए अब जनाजे की बात करने भी साथ ही चलेंगे।'

शाहाबुद्दीन की टांगों में सीसे जैसा भारीपन आ गया। उसने अपने और सदूक के बीच के फासले का अंदाजा लगाया। क्या हैदर को उलटा गिराकर पिस्तौल को निकाल ले? तभी उसके कानों में दरवाजे पर कदमों की साफ आवाज आई। अंधेरे में किसीने ठोकर खाई, कोई हथियार झनझना उठा। "आ गये आखिर!" राहत की सांस लेता शाहाबुद्दीन सीधा खडा हो गया।

"ठीक है, तुम चाहते हो, तो चलो,' क्षण भर सोचने का दिखावा करते हुए उसने कहा। उसने हैदर के निकलने के लिए रास्ता छोड दिया।

"न, मालिक, बुरा मत मानना—पहले आप,' हैदर ने अलग हटते हुए कहा।

"अरे, आओ भी," शाहाबुद्दीन ने उसकी कोहनी झटकी। "रास्ता में इतना तकल्लुफ किसलिए?"

लेकिन हैदर रास्ता छोड़ने पर अड़ा रहा। शाहाबुद्दीन चारा तरफ़ शकालु आखो से देखता दरवाजे से तिरछा होकर निकला। अभी वह कुछ ही कदम चला था कि टॉर्च की तेज रोशनी से चकाचौंध होकर उसने अपनी आखें बंद कर ली।

'बदमाश! रोशनी किसलिए?" बात पूरी किये बिना वह उस हथियारबंद दहकान के चेहरे को देख अचरज के मारे चुप हो गया, जिसके हाथ मे टार्च थी।

वह और कोई नही, रहीमशाह आनिमाव था।

मोमिन! अब्दुल्ला! अरे, मेरे बेटो, आओ!" शाहाबुद्दीन ने अंधेरे में आवाज दी।

हथियारबंद लोगो ने उसे एक मजबूत घेरे मे घेर लिया।

'और मने तो समझा था कि तुम लोग कभी आओगे ही नही," शाहाबुद्दीन के पीछे से हैदर की उपहासभरी आवाज सुनाई दी, "इससे अकेले बात करते करते मैं उकता गया था। सोचा कि यही बात है, तो इसे अकेला ही ले जाता हू'

मोमिन! नियाज!" शाहाबुद्दीन चिल्लाया। उसे अब भी आशा थी कि आसपास कोई उसकी पुकार को सुन लेगा।

'चीखो मत, शाहाबुद्दीन मत चीखो!" हकीम-बदनसीब ने सुजनतापूर्वक उसे तसल्ली दी। "वे सब यही हैं–नियाज, मोमिन और तुम्हारा दौलत भी। अभी सब मिल जायेंगे। हा, तो रस्सी किसके पास है? अपने हाथ ढीले छोड दो। अकडो मत, ख्वाहमख्वाह छाल पड जायगी।'

रुकावटो के साथ उद्घाटन

दिन निकल आया–उनादा सा और उदास,–हथौडा की बेसुरी टन टन से आदतन देर से उठनेवाली पहले सवशन की बस्ती की आख खुल गई। लोग जल्दी-जल्दी लाल बंदनवार लगा रहे थे, जल्दी-जल्दी में खडे किये तोरणो की टेढी ठठरियो पर कपडा चढा रहे थे। बंदनवारो पर जो

नारे लगे थे, वे पाच भाषाग्राम थे —स्तालिनाबाद से खबर आई थी कि उदघाटन समारोह म भाग लेने के लिए सावियत सघ के कृषि के जन-कमिसार और राजकीय योजना आयोग के अध्यक्ष के साथ बहुत से विदेशी मेहमान—इजीनियर और पत्रकार—भी आ रहे ह। सूचित किया गया था कि दिन की गरमी से बचने के लिए मेहमान स्तालिनाबाद से अलस सवेरे ही चल पडेंगे और लगभग सौ लोगा की व्यवस्था करके रखनी चाहिए।

उस रात मोरोजाव बिलकुल भी नही साया था, बल्कि अपनी दखरेख म तयारिया करवान म लगा रहा था। चट्टान क ढहन और अप्रत्याशित रूप स बलुई दलदल के निकल आन के कारण काम के पूरा हाने म तीन सप्ताह का विलब हो गया था। इसस उन्ह नहर की तह को समय रहते पानी छोडकर मजबूत करन का समय नही मिल पाया था और मनजमेंट काफर वाध के उडाये जान के समय से ही नहर को औपचारिक रूप से उद्घाटित मान लेन क लिए मजबूर हो गया था। इस समाचार ने मोराजोव को बहुत चिंतित कर दिया कि बडी सख्या म विदेशी मेहमान आ रहे हैं। क्या ये लाग इस बात को ध्यान म रखेंगे कि नहर म पहली बार पानी छोडा जा रहा है और ऐसी हालत मे तट का जहा-तहा बह जाना और किनारो का धस जाना अनिवाय है? उसन साचा कि उनके लिए तो हर मामूली से मामूली दुघटना भी हमारे तूफानी काम की खराब किस्म के बार म फब्तिया कसने का एक और बहाना बन जायगी। उसे लगातार उनके पीछे भागते और यह समझाते रहना होगा कि पानी छोडे जान का यह मतलब नही कि नहर चालू हो गई है और जब वह चालू होगी, तब तक तो वे सभी छोटी मोटी खराबिया को सैंकडा बार ठीक कर लगे। मोरोजोव न यह सोचकर अपने का तसल्ली दी कि शायद सभी कुछ ठीक ठाक ही रहेगा, लेकिन पिछले कुछ सप्ताहो म उन्ह जिस तरह के लगातार आश्चर्यों का सामना करना पडा था, उनके दष्टिगत यह आशा बहुत ही धूमिल थी।

स्तालिनाबाद से आनेवाली पहली कार केंद्रीय कायकारिणी समिति के अध्यक्ष को लेकर आई। फिर चार कारे और पहुच गइ। जरा ही देर मे सफेद इमारत के सामनेवाली जगह चारखानेदार मोजे पहने, तरह-तरह की टोपिया और टोप लगाये, कधे पर कैमर और दूरबीनें लटकाये लोगो से भर गई। विदेशी मेहमान देखते देखते ही सारी बस्ती मे फल गये और सब कही ताका-झाकी करने लगे। वे आपस मे बहुत जोर जोर से बात कर

रहे थे–उसी तरह, जसे बहरे करते हैं, शायद इस डर से कि नदी का शोर उनकी आवाज़ा को डुबा लेगा, या शायद इस विश्वास के कारण कि इस समय जो बाते कही जा रही हैं, उनमे उनके ये शब्द ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। विदेशी लोगा का जमाव सबसे ज्यादा नदी के ऊपरवाली खडी चट्टान पर ही था। नीचे देखकर वे सभी खामोश हो गये–बेशक, काई बहुत देर के लिए नही। अपने अपने कैमरा से उन्होने तूफानी नदी के विविध कोणा से छायाचित्र लिये और अपनी सिगरेटो के टोटा का उसमे फेंककर वे मज़दूरा के मकान दखने के लिए चले गये।

एक के बाद एक करके कारें आती ही रही।

मोराजोव, कीश, ऊर्ताबायव और क्लाक ने मेहमाना की अगवानी की। पास ही सिनीत्सिन को देख ऊर्ताबायेव चुपके से वहा स खिसक गया और दफ्तर के बाहर उसे पकडकर उसे एक खाली कमरे मे ले गया।

'कुछ खबर मिली?

'सुना है कि कोई दो हज़ार बासमचिया ने नदी को पार कर लिया है। कई तो नदी का पार करने की कोशिश म हमारे सीमात प्रहरियो के हाथो मारे गये। तीन जगहो पर तीन गिरोह पार करन म कामयाब हो गये हैं। इस वक्त उनकी ठीक सख्या निश्चित करना कठिन है। कोइ सात सौ रहे होगे।

"आबादी को लामबद कर दिया गया है?"

'सारे सीमात प्रदेश पर चोबेसुखिया के दलो की घेराबदी है। स्तालिनाबाद से तीन हवाई जहाज़ सीमात पर पहुच गये ह। कुल मिलाकर, नहर का शातिपूर्ण उदघाटन सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ किया जा चुका है।'

इस वक्त यही सबसे बडी चीज ह। जरा कल्पना ता करा–कही हमारे मेहमान गोलीबारी के बीच आ जाये और किसीके पट पेट म गाली लग जाय, तो? कितना शानदार प्रचार होगा यह!'

"यही आशा करनी चाहिए कि सब कुछ बिना किसी विघ्न के हो जायेगा। खैर, तुम मेहमाना के पास जाओ, म चला।

"रको ज़रा! हमारी सिचाई प्रणाली को ता कही काई नुक्सान नही पहुचा है?'

"तीसरे सैक्शन पर कोशिश की गई थी, पर उसकी बहुत करके अब तक मरम्मत हो चुकी होगी। सैक्शन के सभी मजदूरों को आत्मरक्षा दलो म सगठित कर लिया गया था – गैंती, सब्बल – जो कुछ भी मिला, उसीसे लैस। कहते हैं कि बासमचिया के एक दस्ते को तो वे खत्म भी कर चुके है।"

"भाड मे जाये ये सब मेहमान! अगर ये लोग न होते, तो मै भी स्वयसेवक दलो के साथ वहा चला गया होता!"

"तुम्हारे बिना भी काम चल जायेगा। तुम यहा मेहमानो की देखभाल करो। अच्छा हो कि उन्हे आज तीसरे सैक्शन न जाने दो "

नहर मुख पर किनारे के रेलिंग पर कोहनिया टिकाये कुछ विदेशी पत्रकार कॉफर बाध के उडाये जाने की तैयारियो को देख रहे थे। विस्फोटनकर्ताओ का एक दल बाध के निचले हिस्से मे पर्दे के समातर बनाये छेदो मे विस्फोटक रखने के लिए हाथ-पैरो के बल जा रहा था। काले बालो-वाला एक लबा इजीनियर हर छेद मे रखे जानेवाले विस्फोटक की खुद जाच कर रहा था। जब विस्फोटनकर्ता अपने काम को पूरा करके वापस आ गये, तो इजीनियर छेदो को देखने के लिए खुद रेंगकर गया। काफी देर बाद वह चिमनी साफ करनेवालो की तरह से काला होकर लौट आया। उसका बाका काकेशियाई कुरता अब मटमैला लगने लगा था। इजीनियर ने साफ रूमाल से उसे सावधानी से झाडा और काफी अच्छी जर्मन मे अतिथियो से अनुरोध किया कि वे विस्फोटन-क्षेत्र के आसपास की जगहो से हट जायें। उसे अपने अनुरोध को दुहराने की जरूरत नही पडी – हर कोई जल्दी जल्दी छोटी छोटी झडियो से चिह्नित लाइन के कुछे पीछे चला गया।

इजीनियर तावूकाश्वीली ने अपने अतिम आदेश जारी किये। एक सीटी बज उठी। तावूकाश्वीली ने अपनी घडी निकाली। विस्फोट ठीक एक बजे होना था। चार मिनट और बाकी थे। तावूकाश्वीली ने घडी को जेब मे वापस रख लिया, निरभ्र आकाश की ओर एक नजर डाली, सिगरेट-होल्डर निकाला और एक सिगरेट सुलगा लिया। उसकी हरकतो की निरायास धीरता और निरपेक्षता को देखते ही इस बात का अनुमान लगाया जा सकता था कि विस्फोटन विशेषज्ञ उत्तेजित है

कोमारेको के कमरे की हवा तबाकू के धूए से लदी हुई थी। कोमारेको ने कागजा स भरी एक मोटी फाइल खोली।

'ता, नागरिक नुशोनी, आप मरे सवाल का जवाब दने स इनकार करते हैं?"

इजीनियर नुशानी के हलके जद पडे चेहरे पर बेसब्री की एक छाया काध गई।

'मैं जवाब देने से इनकार नही करता। मरा जवाब 'नही' है।"

'आप इस बात से इनकार करते हैं कि एक सप्ताह पहले, आपक फ्लैट मे ब्राडी पीते हुए इजीनियर ताबूकाश्वीली के साथ बातचीत के दौरा जब ताबूकाश्वीली ने कॉफर बाध के उडाये जान के बारे मे अपनी आशकाए व्यक्त की, तो आपने लगभग साफ साफ शब्दा मे उससे यह कहा कि अगर विस्फोट ठीक न हो और वह नहर मुख को क्षतिग्रस्त कर दे, तो कोई उस वहुत वडी रकम देगा?"

'मैं बिलकुल इनकार करता हू।"

आपने ताबूकाश्वीली से यह नही कहा कि दुघटना मायागिक भी हा सक्ती है और दुघटना चाहे सायोगिक हो, चाहे जान-बूझकर की गई हा, उसे हर हालत मे उसका समान रूप से उत्तरदायी ठहराया जायेगा – बस, एक मामले मे उसका यह उत्तरदायित्व मुफ्त का होगा, जबकि दूसरे मामले मे वह अमीर बन जायेगा?"

"मने ताबूकाश्वीली से ऐसी कोई बात न कही, न कह सकता था।"

आप इस बात से इनकार करत है कि तीन दिन हुए, जब ताबूकाश्वीली ने अपनी रजामदी जाहिर कर दी, ता आपने अपने घर मे उसे किसी अज्ञात व्यक्ति से प्राप्त सौ-सौ रूबल के नोटा मे तीस हजार रूबल दिये?" कोमारेको ने अपनी दराज खोली और नाटा की एक गड्डी निकाली। 'यही तीस हजार रूबल।'

"मैं इसमे पूरी तरह मे इनकार करता हू।

"तो इसके मानी है कि इस सौदे के बारे म हमारे सामने दिया इजीनियर ताबूकाश्वीली का बयान बिलकुल मनगढ़त है?

"शुरू से आखिर तक।"

"इजीनियर तावूकाश्वीली आप पर वग, लाछन ही लगा रहा था?"

निस्सदेह।"

"किम उद्देश्य से? आप इसका क्या कारण द सकते है?'

"प्रकटत इसलिए कि वही उस पर सदेह न किया जाये।'

"किस बात का सदह?"

"मान लीजिये कि कोई अज्ञात आदमी जो किसी न किसी कारण दुघटना करवाना चाहता है, इजीनियर तावूकाश्वीली का विस्फाट ठीक न होने पर पचास हजार रूबल देन का प्रस्ताव रखता है। इजीनियर तावूकाश्वीली पसा तो पाना चाहता है, लेकिन दुघटना के लिए पाच छ साल की सजा भुगतना नही चाहता। इसलिए वह समझदार आदमी की तरह कम पैसा कमाने का निश्चय करता है—मगर बिना किसी भी खतरे के। उस जो पसा मिला है, उसमे से वह तीस हजार रूबल निकालता है और उसे चेका के पास आकर बडी उदारता के साथ आपके हवाले कर देता है और आपको बडी नाराजी के साथ बताता है कि उस—एक ईमानदार सोवियत इजीनियर का—रिश्वत देने की और ताड फोड का काम करन के लिए प्रेरित करन की कोशिश की गई है। निस्सदेह, वह उस आदमी का नाम नही लेता, जिसने उस सचमुच पसा दिया है। उसके ध्यान मे जिस पहले आदमी का नाम आता है, जिसे वह पसद नही करता, वह उसीका नाम ले लेता है। वह जिसका चाहे, उसका नाम बिलकुल निभय हाकर ले सकता है, क्योकि आखिर आप यह कैसे साबित कर सकते है कि पैसा आपन नही दिया है, जब चेका को वह पैसा पहुचानेवाला आदमी खुद आपका ही नाम ले रहा है, और किसीका नही? फिर चाहे इजीनियर तावूकाश्वीली द्वारा वाफर बाध के उडाने मे दुघटना हो भी जाये, तो भी उस पर से सदेह बिलकुल हट जाता है। दुघटना को या तो शुद्ध सयोग मान लिया जायेगा या किसी और की तोड फोड। इजीनियर तावूकाश्वीली को एकसाथ बीस हजार रूबल मिल गये और साथ ही ऐसे सौ फीसदी सोवियत इजीनियर का प्रमाणपत्र भी प्राप्त हो गया, जिसे चेका का विश्वास प्राप्त है, जबकि जिस निर्दोष आदमी पर उसने लाछन लगाया है, उसे या ता गोली मार दी जाती है या बदी शिविर मे भेज दिया जाता है। हर सूरत मे योजना एकदम निर्दोष है।"

'तो आपको विश्वास है कि दुघटना होकर ही रहेगी?

कामारेका के कमर की हवा तबाकू के धूए से लदी ६
ने कागजो से भरी एक मोटी फाइल खोली।

तो, नागरिक नुशोनी, आप मरे सवाल का जवाब
करते हैं ?'

इजीनियर कुशानी के हलके जद पडे चेहर पर बेसब्री
कौंध गई।

मैं जवाब देने से इनकार नही करता। मेरा जवाब

"आप इस बात से इनकार करते ह कि एक सप्ता
फ्लैट म ब्राडी पीते हुए इजीनियर ताबूकाश्वीली के साथ बा
जब ताबूकाश्वीली ने कॉफर बाध के उडाये जाने के बारे म
व्यक्त की, तो आपने लगभग साफ साफ शब्दो मे उससे
विस्फोट ठीक न हो और वह नहर मुख को क्षतिग्रस्त क
बहुत बडी रकम दगा ?"

म बिलकुल इनकार करता हू।"

आपने ताबूकाश्वीली स यह नही कहा कि दुघटन
सकती है और दुघटना चाह सायोगिक हो, चाहे जान-बू
उसे हर हालत मे उसका समान रूप से उत्तरदायी ठहरा
एक मामले म उसका यह उत्तरदायित्व मुफ्त का होगा
मामले मे वह अमीर बन जायेगा ?'

'मन ताबूकाश्वीली स ऐसी कोई बात न कही, न

आप इस बात से इनकार करते हैं कि तीन
ताबूकाश्वीली न अपनी रजामदी जाहिर कर दी, तो आ
उस किसी अनात व्यक्ति से प्राप्त सौ-सौ रूबल के नोटो
रूबल दिये ?' कोमारको न अपनी दराज खोली और ना
निकाली। 'यही तीस हजार रूबल।'

"म इससे पूरी तरह से इनकार करता हू।

'तो इसके मानी ह कि इस सौदे के बार म हमारे
इजीनियर तावूकाश्वीली का बयान बिलकुल मनगढन है ?'

शुरू मे आखिर तक।'

ऐसे लोगो पर लगा दो, जिनकी साख गिरी हुई है। यही सबसे निश्चित और निरापद तरीका है।"

"आप अपने का गिरी हुई साखवाला क्यो समझते ह? प्रारभिक पूछताछ मे आपने कहा था कि आप पर न कभी मुकदमा चला है और न आपकी कभी किसी भी तरह की भत्सना ही की गई है।"

"मने बिलकुल ठीक ही कहा था। सवाल मेरे अतीत का नही ह,–उसम मेरे खिलाफ कुछ भी नही है और इस बात की आसानी से पुष्टि की जा सकती है,–बल्कि उस काम का है जो मुझे इस निमाणस्थली पर दिया गया था। आपको मालूम है कि मै मैकेनिकल डिपाटमट का प्रमुख था, और इस बात को आप बेशक अच्छी तरह से जानत ह कि मेरी नियुक्ति क पहले इसी विभाग म काफी सख्या मे अतध्वस के मामला का पता लगा था। मेरे पूववर्ती, इजीनियर नेमिरोस्की पर अतध्वस के लिए मुकदमा चलाया गया था। मैकेनिकल डिपाटमेट के सारे ही काम पर अविश्वास का जो वातावरण छाया हुआ था, स्वाभाविक रूप से वह मेरी नियक्ति के साथ तिराहित नही हा गया। विशेषकर पिछले कुछ दिनो से,–ठीक कहे, तो उसी क्षण से, जब मैंने अविद्यमान सामग्री से एक रात के भीतर तीन हाइड्रोमानीटर बनाने से इनकार कर दिया था –मेरे प्रति साथी मोराजोव का जो रवया है वह बिलकुल असहनीय है। मन काम छाडन का सवाल सिफ इस कारण नही उठाया कि निर्माण-काय के समाप्त होन के कुछ ही सप्ताह पहले उसे छोडने की कोइ तुक नही थी। कुछ समय से मोरोजोव ने इजीनियर कोश को मेरे ऊपर थोप दिया है, जो मेरे हर काम का वस्तुत पूरी तरह से नियत्रित करते थे। यह बिलकुल समझ मे आनेवाली बात है कि मेरी स्थिति मे अवगत होने के कारण इजीनियर ताबूकाश्वीली न शिकार बनाने के लिए मुझे ही चुना। उसने यह ठीक ही सोचा कि तोड फोड का आरोप और किसीकी वनिस्वत मुझ पर ज्यादा आसानी से लग सकता है और मेरे इदगिद जो वातावरण पदा कर दिया गया है, उसमे वह मुझे असहाय बना दगा।

कामारका अधमिची आखो से कुशोनी की तरफ गौर से दखे जा रहा था।

"देखिये " सिगरेट जलाते हुए उसन कहा। "मैंन आपकी बात को बहुत धीरज और ध्यान स सुना है। आपमे निश्चित रूप से साहित्यिक प्रतिभा है। आपका ता, सचमुच, जासूसी कहानिया ही लिखनी चाहिए अच्छा,

'लगभग पूरी तरह स विश्वास है। अन्यथा इजीनियर तावूकाश्वीनी जिन उद्देश्यों से ऐसा कर रहा है, वे बिलकुल अबाधगम्य होंगे।'

"ठीक है हम अभी पता लगा लेते हैं। एक बजकर पाच मिनट हुए है। विस्फोट ठीक एक बजे होना था।"

कोमारेको न टेलीफोन का रिसीवर उठाया।

'जरा मोरोजोव को दीजिये। हा, मोरोजोव? कामारको। काफर बाध के उडाये जाने का क्या हुआ? हो गया? सब ठीक ठाक? नहर-मुख को तो नुकसान नही हुआ? ठीक है। शुक्रिया। बस, यही पूछना था।"

कोमारको ने रिसीवर वापस रख दिया।

किसी भी तरह की कोई दुघटना नही हुई, प्रिय नागरिक मुशानी। विस्फोट पूरी तरह से सफल रहा। अब आप क्या कहते ह?

'म कहता हूं कि इससे अभी कुछ भी सावित नही होता। हो सकता है कि इजीनियर तावूकाश्वीली की हिम्मत आखिरी वक्त पर जवाब दे गई हो। वह नहर मुख को नुकसान पहुचाते डरता था, जिसके लिए वह प्रत्यक्षत खुद उत्तरदायी है। निर्माण-काय को नहर मुख पर दुघटना क अलावा और भी तरीको से नुकसान पहुचाया जा सकता है। और भी कई जगह ऐसी हैं, जहा दुघटना होने से यही परिणाम निकलेगे। असल म यह योजना कही अधिक सुविधाजनक रहेगी क्योंकि इजीनियर तावूकाश्वीली पर इन जगहो का प्रत्यक्ष उत्तरदायित्व नहीं है। जब तक नहर म पानी नही छोड दिया जाता और उसके फलस्वरूप कोई गभीर दुघटना नही होती, तब तक म यह नही मानूगा कि मेरा सोचना गलत था।'

'यह पहले से कही ज्यादा समझदारी का वक्तव्य है। लेकिन लाछन लगाने के लिए इजीनियर तावूकाश्वीली को आपने ही क्यों चुना? क्या आपका उनसे कोई निजी झगडा हुआ है?

नहीं। म इजीनियर तावूकाश्वीली को कम ही जानता हू। सबनिरल डिपाटमट म अपने काम के सिलसिले मे मुझे कदाचित ही उनके सपक म आने का अवसर मिला है। लेकिन इस तरह के मामलो म किसी ऐसे आदमी को अपना शिकार बनाने के लिए छाटना सबसे बडी बेवकूफी होगी, जिसके साथ आपका निजी झगडा है। बाद म जाच के दौरान यह बात हमेशा सामने आ जाती है और अनावश्यक सदेह ही पैदा करती है। इजीनियर तावूकाश्वीली सामान्यत स्वीकृत सिद्धात के प्रति निष्ठावान रहा है—दाप

एसे लोगा पर लगा दो, जिनकी साख गिरी हुई है। यही सबमे निश्चित और निरापद तरीका है।"

"आप अपने का गिरी हुई साखवाला क्यो समझत हैं? प्रारभिक पूछताछ मे आपने कहा था कि आप पर न कभी मुकदमा चला है और न आपकी कभी किसी भी तरह की भत्सना ही की गई है।"

"मन बिलकुल ठीक ही कहा था। सवाल मरे अतीत का नही ह,- उसम मेर खिलाफ कुछ भी नही है और इस बात की आसानी से पुष्टि की जा सकती है,-बल्कि उस काम का है जो मुझे इस निर्माणस्थली पर दिया गया था। आपका मालूम है कि मैं मकेनिकल डिपाटमेट का प्रमुख था, और इस बात को आप बेशक अच्छी तरह से जानते हैं कि मेरी नियुक्ति के पहले इसी विभाग मे काफी सख्या मे अतघ्वस के मामला का पता लगा था। मेरे पूववर्ती, इजीनियर नेमिराव्स्की पर अतध्वस के लिए मुकदमा चलाया गया था। मैकेनिकल डिपाटमेट के सारे ही काम पर अविश्वास का जो वातावरण छाया हुआ था, स्वाभाविक रूप से वह मेरी नियक्ति के साथ तिरोहित नही हो गया। विशेषकर पिछले कुछ दिनो से,- ठीक कह, तो उसी क्षण से, जब मैंने अविद्यमान सामग्री स एक रात के भीतर तीन हाइड्रोमानीटर बनान से इनकार कर दिया था,-मेरे प्रति साथी मोरोजोव का जो रवैया है, वह बिलकुल असहनीय है। मने काम छोडने का सवाल सिफ इस कारण नही उठाया कि निर्माण काय के समाप्त होन के कुछ ही सप्ताह पहले उसे छोडन की कोई तुक नही थी। कुछ समय से मोरोजोव ने इजीनियर कोश को मेर ऊपर थोप दिया है, जो मेरे हर काम का वस्तुत पूरी तरह से नियत्रित करते थे। यह बिलकुल समझ मे आनवाली बात ह कि मरी स्थिति से अवगत हाने के कारण इजीनियर ताबूकाश्वीली ने शिकार बनाने के लिए मुझे ही चुना। उसने यह ठीक ही सोचा कि तोड-फोड का आरोप और किसीकी बनिस्बत मुझ पर ज्यादा आसानी से लग सकता है और मेरे इदगिद जो वातावरण पैदा कर दिया गया है, उसमे वह मुझे असहाय बना देगा।

कामारेको अधमिची आखो से कुशोनी की तरफ गौर स देखे जा रहा था।

'देखिय, सिगरेट जलाते हुए उसने कहा। "मने आपकी बात को बहुत धीरज और ध्यान से सुना है। आपमे निश्चित रूप से साहित्यिक प्रतिभा है। आपका ता, सचमुच, जासूसी कहानिया ही लिखनी चाहिए अच्छा,

अब मेरी बात ध्यान से सुनिये – बहुत ध्यान से। जरा अपना बटुआ निकालिये। खोलिये इसे। गिनिये, इसमे कितने पैसे है। गिन लिये आपने? कितने है?

"तीन सौ सतालीस रूबल।"

'सौ-सौ रूबल के तीन नोट? है, न?'

जी हा।"

'जरा इन नोटो को फैलाइये। अब जरा इनके सामने की तरफ दाऍ कोने म नीचे की तरफ देखिये। वहा आपको क्या नजर आ रहा है? पेंसिल का निशान सा है।

यह 'क' अक्षर है, है, न?'

जी हा क अक्षर ही है, जर्द पडते हुए शुशोनी ने सहमति प्रकट की।

अब दूसरे दोनो नोटो के भी उसी कोने को देखिये। उन पर भी क' बना हुआ है, न? हा? आप जवाब क्या नही देते? मिला? और ये रहे वे नोट जो आपने इजीनियर ताबूकाश्वीली को दिये थे। आप देखेगे कि उन सब के कोने मे भी पेंसिल से 'क' लिखा हुआ है। मेरा नाम कामारको है। इन नोटो पर मैंने ही निशान बनाये थे। आप इस कदर जर्द क्या पड गये हैं? तबीयत तो ठीक है, न? लीजिये, यह रहा पानी का गिलास। पी लीजिये इसे – इससे हमेशा तबीयत सभल जाती है। कुछ सभले? हा, तो जरा और पास आ जाइये और मुझे शुरू से आखिर तक पूरा किस्सा सुनाइये। आप बेवकूफ नही हैं और इस बात को आप खुद भी समझते है कि ऐसे मामलो मे सब कुछ सच-सच बता देना ही समझदारी का अकेला रास्ता होता है। सीधे-सीधे और बिना किसी साहित्यिक चातुर्य के। हा, तो इजीनियर ताबूकाश्वीली को देने के लिए आपको पैसा किसने दिया था?

दुर्घटना

नहर मुख के सामने पुल जल-कपाटो में से फेनिल पानी सात गरजते प्रपातो के रूप में गिरने लगा। लगता था कि जैसे बरुआ की बाढ़ बगल को पीछे से छेद दिया गया है और सात छेदो म से सन्ना घूर्न उसे अच्छा करने के लिए रखी नाद में धार बाधकर गिर जा रहा है। पानी की आपस

अब मेरी बात ध्यान से सुनिये—बहुत ध्यान से। जरा अपना बटुआ निकालिये। खोलिये इसे। गिनिये, इसमे कितने पैसे है। गिन लिये आपने? कितने है?'

"तीन सौ सैंतालीस रूबल।"

'सौ-सौ रूबल के तीन नोट? है, न?"

'जी हा।"

जरा इन नोटो को फैलाइये। अब जरा इनके सामने की तरफ, बायें कोने म नीचे की तरफ देखिये। वहा आपको क्या नजर आ रहा है?

पेंसिल का निशान सा है।"

'यह 'क' अक्षर है, है, न?'

जी हा 'क' अक्षर ही है, जर्द पडते हुए कुशोनी ने सहमति प्रकट की।

'अब दूसरे दोनो नोटो के भी उसी कोने को देखिये। उन पर भी 'क' बना हुआ है, न? हा? आप जवाब क्यो नही देते? मिला? और ये रहे वे नोट, जो आपने इजीनियर तावूकाश्वीली को दिये थे। आप देखेंगे कि उन सब के कोने मे भी पेंसिल से 'क' लिखा हुआ है। मेरा नाम कामारको है। इन नोटो पर मैने ही निशान बनाये थे। आप इस कदर जर्द क्यो पड गये है? तबीयत तो ठीक है, न? लीजिये, यह रहा पानी का गिलास। पी लीजिये इसे—इससे हमेशा तबीयत सभल जाती है। कुछ सभले? हा, तो जरा और पास आ जाइये और मुझे शुरू से आखिर तक पूरा किस्सा सुनाइये। आप बेवकूफ नही है और इस बात को आप खुद भी समझते है कि ऐसे मामलो मे सब कुछ सच-सच बता देना ही समझदारी का अकेला रास्ता होता है। सीधे-सीधे और बिना किसी साहित्यिक चातुर्य के। हा तो इजीनियर तावूकाश्वीली को देने के लिए आपको पैसा किसने दिया था?'

दुर्घटना

नहर मुख के सात खुले जल-कपाटो मे से फेनिल पानी सात गरजते प्रपातो के रूप मे गिरने लगा। लगता था कि जैसे बरफ की बाह बगल को पाचे से छेद दिया गया है और सात छेदो मे से गदला खून उसे ग्रहण करने के लिए रखी नाद मे धार बाधकर गिर जा रहा है। पानी की आपस

मे गुंधी हुई मटियानी लहरें चट्टानी पेंदे पर एक दूसरे से टकराने लगी। धीरे धीरे नहर फूलने लगी।

उत्तेजना के मारे अतिथियों की ओर से बिलकुल बेखबर हुए मोरोज़ोव, ऊर्तावायेव, कीश और क्लाव खड़े हुए नीचे की तरफ देखे जा रहे थे। असफलताओं के दिनों में उनमें से प्रत्येक ने अनेक बार इस जगह पर खड़े होकर इस क्षण की कल्पना की थी, जो तब इतनी दूर और अप्राप्य प्रतीत होता था। और अब, जब वह सामने आ खड़ा हुआ था, तब उनमें से प्रत्येक जबरदस्त उल्लास के साथ-साथ निराशा के एक स्वर का भी अनुभव कर रहा था। उनकी आंखों के सामने आज जो हो रहा था, वह निस्संदेह भव्य था, लेकिन साथ ही जैसे कुछ सामान्य भी था। पानी नहर में भागता चला जा रहा था, मानो उसके लिए मात्र यही करना ठीक था, मानो हमेशा से ऐसा ही होता आया था। इन लोगों तक को, जो इस नहर के निर्माता थे, अब यह बात अविश्वसनीय प्रतीत हो रही थी कि सिर्फ दो ही हफ्ते पहले तक इस गदियाली हलदिया धारा के लिए एक एक घन मीटर जगह को इनसानी हाथों से, सैकड़ों लोगों के संगठित प्रयासों से छीना जा रहा था। वे शायद कोई बहुत ही असाधारण, कोई बहुत ही असंभव चीज़ होते देखना चाह रहे थे—शायद यह कि नवजात नदी के साथ पहला संसर्ग होते ही इस नंगी, धूप से जली ज़मीन पर आश्चर्यचकित दर्शकों की आंखों के सामने-सामने ही नरकुल की हरी पत्तियां, या पटेरे की पतली-पतली शाखें, या कम से कम मामूली घास की कलियां तो लहलहाने लगें ही। लेकिन मिट्टी तो बस दंभियों की तरह खामोशी ताने तृषार्तों की तरह पानी ही पीती चली गई।

जी भरकर देख लेने के बाद अतिथियों ने आगे चलने की इच्छा प्रकट की। सभी लोग किनारे से उतरकर कारों में जाकर बैठ गये। छियालीसवीं चौकी के संधि-स्थान पर पहुंचकर मोरोज़ोव कार से उतर ही रहा था कि धूल से सने गालत्सेव ने आकर बिना कुछ कहे उसके हाथ में एक मुड़ा-तुड़ा कागज़ रख दिया। एक बूढ़े बेल्जियाई प्रोफेसर को उतरने में सहारा देते-देते मोरोज़ोव ने रुक्के पर एक उड़ती हुई नज़र डाली। पहला वाक्य पढ़ते ही उसे लगा कि जैसे उसके सिर पर बाल खड़े हो रहे हैं। उसने प्रोफेसर को आगे निकल जाने दिया और उनके पीछे पीछे सीढ़ी पर चढ़ते हुए रुक्के को पूरी तरह से पढ़ा।

क्रसा-ताग पहाड पर भू-स्खलन हो गया है। नहर की सारी वाहिका अवरुद्ध हो गई है। पानी बांध पर से होकर वह निकला है और मैदान को जलमग्न कर रहा है। पानी फौरन बंद कर दीजिये। आदमी और मशीनें भेजिये। दो एक्स्कैवेटर और चाहिए।

रियूमिन

मारोझोव ने रुक्के को जेब में डाल लिया।

"जी हां," शिष्टतापूर्ण मुसकान के साथ ऊपर प्रतीक्षा करते प्रोफेसर से उसने कहा, "यही हमारी छियालीसवीं चौकी का मधि-स्थान है। जैसा कि आप देख रहे हैं, कुछ पानी दाईं शाखा में चला जाता है... साथी कनाक, आप यह बात इन सज्जनों को कहीं ज्यादा अच्छी तरह से समझा सकते हैं... यह हमारे पहले सैक्शन के प्रमुख हैं। मुझे कृपया क्षमा कीजिये – मुझे जाकर यह देखना है कि वापस पहुंचने पर हम खाना तैयार मिले। हम लोग खाना दूसरे सैक्शन पर खायेंगे। वहां जगह ज्यादा है। साथी कनाक, संधि-स्थान और नहर की दाहिनी शाखा को देख लेने के बाद अतिथियों को दूसरे सैक्शन पर ले आइये। ये सज्जन शायद बेहद भूखे होंगे... साथी कौश! जरा एक मिनट!"

मारोझोव बिना जल्दी किये फिर नीचे उतरा और अपनी कार की तरफ चल दिया। उसी समय पार्टी समिति की फोर्ड आई और रुकने से भी पहले उसमें से सिनीत्सिन कूदकर उतर पड़ा।

"हां-हां, मुझे सब मालूम है," उसकी तरफ सिर हिलाते हुए मारोझोव ने कहा। "मेहरबानी करके जोर से मत बोलो। बिना ध्यान आकर्षित किये कुर्नाकोव को बुलवा लो। मैं कार में तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।"

एक मिनट बाद कार पर कोहनियां टिकाये कौश और कुर्नाकोव रियूमिन के रुक्के को पढ़ रहे थे। सिनीत्सिन ने शाखा नहर की तरफ इशारा करते हुए दबी हुई आवाज में कहा:

"मारोझोव, तुम सीधे दूसरे सैक्शन चले जाओ, वहां भोज-समारोह की व्यवस्था करो और मेहमानों के आने तक वहीं रहो। न कुछ मत बोलो! वहां से कहीं मत जाना! निर्माण प्रमुख को लगातार अपने मेहमानों के साथ ही रहना चाहिए। उन्हें अपनी कल्पी-कल्पी और दूसरी चीजें दिखाओ। फिर उन्हें खाना खिलाने के लिए ले जाओ। शानदार से शानदार दावत दो – जितनी हो सके, उतनी चीजें खिलाओ और जल्दी-जल्दी नहीं!"

दावत शाम तक चलनी चाहिए। भापण-वापण—तुम तो खुद सब जानते हो। ऐसा करो कि मेहमान उकतान न पायें और पता चले बिना अंधेरा हो जाये। साथी कोश तुम्हारे साथ ही रहगे। नन, वहस बाद मे कर लेगे। आप विदेशी भाषाए अच्छी तरह से जानते हैं और मेहमानों का उलझाये रख सकते हैं। क्ता-सारा के काम पर उर्लादायेव को लगा दीजिये। यह कागज पर इस योजना के लिए लडे थे, अब इन्हे व्यवहार मे लडने दीजिए। इन्हें मदद के लिए एक अमरीकी देना होगा। म क्लाक का सुझाव देता हू। मरी तो खुश होगा कि आपने उसकी बात नही सुनी और अपनी योजना मे अब मुसीबत म पड गये हैं। लेकिन क्लाक हमारा ही आदमी है। तो, अब समय नष्ट नही करना चाहिए। मारोजोव, तुम खुद फौरन चले जाओ। दूसरे सेक्शन से आदेश भेज दो कि पानी तुरत बद कर दिया जाय। तब तक विदेशियों ने सभी कुछ देख लिया होगा और नहर म उनकी दिलचस्पी खत्म हो चुकी होगी। अब से दस मिनट बाद—पहले नहीं—उर्लाबायेव और क्लाक चुपके से खिसक जायेंगे। वे मजदूरों और मशीनो को जुटाकर क्ता-सारा रवाना हो जायेंगे। साथी कोश और मरी दस मिनट बाद अतिथियों को बस्ती ले जायेंगे मैं चला। मैं तुम्हारा क्ता-सारा पर इन्तजार करूंगा।'

साथी उर्लाबायेव!' मारोजोव ने दूर से उर्लाबायेव को आवाज दी।

उर्लाबायेव वापस आ गया।

दूसरे सेक्शन से दो एक्स्केवेटर ले लीजिये और उन्हे चलाकर क्ता-सारा ले जाइये।

उर्लाबायेव ने खामोशी से सिर झुका लिया।

शाम के लिए निर्धारित भोज-समारोह चार बजे ही शुरू हो गया। बावर्ची लोग पागलों की तरह काम म जुट गये। गर्मी और नहर के तटो की चढाई-उतराई से निढाल मेहमानो ने खाने के निमंत्रण का खुब उल्लास के साथ स्वागत किया। उन्हें म उन्हें अविश्वसनीय रूप से नवी-नवी मेजो के इर्दगिर्द बैठा दिया गया और फिर विविध व्यजनो के परोसे जाने का एक अविराम सिलसिला शुरू हो गया।

उर्लाबायेव ने क्ता-सारा से टेलीफोन करके वाद तीन सौ तैनियों और फावडो की माग की और वचन दिया कि रात भर वे भीतर मूसलधार व

कुपरिणामो का खात्मा कर दिया जायेगा, जिससे अगले दिन सुबह सात बजे नहर मे पानी फिर छोडा जा सकेगा। नौ बजते बजते अधेरा हो जायेगा। भोज-समारोह को कम से कम पाच घटे चलना था।

मोरोजोव की कनपटिया म जैसे घनघन हो रही थी। उदघाटन भाषण उसे ही देना था और भाषण का लबा होना जरूरी था और आज ही उसे ऐसा लग रहा था कि तीन वाक्यो का भी ठीक से नही कह सकेगा। उसकी मानसिक शक्ति, जो पिछले कुछ महीनो के दौरान काफी हद तक टिकी रही थी, कत्ता-ताग के नये अचरज की खबर मिलने के बाद से चकमा द रही थी। मोरोजोव इधर उधर घूम रहा था, आदेश जारी कर रहा था, मेहमानो की तरफ मुसकरा रहा था, उन्हे कुछ समझा रहा था, *कहानिया सुना और मिसाले दे रहा था और हस तक रहा था, मगर* उसकी अपनी हसी और आसपास के लोगो की आवाजे उसकी चेतना मे एक नीरस घनघनाहट की आवाज मे से रिसकर पहुच रही थी।

दावत बहुत पहले शुरू हो चुकी थी, लेकिन अभी तक मोरोजोव यह नही समझ पा रहा था कि भाषण कैसे शुरू करे। कीश ने मुसकराते हुए मेज के उस पार से एक रुक्का उसकी तरफ बढा दिया। उसम सिर्फ दो वाक्य थे—"इवान मिखाइलोविच, बोलना शुरू कीजिये। अब और *नही टाला जा सकता।" यही काफी था। प्रबल आत्मनियत्रणवाले वक्ता* की तरह मोरोजोव धीरे से उठा और उसन अतिथियो से क्षण भर के लिए अपनी बात सुनने का अनुरोध किया।

साथियो और सज्जनो!" उसन बहुत जोर से कहा और उसकी कन पटिया मे होनेवाली जिस एकरस घनघनाहट ने उसकी आवाज को डुबा रखा था, वह अचानक जाती रही। "जब म यहा पहले पहल आया, तब फरहाद नाम के एक ताजिक न, जो हमारे यहा गोदाम म काम करता *था, मुझे उस प्राचीन सिचाई प्रणाली के बारे म एक दतकथा सुनाई, जिसके* अवशेषो को आपन आज नहर-मुख के आसपास ही देखा था। यह दतकथा मुझे कहानी सुनानेवाले के नामराशि—शहजादे फरहाद—के नाम के साथ जुडी हुई है।

'अगर इस दतकथा पर विश्वास किया जाय तो यह स्थान सुवा शहजादी जमीन की रियासत म पडता था और उस समय यह खूब घनी आबादीवाला उपजाऊ मैदान था। जसा कि दतकथाओ में होना चाहिए,

यह शहज़ादी न केवल अलौकिक सौंदय से ही सपन थी, वल्कि अपनी प्रजा के प्रति फरिश्तो जैसी नम्रता और ममता से भी परिपूण थी। लेकिन इस दतकथा की नायिका वह इन गुणा के कारण ही नही बनी। बल्कि वह एक दुघटना के कारण, एक ऐसी प्राकृतिक आपदा के कारण कथा की नायिका बनी, जैसी यहा अक्सर होती ही रहती है। वसत की एक तूफानी रात को नदी ने, जा कभी इसी इलाके मे होकर बहती थी, अचानक अपना रुख बदल दिया और शहज़ादी की रियासत को छोडकर उसके एक कपटी पडोसी की जमीनो को सीचने के लिए उसकी रियासत मे होकर बहने लगी। इस तरह आसपास के दहकाना के खेत पानी से वचित हो गये और सूख गये। देश मे अकाल पडने लगा। तब शहज़ादी जमीन ने ऐलान किया कि वह अपना तन और मन उसी आदमी को देगी, जो इस दुर्दांत नदी को उसके पुराने रास्ते पर फिर मोड देगा और भूख से ग्रस्त दहकाना के खेता को पानी पहुचा देगा।

"बहादुर शहज़ादे फरहाद ने, जो शहज़ादी को दिलोजान से प्यार करता था, उसकी इस प्रतिज्ञा के बारे मे सुना। उसने अपनी रियाया के सभी मरदो को इकट्ठा किया और दिन रात एक करके एक नई नहर को खोदना शुरू किया। वह बहुत समय तक खुदाई करता रहा और जो काम हमने किया है, लगभग उतना ही उसने भी किया। लेकिन चूकि उसके पास एक्स्केवेटर, या कम्प्रेसर, या विस्फोटक नही थे, परिवहन के उसके पास जो एकमात्र साधन थे, वे इनसानी हाथ या ऊट ही थे, और चूकि वह कोई समाजवादी समाज का निर्माण नही कर रहा था, वल्कि महज अपनी प्रियतमा को पाने का यत्न कर रहा था—और इस कारण तूफानी टोलियो के काम या मज़दूरा म प्रतियोगिता पर निभर नही कर सकता था—इसलिए उसे नहर की खुदाई मे बहुत साल लग गये।

"फरहाद के काम को उसका एक घोर प्रतिद्वद्वी, अमीर व्यापारी उरज़बाई अकसर देखा करता था। उरज़बाई फरहाद की तरह स्वप्नदर्शी रोमानी आदमी नही था। वह मोटा और थलथला आदमी था। फरहाद के काम को देखकर उसने कुछ दिमागी हिसाब लगाया—फरहाद को नहर खोदने मे इतने साल लगेंगे कि आखिर जब तक वह नदी का रुख बदल सकेगा और गुलाब-सी हसीन शहज़ादी जमीन को हासिल कर सकेगा, तब तक वह झुर्रीदार बुढ़िया हो चुकी होगी। उरज़बाई बूढा आदमी था।

वह सहनशक्ति मे जवान फरहाद का मकाबला नही कर सकता था। उसे ता जमीन तभी चाहिए थी, जब वह जवान और हसीन थी। इसलिए उसने चालाकी से कामयाबी पाने की ठानी।

"तीन दिन और तीन रात उरजबाई के नौकर उसके ऊटो पर स सामान उतारते रहे, जो सुदूर बुखारा से वडे-वडे गट्ठर लेकर आये थे। गट्ठरा का उस पथरीली नहर से बहुत दूर, जहा फरहाद हठपूवक चट्टान को खाद रहा था, नदी से लेकर शहजादी के महल तक विछा दिया गया।

'चौथी रात को सबस आलिम और दानिशमद मुल्लाश्रा और इशाना से घिरा उरजबाइ जमीन के महल मे पहुचा। शहजादी की मौसी, जिस उसन पहल से ही रिश्वत दे रखी थी, लपकती हुई अपनी भाजी के पास पहुची और बोली, 'ऐ हसीन जमीन' तूने कसम खाई थी कि उसी आदमी से शादी करेगी, जा हमारी दगाबाज नदी को काबू मे लाकर तरी रियासत म वापस ल आयेगा। अमीर और अक्लमद उरजबाई न तरी मुहब्बत की खातिर इस कमाल का कर दिखाया है। जा और जाकर झरोखे स दख ले। नदी उस पहाड के तले होकर वह रही है, जिस पर तरा महल खडा है।

जब जमीन झरोखे म आई, तो उसने देखा कि पहाड के तले सचमुच चादनी म नदी का चौडा फीता झिलमिला रहा है। उरजबाई के इसरार पर उमरी और जमीन की उसी रात को शादी हो गई। लेकिन जब सूरज निकला और अपन शौहर का साता छाड बेचारी शहजादी झरोखे म आई, तो सदम और हताशा के मार वह गश खा गई। रात म उसन जिस चीज का नदी समझा था, वह चटाइया की एक चौडी कतार क अलावा और कुछ भी न था। करीने से बिछी चटाइया चादनी म चादी की तरह चमक रही थी लेकिन अब, सूरज की राशनी म, वे मैले हलदिया रग की झलक ही मार रही थी।

'लाकश्रुति है कि ठगी हुई शहजादी न झरोखे स कूदकर आत्महत्या कर ली और जवान फरहाद का जब उसकी मौत की खबर मिली, ता उसन उसी नदी की चट्टाना पर अपना सिर फाडकर जान द दी, जिस वह काबू म नही ला पाया था।

"तो यह थी दतकथा। हम, मार्क्सवादी, अत्यत काव्यात्मक दतकथाओ को भी अथशास्त्र की सीधी-सादी भाषा मे रूपातरित करन के आदी हैं। इसम दतकथाओ की काव्यात्मकता जाती नही रहती, और इसके अलावा,

वे हमे अपनी रचना करनेवाला के जीवन, आकाक्षाओ और कष्टो को समझ पाने मे सहायता दती हैं।

'इस देश म, जहा सदियो तक क्षुब्ध नदिया वनल शकुदत गजा की भाति विचरण करती हुई वष प्रति वष अपने चरागाहा को मनमान तरीके से बदलती रहती थी, इस देश म, जहा पानी स वचित होने पर उपोष्ण सूय एक ही गरमी म मिट्टी को पत्थर मे परिणत कर देता है,—इस देश मे जल और जीवन सदा स समानायक धारणाए रही है। आपको यहा ऐसी एक भी दतकथा नही मिल पायेगी, जिसम पानी की बात न आती हो। और यह कोई अचरज की बात नही है कि यहा की सबस सजीव दतकथाओ के नायक नई सिचाई प्रणालिया के साहसी निमाता थे, जिनके जीवन का लक्ष्य सूरज से जले खेता को पानी स सीचना ही था।

"उन लोगा के लिए जो लगातार इस खतरे के नीचे रह रहे ह कि जा नदी उनके खेता का पानी देती आई है, वह एक दिन ऐसा भी कर सकती है कि दूर कही चली जाये और फिर कभी वापस न आये, उन लोगा के लिए, जा दहशत के साथ यह देखत ह कि किस तरह उनकी अरीका मे पानी साल-दर-साल कम हाता जा रहा है, जिन खेतो को वे इतने ध्यान से जोते बोते आये है, साल-दर साल किस तरह जिदगी उनसे जाती जा रही है, किस तरह इन खेता पर धीरे धीरे मरदा खाल की सूखी पपडी जमती जा रही है—उन लोगो के लिए ऐसी कोई कीमत नही थी, जिसे वे इस बात को स्थायी रूप स सुनिश्चित करन के लिए न अदा कर देते कि उनके खेता के लिए नियत पानी सदा सदा उनक पास ही रहेगा। स्थानीय सामत इस बात से भली भाति परिचित थे। ऐसा कोई खान न था, जो अपनी प्रजा की हड्डी हड्डी को चूस लेने के बाद भी महज यह वादा करके उसे और नही दूह सकता था कि वह नई नहर बनवायेगा। और ऐसा एक भी खान नहा था जिसने प्रजा के आखिरी छदाम का भी इस तरह से ठग लेने के बाद अपना वादा पूरा किया हा। कमरताड बाझ से ग्रस्त लोगो का खान के वचन पर से विश्वास इस तरह से उठ गया था कि जब भी कोई नया खान गद्दीनशीन होता, तो लोग उससे अधिकारा की माग करन के बजाय एक ही कसम खाने के लिए मजबूर करत—जब तक वह तख्त पर रहेगा, वह सिचाइ की कोई याजना नही बनायेगा। यह काई दतकथा नही है—यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। वास्तविक सहायता

की आशा को तजकर लोग किसी कल्पित शहजादे फरहाद के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, जो उनकी प्यासी जमीन का पीने के लिए पानी देगा। लेकिन इन सपना मे भी लागा की कटु व्याजोक्ति फरहाद के सुप्रयासा को सफल नहीं हान देती थी—क्याकि उस जमान मे, जब सत्ता उज्जबाइया के हाथ म थी, तब कोई भी शहजादा, चाहे वह कितना ही वीर क्यो न हो, दहकाना की मदद नही कर सकता था।

'बुखारा के अतिम शासक, अमीर सयद आलिम-खा ने, जिसे क्राति न यहा से निकाल बाहर किया, कुछ समय पहल राष्ट सघ से बुखारा की हाथ से निकली गद्दी का फिर से दिलवाय जान की माग की थी। अपनी वफादार रियाया के प्रति दर्शाई असीम व्याकुलता की एक मिसाल देने की इच्छा से अमीर न अपन शासन के बीस वर्षो का विहगावलाकन करते हुए पाया—और इस खाज स उसे अपार हप हुआ और उसका उसने बडी गभीरता के साथ उदाहरणस्वरूप उल्लेख किया है—कि उसन किसी नदी पर कोई पत्थर का पुल बनवाया था, जा प्रसगवश बता दें, अब मौजूद नही है।

'फरहाद के बारे मे लोगा की यह कटु दतकथा बुखारा के अतिम सामत के साथ-साथ अपना समय पूरा कर चुकी है। क्राति से मुक्त हुए लागा ने उरजबाई तथा अय सार अमीरा का खदेडन के बाद उस नदी को रगिस्तान म मोड दिया है, जिसे दतकथा का फरहाद नही मोड पाया था। अब यह कोइ दतकथा नही रह गई है। यह भी जनता की सृष्टि है, लेकिन एक ऐसी सष्टि, जा अय साधना से प्राप्त की गई है। जीवन की निराशा और कटुता के बारे म जा लाग कभी दतकथाए बनाया करते थे, वे आज अपन लिए एक नये और शानदार जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

'म आज आपस इतना ही कहना चाहता था। हमन अपनी यह नहर किस तरह खोदी और हमे जिन परिस्थितिया के अतगत अपना यह काम करना पडा इसके बारे म हमारे मुख्य इजीनियर, साथी कोश आपका मेरा बनिस्बत कही अच्छी तरह से बता सकत ह'

अशात रात

भाज-समारोह के सफलतापूवक खत्म हा जान के बाद, काफी रात गय माराजान न अपनी कार मगवाई।

उपस्थित सभी लागा की राय म भोज-समारोह बहुत ही सफल रहा था। कीश ने बडा ही मजेदार भाषण दिया। मर्री न भी खासा अच्छा सोवियत छाप भाषण दिया। नौ बजते-बजते थके हुए अतिथियो ने स्वय ही यह प्रस्ताव किया कि दूसरे सैक्शना का निरीक्षण अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया जाये। कीश आखिर तक नही रुक पाया और कत्ता ताग चला गया। मेज़बान की भूमिका को निबाहते हुए मोरोज़ोव तब तक वहा से नही हिला कि जब तक उसने आखिरी अतिथि को भी सोने के लिए नही पहुचा दिया। आखिर, अगली सुबह के लिए सभी आवश्यक आदेश दे देन के बाद वह प्रतीक्षारत कार मे जा चढा और ड्राइवर को पूरी रफ्तार के साथ कत्ता-ताग चलने का आदेश दिया।

कत्ता-ताग पहुचन के पहले ही कार ठप हो गई—सडक जलमग्न जो थी। आगे पैदल जाना पडा। मोराज़ोव ने जेबी टार्च निकाली और पानी म उतर गया। कोई डेढ किलोमीटर पानी म छपछप करते जान के बाद आखिर सूखी सडक मिल गई और वह सीधा सर्चलाइटा की रोशनी की तरफ चल दिया। बिजली की रोशनी की पनीली चमक मे उसे गतिया लिये लोग दिखाई दिय, जो फरसो जसी लग रही थी। लोग पानी के गडगडाते प्रपातो मे छलागें लगाते, गीली पिलपिली मिट्टी मे घुटने घुटने तक धसते, फिर निकलते हुए आगे लपकते चले जा रहे थे। मानव प्रवाह म बहता हुआ मोरोज़ोव अटकल से भागन लगा। मुह से मुह को हाते हुए उलझे हुए आदेश उसके काना मे पहुच रहे थे

"खबरदार! खबरदार!"

"क्या?"

'एक्स्केवेटर आ रहे हैं!" चिपटे हुए पहियोवाले कटरपिलरो पर हास्यास्पद ढग से लडखडाते हुए एक के पीछे एक दो एक्स्केवेटर गरजते घनघनाते चले आ रहे थे।

"होशियार!'

''अग्रणी' सामूहिक फाम की टुकडीवालो! एक सौ चौरानवेवी चौकी पर! एक्स्केवेटरा के लिए रास्ता बनाओ!"

मशीना को पीछे छोडती लोगा की एक बाढ सी नहर के अर्ध ध्वस्त किनारे पर जा चढी। उनकी गैंतिया बधी हुई रफ्तार से मिट्टी पर गिरने लगी।

मोरोजोव एक टील पर चढा और सीधा ऊर्तावायेव के सामन जा पहुचा।

क्या खबर है?"

एक्स्केवेटर पहुच गय ह, साथी प्रमुख!" ऊर्तावायेव न आधिकारिक ढग से रिपोट दी।

ऊर्तावायेव के पास हरकारे लगातार विभिन्न स्थाना की रिपार्टें ला रहे थे और सक्षिप्त आदेश ले जा रहे थे।

"काम बढिया कर रहा है! कायदे से और बिना घबराये," मारोजोव ने मन मे कहा।

'सचालन सभाल रहे ह? ता फिर मैं बाध पर जाकर देखता हू कि उसे मजबूत बनाने का काम किस तरह चल रहा है," ऊर्तावायेव न सुझाव दिया।

'नही, मैं क्या हाथ मे ले लू? आपने काम को अच्छी तरह से सगठित कर लिया है, आप ही अत तक सचालन कीजिय।"

जसा आप चाह।"

बाध पर कौन है?"

रियूमिन।"

ठीक है। यह और बताइये—नुकसान कितना हुआ है?'

"सामूहिक फाम के एक गाव मे पानी आ गया है।'

"और वहा के निवासी?"

"लोग भू-स्खलन के कुछ घटे पहले ही वहा से चले गय थे। दोना किगिजा के सामूहिक फाम है। बाकी सब मौके पर ही मौजूद हैं—कुदालें लेकर हमारी मदद करने के लिये आ गये हैं।'

अच्छी बात है। बाध का मजबूत करने का सामान तो नही बहा?"

"कुछ बह गया मगर जो बाकी है, वह काफी है।'

एक सौ सत्तानवेवी चौकी पर बढई कलीमती के निर्देशन म मजदूरा का एक दल बाध के उघडे हुए ककाल पर मिट्टी लगा रहा था। मोरोजोव ने फावडा उठाया और उसे मिट्टी मे घुसा दिया। उसकी टाग घुटन तक पिलपिली मिट्टी म धस गई। उसने फावडे को खीचा और हर चोट के साथ मिट्टी के बडे बडे लादे निकाल निकालकर उन्हे बाध की दरार पर लगे नरकुला पर थोपने लगा। पानी के जोर से छिटककर मिट्टी उसके मुह पर आने लगी। वह उसे हाथा से दबाये रखने की कोशिश करता, गती से

उसे ठोकता और नीचे से लाये मिट्टी के नये-नये लादे उठाकर उस पर डालता जाता। उसके क्षत और लहूलुहान हाथ जैसे फावडे के दस्ते से चिपक गये थे। पैरो के नीचे की जमीन दबी हुई नस की तरह फडक रही थी। एक उमाद मे आकर वह उसे पैरा स दबाने लगा। किसीने उसे एक तरफ घसीटकर किनारे की ढाल के नीचे खीच लिया। मोरोजोव जिस जमीन को पैरा से कुचल रहा था, वह फूल गई और बोतल की डाट की तरह फडाक से फूट पडी। धडधडाता हुआ पानी नीचे आन लगा।

"भागा! मदद बुलाओ! बाध बहा जा रहा है!" पानी की गजना के उपर क्लीमेती दूसरी तरफ से चिल्लाया।

मोरोजोव न अपना फावडा फेंक दिया और उस तरफ भागा, जिधर से लोगा की आवाजे आ रही थी। दो सौ कदम आगे पहुचकर वह तरह-तरह की छायाओ के एक हजूम मे आ घुसा। उनके बीच मे एक घोडा-गाडी पर खडा ऊर्ताबायेव ताजिक मे चिल्लाकर कुछ कह रहा था। मोरोजोव भीड को धकेलता हुआ आगे गया और उसने ऊर्ताबायेव का हाथ खीचा।

'आदमी चाहिए! आदमी चाहिए! बाध बहा जा रहा है!"

ऊर्ताबायेव ने उसके कधे को थाम लिया, "कितने? सौ? दो सौ? ले जाओ! सामूहिक कृपक आ गये ह! 'लाल अक्तूबर' और 'लाल हलवाहा' के किसान! शाबाश, मोरोजोव! और आ रहे ह! सभी को ले जाओ!'

"सुनो, ऊर्ताबायव! पानी फिर नहर मे बहने लगा है। पानी बह रहा है! नहर-मुख टेलीफोन करा!'

"टेलीफोन खराब है।"

"तो किसीको वहा भेजना चाहिए।"

"क्लाक गया हुआ है। उसे गये एक घटा हो चुका है। वहा एक स्लूस कपाट मे कोई मामूली सी खराबी आई हुई है। सब ठीक हो जायेगा '

मोरोजोव के जाने के दो घटे बाद, जब सभी मेहमान गहरी नीद मे पडे हुए थे, इजीनियर भर्री ने गराज से एक कार मगवाई और ड्राइवर के साथवाली सीट पर बठकर उसे कत्ता-ताग चलने के लिए कहा।

लेकिन कत्ता-ताग पहुचने के पहले ही उसने किसी कारण अपना इरादा बदल दिया और ड्राइवर को घाट की सडक पर मुडने का आदेश दिया।

वे वडी तेजी से जा रहे थे। जरा ही दर म दाहिनी तरफ तीसरे सैक्शन की बत्तिया नजर आन लगी। चौराह पर ड्राइवर दाइ तरफ मुड गया।

वस्ती क्या?" मर्री ने चक्के पर हाथ रखते हुए टूटी फूटी रूसी म कहा। "मने घाट चलन के लिए कहा था।"

ड्राइवर न स्पीडामीटर की तरफ इशारा किया

"पेट्रोल नही है, बस्ती म ले लगे।"

मर्री न अपना हाथ हटा लिया। कार अपनी रफ्तार बढाती उडती चली गई। उन्होने तेजी स बस्ती मे प्रवेश किया, पट्रोल स्टेशन के सामन से गुजरे और वाइ ओर मुड गये।

'वह रहा पेट्रोल!' मर्री ने पीछे छूटे पप की तरफ इशारा किया।

ड्राइवर ने अपना सिर हिला दिया। कार तेजी से दाये मुड गई।

'क्या कर रहे हो!' मर्री ने चक्के को पकड लिया।

व तेजी स एक बाडदार अहाते मे जा घुस। ड्राइवर न मर्री के हाथ को अलग धकेल दिया और सकर फाटक मे पूरी चाल से प्रवेश करके अहाते के बीचाबीच पहुचकर अचानक ब्रेक लगा दिये।

हरी टापिया पहन सैनिको की भीड ने कार को घेर लिया।

यह सब क्या है?' अपनी सीट पर से उछलत हुए मर्री ने पूछा

हमला

घाडे सरपट भागे चल जा रहे थे। उनके सामने की हवा कपडे के चिरने की आवाज के साथ फटती चली जा रही थी। कोम्सोमाली गश्ती दस्ता मुग्य सैक्शन की बत्तिया के पास पहुच रहा था। नासिरुद्दीनाव ने रास को झटका और घोडे को दुलकी चाल पर छोड दिया। *छायाओ को अपनी* आगे की बत्तिया की लबी लबी झाडुआ से बुहारती एक कार सडक पर चली आ रही थी।

रुका! कौन हे?"

कार ने ब्रेक लगाये। कोम्सोमोलियो की तरफ पिस्तौला की तीन नाले मुड गई।

'कौन, साथी क्लाव?"

पिस्तौला की नाले शाति के साथ जेबो मे डूब गइ।

"अरे, तुम हो, शतान कही के! और हम तो समझे कि बासमची है!" ड्राइवर खिलखिलाकर हस पडा। अधेरा इतना है कि हाथ को हाथ नही सुझाई देता। म तो यही सोच रहा था—रोकू या नहीं?"

"तुम कहा जा रहे हो?"

"नहर मुख।"

"साथी क्लाक?"

"हा। यहा क्या कुछ गडबडी है?"

हा, पूरी तरह से शाति तो नही है," नासिरुद्दीनोव न काठी पर से झुकते हुए कहा। दूसरे सैक्शन से बीस किलोमीटर दूर कोई चालीस लोगो का एक गिरोह घुस आया है। अगर वे दायें नही मुडते, तो व सीधे वख्श की तरफ जायेंगे। कूरगान मे आगाही करना और नहर-मुख पर गारद को मजबूत करना जरूरी है लेकिन आप नहर मुख किसलिए जा रहे ह?"

गालत्सेव कहता है कि जब पानी को बद किया गया था, तब पता नही कैसे, पाचव स्लूस कपाट को कुछ नुकसान पहुच गया। मुझे उसे देखना है। कत्ता-ताग्र मे बाध के ठीक होते ही हमे पानी फिर खोलना होगा।'

कार चली गई। तीनो सवार उसके पीछे-पीछे तेजी से चल दिये।

बस्ती मुरदा के निवास जसी लग रही थी। निजन चौक म एकाकी बत्ती जल रही थी। खाली बारको म रात बसेरा ले रही थी।

सब लोग भला कहा चले गये?" नासिरुद्दीनोव न चारा तरफ देखते हुए अचरज के साथ कहा।

उरूनाव ने घोडे को कोडा लगाया।

"कुछ मजदूर नहर के उद्घाटन के पहले ही चल गय थे। एक छोटी सी गारद के अलावा यहा कोई नही रहा था।"

वे फारमैन के दफ्तर के सामने पहुचे। नासिरद्दीनाव घोडे पर स उतरकर बोला

"यारा, तुम आगे जाकर गारद को आगाह कर दो। सतरी खडे कर दे और अपनी रायफल तैयार रखे। मै कूरगान टेलीफोन करके खबर कर देता हू।'

बत्ती जलाकर वह टेलीफोन क पास गया। उसने हत्थे को कई बार घुमाया, मगर एक्सचेज स कोई जवाब नही मिला।

'उफ, ये टेलीफोन—भाड म जायें सब! जब जरूरत हो, तब कभी काम नहीं करते!'

उसने हत्थे को फिर घुमाया। कोई जवाब नही मिला।

'काम नही कर रहा है। क्या बात है?"

खिडकी म होकर कही पास ही से गोली चलने की आवाज आई। एक, दो, फिर दो और। नासिरद्दीनोव लपककर बाहर आया और उछलकर घोडे पर सवार हो गया। उसने अपनी रायफल निकाली, उसका बोल्ट चढाया और घोडे को एड लगा सरपट उसी तरफ चल दिया, जिधर से टीन की छत पर वर्षा की बूदो की पटपट की तरह से लगातार गोलियो की आवाज आ रही थी।

गली म से जुर्लेनोव का घोडा उसीकी तरफ सरपट दौडता हुआ आ रहा था। उसके पीछे-पीछे नगे सिर एक अज्ञात सवार था, तलवार के सधे हुए हाथ से उसका चेहरा तरबूज की तरह से चिरा हुआ था। सवार के पीछे अपने सिरो के ऊपर नगी तलवारो को नचाते, शोर मचाते घोडो पर सवार बासमचियो की एक भीड लपकी आ रही थी। एक के बाद एक करके दो गोलिया नासिरद्दीनोव को छुए बिना बराबर से सनसनाती हुई निकल गई। उसका घोडा अपनी पिछली टागो पर खडा हो गया और एक तरफ अधाधुध भागने लगा। नासिरद्दीनोव ने अपने खाली हाथ से रास को झटका, मगर वह घोडे को रोक न पाया। दहशत के मारे फुफकारता घोडा सिर को पीछे फेंक पूरी रफ्तार से भागने लगा। पीछे से प्रतिध्वनि की तरह से टापो की आवाजें आ रही थी। उसके बराबर से जुर्लेनोव को अपनी काठी पर डाले उरूनोव उसके घुटने से रगड खाता हुआ सरपट निकल गया।

"कूरगान चलो! कूरगान चलो!" बराबर से निकलते हुए उरूनोव चिल्लाया। "तार कटे हुए ह!

धीरे धीरे करीम ने अपने घोडे पर काबू पा लिया और उसे दुलकी पर भगाने लगा। बस्ती से शोर और घोडो की टापो की आवाज अब भी आ रही थी, मगर अब गोलिया नही चल रही थी।

नासिरद्दीनोव ने अपने अस्तव्यस्त विचारो को इकट्ठा करने की कोशिश की

"गारद का निश्चय ही तलवारो से सफाया कर दिया गया होगा, नही तो हमे गोलियो की आवाज सुनाई दे जाती। फिर वहा आदमी ही कितने रहे होगे? यहा हमले की किसीको भी आशा नही थी। उफ उफ! काश कि हम दस मिनट पहले पहुच गये होते! उनके घोडे हमारे घोडो से अच्छे

साबित हुए। फौरन कूरगान पहुचकर फौजी दस्ता भिजवाना चाहिए। लेकिन यहा–नहर मुख पर–कौन रह गया? उफ, कनाव! श्राय-हाय-हाय!"

नासिरुद्दीनाव ने यत्रवत घोडे को रोक लिया।

लेकिन मेरा इससे क्या? म क्या उसकी श्राया हू? वह भला यहा श्राया ही क्या? वहा मेहमाना के साथ रहता फिर भी, बात श्रच्छी नही है–मार डालेगे व उमे "

'वापस जाना चाहिए," उसन जोर से कुछ श्रपने से, कुछ घोडे से कहा। न जाना नीचता होगी।"

उसने घाडे को मोडा श्रौर धीमी चाल से बस्ती की तरफ चल दिया। घोडा श्रनिच्छापूवक चल रहा था। उसने उसे कसकर एड लगाई। उसके मन म कोई श्रनात श्रावाज विरोध कर रही थी श्रौर चीख चीखकर कह रही थी कि उसे नही जाना चाहिए, लेकिन करीम जानता था कि जाने के श्रलावा श्रौर कोई चारा नही है।

मकेनिकल वकशॉप पहुचकर वह उतरा, घाडे का बाड से बाध दिया श्रौर दीवार क साथ-साथ पैदल ही चल दिया। श्रचानक उसे एक कार के इजन की घरघराहट श्रौर गोलियो के फिर चलने की श्रावाज सुन पडी। कार की बत्तिया की चमक ने उसे चौंधियाकर श्रधेरे के बाहर धकेल दिया। बलाक की कार उसे छूती हुई बराबर से तजी से निकल गई, कोने पर पहुचकर एकदम मुडी श्रौर हवा की चाल से स्तेपी मे गायब हा गई। करीम दीवार से चिपका खडा रह गया। रायफल के कुदे की एक श्रचानक चोट से वह लडखडा गया श्रौर मुह के बल धूल मे जा गिरा। उसे दबोचकर पैरा पर खडा कर दिया गया। श्रपनी बाहो के मरोडे जाने पर वह दद से तडप उठा, होठो पर उसने पिस्तौल की ठडी नाल के स्पश का श्रनुभव किया श्रौर श्रपनी श्राखें भीच कर ली। लेकिन गोली नही चली।

"मुसलमान है," किसीने उसके कान के पास ताजिक म कहा। 'रुको, मत हाथ लगाश्रो इसे! यह हमे दिखा देगा कि पानी कैसे छोडा जाये।"

पीछे से रायफल के कुदे से कोचते हुए वे उसे बारका के बराबरवाली सडक पर घसीटते हुए ले जाने लगे। वह समझ गया कि उसे नहर मुख की तरफ ले जाया जा रहा है।

नहर मुख पर अफगान पगडिया बाधे कोई बीसेक हथियारबद दढियल आदमी खडे थे। इशानी भूरा चोगा पहने एक काना आदमी पास आया।

'ताजिक हो या उज्बेक ?"

ताजिक,' नासिरुद्दीनोव ने कहा। दखते ही वह पहचान गया कि यह काना आदमी ख्वाजायारोव है।

"पानी छोडने की चाबिया कहा है ?" इशान ने ताजिक मे पूछा।

नासिरुद्दीनोव खामोशी के साथ कान की तरफ देखता रहा।

"पूछते है, तो जवाब दे, सूअर! मै अभी तेरी खाल उधेड दूगा! फौरन जवाब दे! चाबिया कहा है ?'

मुझे नही मालूम।

'हा! इशान न अपने आसपास नजर डाली।

दसेक हाथ नासिरुद्दीनोव की तरफ बढे और उन्होने उसकी कमीज का फाड दिया।

'इशानसाहब! एक जवान बासमची ने काने के पास आकर कहा। 'हमे चाबिया की जरूरत ही क्या है ? हम ताला को अपनी रायफलो के कुदो से तोड डालेगे।

नासिरुद्दीनोव घबराकर घूम गया। नियन्त्रण पुल पर कई बासमची नियत्रण चक्को से भिडे हुए ताला को अपनी तलवारो की मूठो से तोडने की कोशिश कर रहे थ।

' अगर ताले टूट गये, तो कोई गधा भी स्लूस कपाटो को उठा सकता है। तब वे आधे घटे के भीतर नहर म पानी छोड देंगे और सारे कत्ता-ताग को जलमग्न कर देंगे," सोचकर नासिरुद्दीनोव सिहर उठा।

' ताले इस्पात के है – उन्हे तोडना कोई बायें हाथ का खेल नही " इशान नाराजी से बडबडाया। "अरे, ऐ, सुनो! जरा इसकी पीठ तो चीर दो!'

नासिरुद्दीनोव के मुह से एक छोटी सी चीख निकल गई। छुरे की नोक उसकी गर्दन मे चुभी और डक सा मारती हुई पूरी कमर पर दौड गई।

"चाबिया कहा है ?"

' सरदार।" बडी मुश्किल से अपने दात खोलकर नासिरुद्दीनोव ने कहा। ' बेकार वक्त बरबाद मत करो। ताले तोडना बेफायदा है। इन चक्को से

फाटक नही उठाये जा सकते। ये मशीने तो पानी को बस, बद ही करती ह। पानी छोडने के लिए और मशीनें हैं – दूसरी तरफ, नीचे जाकर।"

"नीचे कहा?" काने ने उसकी तरफ अविश्वासपूवक देखा।

"पुल पार करके नीचे की तरफ। मेरे हाथ खाल दा, म रास्ता दिखा सकता हू।"

"चलो।"

नासिरद्दीनोव ने पुल को पार करना शुरू किया। वह लगडाने का दिखावा करते हुए अपनी टाग का वडी तकलीफ के साथ घसीटता घसीटता धीरे धीरे चल रहा था। वह अच्छी तरह से जानता था कि नीचे कोई मशीन नही है। हद से हद वह पाच, बहुत हुआ तो दस मिनट का समय बचा पायेगा। वह मन ही मन आशा कर रहा था कि रास्ते मे शायद बच पाने का कोई अप्रत्याशित वहाना सूझ जाये, लेकिन उसके दिमाग मे कोई तरकीब नही आ पा रही थी। वहा पहुचते पहुचते और तलाश करते करते दस मिनट और गुज़र जायेंगे। फिर वे ताले तोडना शुरू करेंगे – इसमे भी दस मिनट लग ही जायेंगे – कम नही। अगर ताले टूट गये तो स्लूस कपाटो को उठाने मे बीस से पचीस मिनट तक लग जायेंगे। तब तक शायद कूरगान से मदद आ पहुचे।

उसके बाये हाथ पर, नीचे, वख्श गरजती हुई वहे जा रही थी।

अगर मैं इस दढियल को अलग धकेल दू और नीचे कूद जाऊ, तो उथले पानी म जाकर निकल सकता हू। मैं अच्छा तैराक हू। आरपार तैर जाया करता था। गोली ता ये जरूर चलायेंगे, लेकिन अधेरा है, मुझ पर निशाना न लगा पायेंगे लेकिन तब वे सीधे ताले तोडने के लिए चले जायेंगे। न, यह नही होने दिया जा सकता। ताले तोडने से उन्हे किसी भी कीमत पर रोकना चाहिए। इन्ह जिधर भी ले जा सकू, ले जाना चाहिए म और भी धीरे चलने की कोशिश करता हू '

"सो तो नही गया? मैं तुझे अच्छी तरह से चलना सिखा दूगा!'

छुरे की नोक एक बार फिर उसकी पीठ पर दौड गई।

इससे ज्यादा तेज मैं नही चल सकता। मेरे पर मे चोट लगी हुई है। छुरा चलाओगे, तो मैं बिलकुल ही ढेर हो जाऊगा – फिर कही भी जा पाऊगा।'

"२८ सितंबर, १९१८ को मिशन के दो सदस्य, मक्आटनी और ब्लैंकर, काशगर वापस चले गये। ताशकंद में अकेला बेली रह गया। बेली ताशकंद में १ नवंबर तक अधसरकारी हैसियत से रहने में कामयाब हो गया। तुर्किस्तानी सैन्य संगठन का भंडाफोड़ होने के बाद चेका ने उसे षडयंत्र भड़काने का दोषी ठहराया और घर में नजरबंद कर दिया। मास्को से यह आदेश मंगवाने का निश्चय किया गया कि उसे कैद किया जाये या नहीं। मास्को से आदेश आया कि उसे तुरंत गिरफ्तार कर लेना चाहिए, लेकिन तब तक कर्नल बेली गायब हो चुका था। बेली फर्गाना और बाद में बुखारा, अमीर-सैयद आलिमखां के पास पहुंच गया, वहां से वह अपने एजेंटों–श्वेत अफसरों के जरिये तुर्किस्तान में प्रतिक्रांतिकारी आंदोलन, विशेषकर ओसिपोव विद्रोह, का निदेशन करता रहा।

"मैंने इन लंबे उद्धरणों को मात्र ऐतिहासिक जिज्ञासा के कारण ही नहीं उद्धृत किया है। सामग्री का अध्ययन करते समय पहली पंक्तियों में ही मैंने अनुभव कर लिया कि कर्नल बेली और इंजीनियर मर्री में संबंध सिद्ध करना मर्री और ब्रिटिश जासूसी सेवा में संबंध सिद्ध करने के बराबर है। इसके अलावा, बेली की गतिविधियों का पैमाना यह दिखाता था कि मौजूदा मामले में हमारा साबका किसी मामूली खुफिया एजेंट से नहीं, बल्कि बड़ी क्षमता के जासूस से पड़ा है।

'अभिलेखागार की बिखरी हुई सामग्री में मुझे बेली का एक फोटो भी मिला। मैं यह दावा तो नहीं करता कि इस फोटो में जो फौजी अफसर है, उसमें और इंजीनियर मर्री में अद्भुत सादृश्य है। बेली का यह फोटो अच्छा नहीं है, वह शौकिया खींचा गया फोटो है और इसके अलावा वह पंद्रह साल से भी ज्यादा पहले का है। तथापि, कर्नल बेली और इंजीनियर मर्री की सूरतों में कुछ सादृश्यता संदेह से परे है। इस खोज से चकित होकर मैंने पूछताछ शुरू की कि ताशकंद के पुराने चेका अधिकारियों में कोई ऐसा तो नहीं है, जो वहां १९१८ में भी काम कर रहा था। कर्नल बेली की गिरफ्तारी के समय मौजूद लोगों में से दो–साथी अ० स० और साथी म० व० का पता लगाने में मैं सफल हो गया। मेरे इस प्रश्न के उत्तर में कि कर्नल बेली को पहचानने के कोई विशिष्ट पहचान चिह्न तो नहीं हैं, साथी अ० स० को याद आया कि कर्नल बेली खब्बा था और इस तथ्य को वह बड़ी सावधानी के साथ छिपाता था। इसे तब ही देखा जा सकता

था, जब वह शेव करता होता था और तब वह उस्तुरे को हमेशा अपने बायें हाथ मे ही पकडता था। साथी म० व० को, जिन्होंने सडको पर बेली को अकसर अपनी निगरानी मे रखा था, याद आया कि किसी स्त्री के साथ चलते समय, अन्य आदमियो के विपरीत, बेली उसके बायें नही रहता था, बल्कि हमेशा सडक की तरफवाले हाथ पर ही रहता था। लेकिन म० व० ने कहा कि यह अंग्रेज़ो की एक आम आदत है। न अ० स० और न म० व० मुझे किसी और पहचान चिह्न के बारे मे बता सके।

"निर्माणस्थली लौटकर आने और मर्री की निगरानी तेज़ करने पर जल्दी ही मैने पाया कि ताशकद के साथियो ने जिन दोनो आदतो को बेली की विशिष्टता बताया था, वे इजीनियर मर्री की भी विशिष्टताए है।

"मैने सोचा कि आखिर मेरे अनुमान मे कोई ऐसी असाधारण बात तो नही है। मध्य एशिया मे अपना एजेंट भेजने समय ब्रिटिश जासूसी सेवा इस काम के लिए स्वाभाविक रूप से किसी ऐसे आदमी को चुनगी, जो स्थानीय भाषा और परिस्थितियो को जानता हो और जो पहले अपने को सौंपे गये काम का दक्षतापूर्वक निष्पादन कर चुका हो। पहली और दूसरी यात्रा के बीच जो पद्रह वर्ष का अतराल है, वह कर्नल बेली को पुराने परिचितो के आगे पडने की सभावना के विरुद्ध सुरक्षा की खासी अच्छी गारटी प्रदान कर देता था।

'मैने मौका निकालकर इजीनियर क्लाक से पूछा कि कही वह मर्री को अमरीका से ही तो नही जानता और क्या इजीनियर बाकर भी उससे पहले से परिचित था। पता चला कि न क्लाक और न बाकर मर्री को पहले से जानते थे—वे पहली बार सोवियत सघ मे ही मिले थे। लेकिन अपनी खोज के सही होने के बारे मे पूरी तरह से कायल न होने के कारण मैने तय किया कि जब तक कुछ ठोस सबूत नहीं मिल जाते, मै इसके बारे मे किसी को भी नही बताऊगा।

"पहली तलाशी के एक महीने बाद इजीनियर मर्री के फ्लैट की दुबारा तलाशी लेते समय मैंने पाया कि मर्री के ट्रक मे सिर्फ ६०,००० रूबल बाकी है। चार हफ्ते के भीतर मर्री ने दस हज़ार रूबल खर्च कर दिये थे, और सो भी निर्माणस्थली मे कही गये बिना, क्योकि इस बीच उसने न डाक से और न तार से कही कोई पैसा भेजा था। यह जानने की इच्छा से कि यह

पसा किसके हाथो म पहुच रहा है, मने हर नोट पर निशान लगा दिया। यह सिद्ध हुआ कि मेरे द्वारा चिह्नित सौ-सौ रूबल के नोटो मे से कई मैकेनिकल डिपार्टमेट के प्रमुख, इजीनियर भ्रुशोनी न भुनवाये ह। (इजीनियर भ्रुशोनी और उससे सबद्ध लोगो के ध्वसात्मक कार्यो के बारे मे देखिये फाइल न० २७६)

"कॉपर बाध के उडाये जाने के कुछ दिन पहले विस्फोटन विशेषज्ञ, इजीनियर ताबूकाश्वीली ने मेरे पास आकर मुझे मेरे निशान लगाये नोटो मे तीस हजार रूबल दिये और बताया कि यह पैसा उसे किसी अज्ञात व्यक्ति की तरफ से इजीनियर भ्रुशोनी ने विस्फोट को जान-बूझकर खराब कर देने के लिए रिश्वत के तौर पर दिया है।

"मेरे द्वारा गिरफ्तार कर लिये जाने पर इजीनियर भ्रुशोनी न अकाट्य प्रमाण रखे जाने और बचने का रास्ता न रह जाने पर कबूल किया (साक्ष्य का विवरण सलग्न है) कि इजीनियर मर्री से उसकी आठ महीने पहले मित्रता हुई थी। निजी बातचीत के दौरान भ्रुशोनी ने अपनी सोवियत विरोधी भावनाओ को नही छिपाया, बल्कि जैसा कि भ्रुशोनी खुद कहता है, मर्री ने ज़ाहिरा तौर पर उसे इस तरह के उद्गार प्रकट करने के लिए उकसाया। मर्री ने भ्रुशोनी को यह विश्वास दिलाते हुए कि निर्माण-काय को किसी भी सूरत मे समय पर पूरा नहीं किया जा सकता, यह सुझाव दिया कि एक निश्चित रकम के बदले म उस काम को कुछ रोक देना चाहिए'। उसने भ्रुशोनी से कहा कि एक ऐसा सगठन है, जो यह सुनिश्चित करने के लिए काफी बडी मात्रा मे धन खर्च करने को तैयार है कि निर्माण-काय आगामी कई वर्षो के भीतर पूरा न होने पाये। भ्रुशोनी ने नही पूछा कि यह सगठन है कौनसा। यह जानते हुए कि वह एक अमरीकी से बात कर रहा है, उसने यह मान लिया कि यह सगठन प्रत्यक्षत कोई अमरीकी कपास कपनी है, जो यह नही चाहती कि सोवियत सघ अमरीकी कपास का आयात करने की आवश्यकता से मुक्त हो जाये। भ्रुशोनी ने चौबीस घटे सोचने के लिए मागे और अगले दिन सहमति प्रकट कर दी। यह तय हुआ कि भ्रुशोनी को अपनी सेवाओ के बदले अलग अलग हर काम मे सन्निहित जोखिम के अनुसार–यह कहिये कि काम के हिसाब से पुरस्कृत किया जायेगा। इजीनियर मर्री ने भ्रुशोनी को निर्माण-काय के विभिन्न विभागो मे विश्वसनीय और पर्याप्त रूप से सोवियत विरोधी विचार रखनेवाले

व्यक्तियो का एक छोटा सा दल चुनने के लिए कहा, ताकि उनके जरिये निर्माण के सभी क्षेत्रो मे काम की रफ्तार को समान रूप से कम किया जा सके। नये 'सहकर्मियो' की भरती के सिलसिले मे होनेवाले प्रारंभिक खर्चों के लिए कुशोनी को मर्री से पचास हजार रूबल प्राप्त हुए। अपनी अंतरंग बातचीत मे मर्री नमिराव्स्की के पुरातन तरीको की तीखी आलोचना करते हुए अक्सर कुशानी को 'काम' के तरीको के बारे मे हिदायत देता था।

'इजीनियर कुशोनी द्वारा किये गये निर्माण-कार्य को क्रमिक रूप से विशृखलित करने की ओर लक्षित विध्वसात्मक कामो के सिलसिले के बारे मे फाइल न० २७६ मे ब्योरेवार विवरण दिया गया है और इसलिए यहा उनकी चर्चा करने की आवश्यकता नही है। इस प्रसग मे कुशोनी के केवल एक सहापराधी, विस्फोटनकर्ता मिखाईल ग्रिगोर्येविच पर्फेनोव का उल्लेख करना ही काफी होगा। पर्फेनोव एक खानदानी पियक्कड है, फरवरी के महीने मे उसे गैरहाजिरी और श्रम अनुशासन के उल्लघन के लिए दूसरे सैक्शन से बरखास्त कर दिया गया था। बरखास्तगी के पहले इसी पर्फेनोव का इजीनियर कुशोनी ने अपने कामो के लिए फोरमन पोनोमारेिक के माध्यम से उपयोग किया था। हर चार्ज मे विस्फोटक पदार्थ की मात्रा को बकायदा बढाकर और इस प्रकार विस्फोट के बल को बढाकर पर्फेनोव ने नहर के किनारो पर जान-बूझकर भू-स्खलन किये। यह बिलकुल सभव है कि उसकी इस करतूत से ही चट्टानी स्तर ढह गया था, जिसके फलस्वरूप जन-हानि हुई और निर्माण-कार्य के पूरा होने मे भी लगभग एक महीने का विलब हुआ। विस्फोटन टुकडी से बरखास्त किये जाने के बाद पर्फेनोव पाचवे सैक्शन (कत्ता-ताग) मे बेलदार की हैसियत से भर्ती हो गया और वहा भी इजीनियर कुशानी और मर्री ने उसका अंतिम विध्वसात्मक कारवाई मे उपयोग किया, जिसके बारे मे आगे चलकर विस्तार से बताया जायगा।

'यह देखकर कि कुशोनी और उसके सहचरो की सारी तदबीरो के बावजूद निर्माण-कार्य समय पर पूरा होकर रहेगा, इजीनियर मर्री (उप कर्नल बेली) ने अंतिम उपाय का अवलबन किया। उसने कुशोनी को विस्फोटन विशेषज्ञ इजीनियर ताबूकाश्वीली को रिश्वत देने और उसे कॉफर बाध को उडाते समय नहर मुख को क्षति पहुचाने के लिए राजी करवाने की कोशिश करने का आदेश दिया। विध्वसकर्ता के रूप मे ताबूकाश्वीली की निष्ठा पर विश्वास न होने के कारण और इस डर से कि पकडे जाने पर

ताबूकाश्वीली कही अपने सहापराधी का भेद न खोल दे, मर्री ने अुशोनी का इस बारे मे विस्तत निदेश दिये कि पूछताछ के दौरान क्या कहना चाहिए। इसीके साथ ही साथ अपने को बचाने और साथ ही किसी न किसी प्रकार सपूरित निर्माण-काय को क्षति पहुचाने के उद्देश्य से मर्री ने अुशोनी की मारफत पर्फेनाव को क्ता-ताग पहाड की ढाल को उडाने के लिए पाच हजार रूबल दिये। यह विस्फोट कुछ छोटे छोटे चार्जो से नहर मे पानी छोडे जाने के समय ही इस तरह से किया जाना था कि उससे हुए भू-स्खलन को अस्थिर मिट्टी पर पानी की क्रिया से जनित मान लिया जाये।

पर्फेनोव न अपन का सौपे काम को बिना किसी कठिनाई के पूरा कर दिया। क्ता-ताग सैक्शन मे बेलदारी करते समय उसने बिना ध्यान आकृष्ट किये रात के समय विस्फोटक रखने के लिए छोटे छोटे छेद खोद लिये और अुशोनी द्वारा निर्दिष्ट समय पर उपरोक्त खड म पहाड की ढाल को उडा दिया। (विवरण के लिए देखिये फाइल न० २७७)

अुशोनी के शब्दा म उसे और मर्री – दोनो – को यह डर था कि कही ताबूकाश्वीली की हिम्मत आखिरी घडी मे जवाब न दे जाये और कही उसमे नहर मुख का क्षति पहुचाने के सकल्प का अभाव न हो। ऐसी आकस्मिकता को ध्यान मे रखते हुए ही मर्री न क्ता-ताग पर विस्फोट की योजना बनाई थी। मर्री के हिसाब के अनुसार – जिसे उसने अुशोनी स नही छिपाया था, – क्ता-ताग पर भू-स्खलन और नीचे मदान म सामूहिक फार्मो के जलमग्न हो जान के कारण नौआबादकारो मे दहशत फैल जाती और पज के उस पार से अपेक्षित बासमची हमले के लिए रास्ता खुल जाता।

हमारे द्वारा कुचले बासमची हमले के नेता, इशान-खालिक (ईसा ख्वाजायारोव) ने जिसे हमारे स्वयसेवक दस्तो ने घेरकर एक छोटी-सी मुठभेड के बाद बल बदी बना लिया था, पूछताछ के दौरान कबूल किया है कि वह कनल बेली को १६१६ से जानता है, जब वह उससे बुखारा म मिला था। इशान-खालिक (ख्वाजायारोव) को कनल बेली के निमाणस्थली पर पहुचने की अफगानिस्तान से समय पर सूचना मिल गई थी और उसे आगामी सारी कारवाई के बारे म सीधे कनल बेली के साथ परामश करन की राय दी गई थी। उसके साथ प्रत्यक्ष सपक स्थापित करने के लिए ही ख्वाजायारोव ने निर्माणस्थली पर काम करना शुरू किया था।

मेरे इस सवाल के जवाब मे कि जब वह अंग्रेजी नही जानता, तो बेली के साथ किस तरह बातचीत करता था, इशान ने बताया कि मर्री-बेली रूसी और फारसी दोनो भाषाए अच्छी तरह से बोलता है।

'उर्तावायेव पर झूठा आरोप थोपने के अपने प्रयास की असफलता के बाद अफगानिस्तान भाग जाने पर इशान-खालिक (ख्वाजायारोव) ने अपने दूतो के माध्यम से मर्री के साथ घनिष्ठतम संपर्क बनाये रखा। हमले की तारीख और सामरिक योजना मर्री की सहमति से ही निर्धारित की गई थी और हमले की सारी तैयारियां मर्री के प्रत्यक्ष निर्देशानुसार ही की गई थी।

'कल रात बारह बजे कुशोनी की गिरफ्तारी और खालिक के गिरोह के सफाये की खबर पाकर मर्री ने अफगान सीमांत भागकर बचने की कोशिश की। तीसरे सैक्शन पर गिरफ्तार कर लिये जाने और पूछताछ किये जाने पर मर्री-बेली ने किसी भी बात को नही कबूला और यह दावा किया कि वह अंग्रेजी के अलावा और कोई भाषा नही जानता है और किसी भी तरह का साक्ष्य देने से इनकार कर दिया। कुशोनी और इशान-खालिक से सामना करवाये जाने पर मर्री ने कहा कि वह उनकी बातो को नही समझता, इंजीनियर कुशोनी को वह सिर्फ निर्माण-कार्य के मैकेनिकल डिपार्टमेंट के प्रमुख की हैसियत से जानता है और इशान खालिक को उसने पहले कभी नही देखा है। जब मर्री-बेली को उसका ट्रंक और उसमे रखी शेष चिह्नित रकम दिखाई गई, तो उसने अनुवादक से कहा कि ट्रंक में उसके पास बिलकुल भी धन नही था और उसे नही मालूम कि यह रकम उसमे किसने रखी है और क्योंकि ट्रंक उसकी अनुपस्थिति मे खोला गया था, इसलिए उसके भीतर क्या है, इसके बारे मे जवाब देने के लिए वह बाध्य नही है।

मैं निम्न लोगो से पूछताछ का विस्तृत विवरण संलग्न कर रहा हूं

'१ इंजीनियर आर० मर्री (उर्फ कर्नल एफ० एम० बेली)।

'२ इंजीनियर यू० द० कुशोनी।

'३ इशान-खालिक वलीद ए उमर (उर्फ ईसा ख्वाजायारोव)।

"४ विस्फोटनकर्ता मि० ग्रि० पर्फेनोव।

"५ फोरमन अ० त० पानोमार्निक।"

सच्चा वीर

सुबह, जब कत्ता-ताग के नवनिर्मित बांध पर से सचलाइटें हटा दी जा चुकी थी और फावडा और गैंतियां से लदी आखिरी घोडागाडियां भी रवाना हो चुकी थी, मोराज़ोव ने, जो नहर में पानी के छोडे जाने की वृथा प्रतीक्षा कर रहा था, आती हुई पहली कार को देखा।

"वे पानी क्या नही छोड रहे हैं?" सिनीत्सिन के कार से कूदते ही वह उस पर बरस पडा। "नौ बज चुके हैं! देखते-देखते ही मेहमान आ पहुंचेंगे! हम पूरे दो घटे से तैयार खडे इतजार कर रहे हैं। उन्हें हुआ क्या है – सो रहे हैं क्या?"

"क्यो, तुम्हे कुछ भी मालूम नही?" सिनीत्सिन ने उसकी तरफ अजीब तरह से देखा।

पहली बार मोरोज़ोव का ध्यान इस बात की तरफ गया कि रात भर के भीतर सिनीत्सिन सिकुड और बूढा गया सा लग रहा है।

"नही। क्या, क्या फिर कुछ हो गया?"

"रात नहरमुख पर हमला हुआ था। कोई चालीस बासमचियो का गिरोह भीतर घुस आया था। हमले की उम्मीद किसे थी – सरहद से पूरे एक सौ बीस किलोमीटर दूर! और वही वे हम पर टूट पडे।"

"कुछ नुकसान तो नही हुआ?"

'नही। उसका वक्त ही नही मिल पाया। वे सिर्फ घटे भर के करीब ही वहा रहे। कूरगान से एक दस्ता दौडाया गया और उसने उन सभी को कैद कर लिया।"

'हमारी तरफ जानें तो नही गई?"

"हा। हमारी गारद के कोई आठ आदमियो को उन्होने काटकर रख दिया। और दो को उन्होने सता-सताकर मार डाला – नासिरुद्दीनोव और गालस्तत्र को।"

"क्या कहते हो! मार डाला?"

'हा। बडा बेरहमी के साथ" सिनीत्सिन की आवाज़ काप गई।

यह सब हुआ कैसे?" मोरोज़ोव ने ज़र्द पडते हुए अटकती आवाज मे पूछा।

"बासमची यहा सारे मदान को जलमग्न कर देने के लिए स्लूम कपाटो को खोलकर पानी छोड दना चाहते थे। नियत्रण चक्का पर ताल लगे हुए थे। कमाडेट भाग गया था। पहले बासमचिया न ताला को ताडन की कोशिश की, लेकिन तोड नही पाये। फिर उहोने नामिरद्दीनोव और गालत्सेव को पकड लिया और यह उगलवाने के लिए सतान लगे कि चाबिया कहा हैं। सता सताकर उन्हे मार डाला।"

"तो वे पानी नही छोड पाये?'

बिलकुल आखिर म जाकर वे तीन ताले तोडन मे सफल हो गय थे। लेकिन तभी कूरगान के स्वयसेवक दस्ते न अचानक पहुचकर उन्हे घेर लिया। जानते हो कौन लाया था उसे? कनाक। बासमचिया की ऐन नाक के नीचे से कार मे निकल गया और जाकर कोमारको को चेता दिया। दस्ता वहा बिलकुल वक्त पर पहुच गया और सबको जिदा पकड लिया। उन्हे पहले कपाट को ही उठान का समय मिल पाया था और दूसरे को उठाना अभी शुरू ही किया था।'

"हू! तो इस तरह पानी रात नहर मे आ गया था! और फिर वह अचानक ही रुक भी गया। मैं समझ ही नही पा रहा था कि ऐसा हुआ कैस।'

'हा। अगर उन्हे चाबिया मिल ही जाती और उन्हान सातो कपाट उठा दिये होते, तो बाध का निशान भी बाकी न रहता।"

"लेकिन चाबिया थी कहा?"

कमाडेट के कार्यालय म।

तो वे उन्हे मिली नही?"

'नहीं, मिल तो गइ।'

फिर कपाट क्यो नही खोले?"

कोमारको भी यह जानना चाहता था। उसन पूछताछ के दौरान ख्वाजायाराव से इसके बारे मे पूछा था। ख्वाजायाराव कहता है कि सफेद बालवाले न—जाहिर है कि उसका आशय गालत्सेव मे है—आखिरी क्षण पर एक बासमची के हाथ से चाबिया का गुच्छा छीन लिया और उसे वख्श मे फेक दिया। इसी लिए उन्होंने उसका काम तमाम कर दिया।'

मारोजोव ने माथे पर हाथ फेरा।

सिनीत्सिन दूर कही देख रहा था।

"खर, तो पानी अभी छोडा जा रहा है और लगता है कि मेहमान भी आ ही गये," उसने आती हुई कारों की कतार की तरफ इशारा किया, "अच्छा, अपने मेहमानों की अगवानी करो, और क्या! उन्हें बताने की कोई तुक नही। बेकार दहशत फैलाने का क्या फायदा? वे समझेंगे कि यह सचमुच बबर एशिया ही है।"

"लेकिन तुम नही रुकोगे?"

"नही। जानते हो न, मेरे लिए यह बहुत भारी बोझ है। मैं नासिरुद्दीनोव को बहुत चाहता था। कह सकते हो कि मेरे लिए वह बेटे जैसा ही था। और अब वह भी चला गया मैं घर जा रहा हूं"

वह कार के पास चला गया और उसमें पैर रखकर एक बार फिर मुडकर बोला

"लेकिन गालत्सेव? इस निर्माण-काय के दौरान उसकी कितनी बार भर्त्सना की गई थी! और अब—देखो, न! सच्चा वीर निकला है। और अगर आज वह मरा न होता, तो किसीको इस बात का पता तक न चलता मेहमानों से मत कहना। वैसे भी वे समझेंगे नही।"

सिनीत्सिन की कार चली गई लेकिन मोरोजोव खडा सडक पर बने पेट्रोल के छोटे से दाग की तरफ टकटकी लगाकर देखता रहा। उसकी तद्रा किसीके मृदु स्पर्श से ही भग हुई

"नमस्कार, मिस्टर मोरोजोव!" ताज़ा हजामत बना चेहरा लिये बेल्जियाई प्रोफेसर उसके सामने खडा था और उलाहना के साथ मुसकरा रहा था। 'आप तो हमे बिलकुल ही भूल गये।"

"क्या कहते हैं, आप!" मोरोजोव ने छूटते ही कहा। उसने मुसकराने की कोशिश की, लेकिन ठीक से मुसकरा न सका। "असल में हम यहां एक चक्कर मे पड गये थे, उसने असमजस में हाथ हिलाये, 'हुआ यह कि रात को नियत्रण चक्को की चाबियां कही गुम हो गई और इसलिए सुबह पानी नही छोडा जा सका। लेकिन अब सब ठीक है—देखिये न, वह आ रहा है पानी!"

कर्नल एफ० एम० बेली, सी० आई० ई०, के नाम
लेखक ब्रूनो यासेन्स्की का

खुला पत्र

मान्यवर

एक अमरीकी प्रकाशक से इस उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद करने का प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद मुझे विश्वास हो गया है कि देर-सबेर यह उपन्यास आपके हाथ में आकर ही रहेगा। अगर आप हमारे सोवियत साहित्य को नहीं भी पढ़ते हैं, तो भी मध्य एशिया की स्थिति में आपकी दिलचस्पी शायद पहले की तरह ही बनी होगी और बहुत संभव है कि बुखारा एशक में निर्माण कार्य के बारे में लिखी एक पुस्तक आपके ध्यान को अवश्य आकर्षित करेगी।

पुस्तक को अंत तक पढ़ने के बाद आप निस्सन्देह शरीफाना गुस्से से बौखला उठेंगे और, हो सकता है कि अपने नेक नाम का इस तरह दुरुपयोग किये जाने के खिलाफ नाराजीभरे विरोधपत्र के रूप में आप उसे अखबारों में अभिव्यक्ति देना चाहेंगे। संभव है कि आप अनेक विश्वस्त और उच्चपदस्थ साक्षी भी जुटा लें, जो तसदीक करेंगे कि १९१८ में तुर्किस्तानी मिशन के बाद आपने वर्तमान सोवियत संघ की धरती पर कभी कदम नहीं रखा, चेका ने आपको ताजिकिस्तान में कभी गिरफ्तार नहीं किया और आपका ही अमरीकी इंजीनियर मर्री होना सरासर झूठ है। लेकिन चूंकि मैं आपको बेकार परेशानियों में नहीं पड़ने देना चाहता, इसलिए उपन्यास के साथ इस पत्र को भी जोड़ रहा हूं।

सबूतों की आपको तो जरूरत नहीं होगी। मध्य एशिया में आपके द्वारा आने की कहानी काल्पनिक है। प्रस्तुत उपन्यास का लेखक आपकी

जीवनयात्रा म विशेष दिलचस्पी लेता रहा है, यद्यपि उसके सभी चरणो की वह जानकारी नहीं पा सका है (ब्रिटिश जासूसी सेवा के कमचारियो का पूरा अता पता भला किसको चल पाता है!)। लेखक जानता है कि इस उपन्यास मे घटी घटनाओ के काल म आप सिक्किम मे बडी ईमानदारी के साथ ब्रिटिश राजनीतिक अभिकर्ता का कार्यभार निभा रहे थे।

आप पूछेगे कि यह सब जानते हुए भी लेखक ने किस आधार पर अपने काल्पनिक नायक को आपका – एक असली आदमी का – एक विशिष्ट व्यक्ति का नाम दिया है?

पहली बात तो यही है कि अगर आप अब भी अपने को एक अलग व्यक्ति ही मानते ह, तो आप अपनी पूरी महत्ता नहो समझते। आपके विशिष्ट, असाधारण गुणो के कारण तथा उन घटनाओ के कारण, जिनमे आपको कोई कम महत्वपूर्ण भूमिका नहीं दी गई है, आप एक अलग व्यक्ति न रहकर एक ऐतिहासिक व्यक्ति बन गये ह। दस्तावेजो और चश्मदीद गवाहो की कहानियो के आधार पर तुर्किस्तान म आपकी बहुमुखी गतिविधियो का अध्ययन करके मै इस निष्कर्ष पर पहुचा कि वर्तमान समय ने आपके साथ पूरा न्याय नही किया है। आपकी बहुमुखी योग्यताओ के स्तर को देखते हुए आपकी ख्याति का प्रतिगुप्तचर विशेषज्ञो और तुर्किस्तान के गहयुद्ध के इतिहासकारो तक ही सीमित रहना अपर्याप्त है। मै जानता हू कि जिस सगठन के सौंपे काम को आपने इतने शानदार ढग से पूरा किया और आज भी कर रहे हैं, वह सासारिक प्रसिद्धि के पीछे नही भागता – बल्कि ठीक कहा जाय, तो उससे दूर ही रहने की चेष्टा करता है। पर साथ ही यह बात भी कुछ असामान्य ही लगती है कि लॉरेंस जैसा आदमी तो ऐसी विश्वप्रसिद्धि पा जाय, जिसके वह योग्य हो नही है, जब कि कर्नल बेली के बारे मे तथाकथित व्यापक जनमत अभी तक लगभग कुछ भी न जाने।

इस तरह, वह पहली बात, जिसने इन पक्तियो के लेखक को आपको प्रस्तुत उपन्यास का पात्र बनाने पर मजबूर किया, थी आपके कारनामो से व्यापक जनमत को अवगत कराना।

इतिहास गहयुद्ध के वर्षो म बाकू और सुदूर उत्तर मे आपके देशवासियो के कारनामो को तो अवश्य जानता है, पर मध्य एशिया मे उनकी फलप्रद गतिविधियो के बारे म बहुत हो कम जानता है। और अगर इस फलप्रद गतिविधि ने वर्तमान सारे ताजिकिस्तान म सबसे अच्छी पैदावार नही

दिखाई,—जहा अन्य सघीय जनतत्रो की अपेक्षा छ साल बाद ही जाकर शातिमय निर्माण शुरू हो पाया था,—तो और कहा दिखाई!

मुह से राष्ट्र सघ की दुहाई देते हुए बदी कोम्सोमोलिया के नाक-कान काटनेवाले इब्राहीम-बेग के आखिरी हमले और गिरफ्तारी के समय—१६३१ म—मै वहीं मौजूद था। मुझे उसके जवानो से छीनी गई नई ब्रिटिश रायफले देखने को मिली थी। रायफले नवीनतम माडल की थी—बल्कि सच कहू, तो—बहुत ही बढिया थी! आज भी हवाई बेडे तथा रसायन सहयोग सोसाइटी की मडलिया मे ताजिक कोम्सोमोली उन्हीसे चादमारी की तालीम पाते हैं।

इब्राहीम-बेग एक अकुशल राजनीतिज्ञ था। अपने घोषणापत्रो म वह बिना किसी लाग-लपट के कहा करता था कि वह अमीर-ए-बुखारा की सत्ता का पुनर्स्थापित करने जा रहा है। इस कुसभावना से डरकर आम जनता इब्राहीम-बेग के पीछे उसी तरह से लट्ठ लेकर पड गई, जसे आज भी ताजिकिस्तान मे जगली सूअरो का शिकार किया जाता है। इब्राहीम के पास आप जसी कूटनीतिक बुद्धि नही थी, वह एक सीधा सादा एशियाई आदमी था और पज पार दिमागदार लोगो से बातचीत ने भी उसे कुछ भी नही सिखाया था।

उसके यशहीन अत की खबर पढकर शायद आपने अपने साथियो की प्रतिभा पर अफसोस किया हो जिन्होने ऐसे मदबुद्धि चेले को तैयार करने पर इतना धन और समय नष्ट किया था। शायद आपने सोचा हो कि अगर यह काम आपके सुपुर्द किया जाता, तो अत निश्चय ही कुछ और ही होता। नक्शे मे अपने सुपरिचित स्थानो पर निगाह दौडाते हुए आपको कुछ उच्चपदस्थ अधिकारियो की अदूरदर्शिता पर दुख हुआ होगा जिन्होने एक के बाद एक गलती की थी और उपयुक्त आदमी को उपयुक्त स्थान पर इस्तेमाल नही कर सके थे।

असल मे घटनाओ ने ऐसा रुख नही लिया, जसा आपने उस समय—१६१८ मे, होटल रेगीना की खिडकिया से ताशकद की भूरी धूल को देखते हुए—जिसे तेरह साल बाद ठीक उसी जगह से मने भी देखा था—सोचा था। जीवन ने आपको अपनी इतनी समृद्ध योजनाओ को पूरा करने का मौका नही दिया।

मने इस चूक का सुधारने और आपकी इच्छा का पूरा करने का निश्चय किया। मने आपके लिए जाली पासपोट का इतजाम किया, उस पर वीजा

की मोहर लगाई, आपको हवाई जहाज पर सवार किया और सारे सोवियत संघ के ऊपर उड़ाते हुए आज के ताजिकिस्तान में जा उतारा। मैंने आपको पैसे की कमी नहीं रहने दी, आपके एकाध पुराने परिचितों से मिलाया और फिर अकेला छोड़कर अपनी मेज़ पर लिखने के लिए आ बैठा। मैंने आपको कुछ भी करने, कुछ भी कहने के लिए नहीं उकसाया, आप पर अपनी राय और दृष्टिकोण को नहीं थोपा। मैंने तो बस इतना किया कि आपको वास्तविक घटनाओं के प्रवाह में छोड़ दिया और आपकी हर गतिविधि को कागज़ पर दर्ज करता हुआ आपका निरीक्षण करने लगा, ठीक उसी तरह जैसे और भी दमियों यात्रा का। तुर्किस्तान की पहली यात्रा के समय आपकी जो योग्यताएं उजागर होकर सबके सामने आई थीं उन्हें मैंने ध्यान में रखा और हमारे सोवियत वर्तमान के वातावरण और सीमाओं में विकसित होने दिया। अगर इस बार भी उनका परिणाम आपके आशानुकूल नहीं रहा, तो उसके लिए न आप दोषी हैं, न मैं,— दोषी है हमारी समाजवादी वास्तविकता का निर्मम तर्क, जिससे आप किसी भी तरह बच नहीं सकते।

कुछ भी हो आपको मुझ पर नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं। मैंने आपको शांति से पूरे एक साल हमारे देश में रहने दिया, जहां आज संसार के सभी कोनों से लोग आना चाहते हैं और जहां आप और किसी तरीके से नहीं आ सकते हैं। मैंने आपको सोवियत एशिया की वास्तविक स्थिति से अवगत होने का मौका दिया,— वहां, सिक्किम में, आपके मन में यहां का चित्र शायद कुछ और ही था। आपके दूसरे मिशन की असफलता आपकी सर्विस बुक में दर्ज नहीं की जायेगी, और इसलिए इसका आपके करियर पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा। इस देश के,— जिसे आपने मध्ययुगीन हालत में पाया था, पर जो आपके वालों के पकने के पहले ही बसा बन चुका है, जैसा इस उपन्यास में चित्रित है,— लोगों और जीवंत वास्तविकता से व्यावहारिक सामना शिक्षाप्रद और लाभदायी भी है। सोवियत मध्य एशियाई सूरज में बहुत तासीर है। मिसाल के लिए, वह पुरानी पड़ चुकी भ्रांतियों का, खासकर खतरनाक राजनीतिक दुस्साहसिकता की तरफ हानिकर झुकाव का, इलाज करता है।

सादर,

ब्रूनो यासेन्स्की

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन,
२१ ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ